PRINTED BY
Turantlal Mishra
at the
VISWAVINODE PRESS,
48, Indian Mirror Street,
Calcutta.

Published by the Compiler
48, Indian Mirror Street,
CALCUTTA

जैन लेख संग्रह।

कतिपय चित्र और आवश्यक तालिकाओं से युक्त

द्वितीय खंड।



Jalamandira at Tirtha Pâwâpuri (North view)



भूमिका

आज बड़े हर्ष के साथ "जैनलेख संग्रह" का दूसरा खंड पाठकों के सन्मुख उपस्थित करता हूं। इसका प्रथम खंड प्रकाशित होने के पश्चात् द्वितीय खंड शीघ्र ही प्रकाशित करने की इच्छा रहते हुए भी कई अनिवार्य कारणों से विलम्ब हुआ है। न तो प्रथम खंड में कोई विस्तृत भूमिका दी गई थी और न यहां ही लिख सके।

जैनियों का खास करके हमारे मूर्त्तिपूजक श्वेताम्बर भाइयों का धर्मप्राण शताब्दियों तक बराबर आचार्यों के उपदेश से देवालय और मूर्त्तिप्रतिष्ठा की ओर कहां तक अग्रसर था और वर्त्तमान समय पर्यंत कहां तक है यह "लेख संग्रह" से अच्छी तरह ज्ञात हो सकता है। ऐतिहासिक दृष्टि से जिस प्रकार उपयोगी समझ कर प्रथम खंड प्रकाशित किया था यह खंड भी उसी इच्छा से विद्वानों की सेवा में उपस्थित करता हूं।

सन् १९१८ में प्रथम खंड प्रकाशित होनेपर प्रसिद्ध ऐतिहासिक श्रद्धेय श्रीमान् राय बहादुर पं० गौरीशंकर ओझा जी ने पुस्तक भेजने पर उस संग्रह के उपयोगिता के विषय में जो कुछ अपना वक्तव्य प्रकट किये थे उसका कुछ अंश नीचे उद्धृत किया जाता है। उक्त महोदय अजमेर से ता: २६-१०-१९१८ के पत्र में लिखते हैं कि :—

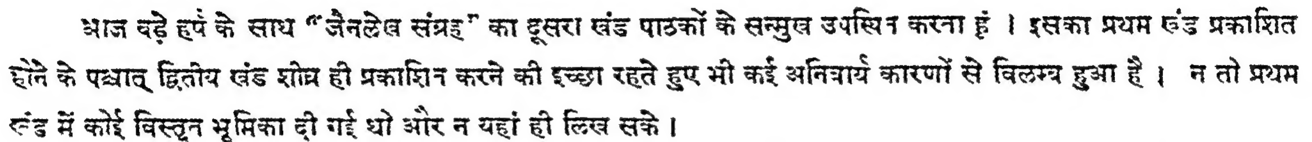
"आपके जैनलेख संग्रह को आदि से अंत तक पढ गया हूं। आपका यह ग्रन्थ इतिहासवेत्ताओं तथा जैनसंसार के लिये रत्नाकर के समान है। अंत में दी हुई तालिकायें भी बड़े काम की बनी हैं उनसे भिन्न २ गच्छों के अनेक आचार्यों के निश्चित समय का पता लगता है. यदि इसके दूसरे भाग भी निकलेंगे तो जैन इतिहास के लिये बड़े ही काम के होंगे"।

प्रथम खंड में साधारण सूची के अतिरिक्त "प्रतिष्ठास्थान", "श्रावकों की ज्ञाति-गोत्रादि" और "आचार्यों के गच्छ और संवत्" की सूची दी गई थी। इस बार इन सबके सिवाय राजा महाराजाओं के नाम जो इन लेखों में पाये गये हैं, उनकी तालिका भी समय २ पर आवश्यक होती है समझ कर इस खंड में दी गई है।

मैं प्रथम खंड की भूमिका में कह चुका हूं कि केवल ऐतिहासिक दृष्टि से यह संग्रह प्रकाशित हुआ है। जिस समय यह खंड छप रहा था उसी समय श्री [illegible] तीर्थ में श्वेताम्बर दिगम्बरों में मुकद्दमा छिड़ गया था पश्चात् फैसला अदालत में भी हो चुका है अतएव इस विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु मुझे बड़े खेद के साथ लिखना पड़ता है कि दिगम्बरी लोग मुझे ऐसे कार्य में उत्साहित करते थे [illegible] उस मुकद्दमे में इन्दूर के समय मेरे जैनलेख संग्रह पर हर तरह से हैरान किये थे।



Jalmandira at Tirtha Pâwâpuri (North view)



भूमिका

आज बड़े हर्ष के साथ "जैनलेख संग्रह" का दूसरा खंड पाठकों के सन्मुख उपस्थित करता हूं। इसका प्रथम खंड प्रकाशित होने के पश्चात् द्वितीय खंड शीघ्र ही प्रकाशित करने की इच्छा रहते हुए भी कई अनिवार्य कारणों से विलम्ब हुआ है। न तो प्रथम खंड में कोई विस्तृत भूमिका दी गई थी और न यहां ही लिख सके।

जैनियों का खास करके हमारे मूर्त्तिपूजक श्वेताम्बर भाइयों का धर्मप्राण शताब्दियों तक बराबर आचार्यों के उपदेश से देवालय और मूर्त्तिप्रतिष्ठा की ओर कहां तक अग्रसर था और वर्त्तमान समय पर्य्यंत कहां तक है यह "लेख संग्रह" से अच्छी तरह ज्ञात हो सकता है। ऐतिहासिक दृष्टि से जिस प्रकार उपयोगी समझ कर प्रथम खंड प्रकाशित किया था यह खंड भी उसी इच्छा से विद्वानों की सेवा में उपस्थित करता हूं।

सन् १९१८ में प्रथम खंड प्रकाशित होनेपर प्रसिद्ध ऐतिहासिक प्रत्नवेत्ता श्रीमान् राय बहादुर पं० गौरीशंकर ओझा जी ने पुस्तक भेजने पर उस संग्रह के उपयोगिता के विषय में जो कुछ अपना वक्तव्य प्रकट किये थे उसका कुछ अंश नीचे उद्धृत किया जाता है। उक्त महोदय अजमेर से ता० २६-१०-१९१८ के पत्र में लिखते हैं कि :—

"आपके जैनलेख संग्रह को आदि से अंत तक पढ़ गया हूं। आपका यह ग्रन्थ इतिहासवेत्ताओं तथा जैनसंसार के लिये रत्नाकर के समान है। अंत में दी हुई तालिकायें भी बड़े काम की बनी हैं उनसे भिन्न २ गच्छों के अनेक आचार्यों के निश्चित समय का पता लगता है, यदि इसके दूसरे भाग भी निकलेंगे तो जैन इतिहास के लिये बड़े ही काम के होंगे"।

प्रथम खंड में साधारण सूची के अतिरिक्त "प्रतिष्ठास्थान", "श्रावकों की ज्ञाति-गोत्रादि" और "आचार्यों के गच्छ और संवत्" की सूची दी गई थी। इस बार इन सूचियों के सिवाय राजा महाराजाओं के नाम जो इन लेखों में पाये गये हैं, उनकी तालिका भी समय २ पर आवश्यक होती है समझ कर इस खंड में दी गई है।

मैं प्रथम खंड की भूमिका में कह चुका हूं कि केवल ऐतिहासिक दृष्टि से यह संग्रह प्रकाशित हुआ है। जिस समय यह खंड छप रहा था उसी समय श्री [illegible] के श्वेताम्बर जिनमन्दिरों में मुकदमा छिड़ गया था पश्चात् [illegible] हो चुका है [illegible] इस विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु मुझे बड़े खेद के साथ लिखना पड़ता है कि [illegible] [illegible] उस मुकदमे में [illegible] जैनलेख संग्रह [illegible] किये थे।



सूचीपत्र ।





स्थान — पत्रांक

कलकत्ता ।

अजिमगंज – मुर्शिदाबाद ।

सैंतीया – वीरभूम ।

रंगपुर – उत्तर वंग ।

श्री सम्मेतशिखर तीर्थ ।

मधुवन ।

श्री पावापुरी तीर्थ ।

श्री राजगृह तीर्थ ।

श्री क्षत्रीकुंड तीर्थ ।

छत्रवाड़ ।

स्थान | पत्रांक



प्रतिष्ठा स्थान ।



राजाओं की सूची ।

संवत्	नाम	स्थान	लेखांक	संवत्	नाम	स्थान	लेखांक
१६२२	अकबर, सुरत्राण		१७८२	१५१३	अकब्बर, पातिसाहि		१७२७
१६५२	अकब्बर, पातिसाहि		१७६६	१४९१	कुंभकर्ण, राणा	मेवाड़	२००६
१६६१	„ „		१७६४	१४९४	कुंभकर्ण, नृपति	देवकुलपाटक	१९५८
१६७०	अकबर, सुरत्राण		१६२८	१६६२	जगत्सिंह, राणा	उदयपुर	१०२८

संवत्	नाम	स्थान	लेखांक
१८०१	जगतसिंह, महाराणा	उदयपुर	११११
१५६६	जगमाल, महाराजाधिराज	अचलगढ	२०२७
१५४८	जशसिंघ, राजा		२०३६
१६७८	जसवंतसिंहजी, जाम,	नवानगर	१७८१
१६७१	जहांगीर, पातिसाह	आगरा दुर्ग	१५८०–८१–८२
१६७१	" "	आगरा	१५८३–८४
१६७१	जहांगीर, पातिसाह सवाइ सुरत्राण		१५७८–६६
१६७१	" "	उग्रसेनपुर	१४५६
१६७४	जहांगीर साह,		१४६०
१४६७	डूंगरसिंह, महाराजाधिराज	गोपाचल	१४२७
१५१०	" "	गोपगिरि	१४२८
१५१०	डूंगरसिंहदेव, राजाधिराज	गोपाचल	१२३२
१५२५	डूंगरसिंह, रावधर सायर	अर्ब्बुदगिरि	२०२५
१६६६	तेजसिजी, राउल	वीरमपुर	१७१५
११५०	त्रैलोक्यमल	"	१४२६
११५०	देवपाल	गोपाचल	१४२६
११५०	पद्मपाल	"	१४२६
१३६२	पृथ्वीचंद्र, महाराजाधिराज	चित्रकूट	१६५५
१५४६	भीमसिंघ, रावल	मण्डासा	१०१५
११५०	भुवनपाल	"	१४२६
१५५२	मल्लसिंहदेव, महाराजाधिराज.	गोपाचल	१४२६

संवत्	नाम	स्थान
११५०	महीपाल	"
११५०	मूलदेव	गोपाचल
११५०	मंगलराज	"
१२७२	रणसिंह, मिहरराज	दिवान
१०१८	राघव, राजा	देवकुलपाटक
१६६७	लक्षराज, जाम	नवानगर
१०३४	वज्रदाम, महाराजाधिराज	
११५०	वज्रदाम	"
१२११	वस्तुपाल, महामात्य	अणहिल्लपुर
१५६२	वीकाजी, महाराजा राई	वीकानेर
१६३३	शत्रसल्ल, जाम	नवीननगर
१६७६	शत्रुसल्य, जाम,	नवानगर
१६७१	शाहजहां	
१८६३	सहादतअलि, नवाब	लखनऊ
१६८६	साहजांह, पादशाह	
१६८८	साहिजां, पातिसाह सवाइ	अर्गलपुर
१६६८	साहजांह, पातिसाह	
१८५६	सुरतसिंह, महाराज	वीकानेर
११५०	सूर्यपाल	"
१५२६	सोमदास, राउल	डूंगरपुर नगर
१६६६	हठीसिंहजी, महाराज	रामगढ दुर्ग





METAL IMAGE OF SHRI ADINATH
Dated, V. S. 1077, (A. D 1020)

JAIN INSCRIPTIONS.

जैन लेख संग्रह ।

दूसरा खण्ड ।



कलकत्ता ।

श्रीआदिनाथजी का देरासर ।

[illegible] — नं० ९६, [illegible] ।

धातु की मूर्त्तियों पर ।

[1001]*

(१) पजक सुत अंब

(२) देवेन ॥ सं १०७७

[883]×

(१) महाज सत्क सं

[illegible]

[illegible]

(२) पंकः श्रिया वे सुन

(३) स्तु पुन्नक श्राद्धः सी

(४) लगल सूरि जक्तश्चन्द्र कु

(५) ले कारयामासः ॥

(६) संवतु

(७) १०७२

[1002]

संवत् १६४२ वर्षे पो० सु० १२ सोमे श्रीअजित बिंवं का० सा० नानू जुदिजाकेन प्र० श्रीहीरविजय सूरि ।

धातुकी चौविशी पर ।

[1003]

ॐ ॥ श्रीमन्निवृतगच्छे संताने चाम्रदेव सूरीणां । महणं गणि नामाचा चेल्ली सर्व देवा गणिनी ॥ वित्तं नीतिश्रमायातं वितीर्यं शुजवारया। चतुर्विंशति पट्टाकं कारयामास निर्मलं॥

हीरालालजी गुलाबसिंहजी का देरासर—चितपुर रोड ।

धातु की चौविशी पर ।

[1004]

संवत् १५०६ वर्षे श्रीश्रीमालज्ञातीय दोसी डूंगर जार्या म्यापुरि सुत मुंजाकेन जार्या सोही सुत वीका युतेन आ० श्रेयसे श्रीसुविधिनाथादि चतुर्विंशति पट्टः कारितः आगमगच्छे श्रीअमरसिंह सूरि पट्टे श्रीहेमरत्नगुरूपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥ गन्धार वास्तव्य ॥ शुजं जवतु ॥श्रीः॥

लाजचन्दजी सेठ का घर देरासर—पुलिस हस्पिटैल रोड ।

पाषाण की मूर्त्तियों पर ।

[1005]

संवत् १६२३ ज्येष्ठ शुक्ल ५ महोपाध्याय युग प्र० विजयेन····प्रतिष्ठितं जं । यु । प्र । ज श्रीजिनरंगसूरि राज्ये ।

[1006]

संवत् १७२७ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ७ रवौ खरतरगच्छीय महोपाध्याय रामविनयगणिना प्र० पार्श्वबिम्बं।

स्फटिक के बिम्ब पर।

[1007]

संवत् १८७७ मा। सु० १३ प्र। ख। श्रीजिनचन्द्र सूरिभिः।

रौप्य के चरण पर।

[1008]

जंगम युग प्रधान भट्टारक श्रीजिनदत्त सूरीश्वराणां पादुके। श्रीजिनकुशलसूरीश्वराणां पादुके। वीर संवत् २४४८ वि० १९७९ आषाढ शुक्ल १ चन्द्रे रांका गोत्रीय लालचन्द्र शेठेन आत्मकल्याणार्थ इमे पादुके निर्मापिते, श्री बृ० ख० ग० ज० युग० भट्टारक श्रीजिनचन्द्र सूरि विजयराज्ये श्रीमद्विक्रमपुरीयाचार्य श्रीनेमिचन्द्रसूरि अन्तेवासि पं० श्रीहीराचन्द्रेण यतिना प्रतिष्ठापिते श्री शुभं भूयात्।

इण्डियन म्युज़ियम—चौरङ्गी रोड।

धातु की मूर्त्ति पर।

[1009]*

संवत् १४५७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ श्रीमूलसंघे प्रतिष्ठाचार्य श्रीपद्मनन्दि देवोपदेशेन.... श्रीभीमदेव। भार्या महदे। सुत गणपति भार्या करमू॥..........प्रणमति।

अजिमगञ्ज—मुर्शिदाबाद।

श्रीनेमनाथजीका मन्दिर।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1010]

संवत् १५१७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ दिने सोमवारे उकेश वंशे लोढा गोत्रे सा० वीसल भार्या

* यह चौकिसी हाल में यहां पर दिल्ली से आई है।

(२) पंकः श्रिया वे सुन
(३) स्तु पुन्नक श्राद्धः सी
(४) लगल सूरि भक्तश्चन्द्र कु
(५) ले कारयामासः ॥
(६) संवतु
(७) १०७२

[1002]

संवत् १६४२ वर्षे पो० सु० १२ सोमे श्रीअजित बिंबं का० सा० नानू भुदिभाकेन प्र० श्रीहीरविजय सूरि ।

धातुकी चौविशी पर ।

[1003]

ॐ ॥ श्रीमन्निवृतगछे संताने चाम्रदेव सूरीणां । महणं गणि नामाद्या चेल्ली सर्व देवा गणिनी ॥ वित्तं नीतिश्रमायातं वितीर्य शुभवारया । चतुर्विंशति पट्टाकं कारयामास निर्मलं ॥

हीरालालजी गुलाबसिंहजी का देरासर—चितपुर रोड ।

धातु की चौविशी पर ।

[1004]

संवत् १५०६ वर्षे श्रीश्रीमालज्ञातीय दोसी डूंगर भार्या म्यापुरि सुत मुंजाकेन भार्या सोही सुत वीका युतेन आ० श्रेयसे श्रीसुविधिनाथादि चतुर्विंशति पट्टः कारितः आगमगछे श्रीअमरसिंह सूरि पट्टे श्रीहेमरत्नगुरूपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥ गन्धार वास्तव्य ॥ शुभं भवतु ॥श्रीः॥

लाभचन्दजी सेठ का घर देरासर—पुलिस हस्पिटैल रोड ।

पाषाण की मूर्त्तियों पर ।

[1005]

संवत् १६२३ ज्येष्ट शुक्ल ५ महोपाध्याय युग प्र० विजयेन····प्रतिष्ठितं जं । यु । प्र । भ श्रीजिनरंगसूरि राज्ये ।

सैंतीया (वीरभूम)

श्री आदिनाथजी का मन्दिर।

धातुकी पञ्चतीर्थी पर।

[1016]

संवत् १५९३ वर्षे वैशाख वदि ४ गुरौ श्रीउएसवंशे दो० वसूआ भार्या मेघू पुत्र जईता सुश्रावकेण भा० जीवादे भ्रातृ जटा सहितेन स्वश्रेयसे॥ श्रीअंचलगछेश्वर। श्रीजयकेसरि सूरीणामुपदेशेन श्रीधर्मनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन श्री पत्तने॥ ठः॥

रङ्गपुर (उत्तर वङ्ग)

श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का मन्दिर—माहीगञ्ज।

शिला लेख नं० १

[1017]*

(१) अत्यद्भुतं सज्ञानसिद्धिदायकं भव्यांगिना मो

(२) क्षकरं निरन्तरं जिनालये रङ्गपुरे मनोहरे चन्द्रप्रभं

(३) नौमि जिनं सनातनं॥ १॥ संवत् १८९३ मि। माघ वदि १। र

(४) वौ श्रीरङ्गपुरे। भ। श्रीजिन सौभागा सूरिजी विजयी।

(५) राज्ये वा। आनन्दवल्लभगणेरुपदेशात् श्रीमकुदावा

(६) द वालूचर वास्तव्य दू। निहालचन्द तत्पुत्र बाबू इन्द्रच०

(७) न्द्रेण श्रीचन्द्रप्रभ जिनः प्रासादः कारापितः प्रतिष्ठापि

(८) तश्च। विधिना॥ सतां कल्याण वृद्धर्थम्॥

(९) श्रीरस्तुः॥ १॥

---

* यह शिलालेख [illegible] पत्थर पर लंबाई इंच-१४ चौड़ाई इंच-६ [illegible] हुआ है।

भावलदे तत्पुत्र सा० कर्म्मा तद्भार्या कउतिगदे तत्पुत्र सा० सहसमल्ल श्रावकेण सपरिवारेण आत्मश्रेयोर्थं श्रीचन्द्रप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरि पट्टे श्रीजिनभद्रसूरिभिः ॥

[1011]

संवत् १५१७ वर्षे माघ सुदि ४ सोमे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठि विरूआ भार्या मुक्ति सुत हीरा भार्या हीरादे सुत भावड़ कडूआभ्यां स्वपित्रोः श्रेयोर्थं श्रीधर्म्मनाथ बिंबं पञ्चतीर्थी कारापितः प्रतिष्ठितं श्रीबुद्धिसागरसूरि पट्टे श्री विमल सूरिभिः ॥ सीतापुर वास्तव्यः ॥

[1012]

सवत् १५१९ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे उ० ज्ञातीय विद्याधर गोत्रे । सा० सूंमण । भा० सूमलदे । पु० वेला भा० वगू नाम्ना पु० सोमा युतयां स्वभ्रातृ पुण्यार्थं श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० बृहद्गच्छे घोकमीयावटंके (?) श्रीधर्म्मचन्द्रसूरि पट्टे श्रीमलयचन्द्र सूरिभिः । लोद्राद्र ग्राम ॥

[1013]

॥ए०॥ संवत् १५२२ वर्षे आषाढ़ सुदि ७ ऊकेशिज्ञातीय रुवेयता गोत्रे । सा० केसराज भार्या····रतनाकेन श्रेयसे श्रीसुमति बिंबं प्रतिष्ठितं धर्म्मघोषगच्छे श्रीसाधु···· ॥

[1014]

संवत् १७०६ व । ज्ये । गु० श्री राजनगरवास्तव्य । प्राग्वाटज्ञातीय वृद्धशाखायां सा० ऋषभदास भा० कुअु नाम्न्या श्रीनमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागच्छे । भ० । श्री ५ श्रीविजयानन्दसूरिभिः ॥ आचार्य श्री ५ श्रीविजयराजसूरि परिकरितैः ॥ श्रीरस्तु । भ ॥१॥

पाषाण की मूर्त्ति पर ।

[1015]*

संवत् १५४९ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्रीमूलसंघे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवा सा०····राज पापड़ीवाल सप्रणमति का० श्रीभीमसिंघ रावल । सहर मण्डासा ।



---

* धरणेन्द्र पद्मावती सहित श्रीपाश्वनाथजीकी श्वेत पाषाणकी २ मूर्त्तियां पर एकही तरहके २ लेख हैं ।

[1021]

सं० १९३६""सौभाग्यसूरिजी विजय राज्ये नाहटा मौजीरामजी तत्पुत्र गुलावचन्दजी श्री आदिजिन कारापितं श्री आणन्द"""।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1022]

सं० १९२० मि० फा० कृ० २ बुधे सा० प्रतापसिंहजी दुगड़ भार्या महताव कुँवर श्री श्रेयांस जिन विंबं कारापितं।

[1023]

सं० १९२० मि: फा० कृ० २ बुधे सा० प्रतापसिंह भार्या महताव कुँवर श्री अजितदत्त २२ जिन विंबं का०।

चौविशी पर।

[1024]

संवत् १७७१ मिती आषाढ़ सुदि १३ शान्तिं चोरवेड़ीया सा० मांनजी पतिना॥ प्रतिष्ठितं उ० श्री कर्पूरप्रिय गणिभिः।

पंचतीर्थियों पर।

[1025]

सं० १५१३ व० ज्येष्ठ वदि ११ उकेश ज्ञा० [illegible] गोत्रे सा० [illegible] सा० [illegible] पु० नेता डूंगर नेताकेन सा० नेताके सं० श्रीकुंथुनाथ बिंबं कारि० प्र० श्री[illegible] गच्छे श्री ईश्वर सूरिभिः

[1026]

संवत् १५५६ वर्षे पोष सुदि १५ प्राग्वाट ज्ञातीय सा० [illegible] सा० [illegible] पु० सा० [illegible] सा० [illegible] [illegible] श्रेयसे श्री [illegible] बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री [illegible] सूरिभिः [illegible]

दादाजी का मन्दिर—माहीगञ्ज ।

पाषाण के चरण पर ।

[1027]

संवत् १८७७ रा वर्षे जेठ मासे शुक्ल पक्षे १० तिथौ बुधवासरे श्री चन्द्रकुलाधिप। बृहत् श्री खरतरगछे जंगम युगप्रधान भट्टारक। श्री १०८ श्री जिनदत्त सूरिजी श्री १०८ श्री जिनकुशल सूरीणां चरण स्थापितं । उ। श्री रत्नसुन्दरजी गणि उपदेशात् साह श्री डूगड़ [illegible]सिंहजी तत्पुत्र। बाबू श्री प्रतापसिंहजी कारापितं ॥ श्रीसङ्घ हितार्थम्। जङ्गमयुगप्रधान भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिजी विजय राज्ये श्रीरस्तु ॥ श्रीकल्याणमस्तुः ॥

उदयपुर (मेवाड़)

श्री शीतलनाथस्वामी का मन्दिर ।

[1028]*

[illegible] ॥ संवत् १८०३ वर्षे कार्त्तिक वदि ॥ सोमवासरे उदयपुर राणा श्री जगतसिंह राज्ये [illegible] श्री जिन मन्दिरे श्री शीतलजिन बिंबं पित्तलमय परिकर कारितः आसपुर वास्तव्य [illegible] प्राग्वाट ज्ञातीय पं० कान्हा सुत पं० केसर भार्या केसर दे तत्सुत पं० दामोदर [illegible] ॥ भट्टारक श्री विजयदेव सूरीश्वर तत्पट्टप्रभाकर आचार्य श्री विजयसिंह [illegible] पण्डित श्री [illegible]चन्द्र गणिभिः वासक्षेपः श्री सकलसङ्घस्य [illegible] ॥

धातु की चौविशी पर ।

[1029]

[illegible] वर्षे [illegible] ११ प्राग्वाट दो० मृग ना० पोमी सुत दो० आसाकेन [illegible] कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे [illegible] चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० तपागच्छनायक भट्टारक प्रभु श्री सोमसुन्दर [illegible] ॥

[illegible]

पञ्चतीर्थियों पर।

[1030]

सं० १५१७ वर्षे पोष वदि ८ रवौ प्राग्वाट ज्ञा० सा० डूंगर भा० सुहासिणि पुत्र लषम सिंहेन भा० सोनाई पुत्र नगराजादि कुटुंब युतेन स्वपितुः श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितं। प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री रत्नशेखर सूरिभिः अहिमदावाद वास्तव्यः।

[1031]

सं० १५५७ वर्षे मार्गशिर सुदि ९ शुक्रे श्री नाणा वालगच्छे उस० कावू गोत्रे का० सोंगा भा० सोंगलदे पु० धूलाकेन भार्या पूजी सहितेन पूर्वज पुण्यार्थं श्री शीतलनाथ बिम्बं का० श्री महेन्द्र सूरिभिः॥

पञ्चतीर्थी और मूर्त्तियों पर। ©

[1032]×

१ सं० ७८ गे० पमा विनिगो वाज० लूणापनि कारितं।

[1033]

ॐ॥ संवत् ११९६ माघ सुदि १२ गुरौ महज मरुनाम्ना श्री ऋषभनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीआमदेव सूरिभिः॥

[1034]

संवत १२५७ जेठ सुदि १० रवौ। श्रे० चाहड़नीहेन निज कुटुम्ब सहितेन पार्श्वनाथः कारितः प्रतिष्ठितः श्री देवचंद्र सूरिभिः।

[1035]

सं० १२६२ फागुण सुदि १० रवौ श्रे० प्रद्येव सुत वीसलदेव श्रेयोर्थं ना० प्र० श्री मानदेव सूरिभिः।

© [illegible]

× [illegible]

[1036]

१२····आषाढ़ सुदि ८ उवएस वाधि सीहेण पु० गामा माल्हाभ्यां पितृ श्रेयोर्थं बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सर्वगुप्त सूरिभिः।

[1037]

सं० १३२३ ज्येष्ठ सुदि १········श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उद्योतन सूरिभिः॥

[1038]

सं० १३२५ वर्षे फागुण सुदि ४ शुक्रे। श्रे० धामदेव पुत्र रणदेव धारण भा० आसलदे श्रे० राम श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं श्री ककक सूरिभिः।

[1039]

सं० १३२८ वर्षे वैशाष शु० ६ षण्डेरक गच्छे श्री यशोभद्र सूरि सन्ताने सा० सढ़ाणव भा० जाल्हू पु० कएरु श्री आस सिंह भा० मील्हा····काया बिम्बं कारितं प्र० श्री शाल सूरिभिः।

[1040]

सं० १३२९ वैशाख वदि ए शुक्रे कडु कदा भार्या ललतू श्रेयसे कर्मणेन श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं ····।

[1041]

संवत् १३५२ वर्षे फागुण सुदि १० बुधे श्री चैत्र गच्छिय धर्कट वंशे नाहर गोत्रे सा० हापु सुत सा० विजयसीहेन भ्रातृ धारसीह श्रेयसे ····माण्यकेन श्री वासपूज्य बिम्बं कारितं प्र० श्री गुणचन्द्र ····।

[1042]

सं० १३७४ माघ व० १० गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० पुन पाल सुत सोमल पितृ पुन पाल श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं श्री रामं (?) प्रायागच्छे प्रतिष्ठितं श्री शीलभद्र सूरिभिः॥

[1043]

सं० १३०५ वर्षे फागुण सुदि......श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारिता प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1044]

सं० १३०६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १२ बुधे श्री माल ज्ञातीय पितामह श्रे० वील्हण पितृ श्रे० सोमा पितृव्य साजण भ्रातृ माहा......श्रेयोर्थं सुत राणा धरणिकाभ्यां श्री पार्श्वनाथ पञ्चतीर्थी का० ।

[1045]

संवत् १३०७ वर्षे माघ वदि ११ गुरौ श्री...दाहड़ वीरम श्री चन्द्रप्रभ बिम्बं प्रतिष्ठितं ।

[1046]

सं० १३५१ मड्डाहडीय गच्छे श्रे० पादा भा० जाइल पु० कर्म सीहेन पित्रो श्रेयोर्थं श्री महावीरं श्री रत्नाकर सूरि पट्टे श्री सोमतिलक सूरिभिः ॥

[1047]

संवत् १३९९ वै० सुदि १ प्राग्वाड़ श्री अठाड़ा भार्या वाल्हु...बिम्बं प्र० श्री भावदेव सूरि ।

[1048]

सं० १४०५ वर्षे वैशाष सुदि ५ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितृ पेता मातृ जगनल देवि तयो श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्टितं श्री नागेन्द्र गच्छे श्री रतनागर सूरिभिः ॥

[1049]

सं० १४०६ वर्षे ज्येष्ट सु० ९ रवौ सा०...कुटुम्ब श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्टितं जीरापल्लीयैः श्री रामचन्द्र सूरिभिः ॥

[1050]

सं० १४०७ वैशाख वदि ४ रवौ श्री माल ज्ञातीय पितामह उदयसीह पितृ जयणसीह श्रेयसे सुत पोपाकेन श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्टितं श्री गुणसागर सूरि शिष्य श्री गुणप्रभ सूरिभिः ।

[1051]

सं० १४०९ वर्षे फागुण सुदि २ बुधे हुंबड़ ज्ञातीय भ्रातृ पातल श्रेयसे ठ० वीरमेन श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री सर्वानन्द सूरि सहितैः श्री सर्वदेव सूरिभिः ॥

[1052]

सं० १४२१ वर्षे माघ वदि ६ दिने नाहर गोत्रे सा० देवराज भा० रुपी पु० सा० लोला भार्या नाल्ही.........पौत्रादि सहिते आत्मश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिम्बं कारितं श्री रुद्रपल्लीय ग० भ० श्री जिनहंस सूरि पदे श्री जिनराज सूरिभिः ॥

[1053]

सं० १४२२ वर्षे वैशाष सु० ११ बुधे प्राग्वाट ज्ञा० कछोली वास्तव्य श्रेष्ठि तिहुणा भा० वांहणि पितृ श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री रत्नप्रभ सूरिभिः ।

[1054]

सं० १४२३ फागु० सु० ८ सोमे प्रा० व्य० हरपाल भार्या आल्हण दे पु० विजयपालेन पित्रो श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं का० प्र० श्री शालिभद्र सूरिभिः ॥

[1055]

सं० १४२३ फागुण सु० ९ सोमे श्रीमाल व्य० जोहण भा० माल्हण दे सुत आल्हा पाल्हाभ्यां पितृव्य आसपाल भातृभ्यां श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिम्बं कारितं श्री अभय चन्द्र सुरिणामुपदेशेन ।

[1056]

सं० १४३६ वर्षे फा० सु० ३ दिने मंत्रि दलीय गोत्रे सा० सारङ्ग भा० सारू पु० सीधरण भा० सुहवदे पुत्र सा० मांज मैस परवतादि युतेन श्री कुन्थुनाथ बिम्बं का० प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[1057]

संवत् १४३७ वर्षे वैशाख वदि १० सोमे। श्री कारंटगच्छे श्री नन्नाचार्य सन्ताने उपकेश ज्ञा० श्रे० सोमा भा० सूमलदे पुत्र सोनाकेन पितृ मातृ श्रे० श्री आदिनाथ बिम्बं का० प्र० श्री सांवदेव सूरिभिः ।

[1058]

सं० १४५० वर्षे मगसिर वदि ६ रवौ उपकेश ज्ञातीय सा० पादण भा० पीमसिरि तयो श्रियोर्थं सुत आल्हा जदा देवाकेन श्री वासुपूज्य बिम्बं पञ्चती० का० प्र० श्री नागेन्द्रगच्छे श्री रत्नसंघ सूरि पट्टे श्री देवगुप्त सूरिभिः । जारा सलखा श्रेयोर्थं ॥ श्री ॥

[1059]

सं० १४५३ वर्षे वैशाष सुदि २ हुंबड़ ज्ञा० श्रे० देवड़ भा० चामल देवि पुत्र हापाकेन हापा भा० हलू पु० सु० पानल सुत मोजा हुंबड़गच्छे श्री सर्वानन्द सूरि प० श्री सिंहदत्त सूरिभिः ।

[1060]

सं० १४५५ विणचट गोत्रे सा० नींबण भा० तिहुणश्री पु० मोपाटन आत्मपूर्वजनिमित्तं चन्द्रप्रभ बिम्बं का० प्र० धर्मघोष गच्छे श्री सर्वाणन्द सूरिभिः ।

[1061]

सं० १४५७ आषाढ सुदि ५ गुरौ प्रा० ज्ञा० व्यव० छाजू भार्या गोमती पुत्र सिंहणा केन पित्रोः श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्रा० पू० प० श्री धर्मतिलक सूरि उपदे०

[1062]

सं० १४६० वर्षे ज्येष्ठ वदि १२ रवौ [illegible] भार्या [illegible] श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिम्बं कारितं प्रति० [illegible] गच्छे श्री [illegible] सूरिभिः ॥

[1063]

सं० १४६८ वर्षे फाल्गुन वदि २ शुक्रे श्रीमाल [illegible] श्री [illegible] व्य० पेथड़ भार्या [illegible] सु० [illegible] गच्छे श्री आदिनाथ बिम्बं [illegible] ।

[1064]

॥ सं० १४७३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि [illegible] मातृपितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं [illegible] धर्मघोष गच्छे श्री [illegible] सूरिभिः ।

[1065]

सं० १४७४ वर्षे माघ सुदि ७ शुक्रे रनघणा गोत्रे हुंवड़ ज्ञातीय श्रे० वरजा भा० रूमी सु० सुप सूरा ॥ पितृश्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रत स्वामी बिम्बं का० श्री सिंहदत्त (रत्न ?) सूरिभिः ॥

[1066]

संवत् १४७७ वर्षे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० नरदेव भार्या गांगी पुत्र श्रे० ऊावटेन भा० कडू पुत्र .... पितृव्य चांपा श्रेयोर्थं श्री चन्द्रप्रभ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

[1067]

सं० १४७९ प्राग्वाट व्य० कल्हा ऊमी सुत सूरीकेन भा० नीणू भ्रा० चांपा सुत सादा पेथा पदमादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री कुन्थु बिंबं का० प्र० तपा श्री सोमसुंदर सूरिभिः ॥

[1968]

सं० १४८० वर्षे फा० सु० १० बुधे उप० ज्ञा० श्रे० करूयर भार्या कुसमीरदे सु० गेहा केन पित्रो श्रेय० श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० मड्डा० रत्नपुरीय भ० श्री धणचन्द्र सूरि प० श्री धर्म्मचन्द्र सूरिभिः ॥

[1069]

सवंत् १४८१ वर्षे वैशाख शुदि ३ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० काला भार्या कील्हणदे सुत सरवणेन पितृमातृ श्रेयसे श्री चन्द्रप्रभ स्वामि पंचतीर्थी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मडाहड़ गछे श्री उदयप्रभ सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1070]

सं० १४८२ वर्षे वैशाप वदि ५ उपकेश ज्ञा० राका गोत्रे सा० भूणा भा० तेजलदे पु० कानू रूल्हा भा० रयणीदे पु० केल्हा हापा शाल्हा नेजा सोभीकेन कारापितं नि० पुण्यार्थं आतम श्रे० उपकेश गछे कुकदाचार्य सं० प्र० श्रीसिद्ध सूरिभिः ॥

[1071]

सं० १४७३ वर्षे द्वि वैशाख वदि ५ गुरौ श्री प्राग्वाट ज्ञा० व्य० खीमसी भा० सारू पुत्र व्य० जेसाकेन पुत्र वीकन आसाभ्यां सहितेन श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं श्री अंचल गच्छनायक श्री जयकीर्त्ति सूरि गुरूणां उपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

[1072]

सं० १४७४ वर्षे वैशाख वदि १२ रवौ उपकेश ज्ञातीय सा० कूंता भा० कुंवरदे पुत्र जमा भा० जावलदे पु० सायर सहिते श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० उपकेश गच्छ सिद्धाचार्य सन्ताने मेदरथ श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1073]

सं० १४७४ वर्षे ज्ये० सु० ५ बुधे श्री नागेन्द्र गच्छे उपकेश ज्ञा० सा० साल्हा भा० माल्हा पु० धांगा भा० सारी पितृमातृ श्रे० श्री संभवनाथ बिंबं का० प्र० पद्माणंद सूरिभिः ॥

[1074]

सं० १४८१ वर्षे वैशाप सु० ६ गुरौ द० धरणा भा० पूनादे सुत हीराकेन भा० हीरादे पुत्र श्री सुमतिनाथ बिंबं श्री सोमसुन्दर सूरि प्र० [illegible] ।

[1075]

सं० १४८१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे [illegible] भा० [illegible] नाम्नी [illegible] पुत्र ऊमाकेन सपरिवारेण स्वपुण्यार्थं श्री [illegible] बिंबं का० प्र० खरतर ग० श्री जिनसागर सूरिभिः ॥

[1076]

सं० १४८१ वर्षे ज्ये० ब० ११ प्राग्वाट [illegible] भा० [illegible] सुत [illegible] भा० चाहणदे सुत [illegible] श्री नमि नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1077]

सं० [illegible] सुदि [illegible] [illegible] पु० [illegible] पु० [illegible] बिंबं कारितं प्र० श्री [illegible] श्री [illegible] सूरि पट्टे [illegible] श्री [illegible] सूरिभिः

[1078]

सं० १४९६ वर्षे फागुण वदि ९ शुक्रे हुंबड़ ज्ञातीय म० देवराज भा० गोइन पु० क राणाकेन मातृपितृ श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं निवृतिगच्छे श्री सूरिभिः ॥

[1079]

सं० १५०१ वर्षे फागुण सुदि १३ गुरौ सुगणा गोत्रे सा० सोनपाल भा० तिहुणी पु० खिणराजेन गुणराज दशरथ सहसकिरण सनन्वितेन स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री धर्म्मघोष गच्छे भ० श्री पद्मशेषर सूरि प० भ० श्री विजयचन्द्र सूरिभिः ॥

[1080]

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ११ शुक्रे दहदड़ा ······· श्री अरनाथ बिंबं का० प्र० राम सेनीया वरफे (?) श्री धर्म्मचन्द्र सूरि पट्टे श्री मलयचन्द्र सूरिभिः ।

[1081]

सं० १५०५ वर्षे वैशाष सु० ६ सोमे श्री संडेरगच्छे ऊ० ज्ञा० वासुत गोत्रे सा० गांगण पु० पैरु पु० बुलाकेन सा० गोगी पुत्र डाड़ा कुंत्ता सहितेन स्वपुण्यार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं का० प्र० श्री ············ ।

[1082]

सं० १५०६ मा० सु० ७ दिने श्री ऊपकेशज्ञातौ सिरहठ गोत्रे सा० सहदेव भा० सुहवदे पु० सालिगेन पित्रो निमित्तं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्रति० श्री सर्व सूरिभिः ॥

[1083]

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सु० १० ऊप० चिपड़ गोत्रे सा० रावा भा० जेठी पु० देपाकेन मातृपितृ पुण्या० आत्म श्रे० श्री शान्तिनाथ बिंबं का० ऊपकेश गच्छे० प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

[1084]

सं० १५०८ वर्षे ज्येष्ठ शु० १३ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० सोमा भा० धरमिणि सुत मालाकेन लाला भा० गेलू राजू युतेन स्वश्रेयोर्थं श्री वर्द्धमान बिंबं कारितं प्र० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेषर सूरिभिः ॥ कूम्भिगिरि वास्तव्य ॥

[1085]

सं० १५०९ वै० शु० ३ प्राग्वाट व्य० मेघा भार्या हीरादे पुत्र व्य० आसा सोमा भा० केलू आल्हा पुत्र शिखरादि कुटुम्ब युताभ्यां स्वश्रेयोर्थं श्री युगादि बि० का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेषर सूरिभिः ॥

[1086]

सं० १५१० वर्षे वैशाष वदि ५ सोमे गिरिपुर वास्तव्य हुंवड़ ज्ञाति डेकिकव गोयद (?) भा० वारू सु० जाला भा० हीसू सु० आसाकेन भा० रूपी युतेन स्व० श्री सुविधिनाथ बि० का० श्री वृ० तपापक्षे श्री रत्नसिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1087]

सं० १५११ वर्षे माह वदि ६ गुर दिने उप० ज्ञा० चलद (?) गोत्रे सा० गाड़ा भा० सहवादे सा० जाड़ा भा० जसमादे .... सहितया स्वश्रेयसे श्री धर्म्मनाथ बिंब का० प्र० श्री भ० रामसेनीया अटकरा० श्री मलयचन्द्र सूरिभिः ॥

[1088]

॥ सं० १५१३ व० चै० सु० ६ गुरौ उत्केश वं० ताल गो० सा० महिराज पु० सा० काल्हा भा० कव्रसिरि सु० धना भा० धरण श्री पु० षोषा यु० श्री शितलनाथ बिंबं का० प्र० धर्म्मघोष ग० श्री साधुरत्न सूरिभिः ॥

[1089]

॥ सं० १५१३ पौष शुदि ७ ऊकेश वंशे विमल गोत्रे सं० नरसिंहांगज सा० फाफणेन श्री कुंथु बिंबं का० प्र० ब्रह्माणी उदयप्रभ सुरि तपा भट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे हेम हंस सूरिभिः ॥

[1090]

॥ सं० १५१५ वर्षे जे० सुदि ५ उपकेस ज्ञा० जोजा उरा सा० वीदा भा० वाल्ह पुत्र गांगा हुदाकेन पूर्वज निमित्तं श्री कुंथनाथ बिंबं का० प्र० श्री चैत्रगच्छे भ० श्री रामदेव सूरिभिः ॥

[1078]

सं० १४९६ वर्षे फागुण वदि ९ शुक्रे हुंबड़ ज्ञातीय म० ... राणाकेन मातृपितृ श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं नि...

[1079]

सं० १५०१ वर्षे फागुण सुदि १३ गुरौ सुगणा गोत्रे सा० ... खिणराजेन गुणराज दशरथ सहसकिरण समन्वितेन स्वश्रेयसे श्री ... प्र० श्री धर्म्मघोष गच्छे भ० श्री पद्मशेषर सूरि प० भ० श्री विज...

[1080]

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ११ शुक्रे दहदड़ा ······· श्री ... सेनीया वरफे (?) श्री धर्म्मचन्द्र सूरि पट्टे श्री मलयचन्द्र ...

[1081]

सं० १५०५ वर्षे वैशाष सु० ६ सोमे श्री संडेरगच्छे ऊ० ... पु० पेरु पु० बुलाकेन सा० गोगी पुत्र ढाड़ा कुंना सहितेन ... का० प्र० श्री ············ ।

[1082]

सं० १५०६ मा० सु० ७ दिने श्री ऊपकेशज्ञातौ सिरहठ ... पु० सालिगेन पित्रो निमित्तं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्रति०

[1083]

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सु० १० ऊप० चिपड़ गोत्रे सा० ... मातृपितृ पुण्या० आत्म श्रे० श्री शान्तिनाथ बिंबं का० ऊ... सूरिभिः ।

[1084]

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ शु० १३ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० मालाकेन लाला भा० गेलू रामू सुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री वर्द्धमान बिंबं ... सुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेषर सूरिभिः ॥ कूणिगिरि वास्तव्य ॥

[1097]

संवत् १५३३ वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री प्राग्वाट ज्ञातीय सा० नाऊ भा० हांसी पुत्र सा० ठाकुरसी सा० वरसिंघ भ्रातृ सा० वीसकेन भा० सोनी पुत्र सा० जीणा सहितेन श्री अंचलगच्छेश श्री श्री श्री जयकेसरि सूरीणामुपदेशेन श्री नमिनाथ विंबं कारितं प्र० श्री संघेन मांडी ग्रामे ॥ श्री श्री ॥

[1098]

॥ सं० १५३५ वर्षे मार्ग वदि १२ साधुला गोत्रे साह पाल्हा भा० रहणादे पु० सा० तेजा भा० तेजलदे पु० वलिराज वीसल लोला । माणिकादि युतेन श्री पार्श्वनाथ विंबं का० प्र० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री पद्मशेषर सूरि पट्टे श्री पद्माणंद सूरिभिः ॥

[1099]

सं० १५३६ वर्षे मार्गसिरि सुदि १० बुधवासरे श्री संडेर गच्छे ऊ० तेलहरा गो० सा० धना पु० काल्ह पूजा भा० खतू पु० टोहा हीरा टोडा भा० वरजू पु० ···· स्वश्रे० लाला निमित्तं श्री शीतलनाथ विंबं का० श्री जिण भद्र (?) सूरि सं० श्री सालि सूरिभिः ॥

[1100]

सं० १५४२ वर्षे फा० व० २ दिने जालउर महादुर्गे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० पोप भा० पोमादे पुत्र सा० जेसाकेन भा० जसमादे भ्रातृ लापादे कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयोर्थं श्री धर्मनाथ विंबं कारितं प्र० तप श्री सोमसुन्दर सन्ताने विजयमान श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्रियोस्तु ॥

[1101]

सं० १५५९ वर्षे आषाढ़ सुदि २ उसवाल ज्ञाती कनोज गोत्रे सा० पेढा पु० सहसमल भा० सुहिलालदे पु० ठाकुरसि ठकुर युतेन आत्मश्रेयसे मातृण पितृपुण्यार्थं शीतलनाथ विंबं का० ॥ प्र० श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1102]

सं० १५६६ वर्षे वै० व० १३ र० पत्तनवासि प्रा० दो० मानिक भा० रमकू सुत पानाकेन भा० ईहू सु० नाथा सोनपालादि कुटुम्बयुतेन श्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ विंबं कारितं तपागच्छे श्री हेमविमल सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[1103]

सं० १५६६ वर्षे फा० व० ६ गुरौ प्रा० सा० तोला ना० रूपमिणि पु० गांगाकेन ना० पीबू पु० लाला लोला लापादि कुटुम्बयुतेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि सन्ताने श्री कमलकलस सूरि पट्टे श्री नन्दकल्याण सूरिभिः ॥ श्रीः ॥ श्री चरणसुन्दर सूरिभिः ॥

[1104]

सं० १५७६ वर्षे ज्ये० शु० २ दिने प्राग्वाट ज्ञातीय ज्यायपुर वा० सा० हापा ना० दानी पु० सुश्रावक सा० सरवण ना० मना भ्रा० सा० सामन्त ना० कम्म पु० सा० सूरा सा० सीमा षेता प्रमुख समस्त परिवार युतैः निज पुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्र० श्रीमत्तपा गच्छे श्री पूज्य श्री आनन्दविमल सूरि पट्टे सम्प्रति विजयमान राजा श्री विजयदान सूरिभिः ॥

[1105]

सं० १६६७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ लोढा गोत्रे प। साता हर्षमदे सु० कणठराकेन सुत वार दास प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्री विजयसेन सूरीणां निदेशात् उ० श्री सायविजय (?) गणिभिः ॥

[1106]

संवत् १६७८ वैशाष सुदि ७ उदयपुर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय वरडिया गोत्रे सा० पीथाकेन पुत्र पोषादि सहितेन विमलनाथ बिंबं का० प्र० त० भट्टारक श्री विजयदेव सूरिभिः। स्वाचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः ॥

[1107]

सं० १६९० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ सोमे उकेस वंशे भांगरेचा गोत्रे सा० गोविन्द भार्या गारवदे पुत्र सा० समरथ श्री खरतरगच्छे श्री जिनकीर्त्ति सूरि श्री जिनसिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

[1108]

सवत् १६९४ वर्षे वैशाष ……………… श्री अनन्तनाथ विंबं का० प्र० च तपगछाधिराज भट्टारक श्री विजयदेव सूरिभिः ॥ स्वोपाध्याय श्री लावण्यविजय गणि का० भ० ………

[1109]

सं० १७०३ सा० तेजसी कारिता श्री विमलनाथ विंबं ……… ।

[1110]

संवत् ……… जीवा पु० सीहड़ भार्या श्रीया देवि पु० राजापाल प्रजापाल श्री श्री आदिनाथ विंबं का० प्र० …… ० श्री वर्द्धमान सूरिभिः ॥

[1111]*

॥ सं० १४९३ श्री ज्ञानकीय गछे । सा० वाहड़ भा० प्रमी पु० पाल्हा लोलाभ्यां अद्भुप्रा (?) कारिता ॥

श्री वासुपूज्यजी का मन्दिर ।

धातु की पञ्चतीर्थियों पर ।

[1112]

संवत् १५०६ व० ऊकेश सा० वछराज सु० सा० हीरा भा० हेमादे हरसदे पु० सा० जगा भा० फडु …… श्रेयसे श्री शीतल विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्नशेखर सूरिभिः श्री देवकुलपाटक नगरे ।

[1113]

सं० १९४२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ गुरुवार सुराणा गोत्रे सा० चेनन पु० नारायण …… सु० सीला …… गोकलदास …… श्री चन्द्रप्रभ विंबं कारितं ।

---

* यह मूर्ति देवी की है और माप में छोटा है।

श्री गौड़ीपार्श्वनाथजी का मन्दिर।

धातुकी मूर्त्तियों पर।

[1114]

सं० १७०५ माघ सु० १३ सोमे राणा श्री ....

[1115]

सं० १८०१ ज्ये० सु० ए उदेपुर महाराणा श्री जगतसिंहजी बापणा गोत्र साह श्री ..... ।

[1116]

सं० १८०८ वर्षे शाके १६७३ .... जेठ सु० ए बुधे तपा श्री विजयदेव सूरि श्री विजय धर्म सूरि राज्ये उदयपुर वास्तव्य पोरवाड़ जण्डारी जीवनदास जार्या मटकू श्री पार्श्व बिंबं कारापितं ।

धातु की चौवीशी पर।

[1117]

ॐ ॥ सं० १५२२ वर्षे पो० व० १ गुरौ कक्कैंग वासि उकेश व्य० जेसा जा० जसमादे सुत व्य० वस्ता जार्या वीऊलदे नाम्न्या पुत्र व्य० जीम गोपाल हूरदास पौत्र कर्मसी नरसिंग श्रावर रूपा प्रमुख कुटुम्बयुतया निजश्रेयसे श्री शान्ति बिंबं का० प्र० तपागच्छ श्री लक्ष्मी सागर सूरि श्री सोमदेव सूरिजिः । श्रेयः ॥

धातु की पञ्चतीर्थियों पर।

[1118]

ॐ सं० १५११ वर्षे वैशाप वदि ५ शनौ श्री मोढ ज्ञातीय मं० जीमा जार्या मनु सुत मं० गोराकेन सुत जोला महिराज युतेन स्वपितुः श्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं विद्याधरगच्छे श्री विजयप्रज सूरिजिः ॥

[1119]

सं० १५८३ वर्षे पोष वदि १० बुधे ऊ० ज्ञातीय सा० कोला जार्या पीमाई पु० दीना

भा० लाडिकि नाम्न्या देवर सा० हेमा भा० फटू पु० धरणादि युतया स्वश्रेयसे श्री शान्ति नाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमा पक्षे श्री जयचन्द्र सूरि शिष्याण आ० श्री जयरत्न सूरि उपदेशेन वग्गली ग्रामे।

धातु के यंत्र पर।

[1120]

सं० १५३४ श्री मूलसंघे भ० श्री भुवनकीर्त्ति श्री भ० श्री ज्ञानभूषण हूं० दो० लापा भा० अमरा भ्रातृ दो० हीरा भा० अरघू सु० जूठा भगिणि सु० माणिक ....।

भण्डार की धातु की पञ्चतीर्थियों पर।

[1121]

सं० १३३० वर्षे चैत्र वदि ७ शुक्रे महं० हीरा श्रेया महं० सुत देवसिंहेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः॥

[1122]

सं० १३६१ ज्येष्ठ सु० ९ बुधे श्रे० आसपाल सुत अजयसिंह तद्भार्या श्री लखमादेवि तयोः सुत कान्हड़ पूनाभ्यां पितृव्य लूणा श्रेयसे श्री शान्तिनाथ कारितः। प्र० श्री यशो भद्र सूरि शिष्यः श्री विबुधप्रभ सूरिभिः॥

[1123]

सं० १४२७ वर्षे ह्रि (?) वैशाख व० ११ सोमे श्रीमा० व्य० नरा भा० मेघी पु० नींब सिंहेन पित्रो श्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० ब्रह्माणीय श्री रत्नाकर सूरि पट्टे श्री हेमतिलक सूरिभिः।

[1124]

सं० १४४९ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञा० पितृ मीना मातृ देमाई श्रेयोर्थं सुत नाथाकेन श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री नागेन्द्र गच्छे श्री [illegible] सूरिभिः।

[1125]

सं० १४७७ ज्येष्ठ व० १ प्राग्वाट ठ० ठजलसीकेन पित्रो ठ० पूनसीह भा० पूमलदे श्री चन्द्रप्रभ बिंबं का० प्र० मलधारि श्री मुनिशेखर सूरिभिः।

[1126]

सं० १५०१ माघ वदि ५ गुरौ प्राग्वाट व्य० धणसी भा० प्रीमलदे सुत व्य० लाषा भा० लाषणदे सुत व्य० षीमाकेन निज श्रेयसे श्री सुमति बिंबं कारि० प्र० तपा श्री मुनि सुन्दर सूरिभिः।

[1127]

सं० १५१६ वर्षे वै० व० १२ शुक्रे उकेश ज्ञाती व्य० नारद भा० घरघति पुत्र बाघाकेन भा० वल्हादे भ्रा० पहिराजादि कुटुम्ब युनेन स्वपितु श्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० श्री सूरिभिः॥ महिसाणो वास्तव्य॥

[1128]

सं० १५२० वर्षे वैशाष सु० ३ सोमे उपकेश ज्ञा० मह० काल्हू भा० आघू पुत्र ३ जावड़ रतना करमसी स्वमातृनिमित्तं श्री चन्द्र प्रभ स्वामि बिंबं करापितं उपकेश गछे श्री कक्क सूरिभिः सत्यपुर वास्तव्यः॥

[1129]

सं० १५२४ वर्षे ज्ये० सु० ए श्री श्री वंशे स० समधर भार्या जीविणि सुता वाल्ही पि० हेमा युतया पितृ मातृ श्रेयसे श्री अंचल गच्छ श्री जयकेशरी सूरिणामुपदेशेन श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० श्री संघेन।

[1130]

सं० १५५७ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १० दिने प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० साजण भा० माल्हू पुत्र डगड़ा देवराज भा० देवलदे स्वपुण्यार्थं श्री श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० मडाहड़ गच्छ रत्नपुरीय भ० गुणचन्द्र सूरिभिः। उ० आणंदनंद सूरि तेन उपरिकेन।

[1131]

संवत् १५६९ वर्षे आषाढ़ शुदि २ मेडतवाल गोत्र सा० इला भा० मील्हा पुत्र ताल्हा भार्या तिलसिरि स्वपितृश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गछे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

[1132]

सं० १६५२ माह सुदि १० श्री मूलसंघे भ० श्री प्रभचन्द्र देवा तत्पट्टे भ० श्री चन्द्र कीर्त्ति तदाम्नाये चंदवाड़ गोत्रे सं० चाहा पुत्र नेतणाल पुत्र केसे। सुरताण श्रीवंत नित्य प्रणमंति मालपुर वास्तव्य ॥

जयपुर।

श्री सुपार्श्वनाथजी का पंचायती बड़ा मन्दिर।

पंचतीर्थी पर।

[illegible]

सं० १५३६ वर्षे [illegible] श्री [illegible] बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं सूरिभिः।

[illegible]

[illegible]

आचार्य श्री तिहुणकीर्ति गुरूपदेशेन हुंवड़ ज्ञातीय व्य० बाहड़ भार्या लाछी सु० व्य० षीमा भार्या राजूल देवि श्रेयोर्थं सु० का० देवा भार्या राजुल देवि नित्यं प्रणमन्ति।

[1136]

सं० १४३७ वर्षे वैशाष वदि ११ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि गोहा भार्या ललतादि सुत मूजाकेन। पितृभ्रातृश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ का० प्र० श्री रत्नप्रभ सूरीणामुपदेशेन।

[1137]

सं० १४३९ वर्षे पौष वदि ९ सोमे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्री मा० पितृ माषसी भा० मोषलदे प्र० सुत सोमलेन श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बुद्धिसागर सूरिभिः॥ श्रीः॥

[1138]

सं० १४६५ वर्षे ········ आत्मार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री ········।

[1139]

सं० १४६९ वर्षे ऊकेशवंशे नवलषा गोत्रे सा० साघर आत्मश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रति० खरतर ग०। जिनचन्द्रेण ·········· स्तव्य।

[1140]

संवत् १४७९ वर्षे पोस सुदि १२ शुक्रे श्री हुंवड़ ज्ञातीय धावेका गलनयोः पुत्रेण धा० हापाकेन स्वभ्रातृ धावड़ा मुलासी श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपागच्छे श्री रत्नसिंह सूरिभिः॥ शुभं भवतु॥ श्री॥ छ॥

[1141]

सं० १४७४ माह सु० ११ गुरौ श्री ··· १० संवाल्फि गौष्ठिक सा० सुरतण पु० धर्मा भा० ध ··· पु० वास ··· पा नाल्हा स० पित्रोः श्रेयसे श्री श्रेयंस तु० का ··· ान्ति

[1142]

सं० १५०१ वर्षे माह सुदि १० सोमे श्री संडेरगच्छे उपकेश ज्ञा० साह कालू भार्या वाल्ही पुत्र कान्हा भार्या सारू पितृमातृश्रेयोर्थं श्री नमिनाथ बिंबं कारापितं प्रति० प० श्री सांति सूरिभिः।

[1143]

सं० १५०१ माह सुदि १० सोमे श्री ज्ञानकीयगच्छे उपकेश० लोलस गोत्रे साह कान्हा भार्या कर्म्म सिरि पुत्र आला भार्या जाकु पुत्र धाना रामा काना भार्या अरपू आत्म श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारा० प्रति० श्री शान्ति सूरिभिः।

[1144]

सं० १५०१ माह सुदि १० सोमे पिरुत गोत्रे सा० माल्हा पु० अरजुण भार्या साल्ह पुत्र कान्हाकेन भा० हूंदी .... पु० दफस्या श्री पद्मप्रभः का० प्र० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री महीतिलक सूरिभिः आ० विजयप्रभ सूरि सहितैः॥

[1145]

संवत् १५०१ वर्षे फागुण सुदि १३ शनौ ऊ० ज्ञा० जाजा उटाणा सा० कर्मा भा० सागू पु० पेना जइतापेण भा० राणी पु० पंचायण जयता भा० मूंजी पित्रोः श्रे० श्री शान्तिनाथ बिंबं का० श्री चैत्रगछे प्र० श्री मुनितिलक सूरिभिः।

[1146]

सं० १५०२ वै० व० ५ प्रा० व्य० लापा लापगादे पु० नागम्नेन सिंगारदे पु० पाल्हा रतना सोमादि युतेन श्री कुंथु बिंबं का० प्र० तपा रत्नशेखर सूरिभिः।

[1147]

सं० १५०४ फागुण सुदि ११ [illegible] श्रीमाल ज्ञा० [illegible] पुत्रेण सा० [illegible] श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठितं श्री [illegible] श्री पू[illegible]चन्द्र सूरि पट्टे श्री [illegible] सूरिभिः॥

आचार्य श्री तिहुणकीर्ति गुरूपदेशेन हुंवड़ ज्ञातीय व्य० वाहड़ भार्या लाछी सु० व्य० षीमा भार्या राजूल देवि श्रेयोर्थं सु० का० देवा भार्या राजुल देवि नित्यं प्रणमन्ति ।

[1136]

सं० १४३७ वर्षे वैशाष वदि ११ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि गोहा भार्या लखतादि सुत मूजाकेन । पितृभ्रातृश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ का० प्र० श्री रत्नप्रभ सूरीणामुपदेशेन ।

[1137]

सं० १४३९ वर्षे पौष वदि ९ सोमे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्री मा० पितृ माषसी भा० मोषलदे प्र० सुत सोमलेन श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बुद्धिसागर सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[1138]

सं० १४६५ वर्षे ······· आत्मार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री ······· ।

[1139]

सं० १४६९ वर्षे ऊकेशवंशे नवलषा गोत्रे सा० सायर आत्मश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रति० खरतर ग० । जिनचन्द्रेण ·········· स्तव्य ।

[1140]

संवत् १४७९ वर्षे पोस सुदि १२ शुक्रे श्री हुंवड़ ज्ञातीय थावेरा गलनयोः पुत्रेण था० हापाकेन स्वभ्रातृ थावड़ा मुलासी श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपागच्छे श्री रत्नसिंह सूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥ श्री ॥ छ ॥

[1141]

सं० १४८४ माह सु० ११ गुरौ श्री संडेरगच्छे ऊ० आ० संबाभि गौष्ठिक सा० सुरतण पु० धर्मा भा० धर्मसिरि पु० वासलेन भा० कानू पु० नापा नाल्हा स० पित्रोः श्रेयसे श्री श्रेयंस तु० का० प्र० श्री शान्ति सूरिभिः शुभं ।

[1142]

सं० १५०१ वर्षे माह सुदि १० सोमे श्री संडेरगच्छे उपकेश ज्ञा० साह कालू भार्या वाल्ही पुत्र कान्हा भार्या सारू पितृमातृश्रेयोर्थं श्री नमिनाथ विंवं कारापितं प्रति० प० श्री सांति सूरिभिः ।

[1143]

सं० १५०१ माह सुदि १० सोमे श्री ज्ञानकापगच्छे उपकेश० लोलस गोत्रे साह कान्हा भार्या कर्म्म सिरि पुत्र आला भार्या जाकु पुत्र धाना रामा काना भार्या अरपू आत्म श्रेयसे श्री आदिनाथ विंवं कारा० प्रति० श्री शान्ति सूरिभिः ।

[1144]

सं० १५०१ माह सुदि १० सोमे पिरुत गोत्रे सा० माण्हा पु० अरजुण भार्या साण्ह पुत्र कान्हाकेन भा० डूंदी .... पु० दफस्था श्री पद्मप्रभः का० प्र० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री महीतिलक सूरिभिः आ० विजयप्रभ सूरि सहितैः ॥

[1145]

संवत् १५०१ वर्षे फागुण सुदि १२ शनौ ऊ० ज्ञा० जाजा उटाणा सा० कर्म्मा भा० सागू पु० पेना जइतापेण भा० राणी पु० पंचायण जयना भा० मूंनो पित्रोः श्रे० श्री शान्तिनाथ विंवं का० श्री चैत्रगच्छे प्र० श्री मुनितिलक सूरिभिः ।

[1146]

सं० १५०२ वै० व० ५ प्रा० व्य० लापा लापणदे पु० मामन्नेन सिंगारदे पु० पाल्हा रतना सोमादि युतेन श्री कुंथु विंवं का० प्र० तपा रत्नशेखर सूरिभिः ।

[1147]

सं० १५०४ फागुण सुदि ११ कुंनटिया श्रीमाल भा० नाथा[illegible] पुत्रेण भा० मधुभेण श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठितं श्री [illegible] श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिभिः ॥

[1148]

सं० १५०५ आषाढ सुदि ९ श्री उप० सुचिंतित गोत्रे सा० सीहा भा० भावटही पु० सा० सोलाकेन पुत्र पौत्र युतेन आत्म पु० ···· श्री चन्द्रप्रभ बिंबं का० प्र० श्री उपकेशगच्छे श्री कक्क सूरिभिः।

[1149]

सं० १५०६ फा० ब० ९ श्री उ० ग० श्री ककुदाचा० ········ गो० सा० समधर सु० श्रीपाल भा० परवाई पु० मुद ···· भव ससदा रंगाभ्यां पितु श्रे० श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः।

[1150]

ॐ सं० १५०७ वर्षे मार्गशिर सुदि ३ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय जढम गोत्रे संदणसीह भार्या दादाह वीसल भाती महिपाल पु० मगराज साधी आत्मपुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० श्री वृहद्गच्छे श्री सागर सूरिभिः।

[1151]

सं० १५०७ वर्षे चैत्र वदि ५ शनौ लोढा गोत्रे। श्रे० गुणा भार्या गुणश्री पुत्र श्रे० पूजा कचरोभ्यां पितृव्य धन्ना पुण्यार्थं श्री धर्म्मनाथ बिं० का० प्र० खरतर श्री जिनभद्र सूरि श्री जिनसागर सूरि।

[1152]

सं० १५१० वर्षे चैत्र वदि ४ तिथौ शनौ हिंगड़ गोत्रे गौरन्द पुत्रेण सा० सिंघकेन निज श्रेयो निमित्तं श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रति० तपा० भ० श्री हेमहंस सूरिभिः।

[1153]

सं० १५१२ माघ सुदि ७ बुधे श्री ओसवाल ज्ञाती आदित्यनाग गोत्रे सा० सिंघा पु० ज्येल्हा भा० देवाही पु० दशरथेन भ्रातृपितृश्रेयसे श्री अनन्तनाथ बिंबं कारितं श्री उपकेश गच्छे श्री कुकदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः॥

[1154]

सं० १५१५ वर्षे फागुण शुदि ४ शुक्रवारे ओसवाल ज्ञातीय बहश गोत्रे सा० धीना भा० फाई पु० देवा पद्मा मना वाला हरपाल धर्मसी आत्मपुण्यार्थं श्री धर्मनाथ बिं० का० प्र० श्री मलधार गच्छे ···· सूरिभिः।

[1155]

सं० १५१६ वर्षे वैशाख सुदि २ बुधे श्री श्री मा० श्रे० जइता भा० लालू तयो० पु० माधव निमित्तं लालू आत्मश्रेयोऽर्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं का० पिप्पल ग० भ० श्री विजयदेव सू० सु० प्र० श्री शालिभद्र सूरिभिः।

[1156]

सं० १५२३ वर्षे वैशाख सुदि ४ बुधे जालहू राज्ञा० मंचूणा भा० देऊ सुत पितृ पांचा मातृ तेजू श्रेयसे सुत गोयंदेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं पूनिम गच्छे श्री साधुसुन्दर सूरि उपदेशेन प्रतिष्ठितं।

[1157]

। सं० १५२३ वर्षे वैशाख सुदि १३ दिने मंत्रिदलीय ज्ञातीय मुंकगोत्रे सा० रतनसी भार्या वाकुं पुत्र सा० देवराज भार्या रामाति पुत्र सा० मेघराज युतेन स्वपुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खरतरगच्छ श्री जिनहर्ष सूरिभिः॥

[1158]

सं० १५२८ वर्षे विदि १ सोम दिन श्रीमाल वंशे जूनीवाल गोत्रे सा० दाना पुत्र सा० पिउराजकेन समस्तं परिवारेण आत्मश्रेयसे श्री श्रेयांसनाथ बिंबं का० श्री खरतर गच्छे श्री जिनप्रभ सूरि अभिप्रतिष्ठितं श्री जिनतिलक सूरिभिः। शुभं भवतु ॥ छ ॥

[1159]

सं० १५२९ वर्षे आषाढ सु० २ रवौ श्री ओसवाल ज्ञा० चांगाचाल गच्छे पांमेचा गोत्रे सा० साहूल भार्या मेघादे पु० भापर भार्या भावलदे पु० मोढ़ण दूना युतेन मातृ मेघू निमित्तं श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं प्र० भ० श्री वज्रेश्वर सूरिभिः।

[1160]

सं० १५३० वर्षे माघ वदि २ शु० पालणपुर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० नरसिंग भा० नामलदे पुं० कान्हा भा० सांवल पु० षीमा प्रमु माषी भा० सीचू श्रेयोर्थं श्री नमिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे भ० श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

[1161]

सं० १५३० वर्षे मा० व० १० बुधे प्राग्वाट सा० सिवा भा० संपूरी पुत्र सा० पाल्हा भा० पाल्हणदे सुत सा० नाथाकेन भ्रातृ ठाकुरसी युतेन स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत बिम्बं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः धार नगरे।

[1162]

सं० १५३३ वर्षे वै० सुदि ६ दिने श्रीमाल वंशे स० जईता पु० स० मारूण भा० लीलादे पु० षीमा जातड़ युतेन श्री सुपार्श्व बिंबं का० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनचन्द्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः।

[1163]

सं० १५३४ वर्षे कार्त्तिक शुदि १३ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञा० गोत्रजा अम्बिका श्रेष्ठि चांड़साव भा० ऊमकु सुत वानर भा० ताकू सुत जागा भा० नाथी सहितेन स्वपूर्वजश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं का० प्र० श्री चैत्रगच्छे श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

[1164]

सं० १५३४ फा० शु० २ वासावासि प्राग्वाट व्य० आल्हा भा० देसू पुत्र परवतेन भा० नरमी प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे श्री रत्नशेषर पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

[1165]

॥ सं० १५३७ फा० व० ८ बुधे ऊ० पांटड़ गो० म० पूना भा० अचू पु० राणाकेन भा० रयणादे पु० हरपति गुणवंति तेज। हरपति भा० हमीरदे प्रमुख कुटुम्ब सहितेन स्वश्रेयसे

श्री सुमति विंबं का० प्रतिष्ठितं भावहर्षरा गच्छे श्री भावदेव सूरिभिः ॥ खिरहालू वास्तव्येन ॥

[1166]

संवत् १५४५ वर्षे माघ शु० १३ बु० लघुशाखा श्रीमाली वंशे मं० घोघल भा० अकाई सुत मं० जीवा भा० रमाई पु० सहसकिरणेन भा० ललनादे वृद्ध भा० इसर काका सूरदास सहितेन मातु श्रेयसे श्री अंचलगच्छेश श्री सिद्धान्तसागर सूरीणामुपदेशेन श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन श्री स्तम्भतीर्थे।

[1167]

सं० १५४९ वर्षे वैशाष सुदि ५ रवौ उपकेशज अचोवंश० दढागोत्रे सा० साज भा० तेजसर पु० कुंप कोन्हा लहिसा सीधरा अरष युतेन स्वपुण्यार्थं श्री नमिनाथ विं० का० प्रं० श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री मणिचन्द्र सूरिभिः।

[1168]

संवत् १५५७ वर्षे शाके १४२२ वैशाष सुदि ५ गुरौ चण्डाल्या गोत्रे सा० तेजा भा० रूपी पु० अचला भा० देमी आत्मश्रेयसे श्री धर्म्मनाथ विंबं कारापितं श्री मलयधार गच्छपति श्री गुणवषान सूरिभिः।

[1169]

सं० १५६२ व० माघ सु० १५ गु० उ० वैक० गोत्र० सा० जेसा भा० जिसमादे पुत्र राणा भा० पूणदे पु० अनवाल तेजा आ० श्रे० श्रेयांस विं० कारि० चोकड़ी० श्री मलयचन्द्र पट्टे मुणिचन्द्र सूरिभिः।

[1170]

संवत् १५६६ वर्षे फागुण सुदि ३ सोमे विश्वलनगरे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० जीवा भार्या रंगी पुत्र रत्न श्रे० नाहीआ भ्रातृ श्रीवन्त। केन भार्या श्री रत्नादे द्वि० दाडिमदे सुत पीमा नामादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छ भट्टारक श्री हेमविमल सूरिभिः ॥ कल्याणमस्तु ॥

[1171]

संवत् १५७१ वर्षे माघ सुदि ५ रवौ उप० सा० धरमा भा० काउ सु० सोता मांडण सु० रूपा सोता भा० सुहड़ादे सु० नरसिंघ आल्हा नापा माला मारूण भार्या माणिकदे पु० गांगा मोका पदम रूपा भार्या हासू सु० सेटा नोमा सुकुटुम्बेन रूपा नापा निमित्तं श्री शान्तिनाथ बिंबं का० प्र० श्री देवरत्न सूरिभिः ॥

[1172]

सं० १५०७ वर्षे पोस वदि ६ रवौ प्राग्वाट ज्ञातीय प० काका भा० वाक सुत प० पहिराज भा० वरबागं आत्मश्रेयोर्थं श्री चन्द्रप्रभ स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः श्रीरस्तुः ॥

[1173]

सं० १६७७ वर्षे ज्येष्ठ सु० १ दिने सुजाउलपुर वास्तव्य श्री० तिलका श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री विजयदेव सूरिभिः ।

धातु की चौवीशी पर ।

[1174]

सं० १५०९ वर्षे आषाढ सुदि २ सोमे उसिवाल ज्ञातीय सूराणा गोत्रे सा० लषणा भा० सषण श्री पु० सा० सकर्म्मण सा० सिवराजेन श्री कुन्थुनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारितं प्रतिष्ठितं श्री राजगछे भट्टारक श्री पद्माणंद सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1175]

संवत् १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ रणासण वासि श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० धर्म्मा भा० धर्म्मादे सुत भोजाकेन भा० भली प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री शान्तिनाथ चतुर्विंशतिः पट्टः कारितः प्रतिष्ठितं श्री सुविहित सूरिभिः । श्रीरस्तु ॥

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1176]

संवत् १६०१ वर्षे श्री आदिकरण वोटा वा० रंजा श्री श्रीमाली न्यात श्री धर्म्मनाथ श्री विजयदान सूरि।

[1177]

संवत् १५४४ वर्षे फागुण सुदि १ तिथौ बुधवासरे तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री विजय प्रभ सूरि निदेशात् श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं वा० मुक्तिचन्द्र गणिभिः कारितः।

धातु के यंत्र पर।

[1178]

सं० १७५२ पोस सुदि ४ बृहस्पतिवासरे श्री सिद्धचक्र यंत्रमिदम् प्रतिष्ठितं वा० लालचन्द्र गणिना कारितं सवाई जैनगर वास्तव्य से० वषतमल तत् पुत्र सुषलालेन श्रेयोर्थं। छ।

[1179]

सं० १७५६ माघ मासे शुक्लपक्षे तिथौ ५ गुरौ श्री सिद्धचक्र यंत्रं प्र० श्रीमद् बृहत् खरतरगच्छे भ० श्री जिनचन्द्र सूरिभिः जयनगर वास्तव्य श्रीमालान्वय फोफलिया गोत्रीय अनन्दराम त० फूलचन्द तत् पुत्र बहादुरसिंह सपरिकरेण कारितं स्वश्रेयोर्थं।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1180]

ॐ संवत् १४७६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ सोमवासरे ऊकेशवंश पवित्र गोत्रे संघवी जीवल पुत्र सं० जेजा भि० जल ··· पु० वाहड सहितेन आत्मश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री महीतिलक सूरिभिः॥

[1181]

सं० १४९२ आषा० वदि ७ श्री श्रीमालवंशे वडली वास्तव्य सं० सांभा भा० कामलदे पुत्र सं० मना भा० रशदे पुत्राभ्यां सं० समधर सं० सालिग अभ्यो भा० राजू साधू सुत मिघा माणिक रत्ना प्रमुख कुटुम्ब सहिताभ्यां श्री सुपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागछाधिराजैः श्री सोमसुन्दर सूरिभिः शुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥

[1182]

सं० १४९३ वैशाष सुदि ५ उप ज्ञा० आदित्यनाग गोत्रे । सा० पदमा पु० षेढा भा० पूजी पुत्र पीमाकेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं का० श्री उपकेशगछे कुक० प्र० श्री सिद्ध सूरिभिः ॥

[1183]

सं० १५०६ वर्षे माह वदि ९ श्री कोरंटकीयगछे श्री नन्नाचार्य सन्ताने । ऊ० ती० सुचन्ती गोत्रे भा० आभरमुणया पु० हाता भा० हुती पु० मांऊण भा० माणिक पु० षेतादि श्री वासपूज्य बिंबं कारापितं प्र० श्री सांबदेव सूरिभिः ।

[1184]

सं० १५१३ ओसवाल मं० भारमल्ल भावलदे पुत्र रत्नाकेन भा० अपू भ्रा० टीव्हा शिवादि कुटुम्बयुतेन श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री सोमसुन्दर सूरि श्री मुनिसुन्दर सूरि श्री जयचन्द्र सूरि शिष्य श्री रत्नशेषर सूरिभिः ।

[1185]

संवत् १५१७ वर्षे चैत्र शु० १३ गु० प्राग्वाट ज्ञा० सा० लषमण भा० साभू पुत्र साह गोवल भा० राजू युतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्व बिंबं का० प्र० तपागछेश श्री मुनिसुन्दर सूरि तत् पट्टे श्री रत्नशेषर सूरिभिः ॥

[1186]

सं० १५४९ फा० सु० ११ सो० श्री मू० त्रिभुवनकीर्त्ति देशा० तत् पट्टान्व सा० पची । भा० बम्म्हा पु० सा० जनु । भा० चांदंगदे पु० वद्दू भा० नूपा । त्रि० पु० सा० भेवा भा० मानमिरि ब० पु० अजितू भा० नेना कके (?) विजसी .... ।

[1188]

सं० १५५ए वर्षे वैशाख सुदि १३ सोमे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रेष्ठि मंईआ भार्या माणिक सुत सामल भार्या सारू सु० धर्मण धाराकेन स्वपित्र पूर्विज श्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारापितं प्र० श्री विमल सूरि पट्टे श्री बुद्धिसागर सूरिभिः वणज वास्तव्यः ॥

[1189]

ॐ सं० १५५ए वर्षे आषाढ सुदि १० बुधे ओसवाल ज्ञातौ तातहड़ गोत्रे सा० आड भा० गोपाही पु० सुललित । भा० सांगर दे स्वकुटुंबयुतेन श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं ककुदाचार्य सन्ताने उपकेश गच्छे भ० श्री देवगुप्ति सूरिभिः ।

[1190]

सं० १५६३ माह सु० १५ गुरु श्री संडेर गच्छे उसवाल पूगलिया गोत्रे स० काना भा० रानू पु० नरवद भा० राणो पु० तिहुण करमा कुवाला सहसा प्र० आतम पु० श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं कारापितं प्रति० श्री शान्ति सूरिभिः ॥

[1191]

सं० १५६ए वर्षे वैशाष सुदि ६ दिने सूराणा गोत्रे सं० चांपा सन्ताने । सं० नराढ सु० सं० गांडा भा० धणपालही पु० सं० सहसमल्ल भ्रातृ आडा पु० सोमदत्त सुनेन मातृ पुण्यार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं का० श्री धर्म्मघोष गच्छे प्र० भ० श्री नन्दिवर्द्धन सूरिभिः ॥

[1192]

सं० १५७४ वैशाष वदि ५ ओसवंशे बरहड़िया गोत्रे सा० आपा पुत्र सा० रूपा भार्या हीरा दे पुत्र सा० टोडर श्रावकेण स्वश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च [illegible] गच्छे श्रावकेण श्रेयोस्तु ॥

[1193]

संवत् १५०७ वर्षे पोस वदि ५ सकरे सहूआला वास्तव्य प्राग्वाट वृद्ध शाखायां दो० वीरा भा० भाणा भा० भरमा दे तेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिन साधु सूरिभिः ॥

[1194]

सं० १६१२ वर्षे फागुण शुदि २ तिथौ श्री ओसवाल वंशे सा० आढत भा० रेणमा सणो सा० चतुह धर्मते कारापितं श्री वहितेरा गच्छे भ० श्री भावसागर सूरि त० श्री धर्म्म-मूर्त्ति सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री अनन्तनाथ ।

[1195]

॥ संवत् १६२४ वर्षे माहा शुदि ६ सोमे ओसवाल ज्ञातीय दोसी भामा संत दोसी पू० । ज । भार्या बाई मेलाई सुत वानरा श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारापितं ॥ तपागच्छ श्री ७ श्री हीर विजय सूरि प्रति० सावलदन नगरे ।

[1196]

सं० १६५२ वर्षे अलाई ४२ संवत् ॥ माघ सुदि १० दिने सोमवारे ऊकेश वंशे शंख-वाल गौत्रीय सा० रायपाल भार्या रूपा दे पुत्र सा० पूना भार्या पूना दे पुत्र मं० पाता मं० देहाभ्यां पुत्र जिणदास म० चांपा मूला दे मू । सामल सपरिकराभ्यां श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री बृहत् खरतर गच्छाधीश्वर श्री अकबरसाहिप्रतिबोधक श्री जिन-माणिक्य सूरि पट्टालङ्कार युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ।

[1197]

सं० १७०३ वर्षे मार्गशिर्षे सित १ दिने मेडता नगरे वास्तव्य शंखवालेचा गोत्रे सा० डूंगर पुत्र सा० माईदासकेन श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागच्छाधिराज सुवि-हित भट्टारक श्री विजयदेव सूरि पट्टे आचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः ॥ कृष्णगढ नगरे सुदपत नयचन्द्र(?) प्रतिष्ठाया ॥

धातु की चौवीशी पर।

[1198]

॥ संवत् १५३२ वर्षे वैशाख वदि २ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० मामल भा० कांई सु० पाता भा० वाऊं सु० देवाकेन भा० देवलदे प्र० भ्रातृ सासंत भा० लाछी सु० समधर भा० अजी सु० मांभण भोजा राणा द्वि० भ्रा० ऊदा भा० बाई पु० साईआ भा० सहिज्यादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री संभवनाथ चतुर्विंशति पट्टः जीवितस्वामी पूर्णिमापक्षे श्री पुण्यरत्न सूरीणामुपदेशेन का० प्र० सुविधिना साकरग्रामे।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1199]

सं० १६३२ श्री संभवनाथ विंबं पास०।

[1200]

सं० १९७४ माघ तिन २३२ वासा गुलाबचन्द श्री सुमति विंबं कारितं।

[1201]

सं० १०३१ वर्षे मार्गशिर वदि १ शनौ रोहिणी नक्षत्रे भ० श्री विजयधर्म्म सूरीश्वरराज्ये मुनि श्री ऋद्धिविजय गणि प्रतिष्टितं पं० विद्याविजय गणि श्री वृषभनाथ विंबं कारापितं स्वश्रेयसे।

[1202]

श्री ऋषभदेवजी मीती माग श्री सु० ३ सं० १९०६।

[1203]

श्री हंसराज श्रेयोर्थं श्री अभिनन्दन विंबं।

धातु के यंत्र पर।

[1204]

संवत् १८४८ आश्विन शुक्ल १५ दिने तपागच्छाधिराज श्री विजैजिनेन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं सिद्धचक्र यंत्रमिदं कारापितं पटणी बाहादुरसिंहेन स्वश्रेयसे पं० पुन्यविजै गणीनामुपदेशात् ॥

[1205]

संवत् १८५२ पोस सुदि ४ दिने वृहस्पति वासरे श्री सिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं जैनगरमध्ये वा० लालचन्द्र गणिना वृहत् खरतरगछे कारितं बीकानेर वास्तव्य जै० मथेन श्रेयोर्थं ॥ श्री ॥

श्री आदिनाथजी का (नया) मन्दिर।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1206]

संवत् १४७६ वर्षे माघ वदि ११ तिथौ श्री मालान्वये ढोर गोत्रे सा० तोल्हा तद्भार्या भा० माणी तत् पुत्र सा० महराज श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगछे भ० श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥

[1207]

सं० १४९९ फागुण वदि २ गुरो श्री उपकेश ज्ञातौ श्री धरकट गोत्रे सा० हरिराज प्रसिद्धनाम सा० बगुला पुत्रेण सा० लापा श्रावकेन भार्या गजसीही पुत्र वलिराज युतेन श्री संभवनाथ बिंबं का० प्र० श्री वृहद्गछे श्री रत्नप्रभ सूरिभिः।

[1208]

॥ सं० १५२४ वर्षे ज्येष्ट शुदि ५ ऊ० सा० लापा भा० लषमादे सा० गुणराज धर्म्म

पुत्री श्रा० धारू नाम्न्या श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छनायक श्री सोमसुन्दर सूरि संताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ सा० गुणराज सुत सा० कालू सुत सा० सदराज ॥

[1209]

सं० १५३१ वर्षे चैत्र वदि ७ बुधे चंदेरा वास्तव्य ओसवाल सा० दापा भा० हरषमदे सुत समराकेन भार्या शीतादे सु० वेला मेघराज हंसराज प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री अनंत बिंबं का० प्र० श्री षरतरगच्छे भ० श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[1210]

सं० १५३६ ज्येष्ठ शु० ५ रवौ उप० सीसोदिया गोत्रे सा० देवायत भार्या देवलदे पु० षेता भार्या षेतलदे पुत्र भाषर युतेन स्वपुण्यार्थं श्री नमिनाथ बिंबं कारापितं प्रति० संडेर-वालगच्छे श्री सालि सूरिभिः ।

[1211]

॥ सं० १५४२ वर्षे वैशाष सुदि ए शुक्रे ऊकेश ज्ञा० सिंघाडिया गोत्रे सं० रेडा सं० सा० कदा भार्या जदतदे पु० सा० झाझू श्रीमल जिणदत्त । पारस युतेन आ० पु० श्री मुनिसुव्रत बिंबं का० श्री मेरुप्रभ सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1212]

संवत् १५५ए वर्षे माग्रस (मार्गशीर्ष) शु० १५ सोमे श्री श्रीमाल भ० वरसिंग भा० देसी० सु० हेसा सु० हराज सु० जयता पोमा सु० पांचाकेन आत्मश्रेयसे श्री संभवनाथ बिंबं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे श्री मनसिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितं मारवीआ (ग्रामे ?) ।

[1213]

॥ संवत् १५७० वर्षे माघ सुदि १३ भूमे श्री प्राग्वाट० सा शेवा भा० सहजलदे पुत्र हरपा रूपा हरपा भा० लारुकि पुत्र मातृपितृभ्रातृ भृ० श्रेयोर्थं श्री श्री श्री आदिनाथ बिंबं कारापितं । प्रतिष्ठितं श्री नागेन्द्रगछे भट्टा० श्री हेमसिंघ सूरिभिः ।

[1214]

॥ संवत् १६२० वर्षे फाल्गुन शुदि ७ बुधे कुमरगिरि वासि प्राग्वाट ज्ञातीय [illegible] गोत्रे व्यवहा० खीमा भा० कनकादि पुत्र व्य० ठाकरसी भा० सोभागदे [illegible] परिवारयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं। प्रतिष्ठितं श्री बृहत्तपागच्छे [illegible] श्री विजयदान सूरि पट्टे श्री पूज्य श्री श्री श्री हीरविजय सूरिभिः [illegible]

[1215]

[illegible] १३ सोमे श्रीस्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री श्रीमाल ज्ञातीय [illegible] श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं [illegible] श्री हीरविजय सूरिभिः प्रतिष्ठितं शुभं भवतु ॥

[illegible] की [illegible] पर।

[1216]

[illegible] श्री [illegible] ज्ञातीय सा० [illegible] भा० [illegible] भा० [illegible] श्रेयार्थं [illegible] श्री आगमगच्छे श्री [illegible] सूरि प्रतिष्ठितं [illegible]

[illegible] पर।

[illegible]

[illegible] तपागच्छे प्रतिष्ठितं।

[illegible]

[illegible] बिंब श्री तपागच्छे।

धातु के यंत्र पर।

[1219]

संवत् १८५२ वर्षे ७ पोष सुदि ४ दिने सिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं वा० लालचन्द्र गणिना कारितं सवाई जयनगरमध्ये समस्त श्रीसंघेन वृहत् परतरगछे। शुभमस्तु॥

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर—श्रीमालोंका महल्ला।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1220]

सं० १४६५ वर्षे वैशाप सुदि ३ सापुला गोत्रे सा० वेला भार्या स० वील्हणदे पु० साधु पिमराज पेमाभ्यां पितृ मातृ श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं॥ प्र० श्री धर्म्मघोषगछे श्री सोमचन्द्र सूरि पट्टे श्रीमलचन्द्र सूरिभिः॥

[1221]

सं० १५११ वर्षे माघ शु० ५ गुरू श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० मकुणसी भार्या नाऊ सुत कीयाकेन पितृमातृनिमित्तं आत्मश्रेयोर्थ श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीब्रह्माणगछे श्री मुनिचन्द्र सूरिभिः मेहूणा वास्तव्य। श्री।

[1222]

संवत् १५३० वर्षे पोष वदि ६ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञा० मंत्रि समधर भा० श्रीयादे सुत धीकाकेन आत्मश्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री पिप्पलगछे श्री गुणदेव सूरि पट्टे श्री चन्द्रप्रभ सूरिभिः राजजयाने।

[1223]

सं० १५३१ वर्षे वै० शु० १० सोमे ऊकेशे सोटा गोत्रे सा० चाहड़ भा० देल्ह सु०

नील्हा भा० सोनी करमी सु० सा० हासकेन भ्रातृ सा० नाऊ सा० षेत हासा भार्या रतनी सु० सा० ठाकुर सा० ईसरदास० ऊधादि प्रमुखयुतेन स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं का० प्रति० श्री बृहद्गच्छ श्री सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1224]

॥ संवत् १५५५ वर्षे फागुण सुदि ए बुधे सीधुड गोत्रे ठधरि गरुपाल भा० गोरादे सुत वस्तुपाल भ्रातृ पोमदत्त वस्तपाल भा० वल्हादे पुत्र त्रैलोक्यचंद्र श्रेयोर्थं श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतरगच्छे भ० श्री जिनसमुद्र सूरिभिः ॥

[1225]

संवत् १६२४ वर्षे वै० शुदि १ शुक्रवासरे तपगच्छे नायक भ० प्रभ श्री हीरविजय सूरि मनराजो श्री पद्मप्रभ बिंबं प्रतिष्ठितं प्रतिष्ठापितं नागपर गहिलड़ा गोत्र सा० अमीपाल भा० अमूलकदे पु० कूअरपाल भा० कुरादे प्रतिष्ठितं शुभं भवति ॥

धातु की मूर्त्ति पर।

[1226]

सं० १०७७ माघ शुक्ल १३ बुधे श्री पार्श्वनाथ जिन बिंबं कारितं। प्र० बृ० त ख० श्री जिनचन्द्र सूरिभिः।

धातु के यंत्र पर।

[1227]

संवत् १०५६ वर्षे वैशाष मासे शुक्ल पक्ष तिथौ ३ बुधे श्री सिद्धचक्र यंत्र प्रतिष्ठितं भ० जिनअक्षय सूरि पट्टालङ्कार श्री जिनचन्द्र सूरिभिः जयनगर वास्तव्य श्रीमालान्वये सींघड गोत्रीय किसनचन्द्र तत्पुत्र उदयचंद्र सपरिकरेण कारितं स्वश्रेयोर्थं ॥

[1228]

सं० १९०२ वर्षे आश्विन मासे शुक्ले पक्षे पूर्णमासी तिथौ बुधे जयनगर वास्तव्य

श्रीमालवंशे फोफलिया गोत्रीय चुनीलाल तत् पुत्र हीरालालेन श्री सिद्धचक्र यंत्र कारितं चारित्रउदय उपदेशात् प्र० ज० खरतरगच्छीय श्री जिननन्दीवर्द्धन सूरिभिः पूजकानां ········ती भूयात् ।

आम्बेर । *

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1229]

सं० १३७० वर्षे पोष सुदि १२ सोमे श्री काष्ठासंघे ········ सुत ताहड़ श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ प्रतिष्ठितं ।

[1230]

सं० १५२५ वर्षे मार्गसिरि वदि १२ शुक्रे उपके० चोवड़ गोत्रे सा० अड़ पुत्र खोला भार्या खाकिमदे ···· स्वश्रेयसे पितृमातृपुण्यार्थं श्री चंद्रप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधार गच्छे श्री गुणसुन्दर सूरिभिः ।

[1231]

॥ सं० १५४२ वर्षे फागु० व० २ दिने मीनोगेचा गो० ओस० सा० नृग भा० नृगमादे पु० परवत भा० सहजादे तथा परवत देवू भनधर बीजा महम भा० पगमलदे नटिल भा० सहजा पुण्यार्थं श्री संभवनाथ बिंबं का० प्र० श्री नाणकीयगच्छे श्री धनेश्वर सूरिभिः । ध्रु ।

* [illegible]

अलवर ।

पाषाण के मूर्त्ति पर ।

[1232] *

(१) ॥ सिद्धि ॥ संवत् १५१० वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ दिने शुक्रवासरे श्री गोपाचल नगरे राजाधिराज श्री डूंगर-सिंह-देवराज्ये ऊकेश वं (वं) शे ।

(२) [पं] चलउट गोत्रे जण्डारी देवराज जार्या देल्हणदे तत्पुत्र जं० नाथा जार्या रूपाई स्वश्रेयोर्थं श्री संजवनाथ विंबं कारितं प्रति-

(३) ष्ठितं श्री षरतरगछे श्री जिनचन्द्र सूरि शिष्य श्री जिनसागर सूरिजिः ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥ ७ ॥

नागौर ।

श्री ऋषजदेवजी का वड़ा मंदिर—हीरावाडी ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1233]

१। ॐ संवत् सु० १०६६ फाल्गुन विदि २

२। मा मुलक व सतो पाहूरि सा-

३। वकेणं सन्तरसुतेन नित्य-

४। श्रेयोर्थं कारिताः ॥

[1234]

संवत् १३६१ वर्षे .... सुदि २ सोमे श्रेष्ठि धणपाल जार्या पाल्ह पुत्रेण कुमरसिंह श्रावकेण आत्मश्रेयोर्थं श्री महावीर विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री .... ।

* यह लेख राय गौरीशङ्करजी बहादुर से मिला है उनके विचार से इस लेख का राजाधिराज डूंगरसिंह देव ग्वालिअर का तंवर (तोमर) वंशी-राजा डूंगरसिंह ही हैं। इस मूर्त्ति की मूल प्रतिष्ठा ग्वालिअर मे हुई थी, यहां से किसी प्रकार अलवर पहुंची है।

[1235]

संवत् १४३० वर्षे चैत्र सुदि १५ सोमे रावगणे वोवे (?) नेपाल ज्ञा० पूरी पु० सा० पेथा स्वपितृमातृश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री पद्मशेखर सूरिभिः ॥

[1236]

संवत् १४५० वर्षे वैशाख वदि २ बुधे उपकेश ज्ञातीय केकड़िया गोत्र .... सा० रूदी ३ जेस सा० जससादे पित्रोः श्रे० श्री चन्द्रप्रभस्वामि बिंबं का० रामसेनीय श्री धनदेव सूरि पट्टे श्री धर्म्मदेव सूरिभिः ॥

[1237]

संवत् १४५० वर्षे फाल्गुण वदि [illegible] बुधे उपकेशीय [illegible] सा० [illegible] सा० सजना सा० श्रीयादे पु० [illegible] श्री [illegible] बिंबं [illegible]

श्री शान्ति सूरिभिः ॥

[illegible]

संवत् १४५३ वर्षे वैशाख वदि [illegible] [illegible] देपालादियुतेन श्री शान्तिनाथ [illegible] श्री [illegible] सूरिभिः ॥

[illegible]

संवत् [illegible] [illegible] श्री [illegible] सूरिभिः ॥

[illegible]

संवत् [illegible] [illegible] श्री हेम[illegible] सूरि[illegible]

[1241]

संवत् १४७५ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ७ भौमे प्राग्वाट् ज्ञातीय व० साढा श्री जादी पु० सहसा भा० सीतादे पु० पाल्हा स० आत्मश्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं कारितं प्रति० पूर्णिमा पक्षे श्री सर्वानन्द सूरिभिः ॥

[1242]

संवत् १४८० वर्षे माह सुदि .... पक्षे श्री ओसवंशे कठग ज्ञातीय सा० अजीआ सुत सा० जेसा भार्या जासू पुत्र पोमासाणादिभिः अञ्चलगच्छेश श्री जयकीर्त्ति सूरीणामुपदेशेन श्री चन्द्रप्रभ विंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

[1243]

संवत् १४८३ वर्षे वैशाख सुदी ३ सोमे उपकेश ज्ञातीय सा० टाहा भा० कर्म्मादे पुत्र मेघा भा० अणुपमदे सहितेनात्मश्रेयसे श्री वासुपूज्य विंवं कारितं प्रति० श्री अमरचन्द्र सूरिभिः ॥

[1244]

सवत् १४८३ वर्षे फाल्गुन विदि १ दिने श्रीवीर विंवं प्रतिष्ठितं श्री जिनचन्द्र सूरिभिः उपकेशवंशे सा० वाहरू पुत्र पूजाकेन कारितम् ॥

[1245]

संवत् १४८५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ बुध उपकेश वंशे लघुशाखा मएरूए सा० मन्दविक भार्या फदकू सुत सा० डूंगरसी भार्या दल्हादे पुत्र सा० सोना जीवा श्रीनेन मातृपुण्यार्थं श्री मुनिसुव्रत विंवं कारितं प्रति० श्री खरतरगच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरि तत् पट्टे श्री जिनसागर सूरिभिः ॥

[1246]

संवत् १४८६ वर्षे फाल्गुण सुदि ९ बुधे उपकेश ज्ञातीय व्यव० शाखा भा० चांपू पुत्र ऊधरणकेन भार्या देपू सहितेन आत्मश्रेयसे श्री वासुपूज्य विंवं कारितं प्रति० वोकडियागच्छे भट्टा० श्री धर्म्मतिलक सूरिभिः ॥

[1247]

संवत् १४९८ वर्षे फाल्गुण विदि ४ फांफटिया गोत्रे सा० मोहण भार्या कुमरी पुत्र सा० मेहाकाहाभ्यां स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्यं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री पद्मशेखर सूरि पट्टे श्री विजयचन्द्र सूरिभिः ॥

[1248]

संवत् १५०१ वर्षे आषाढ सुदि ९ दिने उपकेशवंशे करमदिया गोत्रे सा० वील्हा तत् पुत्र सा० धना पुत्र भाषा वाल्हा वाढा प्रमुख परिवारेण श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री खरतरगच्छे श्रीमत् श्री जिनसागर सूरि शिरोमणिभिः ॥ शुभम् ॥

[1249]

संवत् १५०४ व्य० (वर्षे) गवल्हो रत्नदे पुत्र लक्ष्मण जाल्हणदे पुत्र नाथू भा० दोया भ्रातृ चीढा युतया सूल्ही नाम्ना कारितः श्री सुपार्श्वः। प्रति० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥

[1250]

संवत् १५०७ वर्षे कार्त्तिक सुदि ११ शुक्रे प्राग्वाट कोठा० लापा भा० लापणदे पुत्र को० परवत .... भोला काहा नाना डुंगर युतेन श्री संभवनाथ बिंबं कारितं उएस गच्छे श्री सिद्धाचार्य सन्ताने प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1251]

सं० १५०७ वर्षे माह सुदि १३ शुक्रे पटवड़ गोत्रे सा० साल्हा भार्या सोना पुत्र सा कुसमाकेन भा० कमलश्री पुत्र धानादियुतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्म्मघोषगच्छे पद्माणन्द सूरिभिः .... श्री हेमचन्द्र सूरीणामुपदेशेन ॥

[1252]

संवत् १५०९ वर्षे चैत्र सुदि १२ श्री काष्टासंघे श्री मलयकीर्त्ति श्री राल्ह भार्या चील्ह

पुत्र राजा भार्या साल्ही द्वितीय पुत्र पद्दराणी राजा सुता हरूरु पठमदरा रतल एतेषां प्रणमति ॥

[1253]

संवत् १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ३ उपकेश ज्ञातीय आईरी गोत्रे सा० लूणा पुत्र सा गिरिराज भा० सुगुणादे पु० सोनाकेन ठाकुर देवात् श्री चन्द्रप्रभस्वामि बिंबं का० उपकेश गच्छे ककुदा० प्र० श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1254]

संवत् १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ९ बुधे श्री ओसवंशे वृद्धशाखीय सा० हता भा० रंगादे पुत्र सा० माका श्री सुमतिनाथ बिंबं कारापितं श्री साधु सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीरस्तु श्री अमदाबाद वास्तव्य ॥

[1255]

संवत् १५०९ वर्षे मार्गशिर सुदि ७ दिने उपकेशवंशे साधुशाखायां सा० लखमण सुत सा० महिपाल सा० वील्हाख्यौ तत्र सा० महिपाल भार्या रूपी पुत्र प० तेजा सा० वस्ताभ्यां पुत्रादि परिवारयुताभ्यां स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं श्री खरतर श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनभद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥

[1256]

संवत् १५०९ वर्षे माह सुदि ५ सोमे उपकेश ज्ञातौ श्रेष्टि गोत्रे सा० कूरसी पु० पासड़ भा० जइनलदे पु० पारस भा० पाल्हणदे पु० पदा परवतयुतेन पितृश्रेयसे श्री संभवनाथ बिंबं कारितं उ० श्री ककुदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः।

[1257]

संवत् १५०९ वर्षे माघ सुदि १० शनौ श्रीमाल् ज्ञा० सुठीया गोत्रे सा० पिउंपाल पु० सोनाकेन आत्मश्रेयसे आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनतिलक सूरिभिः ॥

[1258]

संवत् १५१० वर्षे चैत्र सुदि १३ गु० प्राग्वाट सा० गोगन भार्या सहू पुत्र सां० जेसाकेन भा० राणी ...... भ्रातृ जामा भा० हीरू प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारापितं प्रति० तपागच्छेश श्री रत्नसागर सूरिभिः ॥

[1259]

संवत् १५११ वर्षे मार्गशिर सुदि ५ रवौ उपकेश ज्ञातीय शाह आसा भा० अहविदे सु० शाह ठाकुरसी भा० जानू स्वहितेन पितृ भ्रातृ श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारापितं श्री कोरण्टगच्छे प्रति० श्री सावदेव सूरिभिः ॥

[1260]

संवत् १५१२ मार्ग० शुदि १५ .... वारे प्राग्वाट श्रेष्ठि गोधा भा० फसी सुत नरदे सहसा नाटा भा० धीराकेन भा० तारू सुत खीमादिकुटुम्बयुतेन निजश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिभिः ।

[1261]

संवत् १५१२ माघ विदि ७ बुधे उपकेश ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे सा० तेजा पुत्र सुदका भा० सोना पु० सादावच्छा हंसा पासादेवादिभिः पित्रोः श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं उपकेश गच्छे ककुदाचार्य सन्ताने श्रीकक्क सूरिभिः ।

[1262]

संवत् १५१२ वर्षे फाल्गुन सुदि ९ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्य० नरसी सुत काला सुतवर्द्धमान सुत दो० वाछाकेन भा० कूअरि सुत सा० अरण प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वभ्रातृ जयारामा तौ श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री श्री रत्नशेखर सूरिभिः ।

[1263]

संवत् १५१२ वर्षे फाल्गुन सुदि १२ श्री उपकेशगच्छे श्री कक्कुदाचार्य सन्ताने श्री उपकेश ज्ञातौ श्री आदित्यनाग गोत्रे सा० आसा भा० नीबू पुत्र ठानू भा० गाजलदे पितृ मातृश्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1264]

संवत् १५१३ वर्षे वैशाख सुदि ५ शुक्रे गूंदोचा गोत्रे सा० धीरा भार्या धारलदे पु० देना भा० मकूजलदे पाल्हा भा० पोमादे० स्वश्रेयोर्थं संभवनाथ बिंबं का० प्र० श्री चित्रावालगच्छे श्री मुनितिलक सूरि पट्टे श्री गुणाकर सूरिभिः ।

[1265]

संवत् १५१३ वर्षे आषाढ सुदि २ गुरु दिने उपकेश ज्ञातीये मणूसेचा गोत्रे सा० [illegible] सा० [illegible] पुत्र रणमल्ल भार्या रत्नादे पु० माहायुतेन श्री आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री बृहद्गच्छे जाणोरावटंके भट्टा० श्री हेमचन्द्र सूरि पट्टे श्री [illegible] सूरिभिः ॥

[1266]

संवत् १५१३ [illegible] सुदि [illegible] उपकेश वंशे सोढा गोत्रे सा० जूणा पुत्रेण सा० [illegible] [illegible] श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रति० तपा भट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिभिः ॥

[1267]

[illegible] वर्षे [illegible] दिने श्री उपकेश ज्ञातौ [illegible] गोत्रे सा० [illegible] [illegible] [illegible] भट्टारक श्री [illegible] पट्टे श्री देवसुन्दर सूरि पट्टे श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ॥

[1268]

संवत् १५१९ वर्षे वैशाख वदि ११ टौवाची वासि प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० केसव भा० भोली सुत सा० लाकणेन भा० सरगादे सुत जसवीर प्रमुखकुटुम्बयुतेन निजश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छाधिराज श्री श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1269]

संवत् १५१९ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे श्री ब्रह्माणगच्छे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रेष्ठि देवा भा० हरषू सुत चाम्पाकेन भार्या जईती करणकुंभायुतेन पित्रो श्रेयसः श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बुद्धिसागर सूरि पट्टे श्री विमल सूरिभिः ॥ सुडीयाणा वास्तव्य ।

[1270]

संवत् १५१९ वर्षे माघ सुदि १० ऊपकेशवंशे गुनगोत्रे सा० गूजरेण भा० गउरदे पुत्र पेदा धजाणद भा० कुसलगदे पाटेनाट (?) सहितेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[1271]

संवत् १५२० वर्षे मार्गशीर्ष वदि १२ ऊपकेश० ज्ञातौ श्रेष्ठि गोत्रे वैद्य सा० मांगण पुत्र स० सोनाकेन भार्या लाछलदे पुत्र समस्त स० कुटुम्ब संसारचन्द्रनिमित्तं श्री चन्द्रप्रभ स्वामि बिंबं का० प्र० ऊपकेश गच्छे कुकुदाचार्य सन्ताने श्री कक्क सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[1272]

संवत् १५२१ माघ सुदि [illegible] ऊकेश ज्ञातीय [illegible] पुत्र [illegible] भार्या [illegible] पुत्र सांगा [illegible] सहितेन श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्री [illegible] सूरिभिः ॥

[1273]

संवत् १७२४ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे दिने प्रा० वंशे सा० आका भार्या ललतादे तयो पुत्र भाग भार्या बीजलदे श्री अञ्चलगच्छे श्री श्री केशरि सूरीणामुपदेशेन निज श्रे० श्री [illegible] बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ जयतलकोट वास्तव्य: ॥

[1274]

[illegible] वर्षे मार्गशीर्ष सुदि ११ शुक्रे उपकेश ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे सा० [illegible] भार्या [illegible] पुत्र श्रीचन्द्र शिवरताभ्यां मातृपुण्यार्थं श्री शीतलनाथ [illegible] श्री [illegible] गच्छे श्री ककुदाचार्य सन्ताने श्रीकक्क सुरिभिः ॥ [illegible]

[1275]

[illegible] उपकेश ज्ञातीय [illegible] गोत्रे साह [illegible] सा० [illegible] पुण्यार्थं श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री [illegible] श्री [illegible] सूरिभिः शुभम् श्रीरस्तु ॥

[1276]

[illegible] सा० [illegible] श्री [illegible] नाथ बिंबं कारापितं प्रति० [illegible] सूरिभिः [illegible]

[1277]

[illegible]

[1278]

संवत् १५२७ वर्षे पौष विदि ६ शुक्रे उप० गहिलड़ा गो० सा० षेढा भा० दाड़िमदे प्रभृति पुत्रादियुतेन स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गच्छे श्री विद्यासागर सूरि पट्टे श्री गुणशेखर सूरिभिः ॥ खीमसा वास्तव्य ॥

[1279]

संवत् १५२७ वर्षे प्राग्वाट् सा० प्रथमा भा० पाल्हणदे सुत सं० परवत भा० चाम्पू सुत सा० नीसलेन भा० नांई श्रेयोर्थं सुत जगपालादि कुटुम्बयुतेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रति० तपा लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

[1280]

संवत् १५२९ वर्षे वैशाख विदि ६ चंद्रे उपकेश ज्ञातौ डूगड़ गोत्रे सा० सिखा भा० थली पुत्र धनपालेन भा० सारू पु० नागिन सोनपाल प्रमुख सहितेन स्वश्रेयसे श्री शीतल-नाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री वृहद्गच्छे श्री मेरुप्रभ सूरिभिः।

[1281]

संवत् १५२९ माघ सुदि ६ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय पिल्हवेलापट (?) नामलदे सु० नाजा भा० राजलदे सु० कर्मसी तेजा सा० श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं श्री पूर्णिमापक्षीय श्री साधुसुन्दर सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं। जूड़ारुड़ वास्तव्यः ॥ श्री ॥

[1282]

संवत् १५३० वर्षे वैशाख सु० ३ उपकेश ज्ञातीय सा० रणसिंह भा० तेजलदे पुत्र सा० कीताकेन भा० कुतिगदे प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ जूड़ाना वास्तव्य ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

[1283]

संवत् १५३० वर्षे माघ सुदि ४ प्रा० ज्ञा० रादा भा० भाव पु० सिंगोड़ी वासी सा० सांरूणेन भा० माणिकदे पु० लपमादियुतेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं तपा श्री सोमसुंदर सूरि सन्ताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[1284]

सं० १५३० वर्षे फाल्गुण सुदि ७ बुधे श्रीमाल ज्ञातीय सा० राना भा० राजलदे भागेयर स्वश्रेयोर्थं श्री अंचलगच्छे श्री जयकेसरि सूरीणामुपदेशेन श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

[1285]

संवत् १५३२ वर्षे वैशाख सुदि १० शुक्रे श्री उएसवंशे चएडालिया गोत्रे सा० नेमा भा० भींभी पुत्र सा० सोहिल भार्या माईणी पुत्र सा० पहिराज भार्या पाल्हणदे पुत्र सा० रत्नपाल सुश्रावकेण पितृव्य शाह गोपाल प्रमुख कुटुम्ब सहितेन पितुः श्रेयसे श्री सुविधि-नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गच्छे श्री पुण्यनिधान सूरिभिः ॥ पहिराज पुण्यार्थं ॥

[1286]

संवत् १५३३ वर्षे चैत्र सुदि ४ शुक्रे ओसवंशे बावेल गोत्रे सा घेल्हा पुत्र शा० खेता भा० खेतश्री पुत्र शा० देदाकेन स्वपिता श्रेयसे श्री अभिनन्दन नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गच्छे श्री गुणसुन्दर सूरि पट्टे श्री गुणाननिधान सूरिभिः ॥

[1287]

संवत् १५३४ वर्षे ज्येष्ठ शित १० दिने सोमे उपकेशवंशे कटारीय गोत्रे भापचा भार्या पाल्हणदे पुत्र सामरसिंह श्रीरकेण श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्रति० श्री षरतरगच्छे श्री जिनचन्द्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥ श्रेयसे ॥

[1288]

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ उप० कयणआ गोत्रे सा० लषमण भार्या लषमादे पु० टिता साभा भा० कील्हणदे स्वश्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्र० जापकाण गछे श्री कमलचन्द्र सूरिभिः ॥

[1289]

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ ऊकेश वंशे जहड गोत्रे सा० भगच पुत्र सा० खरहकेन भा० नीविणि पुत्र माला वला पासड सहितेन धर्म्मनाथ बिंबं निज श्रेयोर्थं कारापितं श्री खरतरगछे भट्टा० श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[1290]

संवत् १५३४ वर्षे माह वदि ५ तिथौ सोमे उपकेश ज्ञाती धरावही गोत्रे लढण वीर्पा स० कान्हा भार्या हीमादे पुत्र ससपाक तिहुअणाभ्यां पित्रोः पुण्यार्थं श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं श्री कन्हरसा तपागछे श्री पुण्यरत्न सूरि पट्टे श्री पुण्यवर्द्धन सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1291]

सं० १५३४ मा० शु० १० डा० व्य० नरसिंह भार्या नमलदे पुत्र मेलाकेन भा० वीराणि सुत रातादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ पालणपुरे ॥

[1292]

संवत १५३५ वर्षे आषाढ द्वितीया दिने उपकेश ज्ञातीय आयार गोत्रे लूणाउत शाखायां सा० जांजा पु० चउत्थ० भा० मयलहदे पु० मूलाकेन आत्मश्रेयसे श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं ककुदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1293]

संवत १५४६ वर्षे आषाढ विदि २ ओसवाल ज्ञातौ श्रेष्ठि गोत्रे वैद्य शाखायां सा०

सिंघा भा० सिंगारदे पु० वींझा झाजू ताभ्यां पुत्र पौत्र युताभ्यां श्री चन्द्रप्रभ विंबं सा० सिंधा पुण्यार्थं कारापितं प्र० श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1294]

संवत् १५५२ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ ओसवाल ज्ञातीय म० साइजा भा० केल्ही सु० ठाकुरसीकेन भार्या गिरसू सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री आदिनाथ विंबं कारितं श्री वृद्धतपापक्षे भ० श्री जिनसुन्दर सूरिभिः प्रतिष्ठितं च विधिना ॥

[1295]

संवत् १५५५ वर्षे चैत्र सुदि ११ सोमे उपकेश वंशे मेडतावाल गोत्रे शा० पगारसीह सन्ताने शा० सहसा सु० हा० श्रवण भा० सालिगसुतेन श्री अजितनाथ विंबं कारितं प्र० हर्षपुरीय गछे भट्टारक श्री गुणसुन्दर सूरि पट्टे ॥ श्री ॥

[1296]

संवत् १५५६ वैशाख सुदि ३ शनौ श्री सण्डेरगछे ऊ० बढाला गोत्रे सा० लूसा लीला पु० लाला हरा लोभा भार्या तारू पु० हरालजइ (?) तू पु० पु० सु० श्रे० श्री शांतिनाथ विंबं कारितं प्र० श्री शान्ति सूरि ···· ।

[1297]

संवत् १५५९ आषाढ सुदी १० बुधे श्री पल्हुवम्ब गोत्रे शा० तोला सन्ताने कुँअरपाल पुत्र साधू ···· वेत भा० देवल० पु० णाए रूपचंद युतेनात्मश्रेयसे श्री कुंथुनाथ विंबं कारितं प्र० वृहद्गच्छे भ० श्री मेरुप्रभ सूरि पट्टे श्री मुनिदेव सूरिभिः ॥

[1298]

संवत् १५५९ वर्षे माह सुदि १० दिने शनिवारे उपकेशवंशे सखवाल गोत्रे सा गुणदत्त भार्या जंगादे पुत्र सा० धणदत्त भार्या धन श्री पुत्र सा० हीरादे परिवारयुतेन श्री शीतल

नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनसमुद्र सूरि पट्टे श्री जिनहंस सूरिभिः ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्रीः ॥

[1299]

संवत् १५६३ वर्षे माह सुदि १५ ऊ० ऊच्छितवालगोत्रे संघवी देवा भा० देवलदे सा० वीरहा भार्या वील्हणदे पुत्र तेजा वस्ता धन्ना आत्मपुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री श्री श्रुतसागर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[1300]

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुन सुदी ३ सोमवासरे उपकेशवंशे रांका गोत्रे शा० श्रीरंग भा० देऊ पु० करमा भा० रूपादे स्वश्रेयसे आत्मपुण्यार्थं नमिनाथ बिंबं कारितं प्र० उपकेश गच्छे भ० श्री सिद्ध सूरिभिः ॥

[1301]

संतव १५७२ वर्षे वैशाख सुदि ५ सोमे श्री श्रीवंशे मं० सिंघा भा० रहा पु० मं० करण भा० रमादे पु० मं० अजा सुश्रावकेण भा० आहवदे पु० राणा तथा पितृव्य पु० मा० गोगद प्रमुखसहितेन मातृ साधुपुण्यार्थं नागेन्द्रगच्छे सुगुरूणामुपदेशेन श्री वासुपूज्य बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन वीवलापुरे ॥

[1302]

संवत् १५७८ वर्षे चैत्र सुदि ५ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० राजा भा० रमादे पुत्र खीमाकेन भा० हीरादे पुत्र धनादि समस्त कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रतस्वामी बिंबं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे भीमपल्लीय भ० श्री चारित्रचन्द्र सूरि पट्टे श्री मुनिचन्द्र सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ नेवीआए मगम वास्तव्य ॥

[1303]

ॐ संवत् १५७६ वर्षे ज्येष्ट सुदी ए ऊ० सुराणा गोत्रे शा० हेमराज नार्या न० हेमश्री

सिंघा भा० सिंगारदे पु० वींका ठाजू ताभ्यां पुत्र पौत्र युताभ्यां श्री चन्द्रप्रभ बिंबं सा० सिंधा पुण्यार्थं कारापितं प्र० श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1294]

संवत् १५५२ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ ओसवाल ज्ञातीय म० साइजा भा० केल्ही सु० ठाकुरसीकेन भार्या गिरसू सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं श्री वृद्धतपापक्षे भ० श्री जिनसुन्दर सूरिभिः प्रतिष्ठितं च विधिना ॥

[1295]

संवत् १५५५ वर्षे चैत्र सुदि ११ सोमे उपकेश वंशे मेडतावाल गोत्रे शा० पगारसीह सन्ताने शा० सहसा सु० हा० श्रवण भा० सालिगसुतेन श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्र० हर्षपुरीय गछे भट्टारक श्री गुणसुन्दर सूरि पट्टे ॥ श्री ॥

[1296]

संवत् १५५६ वैशाख सुदि ३ शनौ श्री सण्डेरगछे ऊ० बहाला गोत्रे सा० लूसा लीला पु० लाला हरा लोभा भार्या तारू पु० हरालजइ (?) तू पु० पु० सु० श्रे० श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री शान्ति सूरि ···· ।

[1297]

संवत् १५५९ आषाढ सुदी १० बुधे श्री पल्हुवष्ट गोत्रे शा० तोला सन्ताने कुँअरपाल पुत्र साधू ···· वेत भा० देवल० पु० णए रूपचंद युतेनात्मश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० बृहद्गच्छे भ० श्री मेरुप्रभ सूरि पट्टे श्री मुनिदेव सूरिभिः ॥

[1298]

संवत् १५५९ वर्षे माह सुदि १० दिने शनिवार उपकेशवंशे सखवाल गोत्रे सा गुणदत्त भार्या रंगादे पुत्र सा० धणदत्त भार्या धन श्री पुत्र सा० हीरादे परिवारयुतेन श्री शीतल

नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनसमुद्र सूरि पट्टे श्री जिनहंस सूरिभिः ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्रीः ॥

[1299]

संवत् १५६३ वर्षे माह सुदि १५ उ० उच्छितवालगोत्रे संघवी देवा भा० देवलदे सा० वीरहा भार्या वील्हणदे पुत्र तेजा वस्ता धन्ना आत्मपुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री श्री श्रुतसागर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[1300]

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुन सुदी ३ सोमवासरे उपकेशवंशे रांका गोत्रे शा० श्रीरंग भा० देऊ पु० करमा भा० रूपादे स्वश्रेयसे आत्मपुण्यार्थं नमिनाथ बिंबं कारितं प्र० उपकेश गच्छे भ० श्री सिद्ध सूरिभिः ॥

[1301]

संवत् १५७२ वर्षे वैशाख सुदि ५ सोमे श्री श्रीवंशे मं० सिंघा भा० रहा पु० मं० करण भा० रमादे पु० मं० अजा सुश्रावकेण भा० आहवदे पु० राणा तथा पितृव्य पु० मा० गोगद प्रमुखसहितेन मातृ साधुपुण्यार्थं नागेन्द्रगच्छे सुगुरूणामुपदेशेन श्री वासुपूज्य बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन वीवलापुरे ॥

[1302]

संवत् १५७८ वर्षे चैत्र सुदि ५ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० राजा भा० रमादे पुत्र खीमाकेन भा० हीरादे पुत्र धनादि समस्त कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रतस्वामी बिंबं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे भीमपल्लीय भ० श्री चारित्रचन्द्र सूरि पट्टे श्री मुनिचन्द्र सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ नेवीआए मगम वास्तव्य ॥

[1303]

ॐ संवत् १५७३ वर्षे ज्येष्ट सुदी ९ उ० लुणाणा गोत्रे शा० हेमराज भार्या स० हेमश्री

पुत्र शा० देवदत्तेन स्वपितृपुन्यार्थेन कारितं श्री आदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री धर्म्मघोष गच्छे भट्टारक श्री पद्माणंद सूरि पट्टे श्री नन्दिवर्द्धन सूरिभिः ॥

[1304]

सं० १५३६ वर्षे माघ सुदि ५ रवौ उप० ज्ञा० टप गोत्रे ठ० सदा भा० सकादे पु० थिरपाल भा० षेमलदे पु० सहसमल्ल हापा जगा सहितेन पितृ नि० श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्र० श्री सण्डेरगच्छे श्री शांतिसुन्दर ॥

[1305]

संवत् १५९२ वर्षे आषाढ सुदि ९ दिने आदित्यनागगोत्रे तेजाणी शाखायां शा० सुहणा पु० हासा पुत्र सखारण दा० नरपाल सधारण भार्या सूहवदे पुत्र ४ श्री करणरंगा समरथ अमीपाला सखारण स्वपुण्याय कारितं । श्री उपकेश गच्छे भट्टा० श्री सिद्ध सूरिभिः श्री अभिनन्दन बिंबं प्रतिष्ठितं स्वपुत्रपौत्रीय श्रेये मातु ॥

[1306]

संवत् १५९९ वर्षे वैशाख विदि १३ सोमे श्री सण्डेरगच्छे ऊ० भण्डारी गोत्रे भ० ईसर पु० वीसल भा० कील्हूपत्ते निमित्तं श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिभिः॥

[1307]

संवत् १६१५ वर्षे वैशाख वदि १० सोमे जवाठ वास्तव्य हूंबड ज्ञातीय मंत्रीश्वर गोत्रे दोसी श्रीपाल भार्या सिरीआदे सुतं दोसी रूढाकेन भा० राणी युतै श्री पद्मप्रभ बिंबं तपा० श्री तेजरत्न सुरिभिः प्रति० ॥

[1308]

संवत् १६४३ वर्षे फाल्गुन सित ११ अहमदावाद वास्तव्य बाई कोडकीसंज्ञया प्राग्वाट सेठि मूला भा० राजलदे पुत्री श्री आदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री विजयसेन सूरिभिः श्री तपागच्छे ॥

[1309]

संवत् १६९६ वर्षे मिगसिर सुदि १० रवौ उपकेश ज्ञातीय लघु शाखायां बुरा गोत्रे फुमण गोत्रे वाह गेलमादि पुत्र ठाकुरसी टाइसिंघ श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारापितं श्री तपागछे गुरु श्री विजयदेव सूरि तत्पटे विजयशिव सूरिः प्रतिष्ठितं ॥

[1310]

संवत् १६९९ वर्षे वैशाख शुक्ल ९ दिने ················ श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागछे श्री विजयसिंह सूरिभिः ॥

[1311]

संवत् १६९९ वर्षे फाल्गुन बदि २ तिथौ सा० पुरुपाकेन शीतल बिंब कारितं प्रतिष्ठितं ···· गछे आचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः ॥

[1312]

संवत् १७१५ श्री श्रीमाल ज्ञातौ शाह स्नाना भार्या मानुबादे पुत्र शिव पाशेन भ्रातृ रूपसिंह ···· निज भार्या ········ निमित्तं श्री पद्मतीर्थं का० प्र० श्री नागेन्द्र गच्छे श्री पद्मचन्द्र सूरि पट्टे श्री रत्नाकर सूरिभिः ॥

पाँचीनी दर।

[1313]

संवत् १९२० वर्षे पौष बदि ८ शुक्रे श्री [illegible] ज्ञातीय [illegible] भूरावेन शाह [illegible] [illegible] विद्यमानं [illegible] प्रति [illegible] श्री [illegible] सूरि [illegible] सूरिभिः [illegible]

[1314]

संवत् १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ मण्डपदुर्गे प्राग्वाट सं० अजन भा० टबकू सुत सं० वस्ता भा० रामा पुत्र सं० चाहाकेन भा० जीविणि पुत्र संभाग आभादिकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री चन्द्रप्रभ २४ पट्ट का० प्र० तपा पक्षे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

श्री आदिनाथजी का मन्दिर—दफ्तरियों का महल्ला।

[1315]

संवत् १५१३ माघ शुक्ल ७ बुधे श्री ऊसवाल ज्ञातौ लोढा गोत्रे सा० भूचर भा० सरू पु० हंसू भा० सहनाई पु० नरहूकेन पितृ श्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं श्री रुद्रपल्लीय गच्छे श्री देवसुन्दर सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ॥

[1316]

संवत् १५२७ वर्षे आषाढ सुदी २ गुरौ ऊपकेश ज्ञातीय तावअजा भार्या आहलदे पुत्र नीवा भा० मानू सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं। प्रतिष्ठितं अञ्चलगछे श्री जयकेसर सूरिभिः ॥

[1317]

संवत् १५३४ वर्षे आषाढ सुदि २ दिने ऊपकेशवंशे बोथरागोत्रे शा० जेसा पु० थाहा सुश्रावकेण भा० सुहागदे पुत्र देल्हा मानी वाकि,युतेन माता लखी पुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगछे श्री जिनचन्द्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[1318]

संवत् १५३४ वर्षे मिगसिर वदि ५ ऊपकेश ज्ञातीय नाहर गोत्रे शा० चाहरू भार्या हरखू पुत्र वीजाकेन भा० वींझलदे पुत्र कैशवयुतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री धर्म्मघोषगछे श्री धर्म्मसुन्दर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

संवत् १५३४ वर्षे प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० सोमा भा० देऊसु भोटाकेन भा० वानरि भ्रातृ भोजा प्रमुखकुटुम्बेन युतेन श्री संभवनाथ बिंबं का० प्र० तपापक्षे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ वीसनगरे ॥

[1320]

संवत् १५६० वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने सोजात वास्तव्य उपकेश ज्ञातीय शा० भाणा भा० भावलदे पु० आशाकेन भा० रीइ सुत वाघा वीदा प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छनायक श्री हेमविमल सूरिभिः ॥

[1321]

संवत् १५७७ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमवार पुष्य नक्षत्रे नाहर गोत्रे सं० पटा तत् पुत्र से० पाता भार्या पालणदे तत् पुत्र सं० लाखणाख्येन तद् भार्या लाषणदे तत् पुत्र सं० नानिग सं० खीमसिंह ... सहितेनात्मश्रेयसे बिंबं कारितं श्री शांतिनाथस्य श्री धर्मघोष गच्छे भट्टारक श्री नन्दिवर्द्धन सूरिभिः प्रतिष्ठितः भद्रं भवतात् ॥

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1322]

संवत् १५८६ वर्षे पौष वदि ५ शुक्रे प्राग्वाट श्रे० हृगाज भा० [illegible] पु० [illegible] भा० नाई प्रमुखकुटुम्बसहितेन स्वश्रेयसे श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री उपकेश गच्छे सिद्धाचार्य सन्ताने श्री देवगुप्त सूरि पट्टे श्री सिद्ध सूरिभिः ।

चौवीसी पर।

[1323]

संवत् १५३२ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ श्री वायक ज्ञातीय मं० माहव भा० हलू सु० म(हा)देवदास भा० जीवि सु० सिंहराज भ्रातृ हरदास भाद्दी आसुरा पआयण अमीपाव श्रेयसे श्री पार्श्वनाथादि चतुर्विंशति पट्टः कारितः आगमगच्छे श्री अमररत्न सूरि गुरूपदेशेन प्रतिष्ठितश्च विधिना ॥ देकावाका वास्तव्य ॥

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर—(घोकावतों की पोल)

पंचतीर्थियों पर।

[1324]

संवत् १३१६ वर्षे चैत्र वदि ६ भौमे श्री वृहद्गच्छीय श्री उद्योतन सूरि शिष्यैः श्री हीरचन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं। श्रे० शुभंकर भार्या देवइ तयोः पुत्रेण श्रे० सोमदेवेन भार्या पूनदेवि पुत्र श्रीवत्स नागदेवादियुतेन आत्मश्रेयोर्थं श्री वीरजिन बिंबं कारितं ॥

[1325]

संवत् १५०३ वर्षे माल्हू गोत्रे सा० भाखर भरमी श्राविकायाः पुण्यार्थं मा० खण्डाकेन जीवा खीदा भीदा भादा पुत्र युतेन कारितं स्वपुण्यार्थं श्री अजितनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥ श्रीखरतरगच्छे ॥

[1326]

संवत् १५१९ वर्षे वैशाख वदि ५ ओसवाल ज्ञातौ सूराणा गोत्रे सा० सखर सहस वीरेण भार्या भोजी पु० कीमा वरता रंगू रत्नू युक्तेन स्वभार्या पुण्यार्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितः प्रति० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री पद्माणन्द सूरिभिः ॥

[1327]

संवत् १५४५ वर्षे ज्ये० विदि ११ दिने वीरवाडा वासि प्राग्० ज्ञाति सा० रत्ना भा० राघू पु० सा० भीमाकेन भा० हेमी कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं श्री श्री श्री सूरिभिः ॥ श्रिये ॥

[1328]

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुण सुदि ३ सोमे श्री नाणावालगच्छे उसभ गोत्रे को० बुहथ भा० वाहिणदे पुत्र वीवावणा वधा दोहावणी पुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री शांति सूरिभिः ॥ मेरुता नगरे ॥

चौवीसी पर।

[1329]

संवत् १४९० वर्षे फाल्गुन शुक्ल ९ जाइलवाल गोत्रे सा० शिखर पुत्राभ्यां शा० संग्राम सिंह धनाभ्यां निज मातृ साल्ही श्रेयो निमित्तं श्री सुविधिनाथ चतुर्विंशति पट्टं कारितः प्रतिष्ठितं। तपा भट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे भट्टारक श्री हेमहंस सूरिभिः ॥

बीकानेर।

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजी का मन्दिर।

आसानियों का महल्ला—डांगियों के उपासरे के पास।

पंचतीर्थियों पर।

[1330]

सं० १४९८ फागुण वदि ६ बुधे ऊकेश ज्ञातीय सा० [illegible] भा० [illegible] पुत्रा भा०

चौवीसी पर ।

[1323]

संवत् १५३२ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ श्री वागरू ज्ञातीय मं० माहव भा० हलू सु० म(हा)देवदास भा० जीवि सु० सिंहराज भ्रातृ दूरदास काह्नी आसुरा पञ्चायण अमीपाल श्रेयसे श्री पार्श्वनाथादि चतुर्विंशति पट्टः कारितः आगमगच्छे श्री अमररत्न सूरि गुरूपदेशेन प्रतिष्ठितश्च विधिना ॥ देकावाड़ा वास्तव्य ॥

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर—(घोड़ावतों की पोल)

पंचतीर्थियों पर ।

[1324]

संवत् १३१६ वर्षे चैत्र विदि ६ भौमे श्री बृहद्गच्छीय श्री उद्योतन सूरि शिष्यैः श्री हीरचन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं । श्रे० शुभंकर भार्या देवइ तयोः पुत्रेण श्रे० सोमदेवेन भार्या पूनदेवि पुत्र श्रीवच्छ नागदेवादियुतेन आत्मश्रेयोर्थं श्री वीरजिन बिंबं कारितं ॥

[1325]

संवत् १५०३ वर्षे माल्हू गोत्रे सा० भाखर भरमी श्राविकायाः पुण्यार्थं मा० खच्छाकेन जीवा खीदा भीदा भादा पुत्र युतेन कारितं स्वपुण्यार्थं श्री अजितनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥ श्रीखरतरगच्छे ॥

[1326]

संवत् १५२९ वर्षे वैशाख विदि ५ ओसवाल ज्ञातौ सूराणा गोत्रे सा० सखर सहसं वीरेण भार्या भोजी पु० भीमा वरता रंगू रत्नू युक्तेन स्वभार्या पुण्यार्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितः प्रति० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री पद्माणन्द सूरिभिः ॥

[1327]

संवत् १५४५ वर्षे ज्ये० विदि ११ दिने वीरवाडा वासि प्राग्० ज्ञाति सा० रत्ना भा० माघू पु० सा० भीमाकेन भा० हेमी कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं श्री श्री श्री सूरिभिः ॥ श्रिये ॥

[1328]

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुण सुदि ३ सोमे श्री नाणावालगच्छे उसभ गोत्रे को० वुद्दथ भा० चाहिणदे पुत्र बीजावणा वधा दोहावणी पुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री शांति सूरिभिः ॥ मेरुता नगरे ॥

चौवीसी पर।

[1329]

संवत् १४९० वर्षे फाल्गुन शुक्ल ए जाइलवाल गोत्रे सा० शिखर पुत्राभ्यां शा० संग्राम सिंह धनाभ्यां निज मातृ साल्ही श्रेयो निमित्तं श्री सुविधिनाथ चतुर्विंशति पट्टं कारितः प्रतिष्ठितं। तपा भट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे भट्टारक श्री हेमहंस सूरिभिः ॥

बीकानेर।

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजी का मन्दिर।

आसानियों का महल्ला—बांठियों के उपासरे के पास।

पंचतीर्थियों पर।

[1330]

सं० १४९६ फागुण वदि ६ बुधे उकेश ज्ञातीय सा० जगसी भा० चमकू पुत्र सा०

रोहिणी नाम्न्या क० जिणंद वासा स्वभर्तृनिमित्तं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री कोरंटगच्छे श्री कक्क सूरि पट्टे श्री सावदेव सूरिः ॥

[1331]

सं० १४९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ सोमे प्राग्वाट व्य० जइता भार्या वरजू पु० लुणा स० आत्मश्रेयोर्थं श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मं ···· श्री मुनिप्रभ सूरिभिः ॥

[1332]

सं० १५०० वर्षे वै० सु० ५ दिने सोमे ओसवाल ज्ञातीय सुचिंती गोत्रे सा० धन्ना भार्या अमरी पु० तोलूकेन स्वपूर्वज रीजा पुण्यार्थ श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1333]

सं० १५०९ वर्षे माघ सु० ७ ऊकेशवंशे मालू शाखायां सा० पूना सुत सा० सहसाकेन पुत्र ईसर महिरावण गिरराज माला पांचा महिपा प्रमुख परिवारेण स्वश्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनभद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[1334]

संवत् १५१० वर्षे माघ सुदि ५ दिने श्री उपकेशगच्छे ककुदाचार्य संताने भाद्रगोत्रे सा० साधा सा० सारंग भा० तल्ही पु० षीमधर भा० जेठी पु० षेता षेमायुतेन आत्मश्रेयसे श्री संभवनाथ बिंबं का० प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

[1335]

सवत् १५१६ वर्षे ज्येष्ठ सु० १० दिने ऊकेशवंशे दोसी सा० भादा पुत्र सा० धणदत्त तथा ठकण पुत्र सा० वच्छराज प्रमुखपरिवारयुतेन श्री शीतल बिंबं मातृ अपू पुण्यार्थं कारितं प्र० खरतर श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ।

[1336]

सं० १५१७ वर्षे माघ सु० ५ बुधे ऊकेश शुभ्र गोत्रे श्रे० आमधर पुत्र श्रे० पूनड़ भार्या फती पुत्र सा० करमणेन भार्या कर्मादे धर्म्म पुत्र सा० समरा भार्या सहजलदे सुत तेजादि कुटुम्बयुतेन श्री प्रथम तीर्थंकर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः। श्री सिरूपुर वास्तव्य ॥

[1337]

सं० १५३२ फा० सुदि .... श्री .... संभवनाथ बिंबं श्री संडेरगछे भट्टारक श्री .... ।

[1338]

सं० १५३४ वर्षे मा० सुदि ५ सोमे श्री उपकेश वांभ गोत्रे। सा० वछा भा० वोरिणि पु० सा० सच्चू भा० लषमादे मातृपितृ पु० आत्म पु० श्री कुंथुनाथ बिंबं कारापितं श्री मलधर ग० प्र० श्री गुणविमल सूरिभिः ॥

[1339]

सं० १५३६ वर्षे फागु० सु० २ रवौ ओसवाल धामी गोत्रे सा० पदमा भार्या प्रेमलदे पु० भोला भा० भावलदे पु० देवराज युतेन स्वपुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारापितं प्र० ज्ञानकीय गछे श्री धनेश्वर सूरिभिः ॥ सोरो ...... ।

[1340]

संवत् १५३६ वर्षे फागुण सु० ३ नहट गोत्रे सा० सीधर पुत्र गुरपतिना भा० गरलदे पु० महसा पुनि भार्या रमादे पुत्र करमसी पहराज युतेन श्री कुंथुनाथ बिंबं निज पुण्यार्थं कारितं प्र० नमदाम गछे श्री देवगुप्त सूरिभिः।

[1341]

सं० १५३६ वर्षे फा० सु० ३ दिने ऊकेश .... ग गोत्रे सा० ठूल्हा पुण्यार्थं पुत्र सा० अपयराज तद् भ्रातृ सी .... युतेन श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतरगछे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

रोहिणी नाम्न्या क० जिणंद वासा स्वभर्तृनिमित्तं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री कोरंटगच्छे श्री कक्क सूरि पट्टे श्री सावदेव सूरिः ॥

[1331]

सं० १४९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ सोमे प्राग्वाट व्य० जऊता भार्या वरजू पु० लुगा स० आत्मश्रेयोर्थं श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मं .... श्री मुनिप्रभ सूरिभिः ॥

[1332]

सं० १५०७ वर्षे वै० सु० ५ दिने सोमे ओसवाल ज्ञातीय सुचिंती गोत्रे सा० धन्ना भार्या अमरी पु० तोलूकेन स्वपूर्वज रीजा पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1333]

सं० १५०९ वर्षे माघ सु० ७ ऊकेशवंशे मालू शाखायां सा० पूना सुत सा० सहसाकेन पुत्र ईसर महिराजण गिरराज माला पांचा महिपा प्रमुख परिवारेण स्वश्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनभद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[1334]

संवत् १५१० वर्षे माघ सुदि ५ दिने श्री उपकेशगच्छे ककुदाचार्य संताने भाद्रगोत्रे सा० साधा सा० सारंग भा० तल्ही पु० षीमधर भा० जेठी पु० पेता पेमायुतेन आत्मश्रेयसे श्री संभवनाथ बिंबं का० प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

[1335]

सवत् १५१६ वर्षे ज्येष्ठ सु० १० दिने ऊकेशवंशे दोसी सा० भादा पुत्र सा० धणदत्त तथा ठकण पुत्र सा० वच्छराज प्रमुखपरिवारयुतेन श्री शीतल बिंबं मातृ अपू पुण्यार्थं कारितं प्र० खरतर श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ।

[1336]

सं० १५१७ वर्षे माघ सु० ५ बुधे ऊकेश भुत्त गोत्रे श्रे० आसधर पुत्र श्रे० पूनड़ भार्या फत्ती पुत्र सा० करमणेन भार्या कर्मादे धर्म्म पुत्र सा० समरा भार्या सहजलदे सुत तेजादि कुटुम्बयुतेन श्री प्रथम तीर्थंकर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः। श्री सिरूपुर वास्तव्य ॥

[1337]

सं० १५३२ फा० सुदि ···· श्री ······· संभवनाथ बिंबं श्री संडेरगछे भट्टारक श्री ······ ।

[1338]

सं० १५३४ वर्षे मा० सुदि ५ सोमे श्री उपकेश वंश गोत्रे। सा० वछा भा० वोरिणि पु० सा० सच्चू भा० लषमादे मातृपितृ पु० आत्म पु० श्री कुंथुनाथ बिंबं कारापितं श्री मलधर ग० प्र० श्री गुणविमल सूरिभिः ॥

[1339]

सं० १५३६ वर्षे फागु० सु० २ रवौ ओसवाल भामी गोत्रे सा० पदमा भार्या प्रेमलदे पु० जोला भा० जावलदे पु० देवराज युतेन स्वपुण्यार्थं श्री शीतलनाथ बिंबं कारापितं प्र० ज्ञानकीय गछे श्री धनेश्वर सूरिभिः ॥ नागे ······ ।

[1340]

संवत् १५३६ वर्षे फागुण सु० ३ नहट गोत्रे सा० सीधर पुत्र गुणधनिना भा० गगादे पु० मदसा पुनि भार्या रामादे पुत्र करमसी पदराज युतेन श्री कुंथुनाथ बिंबं निज पुण्यार्थं कारितं प्र० [illegible] गछे श्री देवगुप्त सूरिभिः।

[1341]

सं० १५३६ वर्षे फा० सु० ३ दिने ऊकेश ···· [illegible] गोत्रे सा० [illegible] पुण्यार्थं पुत्र सा० रूपराज सह भ्रातृ सी ···· युतेन श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० श्री [illegible] श्री जिनचन्द्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

रोहिणी नाम्न्या क० जिणंद वासा स्वजर्तृनिमित्तं श्री शांतिनाथ विंबं का० प्रतिष्ठितं श्री कोरंटगच्छे श्री कक्क सूरि पट्टे श्री सावदेव सूरिः ॥

[1331]

सं० १४ए७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ सोमे प्राग्वाट व्य० जइता जार्या वरजू पु० लुगा स० आत्मश्रेयोर्थं श्री श्रेयांसनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मं ···· श्री मुनिप्रज सूरिजिः ॥

[1332]

सं० १५०७ वर्षे वै० सु० ५ दिने सोमे ओसवाल ज्ञातीय सुचिंती गोत्रे सा० धन्ना जार्या अमरी पु० तोलूकेन स्वपूर्वज रीजा पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य विंबं का० प्र० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[1333]

सं० १५०ए वर्षे माघ सु० ७ ऊकेशवंशे मालू शाषायां सा० पूना सुत सा० सहसाकेन पुत्र ईसर महिरावण गिरराज माला पांचा महिपा प्रमुख परिवारेण स्वश्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ विंबं कारितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनजड सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[1334]

संवत् १५१० वर्षे माघ सुदि ५ दिने श्री उपकेशगच्छे ककुदाचार्य संताने जाड्गोत्रे सा० साधा सा० सारंग जा० तल्ही पु० षीमधर जा० जेठी पु० षेता षेमायुतेन आत्मश्रेयसे श्री संजवनाथ षिंबं का० प्रति० श्री कक्क सूरिजिः ।

[1335]

सवत् १५१६ वर्षे ज्येष्ठ सु० १० दिने ऊकेशवंशे दोसी सा० जादा पुत्र सा० धणदत्त तथा ठकण पुत्र सा० वच्छराज प्रमुखपरिवारयुतेन श्री शीतल विंबं मातृ अपू पुण्यार्थं कारितं प्र० खरतर श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ।

[1336]

सं० १५१० वर्षे माघ सु० ५ बुधे ऊकेश शुभ गोत्रे श्रे० आसधर पुत्र श्रे० पूनड़ भार्या फती पुत्र सा० करमणेन भार्या कर्मादे धर्म्म पुत्र सा० समरा भार्या सहजलदे सुत तेजादि कुटुम्बयुतेन श्री प्रथम तीर्थंकर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः। श्री सिद्धपुर वास्तव्य ॥

[1337]

सं० १५३२ फा० सुदि ···· श्री ······· संभवनाथ बिंबं श्री संडेरगच्छे भट्टारक श्री ······ ।

[1338]

सं० १५३४ वर्षे मा० सुदि ५ सोमे श्री उपकेश बांभ गोत्रे। सा० वच्छा भा० वीरिणि पु० सा० लच्छू भा० लषमादे मातृपितृ पु० आरम पु० श्री कुंथुनाथ बिंबं कारापितं श्री मलधर ग० प्र० श्री गुणविमल सूरिभिः ॥

[1339]

सं० १५३६ वर्षे फागु० सु० २ रवौ ओसवाल धामी गोत्रे सा० पदमा भार्या प्रेमलदे पु० भोला भा० भावलदे पु० देवराज युतेन स्वपुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारापितं प्र० ज्ञानकीय गच्छे श्री धनेश्वर सूरिभिः ॥ सोरो ······ ।

[1340]

संवत् १५३६ वर्षे फागुण सु० ३ तइट गोत्रे सा० सीधर पुत्र गुरपनिना भा० गरलदे पु० महसा पुनि भार्या गसारदे पुत्र करमसी पहराज युतेन श्री कुंथुनाथ बिंबं निज पुण्यार्थं कारितं प्र० नमदाम गच्छे श्री देवगुप्त सूरिभिः ।

[1341]

सं० १५३६ वर्षे फा० सु० ३ दिने ऊकेश ···· ग गोत्रे सा० डूडा पुण्यार्थं पुत्र सा० अपयराज तद् भ्रातृ सी ···· युतेन श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1342]

सं० १५३० वर्षे वैशाष सुदि ४ शुक्रे उ० ज्ञातीय प्राह्मचा गोत्रे व्य० चांदा भा० धर्म्मिणि पु० गांगा भा० म्यापुरि सहितन श्री पार्श्वनाथ विंबं का० प्र० भावड़ गछे श्री भावदेव सूरिभिः ।

[1343]

संवत् १५४० वैशाष सु० ५ बुध काष्ठासंघ भट्टारक श्री ······· तस्याम्नाये ·············।

[1344]

सं० १५५२ वर्षे फा० शु० ६ शनौ ओस० ज्ञातीय सा० मुंज भा० मुजादे पु० सा० परवत भा० अमरादे सा० पर्वत श्रयोर्थ श्री विमलनाथ विंबं कारितं प्र० तपागछे श्री हेमविमल सूरि ।

[1345]

संवत् १५६१ वर्षे माह सुदि ५ दिने शुक्रे हुंबड़ ज्ञातीय श्रे० विजपाल भा० हीरू सु० श्रे० पदमाकेन भा० चांपू सु० पोना भा० रषी सु० कर्मसी प्रमुखपरिवारपरिवृतेन स्वश्रेयोर्थं श्री विमलनाथ विंबं कारित प्रतिष्ठितं तपागछाधिराज श्री लक्ष्मीसागर सूरि तत्पट्टे श्री सुमतिसाधु सूरि तत् पट्टे साम्प्रत विद्यमान परमगुरु श्री हेमविमल सूरिभिः ॥ वीचावेडा वास्तव्य ॥

[1346]

सं० १५७३ वर्षे वैशाप वदि ७ श्री ओसवंशे डजलाणी गोत्रे । पीरोजपुर स्थाने । सा० धनू भार्या ··· सुत सा० वीरम भार्या वीरमदे सुत दीपचंद उधरणादि कुटुम्बयुतेन श्री मंत्तवनाथ विंबं कारितं । प्रतिष्ठितं ············ ।

[1347]

संवत् १५७६ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमवार श्री आदित्यनाग गोत्रे चोरवेड्या शाखायां

सा० पासा पुत्र ऊदा भा० पऊमादे पु० कामा रायमल देवदत्त ऊदा पुण्यार्थं शांतिनाथ बिंबं कारापितं उपपल सिद्ध सूरिभिः प्रति .... ।

[1348]

संवत् १६९७ वर्षे पोष वदि ३ दिने साह काजड़ गोत्र साह चापसी भार्या नारंगदे पु० श्री वासपु श्री वासुपूज्य बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री हीरविजय सूरिभिः ।

जैन उपासरा का शिला लेख ।

[1349]

(१) पृथवी तल मांहे प्रगटः वड़ो नगर वीकांण ।
(२) सुरतसींह महाराजजुः राज करै सुविहाण ॥ १ ॥
(३) गुणी क्षमामाणिक्य गणिः पाठक पुन्य प्रधान ।
(४) वाचक विद्या हेमगणिः सुप्रत सुख संस्थान ॥ २ ॥
(५) सय अठार गुणसठ में मह्रिवान महाराज ।
(६) नव्य वनाय उपासरो दियो सदा थित काज ॥ ३ ॥

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मन्दिर—बाजार में ।

शिलालेख ।

[1350]

॥ संवत् १५६२ वर्षे आषाढ़ सुदि ए दिने वार रवि । श्री बीकानेर मध्ये महाराजा राई श्री श्री श्री वीकाजी विजयराज्ये । देहरो करायो श्री संघ ॥ संवत् १३८० वर्षे श्री जिनकुशल सूरि प्रतिष्ठितः ॥ श्री मंडोवर मूलनायक ॥ श्री श्री आदिनाथ चतुर्विंशति

[1342]

सं० १५३९ वर्षे वैशाष सुदि ४ शुक्रे ऊ० ज्ञातीय प्राह्मेचा गोत्रे व्य० चांदा भा० धर्म्मिणि पु० गांगा भा० म्यापुरि सहितेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० भावड़ गच्छे श्री भावदेव सूरिभिः ।

[1343]

संवत् १५४९ वैशाष सु० ५ बुध काष्ठासंघ भट्टारक श्री .... तस्याम्नाये ....।

[1344]

सं० १५५२ वर्षे फा० शु० ६ शनौ ओस० ज्ञातीय सा० मुंज भा० मुजादे पु० सा० पर्वत भा० अमरादे सा० पर्वत श्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्री हेमविमल सूरि ।

[1345]

संवत् १५६१ वर्षे माह सुदि ५ दिने शुक्रे हुंबड़ ज्ञातीय श्रे० विजपाल भा० हीर [illegible] श्रे० [illegible] भा० चांपू सु० गोना भा० रपी सु० कर्मसी प्रमुखपरिवारपरिवृतेन आत्मश्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिराज श्री लक्ष्मीसागर सूरि तत्पट्टे श्री सुमतिसाधु सूरि तत पट्टे साम्प्रत विद्यमान परमगुरु श्री हेमविमल सूरिभिः ॥ [illegible] ॥

[1346]

सं० [illegible] वर्षे वैशाष वदि ३ श्री ओसवंशे [illegible] गोत्रे । पीरोजपुर स्थाने । [illegible] सुत सा० वीरम तयो वीरमदे सुत दीपचंद प्रमुखादि कुटुम्बयुतेन [illegible] बिंबं कारितं । प्रतिष्ठितं ....।

[1347]

संवत् [illegible] वर्षे वैशाष सुदि ३ सोमवार श्री आदित्यनाग गोत्रे चोरवेड्या [illegible]

सा० पासा पुत्र ऊदा ना० पऊमादे पु० कामा रायमल देवदत्त ऊदा पुण्यार्थं शांतिनाथ विंबं कारापितं उपकेश सिद्ध सूरिभिः प्रति ···· ।

[1348]

संवत् १६७७ वर्षे पोष वदि ३ दिने साह काजड़ गोत्र साह चापसी भार्या नारंगदे पु० श्री वासपु श्री वासुपूज्य बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री हीरविजय सूरिभिः ।

जैन उपासरा का शिला लेख ।

[1349]

(१) पृथवी तल मांहे प्रगटः वड़ो नगर बीकांण ।
(२) सुरतसींह महाराजजुः राज करे सुविहाण ॥ १ ॥
(३) गुणी क्षमामाणिक्य गणिः पाठक पुन्य प्रधान ।
(४) वाचक विद्या हेमगणिः सुप्रत सुख संस्थान ॥ २ ॥
(५) सय अठार गुणसठ में महिरबान महाराज ।
(६) नव्य बनाय उपासरो दियो सदा थिर काज ॥ ३ ॥

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मन्दिर—बाजार में ।

शिलालेख ।

[1350]

॥ संवत् १५६१ वर्षे आषाढ सुदि ९ दिने वार रवि । श्री बीकानेर मध्ये महाराजा राई श्री श्री श्री बीकाजी विजयराज्ये । देहरो करायो श्री संघ ॥ संवत् १५७० वर्षे श्री जिनकुशल सूरि प्रतिष्ठितः । श्री संखेश्वर मूलनायक " श्री श्री आदिनाथ चतुर्विंशति

पट्टं ॥ नवलक्खक रासल पुत्र नवलक्खक राजपाल पुत्र श्री नवलक्खक सा० नेमिचंद्र सुश्रावक
साह वीरम डुसाज देवचंद्र कान्हड़ मट्टं ॥ संवत् १५७१ वर्षे श्री श्री श्री चउवीस इन्द्रजी
रो परघो मट्टं वणावते जरायो छे ॥

चौवीस जिनमाता के पट्ट पर।

[1351]

॥ संवत् १६०६ वर्षे फागुण वदि ७ दिने श्री बृहत् खरतरगच्छे। श्री जिनचन्द्र सूरि सन्ताने। श्री जिनचन्द्र सूरि श्री जिनसमुद्र सूरि पट्टे॥ श्री जिनहंस सूरि तत् पट्टालंकार श्री जिनमाणिक्य सूरिभिः प्रतिष्ठिता श्री चतुर्विंशति श्री जिनमातृणां पट्टिका कारिता। श्री विक्रमनगर संघेन ॥

चरण पर।

[1352]

संवत् १९०५ वर्षे शाके १७७० प्रमिते माधव मासे शुक्ल पक्षे पौर्णिमास्यां तिथौ गुरुवारे बृहत् खरतर गणाधीश्वर भ०। जं०। युग प्र० श्री १०८ श्री हर्ष सूरि जित्पादुके श्री संघेन कारापितं प्रतिष्ठितं च भ०। जं०। यु०। प्र०। श्री जिनसौभाग्य सूरिभिः श्री विक्रमपुरवरे ॥ श्री ॥

श्रीमन्दिर स्वामी का मन्दिर—भांडासर।

[1353]

सं० १५३३ वर्षे मार्ग सुदि १० ऊकेश ज्ञातीय चांद्रटिया गोत्रे सा० समुधर पुत्र सा० [illegible]...... युतेन श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं प्रति० भ० श्री जिनसमुद्र सूरि पट्टे श्री [illegible] सूरिभिः।

[1354]

सं० [illegible] वर्षे [illegible] श्रे० गोविंद [illegible] भार्या सुत धर्मसिंह भा० श्रीबू नाम्न्या [illegible]

भ्रमा नरसिंह खोलादि कुटुम्बयुतया श्री संजव बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागछे श्री इन्द्रनन्दि सूरिन्निः पत्तने ॥ श्री ॥

कुंम्म और नहर पर की शिलालेख।

[1355]

॥ श्री नेमिनाथाय नमः ॥

श्री बीकानेर तथा पूरब बंगाला तथा कामरू देस आसाम का श्री संघ के पास प्रेरणा करके रुपया जेला करके कुंड तथा आगोर की नहर बनाया सुश्रावक पुण्य प्रजावक देवगुरुजक्तिकारक गुरुदेवं को जक्त चोरडिया गोत्रे सीपानी चुन्निलाल रावतमलाणि सिरदारमल का पोता सिंघिया की गवाड़ में वसता मायसिंघ मेघराज कोठारी चोपड़ा मकसुदाबाद अजिमगंजवाले का गुमास्ता और कुंड के ऊपर दारईकेलाव (?) बकतावर चंद सेठिया बनाया संवत् १९५४ शाके १७७० प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे जाद्रवामासे शुक्ल पक्षे पंचम्यां तिथौ जौमवासरे।



मोरखानो–बीकानेर।

[1356] *

१. ॥ ॐ ॥ श्री सुसाणं कुलदेव्यै नमः ॥ मूलाधारनिरोधबुद्धफणिनीकंदादिमंदानिले। (ऽ) नाक्रम्य ग्रहराज मंम

* यह स्थान "देशनोक" से दक्षिण-पूर्व कोण १२ मील पर है। यहां के देवी मंदिर में काले पाषाण पर यह लेख खुदा हुआ है और टेसिटोरी साहब ने अपने ई० सं० १९१६ की रीपोर्ट में छापी है। See J & P of the A S of Bengal' Vol XIII. pp 214-215

२. लधिया प्रागुपश्चिमांतं गता। तत्राप्युज्वलचंद्रमंडलगलत्पीयूषपानोल्लसत्कैव-
ल्यानुभव्या सदास्तु जगदानं

३. दाय योगेश्वरी ॥ १ या देवेंद्रनरेंद्रवंदितपदा या भद्रतादायिनी। या देवी किल
कल्पवृक्षसमतां नृणां दधा-

४. .... लौ। या रूपं सुरचित्तहारि नितरां देहे सदा बिभ्रती। सा सूराणासवंश
सौख्यजननी भूयात्प्रवृद्धिं क-

५. री ॥ २ तंत्रैः किं किल किं सुमंत्रजपनैः किं भेषजैर्वा वरैः। किं देवेंद्रनरेंद्र
सेवनतया किं साधुभिः किं धनैः। ए-

६. का या भुवि सर्वकारणमयी ज्ञात्वेति भो ईश्वरी। तस्याध्यायत पादपंकजयुगं
तद्ध्यानलीनाशयाः ॥ ३ ॥ श्री भूरिर्द्धर्म-

७. सूरी रसमयसमयांभोनिधेः पारदृश्वा। विश्वेषां शश्वदाशा सुरतरुसदृशस्त्या-
जितप्राणिहिंसां। सम्यग्दृष्टि ....

८. मनणु गुणगणां गोत्रदेवीं गरिष्ठां। कृत्वा सूराणवंशे जिनमतनिरतां यां चका-
रात्मशक्त्या ॥ ४ तद्यात्रां महता महेन

९. विधिवद्भिक्षो विधायाखिले निर्गो मार्गणचातकपृणगुणः सञ्जारटंकत्कटः। जातः
क्षेत्रफले प्रदिर्मरुधरा धारा-

१०. धरः ख्यातिमान् संघेशः शिवराज इत्ययमहो चित्रं न गर्जिध्वजः ॥ ५ तत्पुत्रः
सच्चरित्रे वचनरचनया भूमिराजः

११. समाजालंकारः स्फारसारो विहित निजहितो हेमराजो महौजाः। चंगप्रोत्तुंग-
शृंगं भुवि भवनमिदं देवयानोप-

१२. मानं। गोत्राधिष्ठातृदेव्याः प्रसृमरकिरणं कारयामास भक्त्या ॥ ६ संवत् १५७२
वर्षे ज्येष्ठमासे सितपक्षे पूर्णिमा-

१३. स्यां शुक्रे ऽनुराधायां षीमकर्णे श्री सूराणवंशे सं० गोसल तत्पुत्र सं० शिवराज तत्पुत्र सं० हेमराज तद्भार्या सं० हेमश्री त-

१४. त्पुत्र सं० धजा सं० काजा सं० नाल्हा सं० नरदेव सं० पूजा भार्या प्रतापदे पुत्र सं० चाहड़ भा० पाटमदे पुत्र सं० रणधीर

१५. सं० नाथू सं० देवा सं० रणधीर पुत्र देवीदास सं० काजा भार्या कऊतिगदे पुत्र सं० सहसमल्ल सं० रणमल

१६. सहसमल पुत्र मांरूण । रणमल पुत्र षेता षीमा । सं० नाल्हा पुत्र सं० सीहमल्ल पुत्र पीथा सं० नरदेव पुत्र मोकला-

१७. दिसहितेन । सं० चाहरुेन प्रतिष्ठा कारिता सपरिकरेण श्रीपद्मानंद सूरि तत्पट्टे भ० श्री नंदिवर्द्धन सूरीश्वरेभ्यः ॥

चुरू–बीकानेर ।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1357]

सवत् १३०४ ...... गछे ...... कारितं श्री पार्श्वनाथ बिंबं ।

[1358]

॥ सं० १३८० ज्येष्ट सु० १४ श्री उएसगछे श्रे० म .... ला भा० मोपलदे पु० देदा कमा पितृ मातृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री कक्कुदाचार्य सं० श्री कक्क सूरिभिः ।

[1359]

सं० १४६ए वर्षे फा० वदि २ शनौ नागर ज्ञातीय अलियाण गोत्र श्रे० कर्म्मा नार्या धाणू सुत मूगं ज्ञातृ सांगा श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० अंचलगछ ना० श्री मेरुतुंग सूरिनिः ॥

[1360]

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० ओसवंशे नाहरे गोत्रे सा० हेमा ना० हेमसिरि पु० तेजपालह आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० धर्म्मघोषगछे ···· ।

[1361]

सं० १५३० वर्षे फा० व० २ रवौ प्राग्वाट ज्ञा० साह करमा ना० कुनिगदे पु० सा० दोला ना० देल्हा चोला ज्ञातृ जुणा स्वश्रेयसे श्री धर्म्मनाथ बिंबं का० प्र० पूर्णि० कछोली-वालगछे ज० श्री विद्यासागर सूरीणामुपदेशेन ।

[1362]

॥ सं० १५४५ वर्षे माह सु ३ गुरौ उपकेश ज्ञा० श्रेष्ठि गोत्रे साह आसा ना० ईसरदे पु० जईता ना० जीवादे पुत्र चाहा युतेन पित्रो श्रेयसे श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मड्डाहरउ गछे ······· ज० श्री कमलचंद्र सूरिनिः ॥

गवालियर (लस्कर) ।

पंचायती मंदिर — सराफा बजार ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1363]

ॐ सं० ११ए० ज्येष्ठ सु० १२ देवम सुतया वीटिकया कारितेयं प्रतिमा ।

[1364]

सं० १३४० वै० सुदि २ गुरौ श्रीमाल ज्ञातीय .... श्री प्रद्युम्न सूरिभिः।

[1365]

संवत् १३७६ वर्षे वैशाख सु० ३ .... प्रणमंति।

[1366]

सं० १४९१ माघ सुदि ६ बुधे उप० बोहड़ वर्धमान गोत्रे सा० राणा भा० सूहवदे पु० महिपा मोकल श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं खरतरगछे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरि प्रति० ॥

[1367]

सं० १४९८ फागुण वदि १० चंमेजरिया गोत्रे। सा० धर्मा पुत्रेण जीणाजूणाभ्यां निजपितृनिमित्तं श्रीपद्मप्रभ बिंबं कारितं प्र० तपागछे भट्टारक श्री हेमहंस सूरिभिः।

[1368]

संवत् १५०० वर्षे वैशाख सुदि ३ भाज श्रीमाल ज्ञातीय। श्रे० सादा भा० मनूं सुत माईआ भा० अधू सुत देवराजेन पितानिमित्तं श्री शीतलनाथ पंचतीर्थी बिंबं कारापितं प्रति० श्री ब्रह्माणगछे प्र० भ० श्री विमल सूरिभिः।

[1369]

संवत् १५०१ वर्षे मा० सु० ५ श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० नांदा सुत भटमा भा० नाथि पु० सायकरणा वरनागयुतैः पित्रो श्रे० चंद्रप्रभ स्वामि बिंबं प्र० श्री बृहत्गा — गच्छे प्र० श्री मंगलचंद्र सूरिभिः।

[1370]

सं० [illegible] वर्षे वै० सु० [illegible] शान्ति बिंबं का० प्र० [illegible] श्री [illegible] सूरिभिः।

[1371]

सं० १५०७ वैशाष सु० ए ऊका बेविकाभ्यां स्वश्रेयसे कारिता ···· ।

[1372]

सं० १५०ए वर्षे माघ सु० १० शनौ ऊकेशवंशे माल्हू गोत्रे मं० जोजराज जा० ऊमा पुत्र सं० देवोकेन ज्रा० मं० सोनार संग्रामादि सहितेन सू (?) जा० देवलदे श्रेयोर्थं श्री अजित बिं का० प्र० श्री खरतरगछे श्री जिनसागर सूरिजिः ॥

[1373]

सं० १५१२ माघ सु० १ बुधे श्री ओसवाल ज्ञातौ सुहणाणी सुचिंती गो० सा० सारंग जा० नयणी पु० श्रीमालेन जा० षीमी पु० श्रीवंत युतेन मातृश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं उपकेशगछे ककुदाचार्य सं० प्र० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[1374]

सं० १५१३ पोष सु० ७ ऊकेशवंशे वि ···· क गोत्र सं० नरसिंहांगज सा० मार पुत्रेण सा० कील्हाकेन निजमातृपुण्यार्थं श्री नमि बिंबं का० प्र० ब्रह्माण तपागछे उदयप्रज सूरि जट्टारक श्री पूर्णचंद्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिजिः ।

[1375]

सं १५१३ वर्षे माह सु० २ ऊकेश पीथेपरिया गो० सा० षिथपाल जार्या षेमश्री ····· पु० जापू सेपू जा० सोस श्री ····· साथी ····· प्ररपोध (?) आ० श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० श्री वृहज्छे श्री सागरचंद्र सूरिजिः ।

[1376]

संवत् १५१५ वर्षे ज्येष्ट सुदि ५ सोमे गूर्जर ज्ञातीय दो० अमरसी जा० रूपिणि सु०

जसाकेन भा० वइजीयुतेन पितुरादेशेन आत्मश्रेयसे जीवितस्वामी श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं पूर्णिमापक्षे भीमपल्लीय भट्टारक श्री जयचंद्र सूरीणमुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ छ ॥

[1377]

सं० १५३० वर्षे वैशाष सुदि ९ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय भडड़ा (?) गोत्रे सा० वछराज पु० सा० जाटा भार्या गउवदे पु० सा० छाजू भार्या हर्षमदे पु० सा० रत्नपाल सीधर समदा सायराभ्यः स्वपितॄणां श्रेयसे श्री श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री विजयचंद्र सूरि पट्टे श्री साधुरत्न सूरिभिः ॥

[1378]

॥ संवत् १५३१ वर्षे वैशाष वदि ० शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० देवसीय भार्या पाल्हणदे पुत्र सा० भालवेन भा० माकू सहितेन आत्मश्रेयोर्थ श्री पद्मप्रभ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री साधपूर्णिमापक्षे प। श्रीरामचंद्र सूरि पट्टे पूज्य। श्री पुज्य चंद्र सूरीणामुपदेशेन विधिना आचष्टे।

[1379]

सं० १५३६ वर्षे वैशाष वदि ४ भौमवारे प्रामेचा गोत्रे सा० जाटा भा० जइतो पुत्री साता जाटी पु० भइरवदास ...... भा० झुल्लादे सहितेन लाठि निमित्त श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं खरतरगच्छे प्रतिष्ठितं श्री जिनचंद्र सूरिभिः। शुभं भवतु।

[1380]

सं० १५३२ वर्षे वैशाष सुदि ६ सोमे श्री कोरंटगच्छे श्री नन्नाचार्य संताने उप० पोमा[illegible] गोत्रे सा० जगमाल भा० जासलदे पु० सा० सारंग भा० संसारदे पु० सा० मेहा नरसिं सहितेन श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं प्र० श्री सांवदेव सूरिभिः ॥

[1381]

संवत् १५३३ वर्षे माघ सुदि १३ सोमवासरे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० हेमा भा० मानू पुत्र

स० बकूआ जा० काही ···· पु० स० वता जा० मतकूं पुत्र डूंगर आत्मश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं साधुपूर्णिमापक्षे प्रतिष्ठितं श्री जयशेखर सूरिभिः ।

[1382]

सं० १५३४ वर्षे फागुण सुदि ए बुधवारे प्रा० ज्ञा० सा० मोकल जा० मोहणदे पु० मेहाके० जा० कुंती पु० रो० जा० लषमण आसर वीसल सहितेन आ० श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० पू० द्वि० कन्नोली वा० ज० श्री विजयप्रन्न सूरीणामुपदेशेन ।

[1383]

संवत् १५४ए वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ सोमे ओसवाल ज्ञातीय सा० मूला जा० माणिकदे सं० माणिक जा० गंगादे सु० नूनं च जा० लाठी बिंबं कारितं मूला श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्रतिष्ठितं । श्री संडेरगछे श्री सुमति सूरिभिः ॥

[1384]

सं० १५६३ वर्षे माह सुदि ५ गुरौ उपकेश ज्ञा० नूरि गोत्रे सा० वांपा चउहथ चां० जा० चांपले पु० कान्हा जा० चंगी पु० देवा शिवा सुकुटुम्बयुतेन चउहथ श्रियोर्थं श्री सुविधिनाथ बिंबं श्री धर्मघोषगछे ज० श्री श्रुतसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं । शुजं जवतु ॥

[1385]

सं० १५६७ वर्षे वैशाप सुदि १० बुधे गूंदेचा गोत्रे ऊकेशवंशे सा० ठाकुर जार्या टहन पु० ऊधा सुत कचा वर्जू जा० २ जसा गुणा प्रमुख कुटुंबसहितैः श्री अंचलगछे जावसागर सूरीणामुपदेशेन ।

[1386]

सं० १५७२ वर्षे वैशाप सुदि ५ सोमे ऊ० ज्ञा० फूलपगर गोत्रे सा० दधीरथ पु० सा० धर्मा जा० २ पाटू साल्ही प० ···· पु० फांफा जा० पूरी ···· पुत्र सोकल प्रमुख समस्त

कुटुम्बेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री वडगछे श्री श्री चंद्रप्रभ सूरिभिः ॥
॥ श्री ॥ जावर वास्तव्य ॥

[1387]

सं० १५७९ वर्षे वैशाष सु० ६ सोमे कूकर वाड़ा वा० नागर ज्ञातीय श्रे० कान्हा भा० धनी सु० श्रे० हरपतिलदणकेन भा० लषमादे प्र० क० सुतेन नपा सीपा पदमा श्रे० श्री श्रेयांसनाथ बिंबं का० श्री बृहत्तपा प० श्री धनरत्न सूरि श्री सौभाग्यसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1388]

सवत् १६२७ वर्षे वैशाष शुदि ३ शुक्रे ऊकेशवंशे गोठ १ गोत्रे सोप श्रीवछ सोप भोला पुत्र सो० उदयकरण भार्या अछवोदे पुत्र सो० जसवीर। सो० नका सो० धवजी प्रमुख परिवारयुतैः श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं श्री बृहत्खरतरगछे श्री जिनसिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥

चौवीसी पर।

[1389]

सं० १५२१ वर्षे वैशाष सुदि १० श्री उपकेश ज्ञातीय वापणा गोत्रे सा० देहड़ पु० देल्हा भार्या धाइ पुत्र सा० लूला भीमा कान्हा स० भीमाकेन भा० वीराणि पुत्र श्रवणा मारू फाफू सहितेन श्री शांतिनाथ मूलनायक प्रभृति चतुर्विंशति जिनपट्टः का० श्री उपकेशगछे ककुदाचार्य संताने प्र० श्रीसिद्ध सूरि पट्टे श्री कक्क सूरिभिः ॥ शुभं ॥

[1390]

सं० १५४१ वर्षे आषाढ सु० ३ शनौ उप० श्रेष्टि गोत्रे सा० रामा भा० रत्नू पु० राजा भाजा शिवा राजा भा० टहकू पु० वना सांगा मांगा गीईआ आमा भद्रदेव भार्या भटी सा० सांगाकेन भा० करमी द्वि० भा० रामति प्र० समस्तकुटुम्बसहितेन भ्रातृ वना

निमित्तं श्री कुंथुनाथ चतुर्विंशति पट्टकं का० श्री मडूहड़ गछे रत्नपुरीय भ० श्री धर्मचंद्र सूरि पट्टे भ० श्री कमलचंद्र सूरिभिः॥ शाल्मलीयपुरे।

धातु की मूर्त्ति पर।

[1391]

सं० १६७५ वर्षे वै० सु० १५ दिने इंदलपुर वास्तव्य प्रा० वाद (प्राग्वाट) ज्ञातीय बाई वजा का० श्री संभव बिं० प्र० श्री। विजयदेव सूरिभिः।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर।

पंचतीर्थियों पर।

[1392]

संवत् ११७७ फागुण सुदि ए सालिगदे लूण वति भा० कारिता।

[1393]

सं० १३७६ माह वदि २ श्री बृहद्गच्छ बा० श्री देवार्य स० ऊकेश ज्ञा० श्रे० आसचंद्र सा० श्रे० देदारिसीहेन पितृश्रेयसे श्री वासुपूज्य बिं० का० प्र० श्री अमरचंद्र सूरि शिष्यैः श्री धर्म्मघोष सूरिभिः॥

[1394]

॥ सं० १४६६ वर्षे वैशाष सुदि ३ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञातौ म० साल्हा सुत पितृ म०मूलू मातृ मूरी सुत ठकुरसिंहेन पितृमातृश्रेयसे श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री ब्रह्माणगछे श्रीवीर सूरिभिः॥ श्री॥

[1395]

सं० १४६ए वर्षे माह सुदि ६ षंडेरकीयगछे ऊ० सा० अजा भा० कपूरदे सुं० तिहुअण

भा० साल्हणदे पु० तेजाकेन पितृ घरसमेठी सहितेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशांति बिंबं का० प्रति० श्रीसुमति सूरिभिः ॥

[1396]

सं० १४७० वर्षे माघ सु० १२ गुरुवारे आदित्यनाग गोत्रे सा० सलषण पुत्र करमण भा० सांवत दीर तेजाकेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीदेव सूरिभिः ॥ ० ॥

[1397]

सं० १४८९ माघ सुदि १० शनौ श्रीमाल ज्ञातीय सं० पेता संताने मं० ठाड़ा भा० नाऊ नाम्ना पु० कान्हा सोम्रा सहितया भर्तु श्रेयसे श्री श्रेयांस बिंबं का० प्र० श्री पूर्णिमा पक्षे श्री विद्याशेखर सूरीणामुपदेशेन विधिना श्राद्धैः ॥

[1398]

संवत् १४९९ माह सुदि ५ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय वीटवल व्य० पाना सुत वयरसी भार्या माई ···· पितृमातृश्रेयोर्थं सुत मेलाकेन आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं कारापितं श्री नागेन्द्र गच्छे श्री गुणसागर सूरिः शिष्यैः प्रतिष्ठितं श्री श्री गुणसमुद्र सूरिभिः ॥ श्री सांतपुरे पितृव्य देवलवणीसी ।

[1399]

सं० १५०४ वर्षे फागण सु० ११ गुरौ दिने नाहर गोत्रे सा० जाल्हा भा० नोआई। सा० राजा भा० लाडू ···· पु० फाफू सहितं निजपुण्यार्थं श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० श्री धर्म० गच्छे श्री विजयचंद्र सूरिभिः ।

[1400]

सं० १५०७ ज्येष्ठ सुदि २ दिने ऊकेशवंशे सा० नोडमी भार्या कपूरदे श्राविकया निज भर्तृ नोआतीपुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं का० प्रति० खरतरगच्छाधिराज श्री जिनराज सूरि पट्टालङ्कार प्रति० श्री जिनचंद्र सूरि गच्छेः ।

[1401]

ॐ ॥ सं० १५११ वर्षे माघ वदि ए ठोहरिया गोत्रे सा० दातु पूरेण ..... श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा नट्टारक श्री पूर्णचंद्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिजिः ॥

[1402]

सं० १५११ फा० शु० ए रवौ प्राग्वाट० सा० पेषा नार्या राजू सुत वीढाकेन नार्या कमा सुत दरपाल टाहा नरकीता नरमा कगतादि कुटुम्बयुतेन श्री संनवनाथ बिंबं स्वश्रेयसे कारितं प्रतिष्ठितं तपागछ नायक नट्टारक श्री सोमसुंदर सूरि प्रांषज श्री रत्नशेषर सूरिजिः।

[1403]

सं १५१३ वर्षे मा० व० ५ प्राग्वाट व्य० तिहुणा नाण कर्मा पुत्र डाला नगिन्या व्य० दना पत्न्या श्रा० मनी नाम्न्या श्री वासुपूज्य बिंबं स्वश्रेयसे का० प्र० तपा श्री रत्नशेषर सूरिनिः ॥

[1404]

संवत् १५१७ वर्षे माह सुदि १० बुधे श्री कोरंटगच्छे उपकेश ज्ञा० काला पमार शाखायां सा० सोना ना० सहजलदे पु० सादाकेन भ्रातृ चउड़ा नादा नेमा सादा पु० रणवीर वणवीर सहितेन स्वश्रेयसे श्री चंद्रप्रन बिंबं कारि० श्री कक्क सूरि पट्टे श्रीपाद .... ।

[1405]

संवत् १५१७ वर्षे वैशाष सुदि ३ गुरु श्री श्रीमाल ज्ञातीय बजोला नार्या देमाइ सुत व्यव० कुरुपालेन नार्या कमलादे सुत व्यव० वियाधर वीरपाल प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रत स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छनायक नट्टारक श्री सूरसुंदर सूरिजिः। श्रीपत्तन वास्तव्य शुनं नवतु ॥ श्री ॥

[1406]

॥ संवत् १५१७ वर्षे माह सुदि १० दिने श्रीमालवंशे । पल्हवड़ गोत्रे सा० भेया नार्या

मेलाह्वी पु० सा० वीरसेन भार्या षीमा पु० सा० समरा सहसू श्रे० श्री शांतिनाथ विं० प्र० श्री वृहद्गच्छे श्री रत्नाकर सूरि प० श्री मुनिनिधान सूरि श्री मेरुप्रभ सूरिभिः ॥

[1407]

सं० १५२१ वर्षे वैशाष सु० १० सोमे ओसवाल ज्ञा० सा० ठाकुरसो भा० वीसलदे सुत सा० धनाकेन भार्या सोनाई पुत्र सा० हांसादियुतेन सुता बाबू श्रेयसे श्री शीतलनाथ विंबं कारितं प्रति० श्री वृहत्तपापक्षे श्री उदयवल्लभ सूरिभिः ।

[1408]

संवत् १५३३ वर्षे वैशाष वदि ५ श्री संडेरगच्छे ओसवाल ज्ञा० राणु डाथेच (?) गोत्रे केड्डादेन भणा आल्हू पु० गोकाला ङुदेदङ ···· जयनादर्पदयुतेन आत्मपुण्यार्थं श्री चंद्रप्रभ स्वामि विंबं का० प्र० श्री ···· सूरि संताने श्री शांति सूरिभिः ।

[1409]

सं० १५३३ माघ सुदि ५ श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जयशेषर सूरिभिः।

[1410]

सं० १५३६ वर्षे ज्येष्ट सुदि ७ भौमे श्री २ माल ज्ञा० महाजन । सदा भा० मूलुयदे सुत वीका आका सहा० वीका भा० कपूर सुत ताल्हा कान्हा जनासहितेन मातृपितृश्रेयसे श्री विमलनाथ विंबं का० प्रति० श्री चैत्रगच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरि० चांडसमीया श्रमाणि गोयं वासर (?) वा० ।

[1411]

॥ सं० १५३६ वर्षे माघ सुदि ९ सोमे प्रा० । ज्ञाति सा० सरदास भा० सहजलदे सुत सा० सूरा पाल्ह सा० जोगा भार्या रूनी सुत डूगर प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीधर्मनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं प्र० ···· सूरिभिः ॥ ठ ॥ श्री ॥

[1412]

सं० १५५४ वर्षे वरडउद वास्तव्य ऊकेश ज्ञातीय गांधी गोत्रे सा० सारंग भार्या जाल्ही पुत्र सा० फेरू भार्या सूहवेदकेन भाराऊयुतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री अंचलगच्छे श्री सिद्धान्तसागर सूरिभिः।

[1413]

सं० १५५७ वर्षे वैशाष सु० ६ शुक्रे ऊकेशवंशे भणसाली गोत्रे भ० गुणराज पु० भ० सहदे पु० भ० हासा भ० राजी .... पु० भ० वसुपाल भा० लीला पु० भ० सालिग सुश्रावकेण भा० जीमी प्रमुखपरिवारयुतेन पितृश्रेयोर्थं स्वपुण्यार्थं श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री।

[1414]

सं० १५५९ वर्षे वैशाष शु० ७ बुधे उपकेश ज्ञा० श्रे० सालिग सुत श्रे० नरवद भा० पेतू पुत्र राणाकेन पितुः पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री बृहद्गच्छे वोकडिआ वंटुकेन श्री श्री श्री मलयचंद्र सूरि पट्टे श्री मणिचंद्र सूरिभिः॥

[1415]

सं० १५६७ वर्षे माघ सु० ५ दि० श्रीमाल धांधीया गोत्रे सा० सारंग पु० सा० दोदा भा० संपूरी पु० सा० कालण सा० ऊदा सा० ठाला सा० कालण पु० गोपचंद्र श्रीचंद्र इत्यादिपरिवृताभ्यां सा० ऊदा० भा० टालाभ्यां श्री सुविधिनाथ बिं० का० स्वपितृव्य [illegible] श्री [illegible] पुण्यार्थं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः॥

[1416]

सं० १५८१ वर्षे पोस सुदि ५ शुक्र दिने उ० शीसोद्या गोत्रे गोत्रजा वायण सा० पद्मा भा० चांपू पु० दाना भा० कनमा पु० कमा अपाई लावेता पातिः स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं का० प्र० श्री संडेर गच्छे कवि श्री ईश्वर सूरिभिः॥ श्री ॥ श्री चित्रकूटदुर्गे।

धातु के यंत्र पर।

[1417]

॥ संवत् १७५५ वर्षे आश्विन शुक्ल १५ दिने सिद्धचक्रं यंत्रमिदं। प्रतिष्ठितं वा। लावण्य कमल गणिना। कारितं श्री नागोर नगर वास्तव्य लोढा गोत्र ज्ञानचंद्रेण श्रेयोर्थं ॥श्रीरस्तु॥

[1418]

ॐ ॥ श्रीमन्वि ···· गच्छे संगंनद्र (?) देव सूरीणां महप्प गणिना प्र०········ ।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर—दादावाड़ी।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1419]

॥ सं० १३७१ माघ शुक्ल ५ कुशल पु ············ श्री शांतिनाथ बिंबं।

[1420]

संवत् १४४३ वर्षे वै० सु० १३ श्री मूलसंघे ····।

[1421]

सं० १४७२ वर्षे फा० सुदि २ श्रीमाल ज्ञा० श्रे० माला भा० मटू सुत श्रे० देवराज हरपति भ्रातृसुत श्रे० वरसिंह भार्या रूपादे सुत पर्वतेन भार्या सगू निज पितृमातृश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्र० श्री तपागच्छ नायक श्री श्री श्री सोमसुंदर सूरिभिः।

[1422]

॥ सं० १४९८ वर्षे वैशाख सु० ५ बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० माला भा० भार्या

युतौ सालगगदा श्री सुविधिनाथ बिंबं कारापितं श्री मुनिसिंह सूरीणामुपदेशेन प्र० श्री शीलरत्न सूरिभिः ॥ शुभं ॥

[1423]

॥ सं० १५३६ वर्षे माह सुदि ५ ओसवालान्वय सूराणा गोत्रे स० नाल्हा भा० नावलदे भ० । यग पलषु सनषन कारापित वासुपूज्य बि० धर्म्मघोष गच्छे श्री ···· सूरि प्रतिष्ठितः।

मुरार।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1424]

सं० १४९६ वर्षे फा० व० २ हुंबड़ ज्ञातीय ठ० चाकम भा० वाल्हणदे सुत करमसी देवसीह्राभ्यां निज पितृश्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ मङ्गलं भवतु ॥ छ ॥

चरण पर—दादावाड़ी।

[1425]

सं० १९२१ शा० १७८६ माघ मासे शुक्लपक्षे षष्ठ्यां-६ पूर्वं तु मरुदेशे मेरुतेति नाम नगरस्योऽभूत् अधुना च मुरारि छावण्यां वास्तव्य धाड़ीवाल गोत्रीय शंभुमल्ल सुजानमल्लाभ्यां युगप्रधान दादा श्री जिनदत्त सूरीणां श्री जिनकुशल सूरीणां च पादन्यासौ कारापितौ प्रतिष्टितौ च वृ। भ। खरतरगच्छीय श्री जिनकल्याण सूरिभिः उ० माणिक्यचंद्र तच्छिष्य पं० हुकुमचंद्रोपदेशात्।

ग्वालियर (गोपाचल) दुर्ग ।

शिलालेख । *

[1426] †

पहला पत्थर ।

(१) ॐ नमः पद्मनाथाय । हर्षोत्फुल्लविलोचनैर्द्दिशि दिशि प्रोत्प्रीयमानं जनैर्मेदिन्यां विततन्ततो हरिहरब्रह्मास्पदानि क्रमात् । श्वेतीकृत्य यदात्मना परिणतं श्री पद्मभूभृद्यशः पायादेष जगन्ति निर्म्मलवपुः श्वेतानि रुद्रश्चिरम् ॥ १ ॥ मौलिन्यस्तमहानीलशकलः पातु वो हरिः । दर्शयन्निव केशस्थ नवजीमूत कर्णिकाम् ॥२॥ मुक्ताशैलस्थलेन क्षितिति

(२) लकयशो राशिना निर्म्मितोऽयन्देवः पायादुमायाः पतिरतिधवलस्वच्छकान्तिर्जगन्ति । मन्वानः सर्वथैव त्रिभुवनविदितं श्यामता पह्नवं यः शङ्के स्वं वर्णचिह्नं मुकुटतटमिलन्नीलकान्त्या बिभर्ति ॥ ३ ॥ इदं मौलिन्यस्तं न भवति महानीलशकलं न मुक्ताशैलेन स्फुरति घटितश्चैष

(३) भगवान् । उपाकर्णोत्तंसीकरणभुजगं नीलनलिनं वहत्यथाप्यस्याश्चिरविरहपाण्डूकृततनुः ॥ ४ ॥ आसीद्वीर्यलघूकृतेन्द्रतनयो निःशेषभूमीभृतां वन्द्यः कच्छपघातवंशतिलकः क्षौणीपतिर्लक्ष्मणः । यः कोदण्डधरः प्रजाहितकरश्चक्रे स्वचित्तानुगाङ्गामेकःपृथुवत्पृथूनपि हठादुत्पाद्यपृथ्वीभृतः ॥ ५ ॥ तस्माद्वज्रधरोपमः क्षिति

(४) पतिः श्रीवज्रदामाभवद् दुर्वारोर्ज्जितबाहुदण्डविजिते गोपाद्रिदुर्गे युधा । निर्व्याजंपरिभूय वैरिनगराधीशप्रतापोदयं यद्वीरव्रतसूचकः समभवत् प्रोद्घोषणार्ण्डिमः ॥ ६ ॥

---

* ग्वालियर किले के लेख डा: राजेन्द्रलाल मित्र के "इंडोएरियन्स" में छपे थे। पर पुस्तक अब दुष्प्राप्य होने के कारण वे यहां प्रकाशित किये गये।

† Indo-Aryans, Vol. II pp. 370-373

न तुलितः किल केनचिदप्यभूज्जगति भूमिभृतेति कुतूहलात् । तुलयतिस्म तुला पुरुषः स्वयं खमिह वर्ष्म विशुद्धहिरण्मयैः ॥ ७ ॥ ततो रिपुध्वान्तसहस्रधामा नृपोऽभव-

(५) न्मङ्गलराजनामा । यङ्केश्वरैकप्रणति प्रभावान् महेश्वराणाम्प्रणतः सहस्रैः ॥ ८ ॥ श्री कीर्तिराजो नृपतिस्ततोऽभूद्यस्य प्रयाणेषु चमूसमुत्थैः । धूलीवितानैः सममेव चित्रं मित्रस्य वैवर्ण्यमभूद् द्विषश्च ॥ ९ ॥ किं ब्रूमोस्य कथामृतं नरपतेरेतेन शौर्याब्धिना धत्ते मालवभूमिपस्य समरे सङ्ग्रामतीतोर्जितः यस्मिन् रङ्गमुपागते दिशि दिशि त्रासा-

(६) त्कराग्रच्युतैर्ग्रामीणाः स्वगृहाणि कुन्दनिकरैः सञ्छादयाञ्चक्रिरे ॥ १० ॥ अद्भुतः सिंहपानीयनगरे येन कारितः । कीर्तिस्तम्भ इवाभाति प्रासादः पार्वतीपतेः ॥ ११ ॥ तस्मादजायत महामतिमूलदेवः पृथ्वीपतिर्भुवनपाल इति प्रसिद्धः । श्री नन्ददण्ड गदनिन्दितचक्रवर्तिचिह्नैरलंकृततनुर्मनुतुल्यकीर्त्तिः ॥ १२ ॥ यस्य ध्वस्तारि भूपालां सर्वाम्पालयतः

(७) प्रभोः । भुवन् त्रैलोक्यमल्लस्य निःसपत्नमभूज्जगत् ॥ १३ ॥ पत्नी देवव्रता तस्य हरेर्लक्ष्मीरिवाभवत् । तस्यां श्री देवपालोऽभूत्तनयस्तस्य भूपतेः । दानेन कर्णमजयत् पार्थं कोदण्डविद्यया । धर्मराजञ्च सत्येन स युवा विनयाश्रयः ॥ १४ ॥ सुनुस्तस्य विशुद्धबुद्धिविभवः पुण्यैः प्रजानामभून्मान्धातेव स चक्रवर्तितिलकः श्रीपद्मपालः प्रभुः यस्स्वास्येपि क-

(८) रप्रवृत्तिरपरस्येतीव यश्चिन्तयन्दिग्यात्रासु मुहुः खरांशुमरुणं सान्द्रैश्चभूरेणुभिः ॥ १५ ॥ कृत्वान्याः स्ववशे दिशः क्रमवशात्सद्मापतिर्दक्षिणानुत्खिताचलसन्निभानविरत ···· वाजिव्रजैः । उद्धूतान् पततः प ·····: संप्रेक्ष्य रेणूत्करान् भूयोप्युद्भटसेतुवन्धन धिया त्रस्यन्ति ···· ॥ १६ ॥ तस्येन्दुद्युतिसुंदरेण यशसा नाके सुराणांगणे सौवर्ण्यभ्रमशीलखंडन-

(९) जयादप्राप्नुवत्य: प्रियान् । नूनं शक्रपुर: सुरासुरवधूसद्मा: श्रिये साम्प्रतं ······ यंति ये प्रथमत: सर्वा वपु: संश्रिते ॥ कैर्दृप्ता ···· पादपां गाव:कामदुघा ···· कैश्चिन्तितार्थप्रदा: । पूर्णा: कस्य मनोरथा इह न कैः ···· मुना पूरिता वीरो यानि तदस्ति तद्गुणवतः कस्य द्रुमादीन्यपि । श्रुत्वा न पद्मनृपतिं परिरक्षितारं प्रासादयोपि यदसौ वंत नम्रभाव: ।

(१०) योद्यापि ···· तनुर्विपिनेष्वशो ···· ॥ भ्रम: कुलालचक्रे च लाभ: पुण्यार्जनेषु च । काठिन्यं
कुम्भेषु क ···· शासविमर्दिनीम् ॥ असम्मतो ···· पीना साधुर्न निस्त्रिंशपरि ···· तोपि इ ···· खलम्नेन धनुर्न चासिं तथापि या वैरिगणं जिगाय । सथ ····

(११) ···· पाधिप शिरोमणिं न्नि ···· । लोकानुरागयशसापि ···· प्रतापं विस्तारयां यदसि ···· ॥ वलयानीव नारीणां हिमानीव नभ:श्रिय: । ···· स विमृश्य नदीपूरचत्वरे सम्पदायुष: पूर्त्तधर्म्मे मतिं चक्रे जिघृक्षुरनयो: फलम् ॥ प्रजा ···· त्वते

(१२) न क्षितितिलकभूतं न भवनं ···· कारितमद: । ···· मिव गिरा यस्य शिखरं समारूढसिंहो मृगमिव नृ ···· मशितुम् ॥ ···· सश्च ···· वरशिखरस्पर्द्धिनो हिममण्ड ···· त्यावतीयं शशिकरधवला वैजयन्ती पतन्ती । निर्व्वातं भाति भूतिच्छुरितनिजतनोर्देवदेवस्य शम्भोः स्वर्गाङ्गनेव पिङ्गस्फुटवि-

(१३) कटजटाजूटमध्यं विशन्ती ॥ तदेतद्ब्रह्माण्डं स इह भविता पङ्कजभुव: पुनर्वेयं बोढाल्पो वयमिह ···· वियति ····। ···· तदिदमुररीकृत्य सकलं ध्रुवं संसेवन्ते हरिपदन ···· तममी ॥ ···· कनकाचल: शुभविद्यावन्त: स्थित: श्रीपतिर्विप्राणो द्विजसत्तमानुदधिजावासो नृसिंहान्वित: । निर्म्माता स्ववृत: समस्तविबुधैर्वन्धप्रनिष्ठेरयं प्रासादश्च

(१४) धरातले समम्हो कल्पं हरे: कल्पताम् । ···· द्विजपुङ्गवेपु प्रतिष्ठितेष्वष्टसु पद्मपाल: युवैव दैवप्रतिकूलभावा ···· बभूव ॥ तस्य भ्राता नृपतिरभवत् सूर्यपालस्य सूनु: श्री

गोपाहैः प्रकृतनिलयः श्री महीपालदेवः। यस्प्राप्यैव प्रथितयशसन्तावभूतां सनाथे
सोयं त्यागो हरिरविसुताभावद्दुस्थोऽचिरेण। सृष्टिङ्कुर्वन्नमात्यानां विप्रा-

(१५) णां स नृपस्थितिम्। प्रलयं विद्विषामासीद् ब्रह्मोपेन्द्रहरात्मकः यत्र धामनिधौ गाङ्गि
पालयत्यवनीतलम्॥ .... मुद्रहन्ति शिरसःखलु राजहंसाः सृष्टास्त्वया पुनरिमाः
समयावसन्नाः। नाथ प्रजा सुमनसां प्रथमो .... सि त्वं सिद्धवीररसता-

(१६) मरसोद्भवस्य॥ लक्ष्मीपतिस्त्वमसि पङ्कजचक्रचिह्नं पाणिद्वयं वहसि भूप भुवं बिभर्षि।
श्यामं वपुः प्रथयसि स्थितिहेतुरेकस्त्वं कोपि नीतिविजितो .... सम्पालयस्य निश-
मर्थिजनस्य कार्यं रामश्रिया त्वमसि नाथ मु ....। सङ्कर्षणस्त्वमसि विद्विपदायुधन्त्वं
त्वं कोसि सच्चरितहालहलायुधस्य॥ .... ख्यातारति .... रूपं तवातिश ....

(१७) यविस्मयकारिदेव। त्वं मीनसिद्धपुरुषोत्तमसम्भवोसि कस्त्वं क्षितीशवरशंकर
सूदनस्य॥ भूभृत्सुता पतिरसि द्विषतां पुराणि जेत्ता त्वमीश .... म्। भूतिं
दधास्य मलचन्द्रविभूषिताङ्गः कस्त्वं सदम्बुजदिवाकर शङ्करस्य॥ त्वं तेजसा शिखिन
मिद्धमधः करोषि शक्तिं दधासि ....। त्वन्तारकं रिपुबलं

(१८) .... बलान्निहंसि कस्त्वं नवीननलनीलमलब्धजन्मा (?)॥ त्वं वज्रभृत्त्वमसि पक्षभिदप्य-
शेषं भूमीभृतां विबुधबन्धगुरुप्रियोसि।....दुर्गाचरणोसि कोसि त्वं भीमसाहससहस्र-
विलोचनस्य। ख्यातं तवेश बहु पुण्यजनाधिपत्यं कान्तालकावलिभिरातमैः सुगुप्ता॥
त्वामामनन्ति परमेश्वरबद्धसख्यं त्वं कोसि सद्गुणनिधानधरा-

(१९) धिपस्य। तेजोनिधिस्त्वमसि भूमिभृतः समग्राः क्रान्ताः करैः प्रयतमुन्नतरैस्तवेश।
प्रासादय सततमर्थिजनस्य कोसि त्वं कल्पभूधरसरोरुहबान्धवस्य॥ आनन्ददोसि
जनतान[?]नोत्पलानामाप्यायिताखिलजनः करमार्दवेन। त्वं शश्वदीश्वरशिरस्तबदत्त-
पादस्त्वं कोसि मर्त्यभुवनेश निशाकरस्य॥ त्वामंशमीश नि-

(२०) गदन्ति मधुद्विषोमी श्यामाभिरामतनुरस्य मलप्रबोधः पुण्यं ....रतमिदं विहितं त्वयैव

त्वं कोसि सत्यधनसत्यवती सुतस्य। .... न्ति सुरसिन्धुरियं समुद्रप्रान्तन्त्वयो-न्ननिमग्नौ गम्भिरः स्ववंशः। पूर्वै पवित्रवनके विहिताश्च कोसि वंशस्थलब्धपरता ....नगीरथस्य॥ एतत्त्वया कृतमताङ्कमासुधिस्त्वं व्याप्ता महीह

(२१) .. रीश मनोजवैस्ते पुण्यावतारकरणकृतदुर्दशास्त्वस्त्वं कोसि हन्त रिपुलाघव राघवस्त्वम्। धर्म्मप्रसूस्त्वमसि सत्यधरस्त्वमेकस्त्वं वासुदेवचरणार्चनदत्तचित्तः। त्वं कोसि विप्र-जनसेवितशेषभूतिः संग्रामनिष्ठुर युधिष्ठिरपार्थिवस्य॥ त्वं भूरिकुञ्जरबलो भुवनैक-मल्ल .... भूपित तनुर्नृपपावनोसि। प्रच्छन्न

दूसरा पत्थर। ७

(१) .... : कस्त्वं कवीन्द्रकृतमाद .... कादरस्य। पकस्त्वमीश भुवि धर्मभृतां वरिष्ठः सस्वामिकाग्निगुणदर्पहरस्त्वमाजौ। त्वं सर्वराजपृतनाविजयाप्तकीर्तिस्त्वं कोसि सुन्दर पुरन्दरनन्दनस्य। दुर्योधनाग्निकदर्पा..तस्तवेश यत्नः परार्जनयशः प्रसरं निरोद्धुम्। त्वं कोसि भूजनित .... कर्तन विकर्त्तनसम्भवस्य।

(२) .... यस्त्वमसि कर्म गभीरतायास्त्वं पानि पार्थममभूमिभृतः प्रविष्ठान्। शन्तः स्थितस्तव हरिः सततं नरेश कन्दरं विदीर्णरिपुजागरसागरस्य॥ .... क्रमसमा-गमनमत्तवृत्तिस्त्वं राजकुञ्जरगिरः प्रविनीर्णनादः। दीनाग्निनाम्नरनिरग्रकृति-निर्दिकाभुः कस्त्वं महीपतिमृगाद्मृगाधिपस्य। दानं ददानि निरतो मम गंग-शोभस्त्वं दन्तपाष्ठिकरवा-

(३) हृतारिदर्पः दोपीभूतो जयनि तुङ्गतया नरेन्द्र त्वं कोसि वैरिविनदागम सागरस्य॥ लब्धिपस्त्वमसि निवकृतप्रमोदस्त्वं गजदंष्ट्रसमवेक्षणमदमूलः। मानिनः [illegible] कोसि जनाश्रितमः कस्त्वं [illegible] [illegible]

(४) समरचैरवकैरवस्य ॥ त्वं पश्यतां हरसि देव मनांसि सम्यन्मङ्ख्यजूस्त्वमति निर्मलताभिरामः । कोसि प्रसीद बहु सद्गुणरत्नयोनिस्त्वंकच्चपारिकुलभूषण भूषणस्य ॥ धात्रा परोपकरणाय विसृष्टकायः सञ्जायजन्मसमलंकृततुङ्गगोत्र। ब्रूहि ···· भवनीश्वरवन्दनीयस्त्वं कोसि सूर्यनृपनन्दन चन्दनस्य ···· ॥ नताशु शुरूहृदय प्रथितो-

(५) ग्रमायस्त्वं जानुना कृतवृषो न जम्भीकृताहस्तेनास्तु नाथ हरिणोपमितिः कथं ते॥ नित्यं सन्निहिते कृपाणतमसा प्रायोभिभूयेत स त्वत्रासाद् भुवनैकनाथ हरिणा- स्तस्योदरे प्राविशन् । मूर्त्तिस्ते च कलङ्किता सजमनां धत्ते ···· ः शङ्खस्थैर्विदित स्तथापि नृपते राजा त्व····द्भुतः····विमुखतां पार्थेन नीताः परे व्यसिनस्तुतिरर्ज्जुन-

(६) स्याविहिते व्यज्ञायि पूर्वं किल तत्सम्यक् प्रतिभाति सम्प्रति पुनः श्रीमन्मही- पालवत् त्वामालोक्य सहस्रशो रिपुबलं निघ्नन्तमेकं रणे ॥ किं ब्रूमोपि ···· त्वं नीतिपात्रं परं वृत्तान्तं जगतीपतेरनिसृणात्मप्रियाणां शृणु । कीर्त्तिर्भ्राम्यति दिक्षु ···· किं चित्रं भुवनैकमल्ल यदि

(७) मन्दाकिनोपद्मभूलोकादुद्धरता भगीरथनृपेणानायि निम्नां महीम् । आश्चर्यं पुनरेतदीश यदि ते निम्नान्महीमण्डलादूर्द्ध्वं कीर्त्ति···णीकमलभूलोकं त्वया प्रापिता। चित्रं नात्र फल ···· सर्वात्मना विद्विषो विशिखैः संमूर्छितस्याहवे । ···· मध्यं

(८) भ्नताश्चर्यकृत् ॥ अत्यंबुधिभवद्रैमत्यादित्यभवन्महः । अतिसिंहभवत्शौर्यमतः केनोपमीयते ॥ केयूरं वल्लभूपालभुजदण्डे विराजते किरीटमिव ···· भिधासि विजय- श्रियः । ···· भुवनगुरोस्तोत्रमकृथास्तदेष

(९) वैतालिकैरित्थमभिष्टुतेन संपूजितामर्त्यगुरुद्विजेन । विमुक्तकारागृहसंयतेन विदीर्ण- भूतालयदक्षिणेन । तेनाभिपिक्तमात्रेण प्रतिजज्ञे द्रूयं स्वयम् । पद्मनाथस्य भूतिद्भिः कन्यायाः ···· ॥ ···· यशः शरीरम् ॥ स-

(१०) सर्पिता ब्रह्मपुरी च तेन शेषान् विधायावनिदेवसुख्यान्। प्रवर्ति ''' ब्रमतन्द्रितेन मृष्टान्नपानैरतिधार्मिकेण ॥ श्री पद्मनाथस्य सलोकनाथ ''' नैवेद्यपाका ''' विला

(११) सिनीवा '' नादिर्यथार्हतः पादकुलस्य मूर्त्तिम्। स पद्मनाथस्य पुरः समग्राम-कल्पयत्प्रेक्षणकायभूपः ॥ पापाणपल्लीं प्रविभज्य सम्यग् देवाय ''' । सम्पादयामास तथा द्विजेभ्यः '' ।

(१२) गतो योगीश्वरांगोद्भवः ख्यातः सूरिसलक्षणः क्षितिपतेः सर्वत्र विश्वासभूः। आधारो विनयस्य शीलभवनं भूमिः श्रुतस्याकरः स्वाध्यायस्य क क वसतिः ''''

(१३) द्वीपाले नटो विप्रास्तस्मिन् ग्रामे प्रतिष्ठिताः। तेषां नामानि लिख्यन्ते विसूरः शासनोदितः ॥ देवलब्धिः सुधीराख्यस्ततः श्रीधरदीक्षितः ॥

(१४) ''' रामेश्वरो द्विजवरस्तथा दामोदरो द्विजः। अष्टादशैते विप्राश्च '''' द्विजः। पादोनपदिका '''' एकौसुरार्चकौ। द्वावर्द्धपदिनावेप विप्राणां संग्रहः कृतः। '''दद्धपदं नृपः। विधाय ''कायस्य सूरये देवाय दत्तः सौवर्णो राज्ञा दत्तैः समाचितम्। ''' हरिएमणिमयं भूप—

(१५) ''' कं ददौ। रत्नैर्विचित्रं निष्कञ्च निष्क ''''ः स भूपतिः ॥ प्रा—केयूरयुगलं रत्नैर्बहुभिराचितम्। कङ्कणानां चतुष्कञ्च महार्हमणिभूपितम्। '''' द्वितीय मनि '''' स्य सौवर्ण केवलं यथा। कङ्कणानां चतुष्कञ्च नीलपट्टद्वयं तथा। '''' लैः पंचभिर्युता। '''' धारापात्रञ्च कां।

(१६) ''' चतुष्टयम्। सुवर्णछत्रयं देवपरिवारविभूपणम्। '''' पद्मिर्माभ्जमानपत्रीकृतं विभोः ॥ निवेद्य ताम्रपट्टे च तन्मयेनैवम ''''। प्रतिमा नित्यं मणि '''' राजतौ ''' प्रतिमा '''' का द्वितीया '''' युती। राज '''' मयी चान्या ''''। नाः प्रयत्नेन तिलोपि पूज्यते ''''वेश्मनि। तत्र नाम्नपदं देवं दीपार्यं मल्लिकाकृतम्।

(१७) ...क। ताम्रार्थपात्रद्वितयं तथा दत्तं महीभुजा। सधूपवहनाः सप्त घण्टाश्च ....। दत्ताः शङ्खाश्च सप्तैव ताम्रपात्रीचतुष्टयम्। स कांस्यभाजनं प्रादा न्नृपतिः ....चामरं दण्ड... वृहच्चतुष्टयम् ताम्रमयं तास्ता ...। दत्ताश्च दशतन्मयाः॥ ....देवोपकरणद्रव्याणां संग्रहः कृतः।

(१८) ....वापीकूपतडागादि .... नानावनेषु च। दशमासं तथा विंशत्यूर्द्ध्वं सर्वत्र मण्डले। ददौ राजा नि ...यते सर्वं प्रवर्तते। अयं देवालयो नाम ...स्फटिकामल ... जारद्वाजेन मीमांसान्यायसंस्कृतबुद्धिना। कवीन्द्ररामपौत्रेण गोविन्दकविसूनुना। कविता मणिकण्ठेन सुभाषितसरस्वती। प्रशस्ति

(१९) ....लङ्केश्वरवान् द्वितीयां विभ्रत्सुहृतां मणिकण्ठसूरेः। पञ्चासे चाश्विने मासे कृष्णपक्षे नृपाज्ञया। रचिता मणिकण्ठेन प्रशस्तिरियमुज्ज्वला॥ अङ्कतोपि ११५० ॥ आश्विनबहुलपक्ष।

(२०) ... खिलां महीम्। यस्य गीर्वाणमन्त्री च मन्त्री गौरो नव। प्रशस्तिरियमुत्की- र्णा सद्वर्णा पद्मशिल्पिना।

(२१) ● ● ⊛ ⊛

मूर्त्तियों के चरणचौकी पर।

[1427] *

श्री आदिनाथाय नमः॥ संवत् १४९७ वर्षे वैशाख ... ७ शुक्रे पुनर्वसुनक्षत्र श्रीगोपाचलदुर्गे महाराजाधिराज राजा श्रीडुंग ...संवर्त्तमानो श्रीकाञ्चीसंघे माथुरान्वये पुष्करगणभट्टारक श्रीगणकीर्तिदेव तत्पदे यत्यः कीर्त्तिदेवा प्रतिष्ठाचार्य श्रीपंडितरधूतेन

---

* श्री आदिनाथजी की बड़ी मूर्ति पर यह लेख है। Indo-Aryans, Vol II, p 382.

आम्नाये अग्रोतवंशे मोफलगोत्रा सा ॥ धुरात्मा तस्य पुत्रः साधु जोपा तस्य भार्या नाही। पुत्र प्रथम साधुक्षेमसी द्वितीय साधुमहाराजा तृतीय असराज चतुर्थ धनपाल पञ्चम साधुपाल्का। साधुक्षेमसी भार्या नोगादेवी पुत्र ज्येष्ठ पुत्र भधाधि पतिकौल ॥ भ—भार्य. च ज्येष्ठ स्त्री सुरसुनी पुत्र मल्लिदास द्वितीय भार्या साध्वीसरा पुत्र चन्द्रपाल। क्षेमसी पुत्र द्वितीय साधु श्रीभोजराजा भार्या देवस्य पुत्र पूर्णपाल॥ एतेषां मध्ये श्री॥ त्यादिजिनसंघाधिपति काला सदा प्रणमति ॥

[1428]*

(१) सिद्धि संवत् १५१० वर्षे माघसुदि ८ अष्टम्या श्रीगोपगिरौ महाराजाधिराज रा
(२) जा श्रीडंगरेन्द्रदेवराज्यप्र .... श्रीकार्ष्ठासंघे मायूरान्वये भट्टारक श्री।
(३) क्षेमकीर्त्तिदेवस्तत्पदे श्रीहेमकीर्तिदेवास्तत्पदे श्रीविमलकीर्त्तिदेवाः ....
(४) डिता .... सदाम्नाये अग्रोतवंशे गर्गगोत्रेसा .... त
(५) योः पुत्राः ये दशाय श्रीचंद भार्या मालाही नस्य प्रवसा०पेपार रा .... जीसा .... डु
(६) तीयसा० हरिचंदभार्या जसोधर हितये .... एसी सा० सधा सा० तृती
(७) य हेमा चतुर्थ सा० रतीपुत्र सा० सह सापं .... मु सा० धं....सा० सल्हापुत्र एसेवं..ग
(८) तेषां मध्ये साधु श्रीचंद्रपुत्र शेपा तथा हरिचंद देवकी भार्या ....
(९) दीप्रमुखा नित्यं श्रीमहावीर प्रतिमा प्रतिष्ठाप्य तृभिभक्त्या प्रणमंति ॥
(१०) अङ्गुष्ठमात्रां प्रतिमां जिनस्य भक्त्या प्रतिष्ठापयतो महत्या। फलं बलं राज्य
(११) मनन्त सौख्यं भवस्य विच्छित्तिरथो विमुक्ति ॥ शुभं भवंतु सर्वेपां ॥

[1429]

(१) श्रीमद्गोपाचलगढदुर्गे ॥ महाराजाधिराज श्री मल्लसिंह देवराज्ये प्रवर्त्तमाने। संवत् १५५२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि।

* [illegible]

(२) ९ सोमवासरे श्रीमूलसंघे बलत्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये। भ० श्रीप्र
नन्दिदेव तत् पट्टालंकार श्री।

(३) शुभचंद्र देव। तत्पट्टे भ० मणिचंद्र देव। तत्पट्टे पं मुनि ... गणि कमरदेव तदाम्ने
बारड़ जैणीवंशे सालम भार्या व --

(४) सुक पु ४ तेषां मध्ये आणंद भार्या उदैसिरि। पुत्र ६ लोहंगराम मुनिसिंघ अरजुन
कमगण मल्हू नल्हू। मल्हू भार्या।

(५) पिर्योसिरि पुत्र पारसराम भार्या नव। द्वुती पुत्र रामसि भार्या नागसिरी। तृतीय पुत्र
[illegible]न। चतुर्थ पुत्र गेपाणि॥ सा मल्हु।

(६) - तीर्थंकर बिंबं निर्मापितं प्रणमति प्रीत्यर्थं॥



मुहानीय।

पाषाण की मूर्त्तियों के चरणचौकी पर।

[1430] *

संवत् १८७३ [illegible] महेन्द्रचन्द्रकेन कृता [illegible]।

[1431] +

संवत् १८३८ श्री [illegible] महाराजाधिराज [illegible] वदि पांचमी। * * *

[1432] *

६ः ॥ सिद्धि । सन्तु १४०७ वर्षे बैशाख सुदि १५ दि—नमो ... मघावे वे र ... करा ब्रह्मभूता सर ... गत्या र ... आदि अखंड ढा ... औस्व ... क...सुत ... रिता मु ठे ढ ... व ...

[1433] +

...११६० कातिक सुदि १३ गुरू दिने रतन लिपितं राजन ताड ... तधार दिवसम्मि पंथ ... चंड्डाना पसावे आदेसू संवतु १५२२ वर्षे चैत सुदी १० बुधे।

मथुरा।

श्रीपार्श्वनाथजी का मंदिर—घीयामंडि।

पंचतीर्थियों पर।

[1434]

॥ सं १३७५। श्र० फूलसीह जार्या माल्हू पुत्री लपमिणि मातापितृ श्रयसे श्री शांतिनाथ का० प्र० ब्रह्माणत्य श्रीमदनप्रज सूरि पट्टे श्रीविजयसेन सूरिजिः॥

[1435]

ॐ सं० १३८० वर्षे माघसुदि ५ ऊन० सुचिंती गोत्रे सा० पीमा पुत्र सा० भृणा जोना... श्रीजिनचन्द्र सूरि शिष्य श्रीजगत्तिलक सूरिजिः। ... श्रीपद्मानंद सूरिजिः॥

[1436]

सं० १४६१ वर्षे ज्येष्ट सुदि १० शुक्रे उपकेश ज्ञा० व्य० जड्ना पु० जगपाल ना० पूजलदे पु० लोलाकेन पितृमातृ श्र० श्रीशांतिनाथ विंबं का० प्र० वृहद्गच्छे श्रीगणदेव सूरिजिः।

---

* [illegible]

+ [illegible]

[1437]

सं० १५२३ व० वै० सु० ६ प्राग्वाट श्रे० वस्ता ना० फटू सुत श्रे० सारंगेण ना० मरगाद पुत्र श्रे० वीकादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथ बिम्बं का० प्र० तपागछे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्रीलक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ जइतपुर ॥

[1438]

स० १५२० वर्षे फागुण - - श्रीमालज्ञातीय टार्की गोत्रे स० नाविनो पुत्र श्रीनागू श्रावक श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतरगछे श्री जिनसागर सूरि तत्प० श्री सुंदर सूरि पट्टे श्री हर्ष सूरिभिः।

[1439]

सं० १५३७ वर्षे माघसुदि ६ शुक्रे वैशाष वदि ५ उसवंशे लाषाणी गांधी गोत्रे सा० तेजपाल पुत्र सा० कुयरपाल भार्या सालिगदे पुत्र रायमल्ल श्रावकेण स्वश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री अंचलगछे श्रावकेण श्री गुणनिधानसूरि उपदेशात्।

धातुकी मूर्त्ति पर

[1440]

सं० १६०० फाग० सु० १० क्षेमकीर्त्ति ··· ······।

धातुके यंत्र पर।

[1441]

सं० १७५४ पोष सुदी ४ दिने। बृहस्पति वासरे श्रीसिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं सवाई जैनगर मध्ये वा० लालचंद्र गणिना कारितं वीकानेर वास्तव्य कोठारी अनोप चंद तत्पुत्र जेठमल्लेन श्रेयोर्थं शुभं भवतु॥

आगरा ।

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर—रोशन मोहल्ला ।

पंचतीर्थियों पर

[1442]

॥ संवत् १३७९ वर्षे वैशाख सुदी ६ बुधे श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० अरसीह भा० पामना-पुत्र ... वाल्हाकेन श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

[1443]

॥ संवत् १५२४ वर्षे मार्गशिर वदी ४ रवौ उपकेश ज्ञातीय लिंगा गोत्रे सा० पीघा भा० जदी....पु० सा० चेडन भा० सूहवादे पु० शेपा सरूजन अरजन अमरासहितेन स्वपु० श्रीकुन्थुनाथ बिम्बं का० प्र० श्री उपकेशगछे ककुदाचार्यसन्ताने श्री सिद्ध सूरि पट्टे श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1444]

॥ सं० १५३३ वर्षे पोस सुदि १५ सोमे सिद्धपुर वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय सा० नासण भा० वानू सु० वडाकेन भा० माई सुसूरा प्र० कुटुम्बयुतेन श्री सुमतिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीवृद्धतपागछे श्री ज्ञानसागर सूरि पट्टे श्री उदयसागर सूरिभिः ॥

[1445]

॥ संवत् १५३६ व० ज्येष्ट वदि ४ सोमे श्रीश्रीमाली दोसा रगना उपरिमन प्रायस भा० हपारा सुत भैरवदासेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बि० का० प्र नि० वृद्धतपा श्री उदयसागर-सूरिभिः ॥

[1446]

॥ संवत् १५८२ सा० हीवा भा० का० — सं० गांटर्ध गदर्धीर र— देवानि प्रगमन्नि



[1447]

॥ संवत् १५९२ माघ सुदी ५ बुधवासरे श्री मूलसंघे भ० श्री जिनचन्द्र तदाम्ना जसवाल इल्हा ... कुवेसल श्री हेमणे ....

[1448]

॥ संवत् १६३० वर्षे ज्येष्ठ वदी २ .... श्री सुपार्श्वनाथ बिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री बृहत् खरतरगछे भ० श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[1449]

॥ स० १९३१ वर्षे आगरा वास्तव्य लोढा गोत्रे प्रतापसिंहस्य भा० मूल श्रीनवपद कारितं प्रतिष्ठितं श्री (?) विजयसूरी.... ।

धातु की चौविशी पर ।

[1450]

॥ संवत् १५७४ वर्षे वैशाख सुदी दशमी शुक्र ओसवाल ज्ञातीय राका शाखायां वल्लह गोत्रे सं० रत्नापुत्र स० राजा पु० सं० नाथू भा० वल्हा पुत्र सं० चूहड़ भा० हीसू पु० स० महाराज भा० संभा पुत्र सोहिल लघुभ्रातृ महपति भा० माणिकदे सु० नरहपाल भा० सलूही पु० धनपाल स० हेमराज भा० उदयराजी पु० संघागोराज भ्रातृ सैन्यरत्न भा० श्रीपासी पु० संघराज समस्तकुटुम्बसहितेन सुश्रावकेन हेमराजेन श्री धर्मनाथ बिम्ब कारापितं श्रीउपकेश गछे ककुदाचार्यसन्ताने प्रतिष्ठितं भ० श्री सिद्ध सूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥

पाषाण की मूर्त्तियों पर ।

[1451]

ॐ सिद्धिः ॥ संवत् १६६७ ज्यैष्ठ सुदि १५ तिथौ गुरुवासरे अनुराधा नक्षत्रे । ओसवाल ज्ञातीय अरडक सोनी गोत्रे साह पूना संताने सा० कान्हड़ भा०नामनी वड़ु पुत्र सा०

हीरानंदेन विम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनवर्धन सूरि संताने ···· श्री लब्धिवर्द्धन शिष्येन ।

[1452]

श्रीमत्संवत १६७१ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री आगरावासी ओसवाल ज्ञातीय चोरडिया गोत्रे साह ···· पुत्र सा० हीरानंद भार्या हीरादे पुत्र सा० जेठमल श्रीमदंचलगच्छे पूज्य श्रीमद्धर्म्ममूर्त्ति सूरि तत्पट्टे ····

पाषाण के चौविशी के चरण पर ।

[1453]

संवत १८६२ ज्येष्ठ शुक्ल १३ गुरुवारः श्री सिंघाड़ो बाई ने बनाया । श्री आगरा वास्तव्य व्य० संघपति श्री श्री चंद्रपालेन प्रतिष्ठा कारिता ।

शिलालेख ।

[1454]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ संवत् १६७७ वर्षे आसोज सुदी १५ श्री अर्ग्गलपुरे जलालूदीन पातिसाह श्री अकब्बर सुत जहांगीर सुत सवाई साहिजां विजयराज्ये ···· राजद्वार शोभक सोनी ···· श्री हीरानंद ···· श्री जहांगीरस्य गृहे ···· कृतं । तत्र तस्य नंदनवनोद्यानसमवाटिकायां ····निज धनस्य ···· भार्या सोना सुत निहालचंद भार्या मृगां स्वोत्संग पुत्र चिरं सहसमल्ल सना श्री गंगाजल वारि पूरपूरित निर्मल कूपः कारापितः ॥ आचंद्रार्कं यावत्तिष्टतु ॥

[1455]*

१। ॥ श्री सद्गुरुभ्यो नमः ॥ सत्पट्टोत्तुंगशृंगोदयं शिखरि शिखा भानु बिंबोपमाना जैनोपज्ञाः स

---

* बड़े मंदिर के बगल में जो बड़ाई काम को नई वेदी और सभामंडप बने हैं उसके दाहिने तर्फ उपर में यह शिलालेख लगाया हुवा है। इसकी लंबाई अंदाज २ फिट और चौडाई १॥ फिट है और मामूली पत्थर है। शिलालेख के निचे ४ यंत्र हैं (१) २० का (२) १५ का (३) ३४ का और (४) १६० का खुदा हुवा है।

२। मं चञ्चरित चित तपस्तेजसा तप्यमाना: नूनं नंधा सुरैरेते भुवि यशविमला राज
राजीव हंसा ॥

३। श्रेय: श्री हीरनामा विजयपदयुता सूरिवंशावतंसा: १ भट्टारक श्री विजयेण युक्त:
श्री

४। धर्म सूरी जगति प्रसिद्ध: तत् प्राज्यराज्ये प्रगुणी कृतो य: श्री संघमानन्द विकास:
हेतु २ श्री

५। हीरवंशे भुवि कीर्त्तिविश्रुतं यशोत्तरं यस्य समीक्ष्य मानवा: पश्यंति नेत्रैर्न सुधाकरं
वरं श्री पा

६। ठकश्रेणिपुरन्दरप्रभु: ३ श्रीमेघनामा भुवि पाठक प्रभु प्रसह्य पापं दहतेस्म कामद:
महादवं

७। वन्हिरिव स्फुरद्युतिः ज्वलत्प्रतापावलि कीर्त्तिमंगलं ४ तत्पट्टे विबुधार्चितो विजय
प्राक् श्री

८। मेरुनामा मुनी तच्छिष्यो मणिसदृशौ शुभमति माणिक्य भानू जयौ ताभ्यां शिष्य
कुशाग्रधीति कु

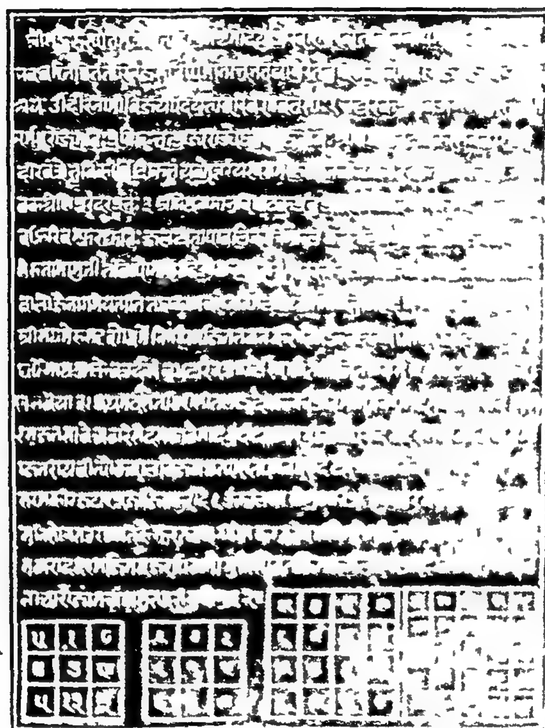
९। शलो जैनागमे यन्मति तद्वाक्यं श्रवणेन निर्मलधीयां निर्मापितोयं गृहं ५ श्री
अकब्बरावादपुरे

१०। श्रीसंघमेरुसदृशो धर्मे निर्माप्य जिनभवनं करोति बहुभक्तिः वात्सल्यं ६ दिगष्टक
मिते

११। वर्षे माघशुक्ले चतुर्दशी बुधवारे च पुण्यर्क्षे स्थापितोयं जिनेश्वरान् ७ श्रेय: कल्याणं
जयं

१२। ॥सवैया ३१ प्रथम वसंत सिरी सीतल जू देवहु की प्रतिमा नगन गुन दस दोर
लगी है आग

१३। रे सुजन माचे अतोर्म्म दस आठे माह सुदी दस च्यार बुद्ध पुष धरी है देहरा
नवीन कीन्हों संग



AGRA TEMPLE [illegible]AS[illegible]

D[illegible]te[illegible] [illegible] A. D. [illegible]

४। पाल स्वर्णपालौ। धर्म्मकृत्य परायणौ। स्ववंशकुजमार्त्तंडौ। प्रशस्तिर्लिख्यते तयोः । ३। श्रीमति हायने रम्ये चन्द्रर्षि रस

५। भूमिते। १६७१ षट् त्रिंशत्तिथौ शाके। १५३६। विक्रमादित्यभूपतेः। ४। राधमासे वसततौं शुक्लायां तृतीया तिथौ। युक्ते तु

६। रोहिणी तेन। निर्दोषगुरुवासरे। ५। श्रीमदंचलगच्छाख्ये सर्वगच्छावतंसके। सिद्धा न्ताख्यातमार्ग्गेण। राजिते विश्वविस्तृते। ६। उग्रसे

७। नपुरे रम्ये। निरातंके रमाश्रये प्रासादमंदिराकीर्णे। सद्ज्ञातौ ह्युपकेशके। ७ लोढागोत्रे विवस्वांस्त्रिजगति सुयशा ब्रह्मवी

८। र्यादियुक्तः श्री श्रंगाख्यातनामा गुरुवचनयुतः कामदेवादि तुल्यः। जीवाजीवादि तत्त्वे पररुचिरमतिर्लोकवर्गेषु यावज्जीवा

९। श्रंडार्कबिंबं परिकरभृतकैः सेवितस्त्वं मुदाहि। ८। लोढा सन्तानविज्ञातो। धन राजो गुणान्वितः। द्वादशव्रतधारी च। शुभ।

१०। कर्माणि नरवरः। ९। तत्पुत्रो वेसराजश्च। दयावान सुजनप्रियः। तुर्यव्रतधरः श्रीमान् चातुर्यादिगुणैर्युतः। १०। तत्पुत्रौ द्वा।

११। वनूनां च सुरागावर्धिनां सदा। जेठू श्रीरंगगोत्रौ च। जिनाज्ञा पालनोत्सुकौ। ११ नौ जीण। सीहू मल्लाख्यौ। जेठूवात्मजौ बभूवतु

१२। :। धर्म्मविदौ तु दक्षौ च। महापूज्यौ यशो धनौ। १२। आसीच्छ्रीरंगजो नूनं। जिनपदार्चने रतः। मनीषी सुमना भव्यो राजपा-

१३। ल उदारधीः। १३। आर्या। धनदो चपंजदास। पेमाख्यौ विविध सौख्य धनयुक्तौ। आम्नां प्राज्ञौ दक्षौ च। तत्त्वज्ञौ नौ तु तत्पु

१४। त्रौ। १४। [illegible]निधस्तयोर्ज्येष्ठः। कल्पद्रुरिव सर्वदः। राजमान्यः कुलाधारो। [illegible]र्धर्म्मकर्म्मठः। १५। [illegible]श्रीस्तत्प्रिया

१५। [illegible]। [illegible]धारिणी। पतिव्रता पतौ रक्ता। सुयशा रेवती निजा। १६। श्री [illegible]बिंबस्य नवीनस्य जिनाश्र।

१६। ये । प्रतिष्ठा कारिता येन सत्श्राद्धगुणशालिना । १७। सलो तुर्यवृतं यस्तु । श्रुत्वा कल्याणदेशनां । राजश्रीनंदन :

१७। श्रेष्ठ । आणंदश्रावकोपम : । १८ । तत् सूनुः कुंरपालः किल विमलमतिः स्वर्णपालो द्वितीय । भ्रातुर्यौदार्यधैर्यप्रमु- ।

१८। स्वगुणनिधिर्भाग्यसौभाग्यशाली । तौ द्वौ रूपाभिरामौ त्रिविधजिनवृषध्यानकृत्यैक- निष्ठौ । त्यागैः कर्णावतारौ निज-

१९। कुलतिलकौ वस्तुपालोपमार्हौं । १९ । श्रीजहांगीरनृपालमान्यौ धर्मधुरंधरौ । धनिनौ पुण्यकर्तारौ विख्यातौ भ्रा-

२०। तरौ भुवि । २० । याभ्यामुप्तं नव क्षेत्रे । वित्तबीजमनुत्तरं । तौ धन्यौ कामदौ लोके। लोढा गोत्रावतंसकौ । २१ । अवा

२१। प्य शासनं चारू। जहांगीरपतेर्नतुः कारयामास तुर्धर्म्म । कृत्यं सर्व सहोदरौ । २२ । शालापौषधपूर्वावै । यकाभ्यां सा

२२। विनिर्मिता । अधित्यका त्रिकं यत्र राजते चित्तरंजकं । २३ । समेतशिखरे भव्ये शत्रुंजयेर्बुदाचले । अन्येष्वपि च तीर्थेषु । गि

२३। रिनारिगिरौ तथा । २४ । संघाधिपत्यमासाद्य । ताभ्यां यात्रा कृता मुदा । महर्द्धया सवसामग्र्या । शुद्धसम्यक्त्वहेतवे । २५ । तुरंगा

२४। णां शतं कांतं । पंचविंशति पूर्वकं । दत्तं तु तीर्थयात्रायां गजानां पंचविंशतिः । २६ । अन्यदपि धनं । वित्तं । प्रत्तं संख्यातिगं खलु

२५। अर्जयामासतुः कीर्त्ति । मित्यं तौ वसुधातले । २७ । उत्तुंगं गगनालंबि । मच्चित्रं सध्वजं परं । नेत्रासेचनकं ताभ्यां । युग्मं चैत्य

२६। स्य कारितं । २८ । अथ गयं श्रीअंचलगच्छे । श्रीवीरादष्टचत्वारिंशत्तमे पट्टे । श्रीपावक गिरौ श्री सीमंधरजिनवचसा । श्रीचक्रे (श्वरीद)

२७। त्वराः । सिद्धांतोक्तमार्गप्ररूपकाः । श्री विधिपक्षगच्छसंस्थापकाः । श्री आर्यरक्षित सूरय । १ । स्तत्पट्टे श्री जयसिंह सूरि २ श्रीधर्म्मघो

२८ प सूरि ३ श्रीमहेन्द्रसिंह सूरि ४ श्रीसिंहप्रभसूरि ५ श्रीअजितसिंह सूरि ६ श्री देवेंद्रसिंह सूरि ७ श्रीधर्मप्रभ सूरि ८ श्री (सिंहतिलक सू)

२९। रि ९ श्रीमहेंद्रप्रभसूरि १० श्रीमेरुतुंगसूरि ११ श्रीजयकीर्त्ति सूरि १२ श्री जयकेशरि सूरि १३ श्री सिद्धांतसागर सूरि १४ (श्री भावसा)

३०। गर सूरि १५ श्री गुणनिधान सूरि १६ श्रीधर्म्ममूर्त्ति सूरय १७स्ततपट्टे संप्रति विराजमानाः श्रीभट्टारकपुरंदराः स ......

३१। णय : श्रीयुगप्रधानाः। पूज्य भट्टारक श्री ५ श्रीकल्याणसागरसूरय १९ स्तेषामुपदेशेन श्रीश्रेयांसजिनबिंबादीनां ...

३२। कुंरपालसोनपालाभ्यां प्रतिष्ठा कारापिता। पुनः श्लोकाः। श्री श्रेयांसजिनेशस्य बिंबं स्थापितमुत्तमं। प्रतिष्ठितं .... गुरू

३३। णामुपदेशतः। २९। चत्वारिंशत् मानानि सार्धान्युपरि तत् क्षणे। प्रतिष्ठितानि बिंबानि जिनानां सौख्यकारिणां। ३०। ....

३४। तु सज्जाते प्राज्य पुण्यप्रभावतः देवगुर्वोः सदाभक्तौ। शश्वतौ नंदतां चिरं। ३१। अथ तयोः परिवारः संघराजो पु .....

३५। ..... ३२। सूनवः स्वर्णपाल .... श्चतुर्भुज ... पुत्री युगलमुत्तमं। ३३। प्रेमनस्य त्रयः पु (त्राः ....)

३६। धेनसी तथा। नेतसी विद्यमानस्तु सच्छीलेन सुदर्शन। ३४। धीमतः संघराजस्य। तेजस्विनो यशस्विनः। चत्वारस्तनुजन्मानः ...... मताः। ३५। कुंरपालस्य स...

३७। भार्या .... पत्नीतु स ... पतिप्रिया। ३६। तदंगजास्ति गंभीरा जादो नाम्नी रा... ज्ञानी महाप्राज्ञो ज्येष्टमल्लो गुणाश्रयः। ३७।

३८। संघश्रीसुखश्रीर्वा दुर्गश्रीप्रमुखैर्निजैः। वधूजनैर्युतौ भातां। रेषश्री नंदनौ मुदा। ३८। भूमंडलं सनागंगामिहर्कयुक्त संत्र ......।

❧

श्री श्रीमंदिर स्वामी जी का मंदिर–रोशन महल्ला।

पाषाण की मूर्ति पर।

[1457] *

(१) ॥ सं० १६६७ ज्येष्ठ सुदि १५ गुरौ ॥ ओसवा
(२) ल ज्ञाति श्रृंगार। अरडक सोनी गोत्रे
(३) सा० हीरानंद पुत्र सा निहालचंदे
(४) न श्री पार्श्वनाथ कारितः सर्परूपाकार
(५) श्री खरतरगछे श्री जिनसिंह सूरि पट्टे श्री
(६) जिनचन्द्र सूरिणा। श्री आगरा नगरे

धातुकी मूर्त्तियों पर।

[1458]

॥ सं० १५३४ वर्षे माघ सुदी ५ श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये श्री जिनवरदेवाः तत् शिष्य मुनिरत्नकीर्त्ति उपदेशात् खण्डेलवालान्वये पहाड्या गोत्रे सा० तेजा भार्या रोहिणी पुत्रौ सा० पूना पाल्हा नित्यं प्रणमन्ति ॥

[1459]

॥ सं० १६४१ श्री सुपार्श्वनाथ बिं० का० प्र० श्री हीरविजय सूरिभिः ॥

[1460]

॥ संवत् १६९४ वर्षे माघ वदी १ दिने गुरूवारे पुष्यनक्षत्रे साह श्रीजहांगीर विजय मानराज्ये ओसवालज्ञातीय नाहर गोत्रे। सं० हीरा तत्पुत्र स० अमरसी भा० अन्तरङ्गदे तत्पुत्र सा० साडूला भा० सोभागदे युतेन श्री मुनिसुव्रतस्वामी बिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं जहांगीर महातपाविरूद्धधारक भट्टारक श्री ५ श्री विजयदेवसूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥

* यह लेख श्री पार्श्वनाथ स्वामी की श्वेत पाषाण की कायोत्सर्ग मनोज्ञ मूर्ति के चरणचौकी पर खुदा हुआ है।

पंचतीर्थियों पर

[1461]

॥ संवत् १५०० वर्षे वै० शु० ५ उपकेशज्ञातीय सा० नानिग भा० मल्हाइ सुत सा० लाखा भा० लाखणदे सुत सा० चाहडेन मातृ हासा सिधराज भा० चापलदेवी सुत वसुपा-लादिकुटुम्बयुतेन पितृ श्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपागच्छनायक श्री श्री मुनिसुन्दर सूरिभिः ॥

[1462]

॥ संवत् १५३६ वर्षे आषाढ सुदी नवम्यां तिथौ उप० वीरोलिया गोत्रे सा० सूमा भा० केल्ही पु० दशरथ नाम सा० दशरथ भा० दत्तसिरी पु० जिणदत्त श्री संभवनाथ बिम्बं का० प्र० श्री पल्लीवालगच्छेश भ० श्री उजोअण सूरिभिः ॥

[1463]

संवत् १५५९ वर्षे मह्रा सुदी १० श्रीमालवंशे वहकटा गोत्रे सा० तेजा पुत्र सा० जोगाकेन पुत्रादियुतेन श्रा० अमरसहितेन श्री सुविधिनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनहंस सूरिभिः ॥ श्रेयसे ॥

[1464]

॥ संवत् १५०७ वर्षे ज्येष्ट वदी० सोमे श्री अलवर वास्तव्य उपकेश ज्ञातीय वृद्धशाखायां आयत्रिएयगोत्रे चोरवेडिया शाखायां सं० साहणपाल भा० सहलासदे पु० सं० रत्नदास भा० सूरमदे श्रेयोऽर्थं श्री उकेशगच्छे कुकदाचार्यसन्ताने श्री सुमतिनाथ कारापितं बिम्बं प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिभिः ॥

चौविशी पर।

[1465]

॥ संवत् १५३२ ज्येष्ट शु० ५ प्रा० ज्ञातीय सं० पूजा भा० कर्मादे पुत्र सं० नरजंस भा०

नाथकदे पुत्र स० खीमाकेन ना० हरषमदे पुत्र परवंत गुणराज प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्री आदिनाथ चतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्र० लक्ष्मीसागर सूरिभिः सीरोही नगरे

धातु के यंत्रों पर।

[1466]

॥ सं० १६०४ वर्षे शाके १४७० प्रवर्त्तमाने आश्विनमासे वदिपक्षे १४ दिने रविवासरे दीपालिकादिने श्री श्रीमालगोत्रीय साह श्री जयपाल सुत साह सोरंगकेन सुखशांति श्री हर्षरत्न सदुपदेशेन श्री पार्श्वनाथ यंत्रं कारापितं प्रतिष्ठितम् शुभं भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥ ७ ॥

[1467]

॥ संवत् १७०५ वर्षे माघशुक्ल ५ गुरौ श्री गूर्जरदेशीय पाटण वास्तव्य श्री खरतरगच्छीय कावडीया गोत्रे सेठ वेलजी पुत्र सेठ हेमचन्द्रेण स्वात्मार्थे श्री सिद्धचक्र नवपदगुह्यकर्म क्षयार्थं करापितं श्री आगरा नगरमध्ये श्रीतपागच्छीय पं० कुशलविजय गणि उपदेशात् ॥ ह्रीं ॥

[1468]

॥ सं० १७०९ वर्षे आश्विन शुक्ल १० भौमे डूगड़ गोत्रीय सा० कपूरचन्द्र पुत्र सिताव सिंह गृहे तरसम्रित(?) सुखदे नाम्नी स्वात्मार्थे श्री सिद्धचक्रयंत्रं कारितं श्र तपागच्छीय भट्टारक श्री विजयदेव सूरीश्वरराज्ये पं० कुशलविजय गणि उपदेशात् कृतम् ॥ श्रीः ॥

[1469]

सं० १९३१ वर्षे आगरा वास्तव्य लोढ़ा गोत्रे प्रतापसिंहस्य भार्या मूलो श्री नवपद कारितं प्रतिष्ठितं श्री धरणेन्द्रविजय सूरिराज्ये तपा।



श्री सूर्यप्रभस्वामी जी का मंदिर–मोती कटरा

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1470]

॥ संवत् १५३३ मार्ग सुदि ६ शुक्रे ओसवाल ज्ञातीय बड़गोत्रे सा० जीमदे भा० रूल्ही पुत्र सा० भोना भा० जेठी नाम्न्या पुत्र सा० महीपति मेघादि कुटुम्बयुतया स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिम्बं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

[1471]

॥ संवत् १५४६ वर्षे पौष वदी ५ सोमे राजाधिराज श्री श्री श्री नाभिनरेश्वरराज्ञी श्री श्री श्री मरुदेवी तनया पुत्र श्री श्री श्री श्री श्री आदिनाथदेवस्य बिम्बं सुप्रतिष्ठितम् ॥

[1472]

॥ सं १५०७ वर्षे माघ सु० १३ रवौ श्री मंरूपे श्रीमाल ज्ञातीय सं ऊदा भा० हर्षू सा० खीमा भा पूंजी पु० सा० जेगसी भा० माऊ पु० सा० गोल्हा भा० सापा पु० मेघा पु० कार्णा लघुभ्रातृ सं० राजा भार्या सागू पु० सं० भावडेन भा० धनाई जीवादे सुहागदे सत्तादे धनाई पुत्र सं० हीरा भा० रमाई सं० लालादिकुटुम्बयुतेन बिम्बं कारापितं निज श्रेयसे श्री कुन्थुनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री सोमसुन्दर सूरिसन्ताने लक्ष्मी सागर सूरिपट्टे श्री सुमतिसाधु सूरिभिः ॥

चौवीसी पर ।

[1473]

॥ सं० १५१३ वर्षे वैशाखमासे ऊकेश ज्ञातीय से० पेथड भा० प्रथमसिरी पुत्र सं० हेमाकेन भार्या हीमादे द्वितीया लाछि पुत्र देल्हा राणा पासादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोऽर्थं श्री कुन्थुनाथादि चतुर्विंशतिपट्टः कारितः श्री अञ्चलगच्छेश श्री जयकेशरी सूरिभिः प्रतिष्ठितः ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

श्री गोड़ीपार्श्वनाथजी का मंदिर — मोती कटरा।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1474]

॥ सं० १५१३ वर्षे ज्येष्ठ वदी ११ सूराणा गोत्रे सा० धन्ना भा० धानी पुत्र सा० फलहूकेन आत्मपुण्यार्थं श्री पार्श्वनाथ बिम्बं का० प्र० श्री धर्मघोष गछे श्री पद्मशेखर सूरि पट्टे श्री पद्मानंद सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[1475]

॥ सं० १५२० वर्षे वैशाख शुदी १२ बुधे श्री श्रीमाली ज्ञातीय श्रे० हीरा भा० जीविणि सु० कान्हाकेन भा० पदमाई सु० रत्नायुतेन भ्रातृ हांसा मना निमित्तं श्री अरनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ अहमदावाद वास्तव्य ॥

[1476]

॥ संवत् १५३६ वर्षे कार्त्तिक शु० १५ गूजर श्रीमाल ज्ञातीय वहरा गोत्रे स० धन्ना भा० धारलदे सु० सा० माडा पुत्र देवाराजादि श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितम् ॥ प्रतिष्ठितम् ॥ श्री सूरिभिः ॥

[1477]

॥ संवत् १५५४ वर्षे मा० व० २ सीहा वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० अमा भार्या लखमादे पुत्र व्य० माल्हण भा० माल्हणदे सुत नरबद प्रमुखसमस्तकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री सुविधिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं तपापक्षे श्री हेमविमल सूरिभिः ॥

[1478]

॥ ॐ ॥ सं० १९४० वर्षे वैशाख सुदी ५ भृगुवारे अर्गलपुरे ओसवाल वंशोद्भवे ज्ञातौ वैद-मोता गोत्रे सा० हंसराज चन्द्रभानस्य कारितं नेमनाथस्य बिम्बं प्रतिष्ठितम् ॥ कमला गच्छे श्री सिद्ध सूरिभिः ॥ उपकेश गच्छे ॥ ॥ श्री ॥ श्रेयम् ॥

चौवीसी पर।

[1479]

॥ संवत् १५०५ वर्षे वैशाख सुदी ६ श्री उपकेश ज्ञातीय आदित्यनाग गोत्रे सा० गड्डा पु० सा० धणसीह भा० धणश्री पु० सा० साधू भा० मोहणश्री पु० श्रीवंत सोनपाल भिखू एतैः पित्रोः श्रेयसे श्रीअजितनाथ चतुर्विंशतिपट्टः कारापितः। श्री उपकेशगच्छे श्री ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितः। भट्टारक श्री सिद्ध सूरिः तत्पट्टालंकारहार भट्टारक श्री कक्क सूरिभिः ॥ छः ॥

[1480]

॥ सं० १५११ वर्षे माघे सुदी ५ गुरू श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्यवहीता सुत व्यव० कर्मसीह भार्या कस्मीरदे सुत सायरकेन भार्या मेघू सहितेन पितृमातृआत्मश्रेयसे श्री कुंथु नाथ चतुर्विंशतिपट्टः कारितः श्री पूर्णिमापक्षे भट्टारक श्री राजतिलक सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितम् ॥

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर — मोती कटरा।

पञ्चतीर्थी पर।

[1481]

॥ संवत् १४९६ वर्षे वैशाख सु० १२ गुरु गहलवा गोत्रे सं० घेल्हा पुत्र स० दया डीडा पुत्र स० भादा सादा भार्या रू० डीडानिमित्तं श्री सुविधिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितम् तपागच्छे भट्टा (रक) श्री पूर्णचंद सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिभिः ॥

चौवीसी पर।

[1482]

॥ ॐ ॥ सं० १५०१ वर्षे ... व० ६ बुधे लोढ़ा गोत्रे सा० हरिश्चन्द्रसन्ताने। सा० गांगा पु० सं० गोरा। पुत्र। स० आसपाल तत्पुत्रेण स० लाखाकेन। भ्रातृ स० वस्तुपाल तेजपाल

पूनपाल। पुत्र सोनपाल पासवीर। सं। हंसवीर भ्रातृ पुत्र। कुनरपाल पर्वत।दियुतेन निजमाता मूणी पुण्यार्थं श्री संभवनाथ बिम्बं चतुर्विंशति देवपट्टे। का० प्र० तपागच्छे श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिभिः॥

धातु के यन्त्र पर

[1483]

॥ ॐ ॥ स्वस्ति संवत् १४९७ वर्षे माघ सुदी ५ गुरुवासरे श्रीमत् योगिनीपुरे राज्य श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री श्री क्षेमकीर्त्तिदेवान्स्तत्पट्टे भट्टारक श्री हेमकीर्त्तिदेवाँस्तत् शिष्य श्री धर्मचन्द्रदेवान् श्री महेन्द्रकीर्त्तिदेवान् श्री जिनचन्द्र देवान् जिनचन्द्र शिष्यिणी बाई सहजाई एतेन श्री कलिकुण्डयंत्रस्वकर्मक्षयार्थं कारापितं ॥ शुभं भवतु ॥

श्री केशरियानाथजी का मंदिर – मोतीकटरा।

पञ्चतीर्थी पर।

[1484]

संवत् १५८१ वर्षे सुदी ६ शुक्रे उकेशवंशे धांध गोत्रे सा० ठीतर भा० लखमाई पुत्र सा० सांगा भ्रात० सिया हीरा तन्मध्ये सांगाकेन भा० सिंगारदे पु० राजसी रामसी युतेन श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं मलधारि गच्छे श्री गुणसागर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः॥

श्री नेमनाथजी का मंदिर – हींगमंडी।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1485]

॥ संवत् १५३५ वर्षे मलारणावासी सुराणा गोत्रे श्रीमाल ज्ञातीय सा० धोना भा० देल्हू पु० सहसदेव भा० माल्ही भ्रातृ हरिराज भा० हर्षू पुत्र० नरपाल प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिम्बं का० प्र० तपागच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः॥

[1486]

॥ संवत् १९२१ शा० १७८६ प्र० माघ शु० ७ गुरुवारे अञ्चलगच्छे कच्छ देशे कोठारा वास्तव्य ओसवाल ज्ञा० गांधी मोहता गोत्र श्री केशवजी नायकेन श्री सिद्धक्षेत्रे श्री नेमिनाथ जिन बिम्बं कारापितं प्र० भ० श्रीरत्नशेखर सूरिभिः ॥

श्री शान्तिनाथजी का मंदिर – नमकमंडी ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1487]

॥ सं० १४०५ वर्षे फा० सु ९ शुक्रे श्री ज्ञानकीय गच्छे उसभ गोत्रे उ० ज्ञातीय सा० शिवा भा० कांऊं पुत्र केल्हा भा० कील्हणदे सन्ततिवृद्ध्यर्थं पितृमातृनिमित्तं श्री कुंथुनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री शान्ति सूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥

[1488]

॥ संवत् १४२५ माघ वदि ७ सोमे श्री संडेरगच्छे श्री उपकेशज्ञाति सा० महीपाल भा० मल्हणदे पु० वेला भा० सहजादे पु० सरवणनेक (?) भ्रातृ कसामलस्य श्रेयसे श्री आदिनाथ पञ्चतीर्थी कारिता । प्र० श्री ईश्वर सूरिभिः ॥

[1489]

॥ सं० १४५३ ... शु० ३ शनौ श्रीमाल माघलपुरा गोत्रे सा० केला पुत्रेण सा० तोलाकेन नरपाल श्री पालेत्यादि पुत्रयुतेन श्री धर्मनाथ बिम्बं कारितं प्र० तपागच्छे श्री पूर्णचन्द्र सूरिपट्टे श्री हेमहंस सूरिभिः

[1490]

॥ सं० १४८३ वर्षे वै० शु० ३ शनौ उपकेश गच्छे थेथड भा० केली प्रा० रूपणा पु० देल्ही पु० लीलकेन (?) पितृमातृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिं० का० प्र० श्री श्रीमाल श्री [illegible] सूरिभिः ॥

[1491]

॥ सं० १४७५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ ऊसवाल खांटड गोत्रे सा० जाइजू जा० अहवदे पु० पूना पितृश्रेयसे श्री संभवनाथ विम्वं का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री पद्मशेषर सूरिभिः ॥

[1492]

॥ सं० १५०३ मार्ग सुदि ५ ऊ० ज्ञा० ऊतिवाल गोत्र सा० मेघा पुत्र सा० खेताकेन भा० हर्षमदे सह पूर्वपुरषमेलानिमित्तं शान्तिनाथ विम्वं का० प्र० श्री धर्मघोषगच्छे श्री महीतिलक सूरिभिः ॥

[1493]

॥ सं० १५०९ वर्षे ऊएश वंशे सा० पेथड़ भा० षीमाई पु० खेला सरवण साजण के श्री अंचलगच्छेश श्री जयकेशरी सूरि उपदेशेन श्री विमलनाथ विम्वं स्वश्रेयसे कारितं प्र०॥

[1494]

॥ सं० १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ७ रवौ उपकेश सुचिन्ति गोत्रे सा० नरपति पु० सा० साल्हा पु० फमण भा० केल्हाई पु० सुधारण भा० संसारदे युतेन पित्रोः श्रेयसे श्री आदि नाथ विम्वं कारापितं उपकेश० ककुदाचार्य प्र० श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1495]

॥ सं० १५२४ वर्षे मागसिर वदि ५ सोमे उपकेश ज्ञातीय मह० केल्हा भार्या कील्हण पुत्र सुरजणकेन भा० राणी सहितेन श्री कुन्थुनाथ विम्वं का० प्रतिष्ठितं श्री ब्रह्माणीयगच्छे भा० श्री उदयप्रभ सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[1496]

॥ संवत् १५५४ वर्षे माह वदि २ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय शृङ्गारसंदवी सिंहराज सुश्राव केन भार्या रणकू पुत्र सा० रूपा भार्या रम्मदे मुख्यकुटुम्बसहितेन श्री सुपार्श्वनाथ विम्वं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

श्री दादावाडी – साहगंज ।

श्री महावीरस्वामी के वेदी पर ।

[1497]

संवत् १९७५ मिति वैशाख सुदि ३ सोमवारे डुलीचन्द के पुत्र प्यारेलाल चोरडिया की बहूने वेदी बनाई ॥

चरणों पर ।

[1498]

॥ सं० १९४४ मिति आषाढ़ सुदि १० श्री गोतमस्वामीजी प्रतिष्ठितं । पं० संवेगी श्री रणधीर विजय कारापितं ।

[1499]

श्री अर्गलपुरे साहगञ्जे प्रथम प्रतिष्ठा संवत् १७७९ मिति ज्येष्ठ सुदि १५ खरतरगच्छे श्री १०८ श्री जिनकुशल सूरिजी के पादुके संवत् १९६४ मिति जेठ सुदी २ गुरुवार प्रतिष्ठा समय विद्यमान श्री तपागछ उपाध्याय श्री वीरविजयजी ॥

[1500]

॥ सकल भट्टारक पुरन्दर भट्टारक श्री १०८ श्री हीरविजय सूरीश्वरकस्य नाम प्रतिष्ठापितं तपागच्छे ।

[1501]

॥ संवत् १९६४ वर्षे ज्येष्ट शुक्ल २ दिने गुरुवारे श्री आगरा नगरे सकलसंघेन श्री लोंकागच्छे श्रीमद् आचार्य खेमकरणस्य पादुका श्री तपागच्छीय श्रीमद् वीरविजयं प्रतिष्ठा कारिता ॥

लखनउ ।

श्री शान्तिनाथजी का मंदिर – बोहरन टोला ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1502]

सं० १३०६ वर्षे वैशाष सु० १३ सा० करमण भा० ... ससिरि पु० गोसाकेन मातृपितृ श्रेयोर्थं श्री बिंबं का० प्र० च धर्म्मप्रभ सूरि ... ।

[1503]

संवत् १४७२ वर्षे फा० सु० ३ उकेस वंशीय सा० जेसिंग सुत सामल भार्या सह-जलदे सुत सा० जला भा० जासलदे भ्रातृ देधर भार्या श्रा० संगाई स्वश्रेयोर्थं श्री अजित नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥

[1504]

सं० १५१२ वर्षे वैशाष वदि ११ शुक्रे श्रीमाली ज्ञातीय मं० अर्ज्जुन भा० रमाल पु० टोइं आमाइं .... हदाकेन भा० लखी सहितेन निजश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं का० उकेशगच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने श्री कक्क सूरिभिः प्रतिष्ठितमिति ।

[1505]

संवत् १५१७ वर्षे वैशाष सुदि ३ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञाती श्रे० ठाकुरसी सुत श्रे० पंगाकेन भार्या होमी सु० धना वना लिंबा गांगा युतेन श्री शीतलनाथादि पंचतीर्थी आगमगच्छे श्री हेमरत्न सूरीणामुपदेशात् कारिता प्रतिष्ठिता च माटग्रे वास्तव्य ।

[1506]

सं० १५८३ वर्षे माघ वदि ९ रवौ उकेश ज्ञा० मं० कूता भा० [illegible] पुत्र [illegible] भार्या [illegible] सु० हिरा युता [illegible] आत्मश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री ।

जिरायपल्लीय गच्छे भट्टारक श्री सालिभद्र सूरि पट्टे श्री भ० श्री उदयचंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री ॥ ७४ ॥

[1507]

संवत् १५९६ वर्षे वैशाष सुदि ६ सोमे सा० भचू भार्या सवीराई । पुत्र अका श्री विजयदान सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

[1508]

संवत् १६१६ वर्षे वैशाष शुदि १० रवौ श्रीमाली ज्ञातीय सा० सता श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री विजयदान सूरिभिः ।

[1509]

सं० १६१६ वर्षे वै० शु० १० रवौ श्रे० ककुश्रेयोर्थं श्री संभवनाथ बिंबं कारि तंतपा गच्छे प्रतिष्ठितं श्री विजयदान सूरिभिः ।

[1510]

संवत् १६९० व० फागुण सुदि ए .... ।

मूर्तियों पर ।

[1511]

॥ सं १९२४ मा० शु० १३ गुरौ श्री महावीर जिन बिंबं कारितं च उस वंशे गांडड़ गोत्रे । लाला जीवनदास पुत्रेण डुर्गाप्रसादेन कारितं भट्टारक श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं विजयगछे ।

[1512]

॥ सं० १०२४ मा० शु० १३ सुमतिजिन बिंबं का० उस वंश वैद मुहता माखचंद तद्भार्या महताबो बीबी प्र । विजयगछे श्री शांतिसागर सूरिभिः श्रेयोर्थं ।

[1513]

सं० १९२४ मा० सु० १३ गुरौ मुनिसुव्रत जिन बिंबं कारितं ओस वंशे छाजेड़ गोत्रे लाला हरप्रसाद तत् पुत्र जीवनदास भार्या नन्ही बीबी श्रेयोर्थं भ० श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं विजय गच्छे।

[1514]

सं० १९२४ मा० सु० १३ गुरौ सुमतिनाथ जिन बिंबं वैद मुहता गोत्रे लाला धर्मचंद पुत्र शिवरचंद तद् भा० सांवन बीबी श्रेयोर्थं। भ० श्री पूज्य श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रति० विजय गच्छे

[1515]

॥ सं० १९२४ मा० सु० १३ महावीर जिन। वैद धर्मचंदजी विजय गच्छे भ० शांति-सागर सूरिभिः।

[1516]

सं० १९२४ मा० सु० १३ श्री सुमति जिन बिंबं का० जैन वंशे माल्कस गोत्रीय धर्म चंद तत् पुत्री मंगल बीबी प्र०। विजयगच्छे भ०। श्री शांतिसागर सूरिभिः श्रेयार्थं प्रतिष्ठित हीरा बीबी।

[1517]

सं० १९२४ मा० सु० १३ मंजर जिन। माल्कस गो० धर्मचंद तत् पुत्र हीरा बीबी। प्र०। शांतिसागर सूरिभिः विजयगच्छे।

[1518]

सं० १९२४ मा० सु० १३ गुरौ श्री धर्मनाथ बिंब का० जैन वंशे [illegible] गोत्रे [illegible] मोहनलाल पु० [illegible] प्रतिष्ठितं [illegible] विजयगच्छे शांतिसागर सूरिभिः।

[1519]

सं १८५३ माघ सुदि १० बुधवारे राजनगरे उसवाल ज्ञाति वृद्ध शा० सा० वीरचंद रूपा श्रेयोर्थ शांतिनाथ बिंबं करावी प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठितं तपागच्छे ।

[1520]

शाहजहां विजय राज्ये । श्री विक्रमार्क समयातीत संवत् १६७१ वर्षे शाके १५३६ प्रवर्त्तमाने आगरा वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे अग्राणी वंशे सं० रायजदास तत्पुत्र सं० श्री कुंरपाल सोनपाल संघाधिराज्यां श्री अनंतनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्रीमदचल गच्छे पूज्य श्री ५० श्री धर्म्ममूर्त्ति सूरि पदाम्बुज हंस श्री श्री कल्याणसागर सूरीणा मुदेशेन ।

श्याम पाषाणके मूर्त्तियों पर

[1521]

॥ सं० १८७९ फा० सु० ९ शनौ उश वंशे लोढा गोत्रे हरषचंद्रस्य ... श्री सुपार्श्व बिंबं ... ।

[1522]

॥ सं० १८७९ फा० सु० ९ शनौ उस वंशे मयाचंदजी तत्पुत्र धनसुख ... ।

[1523]

सं० १८७९ फा० सु० ९ शनौ श्रीमाल षाड़ड़ मन्नुलाल ... ।

[1524]

॥ सं १८७९ फा० सु० ९ शनौ चोरडिया गोत्रे दयाचंद .... ।

श्वेत पाषाणके चरणों पर ।

[1525]

सं १८६३ मि० माघ सु० ५ दिने श्री अतीत चौविसी भगवान जी की उसवाल वंशे ।

नाहटा गोत्रे राजा बच्छराज बाबू विशेश्वरदास बाबू भैरुनाथ बाबू वैजनाथ बाबू जगन्नाथ बाबू लछमणदास ने चरण करायो बृहत्खरतर गच्छे भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रेयोर्थं शासन देवो अस्य मंदिरस्य रक्षां कुर्वंतु ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री लखनऊ नगरमध्ये नवाब साहब सहादतअलि विजय राज्ये।

[1526]

सं० १८३४ मि० वै० सु० ३ दिने वर्त्तमान चौविशी २४ भगवान जी के ओसवाल वंशे काकरिया गोत्रे खुमानराय। बखतावरसिंह। गोकलचंद। माणकचंद। स्वरुपचंद। रतनचंद। तारांचंद। सपरिवारेण चरण बनवाया श्री बृहत्खरतर गच्छे भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री लखनऊ नगरे।

[1527]

सं० १८३४ मि० वै० सु० ३ दिने अनागतचोविसी ओसवाल वंशे नाहटा गोत्रे राजा बच्छराज तत्पुत्र बाबू जगन्नाथस्य भार्या स्वरुपदें इदं चरणं कारापितं श्रेयोर्थ श्री बृहत्खरतर गच्छे भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री लखनऊ नगरे।

[1528]

सं० १८३४ मि० वै० सु० ३ दिने २० विहरमान ४ शास्वतानि भगवानजी के ओसवाल वंशे कांकरिया गोत्रे जेठमल गुजरमल बहादुरसिंह स्वरुपचंद सपरिवारेण चरण बनवाया श्री बृहत्खरतर गच्छे भ० श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री लखनऊ नगरे।

सहस्त्रकूट पर।

[1529]

॥ सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूट बिंबानि प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर भट्टारक गच्छे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रभाकर भट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः सपरिकरैः कारितं श्री लक्ष्मणपुर वास्तव्य प्रकाशन गो०। श्री जेठमल तत्पुत्र कालकादास तत्पुत्र बलदेवदासेन श्रेयोर्थमानंदपुरे

[1530]

॥ १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघशुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूट बिंबानि प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर भट्टारक गच्छे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रभाकर भट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः सपरिकरैः कारितं श्री लक्ष्मणपुर वास्तव्य चो०। गो०। श्री हंसराज तद्भार्या सोना बिबि तया श्रेयोर्थमानंदपुरे ॥ पं०। प्र०। कनकविजय मुण्युपदेशात्।

[1531]

॥ सं १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूट बिंबानि प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर भट्टारक गच्छे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रभाकर भट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः सपरिकरैः कारितं श्री लक्ष्मणपुर वास्तव्य ठा०। गो०। सा० उमेदचंद तत्पुत्र हरप्रसाद रामप्रसाद तत्पुत्र जीवनदास धनपतराय तत्पुत्र दुर्गाप्रसादेन सपरिकरैः श्रेयोर्थमानंदपुरे।

[1532]

॥ सं० १९१० शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूट बिंबानि प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर भट्टारक गच्छे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रभाकर भट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः सपरिकरैः कारितं श्री लखनऊ समस्त श्री संघेन श्रेयोर्थमानंदपुरे।

[1533]

संवत् १९१३ शाके १७७८ तिथौ माघ शुक्ल पंचम्यां परमार्हत श्रीमत् शांति जिन मोक्ष कल्याणक पादुका लक्ष्मणपुर वास्तव्य समस्त श्री संघेन कारितं प्र० च बृहत्खरतर गच्छीय जं। यु। प्र। श्री जिनचंद्र सूरि पट्टजभृत् श्री जिन जयशेखर सूरिभिः।

श्वेतपाषाण के पंचमुष्टिलोच के भाव पर।

[1534]

संवत १९१३ शाके १७७८ तिथौ माघ शुक्ल पंचम्यां .... दीक्षा कल्याणक पादुका .... वंशे मद्दना गोत्रे .... ।

श्री ऋषभदेवजी का मंदिर — बोहरनटोला ।

शिलालेख । *

[1535]

॥ ॐ ॥ ॐ नमः सिद्धं । संवत् १९७४ माघ शुक्ल १३ गुरौ ॥ श्लोकाः ॥ विजयगच्छाधिपो सूरि । विहरन् सन् महीतलं ॥ शांति सूरीति नामन । संप्राप्तो लक्ष्मणपुरे ॥ १ ॥ भगवान् देशनां श्रुत्वा । जिनप्रासाद तृष्णिका ॥ कादंबनीव संजाता । भव्यानां बोधहेतवे ॥ २ ॥ तदा नरगोविंदेन । श्री संघो भक्तिवत्सल ॥ कारयन्निदं जिनं चैत्यं । रूपकभासिपंक्तिं ॥ ३ ॥ सूरिस्तु विहरन् भूम्यां । स्वशिष्यं स्थापितं मुदा ॥ धर्मचंद्राभिधानं च । संस्थिति धर्महेतवे ॥ ४ ॥ तत्रैव धर्म दिलेनिसम । शिष्यान् पाठयति सदा ॥ स्वशिष्यं गुणचंद्राहं । गुरुदर्शनकारणं ॥ ५ ॥ मंदिरोपरि भूम्यां च । त्रिद्वारं समग्रिकाभुवं ॥ मंदिरं कारयेत् संघः । जातः स सर्वरत्नत्रः ॥ ६ ॥ माघमासे शुक्लपक्षे । त्रयोदश्यां गुरौ दिने ॥ भट्टारक शांति सूरिः । प्रतिष्ठां चक्रिरे मुदा ॥ ७ ॥ तस्मिन् जिनमंदिरे । श्री चतुर्मुख बिंबानां चतुर्णां मध्ये । श्रीआदिजिनस्य बिंबं । ओसवंशे बरड्या गोत्रे लाला छोटेलाल पुत्रेण स्वरूपचंद्रेण कारितं । तथा द्वितीय श्री वासुपूज्य जिनबिंबं । फूलगाणा गोत्री लाला सीताराम तद्भार्या चांडिया गोत्री तया कारितं । तृतीयं श्री शांतिनाथ जिनबिंब । श्री शांतिसागर सूरि शिष्येण । ऋषिणा धर्मचंद्रेण कारितं । चतुर्थ श्री महावीर स्वामि जिनबिंबं । सुचिन्ती गोत्रे । लाला पेरामीमल्ल पुत्रेण गोविंदरायेण रूपचंद पुत्र सहितेन कारितं । श्री विजयगच्छाधीश्वर सार्वभौम जंगमयुगप्रधान भट्टारक श्री जिनचंद्रसागर सूरि पट्टप्रभाकर श्री पूज्य श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं । ऋषिणा चतुर्भुजेनाथ । गोकुलचंद्रेण संयुता ॥ इयं कृति लिखिताभ्यां । गुरुभक्तिपरायणौ ॥ १ ॥ श्रीरस्तुः ॥ श्रीः ॥ पद्मावती लब्धवर प्रसादात् । यो मेदपाटाधिपति स्वरूपं । राणापदे संस्थित शत्रु सिंह रोगात् प्रमुक्तेन स शांति सूरिः ॥ २ ॥

---

* इस लेखके बगलमें चार यंत्र हैं- दाहिने २० का और बांये १६ का हैं, उनके निचे दाहिने ९ खाने का और बांये ११ खाने का यंत्र हैं. उनके जोड़ लिखे नहीं हैं।

१०	२	८
४	७	९
६	११	३

७	२	१०
९	६	४
३	११	५

३१	३०	३५	२२	२१	२६	६७	६६	७१
३६	३२	२८	२७	२३	१९	७२	६८	६४
२९	३४	३३	२०	२५	२४	६५	७०	६९
७६	७५	८०	४०	३९	४४	४३	३	८
८१	७७	७३	४५	४१	३७	९	५	१
७४	७९	७८	३८	४३	४२	२	७	६
१३	१२	१७	५८	५७	६२	४९	४८	५३
१८	१४	१०	६३	५९	५५	५४	५०	४६
११	१६	१५	५६	६१	६०	४७	५२	५१

६६	५३	४०	२७	१४	१	१२०	१०७	९४	८१	[illegible]
६७	६५	५२	३९	२६	१३	११	११९	१०६	९३	[illegible]
७९	७७	६४	५१	३८	२५	१२	१०	११८	१०५	[illegible]
९१	७८	७६	६३	५०	३७	२४	२२	९	११७	[illegible]
१०३	९०	८८	७५	६२	४९	३६	२३	२१	८	[illegible]
११५	१०२	८९	८७	७४	६१	४८	३५	३३	२०	[illegible]
६	११४	१०१	९९	८६	७३	६०	४७	३४	३२	[illegible]
१८	५	११३	१००	९८	८५	७२	५९	४६	४४	[illegible]
३०	१७	४	११२	११०	९७	८४	७१	५८	४५	[illegible]
४२	२९	१६	३	१११	१०९	९६	८३	७०	५७	[illegible]
५४	४१	२८	१५	२	१२१	१०८	९५	८२	६९	[illegible]

धातु की मूर्त्ति पर।

[1536]

सं० । १५८३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ साधु साखायां नेलड़िया वंशे सा० वरमा पुत्र सा० हठमल। पुत्र सा० वर्द्धमान सा० रीडा श्री पार्श्वनाथ प्रतिष्ठा कृता श्री साधु वचनात्।

पंचतीर्थियों पर।

[1537]

सं० १५८८ वर्षे मार्गशिर वदि २ बुधे सा० खिया गोत्रे सा० नोखा पु० सा० [illegible]

भ्रातृ ठसीह ... भिः पितुः पु० श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० बृहद्गच्छे श्री महेंद्र सूरिभिः ॥ श्री शुभं ॥

[1538]

सं० १५११ वर्षे माघ वदि ५ ऊसवाल ज्ञाती जाइलवाल गोत्रे जोजा पुत्र धडिया पु० मोहण पुत्र षेताकेन स्वभार्या श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं श्री धर्मघोष गच्छे भ० श्री महीतिलक सूरिभिः ॥

चौवीशी पर।

[1539]

सं० १५१० माघ शुदि ५ दिने पत्तन वासी श्रीमाली श्रे० ठाकरसी भा० धारी सुत श्रे० गोधा साका भाणा भगिन्या श्रे० नरसिंग भार्या वैरामति नाम्न्या श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री सोमसुंदर सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥ श्री श्री तपगच्छे ॥

[1540]

सं०। १६१६ वर्षे शाके १४८२ प्रवर्त्तमाने वैशाख सुदि १० दिने रवौ अहमदावाद वास्तव्य ऊकेस वंशीय सा० आंठा० भा० अनरा तत्पुत्र सा० राका भा० संपू तत्पुत्र सा० मेलाख्येन भा० मेलादे पुत्र पुत्री परिवारयुतेन आत्मश्रेयोर्थं श्री अजितनाथ बिंबं कारितं तपागच्छे भट्टारक श्री आनंदविमल सूरि तत्पट्टे विजयदान सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

पाषाण के चरण पर।

[1541]

सं० १९२४। सूरा वंशे पद्मावत गोत्रे बाबु नंद पुत्र किसनचंद कारितं।

श्री महावीर स्वामीजी का मंदिर – बोहरनटोला।

मूलनायकजी पर।

[1542]

॥ सं० १९ ... श्री वर्द्धमान जिन बिंबं ओसवंशे बहुरा गोत्रे लाला कीर्त्तिचंद तद्भार्या गुलीया बिबि तयो पुत्र मोतीचंदेन कारितं वृहत् विजय गच्छे प्र० श्री सार्वभौम श्री पूज्य श्री जिनचंद्रसागर सूरि पट्टप्रभाकर जं। यु। प्र। शांतिसागर सूरिभिः।

मूर्त्ति पर।

[1543]

सं० १९ ... श्री पार्श्वजिन बिंबं ओसवंशे बड़ड़िया गोत्रे लाला दयाचंद तत्पुत्र गोद... सत्पुत्र सरुपचंदेन सद्भिः कारितं प्र० विजय गच्छे ...... सूरिभिः।

पंचतीर्थी पर।

[1544]

सं० १५१८ वर्षे माघ वदी ८ रवौ सं० फाला भा० लखी सा० हर्षा भा० वा... मा... भा० माजी सं० वसा भा० वाल्ही सं० जोगा श्री शांतिनाथ बिंबं तपा श्री हेमविमल सूरि। चंकिनी ग्रामे।

श्री पद्मप्रभ स्वामीजी का मंदिर – चूड़िवाली गली।

पंचतीर्थियों पर।

[1545]

सं० १३८२ ... श्री जिनचंद्र सूरि शिष्यैः श्री जिनकुशल सूरिभिः श्री पार्श्वनाथ बिंब प्रतिष्ठितं कारितं च सा० केसव पुत्र रतन सा० नेहड सुश्रावकेन पुण्यार्थं।

[1546]

सं० १४९२ वर्षे माह शुदि ५ बुधदिने गादहिया गोत्रे सा० सिवराज सुत सा० सहजाकेन माता पदमाहीनिमित्तं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं श्री उपकेस गछे प्र० श्री सिद्ध सूरिभिः।

[1547]

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ट शुक्ल ११ श्रीमाल ज्ञातीय अजमेरा गोत्रे सा० सुरजन भा० सहजलदे पु० सा० सहजाकेन आत्मपुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिं० का० प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गछे भ० श्री विजयचंद्र सूरिभिः।

[1548]

सं० १५०८ वर्षे वैशाष वदि ४ शनौ श्री संडेर गछे पङ्गनेची गोष्ठीगानान्वये सा० कुरपाल पु० धांधा भा० नारू पु० जुणाकेन भा० कोडा पुत्र स्वश्रेयसे श्री शितलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिभिः।

[1549]

सं० १५१० वर्षे वै० व० ५ प्रा० ज्ञा० ... भा० [illegible] पुत्र सा० [illegible] भा० [illegible] पुत्रेन स्वश्रेयसे श्री सुविधि बिंबं का० प्र० तपा श्री [illegible] सूरिभिः ॥ श्री ॥

[illegible]

॥ सं० १५११ वर्षे माघ सुदि ५ गुरौ श्री [illegible] वंशे [illegible] गोत्रे सं० [illegible] पु० सा० नरचंद्र भा० सीतू तत्पुत्रेण सा० [illegible] भार्या [illegible] पुत्र [illegible] श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खरतर गछे श्री जिन[illegible] सूरिभिः

[illegible]

सं० १५१६ वैशाष वदि ११ शुक्रे श्री [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पुत्र [illegible] श्री [illegible] बिंबं कारितं [illegible] [illegible] सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री [illegible] सूरिभिः [illegible] [illegible]

[1552]

सं० १५१६ वर्षे वैशाख सु० ५ श्री ज्ञानकीय गच्छे उप० किलासीया गोत्रे श्रे० रेला भा० माल्हणदे पुत्र कर्मा भा० कर्मादे पु० घडसीसहितेन कर्मा पन्ना द्वाभ्यां आत्म पुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सिद्धसेन सूरि पट्टे श्री धनेश्वर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1553]

॥ संवत् १६१७ वर्षे माघ वदि १ गुरौ मं० आना भार्या अरलादे पु० मं० नींबाकेन भ्रातृ मं० कान्हाई सा० वस्था आजीवा भार्या जइवंत तत् पुत्र मं० कर्मसी राजसी नें तया कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्र० श्री तपागच्छे श्री दानविजय सूरिभिः श्री हीरविजय सूरि प्रमुखैः परिवारपरिवृतैः ॥

[1554]

सं० १५२७ वर्षे आषाढ़ शुदि २ शुक्रे उसवाल ज्ञा० सा० लेषा भा० लषमादे पु० सा० राउलकेन भा० रत्नादे पु० सा० कोल्हा भा० शाल्हणदे पु० सा० गांगा सकुटुंबयुतेन स्वपुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्र० संडेरक गच्छे श्री शांति सूरिभिः ॥

[1555]

सं० १५३६ वर्षे वै० ९ चंद्रे ... भाईलेचा गोत्रे सा० पातल भा० वाचा पु० वीका भा० मदना नाम्नी पु० राजू स्वपितृ श्रे० श्री चंद्रप्रभ बिंबं कारितं प्र० श्री पल्लीवाल गच्छे श्री नन्न सूरि पट्टे भ० उद्योतन सूरिभिः ।

[1556]

संवत् १५६४ वर्षे ज्येष्ट सुदि ५ शुक्रे काकरेचा गो० पूर्वं सा० ठोटा पु० चुंडा पु० पेता भा० भाउ तत्पुत्र कान्हा भा० कस्मीरदे सकुटुंबेन श्रे० पि० श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री शांति सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1557]

सं० १९९१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि पूर्णिमा तिथौ गुरुवारे मूलनायक श्री पार्श्वनाथ जिन पंचतीर्थी जिनैः प्रतिष्ठितं श्री बृहत् परम भट्टारक श्री जिनसुख सूरि वराणां उपाध्याय श्री क्षेत्रराम गणिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥ कारितं चैतत् गणधर चौपड़ा गोत्रे शाह श्री लाल चंदजी पुत्ररत्न श्री कपूरचंदजीकेन स्वपुन्यवृद्धयर्थं ॥ शुभं भवतु ॥ श्री आदि जिन बिंबं ॥ श्री नेमिनाथ जिन बिंबं ॥ श्री शांति जिन बिंबं ॥ श्री महावीरस्वामी बिंबं ॥

श्री पार्श्वनाथजी की प्रतिमा पर

[1558]

संवत् १९२५ शाके १५९१ वैशाख सुदि ५ आदित्यवारे ···· ।

श्री आदिनाथजी का मंदिर — कुंडीवाली गली ।

मूर्त्ति पर ।

[[illegible]]

सं० १९२४ माघ सुदी ३ चंद्रप्रभ बिंबं कारितं । माणकोत गो० परमसुख [illegible] प्रति० । विजय गच्छे भ० । श्री शांतिसागर सूरिभिः ॥

पंचतीर्थियों पर ।

[[illegible]]

॥ सं० १९२४ वर्षे मार्ग सु० [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ पिता ॥ शा० [illegible] श्री आदिनाथ बिंबं कारितं । [illegible] सूरिभिः [illegible] ॥

[[illegible]]

सं० [illegible] वर्षे [illegible]

श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का०। प्र०। श्री पार्श्वचंद्र सूरिभिः ॥

वीसस्थानक यंत्र पर ।

[1562]

सं० १८६१ वर्षे आश्विन शु० १५। गुरौ श्री सिद्धचक्रराज यंत्र प्रतिष्ठापितं श्री श्रीमाल पटणीय बहादुरसिंहजी तत्पुत्र लाला बखतावरसिंहजी श्रेयोर्थं तपागछीय जं। यु। प्र। भ। श्री १०८ श्री श्री विजयजिनेंद्र सूरिभिः विजयराज्ये वाणारस्यां।

श्री महावीर स्वामीजी का मंदिर – सुंधि टोला।

पंचतीर्थियों पर।

[1563]

सं० १४३९ वर्षे पोष वदि ९ ....।

[1564]

॥ सं० १४८२ वर्षे चैत्र वदि ५ शुक्रौ श्रीमाली ज्ञातीय फोफलिया नरसिंघ भा० नामलदे सुत वाछा पितामह पितृश्रेयसे माता वईजलदे युतेन सुतेन योगाकेन श्री नमिनाथ मुख्य पंचतीर्थी का० पूर्णिमा पक्षे भीमपल्ली श्री पासचंद्र सूरि पट्टे श्री जयचंद्र सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥

[1565]

॥ सं० १५०१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ रवौ श्री श्रीमालज्ञातीय श्रे० सरवण भा० वाऊ पु० श्रे० गोवल भा० हूली पु० सहसाकेन स्वपितृमातृश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं पूर्णिमापक्षे श्री गुणसमुद्र सूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना ॥ [illegible] [illegible] [illegible] ॥ श्री ॥

[1566]

सं० १५०५ वर्षे माघ सुदि १० रवौ श्री श्रीमाल० सं० सामल भा० लाखणदे सुत देवा भा० मेघू नाम्न्या देल्हा कुटुंबसहितया अंचल गच्छे श्री जयकेशर सूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥

[1567]

सं० १५१९ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय सा० जांटा भा० जासू सुत सा० मानंत भार्या काईसु श्रदाकेन भ्रातृ वडा पासवीर प्रमुखकुटुंबयुतेन मातृपितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं पूर्णिमा । श्री पुण्यरत्न सूरीणामुपदेशेन का० प्र० विधिना ।

[1568]

सं० १५२३ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ उपकेश ज्ञातीय सा० जेसा भार्या पोईणी सुत गजाकेन भार्या राजलदे भ्रातृ सोर्यंद भा० गांगू प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री श्री श्री सुमति बिंबं का० प्र० कनकरत्न सूरिभिः ।

[1569]

सं० १५२४ वै० सु० १० प्राग्वाट सा० धना भा० रांनू सुत सं० देवा भा० जीविणी सुत सं० समधर संग्रामाख्यां स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं । तपागच्छे श्री लक्ष्मी-सागर सूरिभिः । जीर्णधारा वास्तव्यः ॥ श्रीरस्तु ॥

[1570]

सं० १५२५ वर्षे माघ वदि ६ प्राग्वाट व्य० देवसी भार्या देवलदे पुत्र सिंघाकेन भा० धीरादे पुत्र सांडादिकुटुंबयुतेन श्री मल्लिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः । श्री रत्नपुरे ॥

[1571]

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि ६ सोमदिने । उपकेश ज्ञातौ बप्पणा गोत्रे सा० सांगा भा० गोयंद पु० सा० जिनदास भा० रत्नादे पु० देल्हू भ्राता सा० धनराजे प्रमुखकुटुंबेन निजश्रेयो-
र्थं ॥

श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का०। प्र०। श्री पार्श्वचंद्र सूरिभिः ॥

वीसस्थानक यंत्र पर।

[1562]

सं० १८६१ वर्षे आश्विन शु० १५। गुरौ श्री सिद्धचक्रराज यंत्र प्रतिष्ठापितं श्री श्रीमाल पटणीय बहादुरसिंहजी तत्पुत्र लाला बखतावरसिंहजी श्रेयोर्थं तपागच्छीय जं। यु। प्र। भ। श्री १०८ श्री श्री विजयजिनेंद्र सूरिभिः विजयराज्ये वाणारस्यां।

श्री महावीर स्वामीजी का मंदिर – सुंधि टोला।

पंचतीर्थियों पर।

[1563]

सं० १४३९ वर्षे पोष वदि ९ ....।

[1564]

॥ सं० १४८२ वर्षे चैत्र वदि ५ शुक्रौ श्रीमाली ज्ञातीय फोफलिया नरसिंघ भा० नामलदे सुत बाछा पितामह पितृश्रेयसे माता वईजलदे युतेन सुतेन योगाकेन श्री नमिनाथ मुख्य पंचतीर्थी का० पूर्णिमा पक्षे भीमपल्ली श्री पासचंद्र सूरि पट्टे श्री जयचंद्र सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥

[1565]

॥ सं० १५०१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ रवौ श्री श्रीमालज्ञातीय श्रे० सरवण भा० वारू पु० श्रे० गोवल भा० हूसी पु० सहसाकेन स्वपितृमातृश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं पूर्णिमापक्षे श्री गुणसमुद्र सूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना ॥८॥ महिसाणा स्थाने ॥ श्री ॥

[1566]

सं० १५०५ वर्षे माघ सुदि १० रवौ श्री श्रीमाल० सं० सामल भा० लाखणदे सुत देवा भा० मेघू नाम्न्या देल्हा कुटुंबसहितया अंचल गच्छे श्री जयकेशर सूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥

[1567]

सं० १५१९ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय सा० जांडा भा० जासू सुत सा० सामंत भार्या काईसु श्राद्धकेन भ्रातृ वड़ा पासवीर प्रभृतिकुटुंबयुतेन मातृपितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं पूर्णिमा । श्री पुण्यरत्न सूरीणामुपदेशेन का० प्र० विधिना ।

[1568]

सं० १५२३ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ उकेश ज्ञातीय सा० जेना भार्या पोईणी सुत राजाकेन भार्या राजलदे भ्रातृ सोर्यद भा० गारू प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री श्री श्री सुमति बिंबं का० प्र० कनकरत्न सूरिभिः ।

[1569]

सं० १५२४ वै० सु० १० प्राग्वाट सा० धन्ना भा० गांनू सुत सं० वेला भा० जीविणी सुत सं० समधर संग्रामाभ्यां स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं । तपागच्छे श्री लक्ष्मी-सागर सूरिभिः । जीर्णधारा वासिनः ॥ श्रीरस्तु ॥

[1570]

सं० १५२५ वर्षे माघ वदि ६ प्राग्वाट व्य० देवसी भार्या देल्हणदे पुत्र सिंघाकेन भा० वीजलदे पुत्र सांडादिकुटुंबयुतेन श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः । श्री देवग्रामे ॥

[1571]

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि ६ सोमदिने । उकेश ज्ञातौ बहुरा गोत्रे सं० गांगा भा० गोयंद पु० लाडिम भा० लल्हूदे पु० देल्हू नाम्ना भा० रूपादे पुत्रादियुतेन श्रेयोः

पुण्यार्थं स्वश्रेयसे च श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० उपकेश गच्छीय श्री ककुदा० सं० श्री देवगुप्त सूरिभिः ।

[1572]

सं० १५४९ वर्षे वैशाष सुदि ३ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० नगसिंग भा० संजू सुत वछूआ केन भार्या रही प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागछनायक श्री रत्नशेषर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः । मूंडहटा वास्तव्यः ॥

[1573]

सं० १५५४ वर्षे पोष सुदि १५ सोमे उपकेश ज्ञातीय सं० मेहा भा० सरूपदे पु० सं० रिणमलेन भा० रत्नादे पु० लापा दासा जिणदास पंचायणकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री अंचल गच्छे श्री सिद्धांतसागर सूरिभिः ॥

[1574]

सं० १५७१ वर्षे फागुण शुदि ३ शुक्रे ओसवाल ज्ञातीय आदित्यनाग गोत्रे साह सद्दे पुत्र साह नयणाकेन कलत्रपुत्रादिपरिवारयुतेन पुण्यार्थं श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने भट्टारक श्री श्री सिंद सूरिभिः ॥ अलावलपुरे ॥ श्रीरस्तु ॥

[1575]

सं० १७०१ वर्षे मार्ग शिर कृष्णैकादश्यां रूढा बाई नाम्ना कारितं श्री नमिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं तपागछे श्री विजयदेव सूरि पट्टे प्रभाकर आचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः ।

[1576]

सं० ... ४२ वर्षे चैत्र वदि ३ बुधे ओसवाल ज्ञातीय चोरवेडिया गोत्रे सं० सोहिल तत्पुत्र सघवी सिंघराज तस्य पुण्यार्थं सं० सिद्धपालेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं श्री उपकेश गछे श्री सिद्ध सूरि प्रतिष्ठितं । पूजक श्रेयसे ॥ श्रीः ॥

चौबीसी पर ।

[1577]

संवत् १५७१ वर्षे चैत्र वदि ७ गुरौ श्री वायड़ ज्ञातीय मं० नरसिंघ भा० चमकू सुत समधर द्वितीया भा० हीरू नाम्न्या देकावडा वास्तव्यः सुत मं० धनराज नगराज संघादि स्वकुटुंबयुतया स्वश्रेयसे श्री अभिनंदन स्वाम्यादि चतुर्विंशति पट्ट श्री आगम गच्छे श्री अमररत्न सूरि तत्पट्टे सोमरत्न सूरि गुरूपदेशेन कारिता प्रतिष्ठिता च विधिना ॥

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर — सुंधिटोला ।

मूलनायकजी के चरणचौकी पर ।

[1578] *

(१) ॥ श्री विक्रम संमयात् सं० १६७१ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ ॥ श्रीमत्क्षीराब्धि लोलक-

(२) ल्लोलडिंडीरपिंडप्रसररसरसशारदशशांककिरणसुयुक्तिमौक्तिकहारनिकरधवलय-

(३) शोभिः पूरितदिङ्मंडलसकलधर्म्मकर्म्मनीतिप्रवृत्तिकरणप्राप्ताशेषभुवनप्र-

(४) सिद्धिनानाशास्त्रोत्पन्नप्रबलबुद्धिप्राग्भाररंजितांतःकरणाश्वपतिगजपतिछत्रपति-

(५) प्रणतपादारविंदद्वंद्वप्रथिततनुसर्वभव्यभुजादंडचंडप्रचंडकोदंडखंडितानेकका-

(६) ठिन्यनमकुशितारिप्रकरतरवशीकृताखिलखंडनृपाखमौलिसंधृतनिर्द्देशाधिशेषधर्म्म-

(७) शर्म्माधिकावाप्ततत्कीर्त्तिनिःशेषसार्वभौमशार्दूलसमल्लमनुजाधिपत्यपदवीपा-

---

* दिल्ली सम्राट जहांगीर के समय ये मूर्त्तियां की प्रतिष्ठा हुई थी, उस समय बादशाह को कई लोगोंने कह दिया कि जैनियोंने (जैनी लोगोंने) मूर्त्तियां बना रखी हैं और हजूरके नामको अपने पगोंके (मूर्त्तियों के) पैरों के निचे लिख दिया है। फिर क्या था। बादशाहके क्रोधका पार न रहा। श्री संघने बादशाह का क्रोध शांति तथा खास के नजरोंसे सब प्रकार अनिष्ट दूर करनेको इन मूर्त्तियों (नं० १५७८-१५८४) के मस्तक पर बादशाह का नाम खुदवा दिया था ऐसा प्रवाद है ।

(८) लोमीपरिरंजसुनाशीरविजयराज्ये । ऊसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे आंगाणी संघवी
(९) रेषा तद्भार्या श्रा० रेषश्री तत्पुत्र श्री कुंरपालसोनपालाख्याः । तेषां प्रागुक्तमानीयुत
(१०) प्रतिष्ठाया ॥ स्तन्नाम्ना प्रतिमा द्वय प्रतिष्ठा गतः संघेशैः स्वपितृणाम् धर्म्म चिंतामणि
(११) पार्श्वनाथ विंबं प्रतिष्ठापितं । अंचलगच्छेश श्री धर्म्ममूर्त्ति सूरि पट्टालंकार पूज्य
(१२) श्री ५ कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन ॥
(मस्तकपर) पातिसाह सवाई श्री जहांगीर सुरत्राण

[1579]

(१) संवत् १६७१ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ ऊसवाल ज्ञाती-
(२) य लोढा गोत्रे आंगाणी सं० ऋषभदास तद्भार्या श्रा०
(३) रेषश्री तत्पुत्रप्रवरैः श्री कुंरपाल सोनपाल सं-
(४) घाधिपैः सुत सं० संघराज रूपचंद चतुर्भुज धन-
(५) पालादियुतैः श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री ५ श्री धर्म्ममूर्त्ति
(६) सूरि पट्टे श्री कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन
(७) विद्यमान श्री अजितनाथ विंबं प्रतिष्ठापितं ॥ श्रीरस्तु ॥
(मस्तकपर) पातिसाह श्री जहांगीर विजय राज्ये ।

[1580]

(१) ॥ स्वस्ति श्रीमन्नृपविक्रमादित्य संवत्सर समयातीत संवत् १६७१ वर्षे
(२) शाके १५३६ प्रवर्त्तमाने वैशाष सुदि ३ शनौ श्रीमदागरा दुर्ग वास्तव्योपकेश
(३) ज्ञातीय लोढा गोत्रे गावंशे साह जेठमल तत्पुत्र सा० राजपाल तद्भार्या श्रा० रा
(४) जश्री तत्पुत्र श्री विमलाचलादि संघकारक सं० ऋषभदास तद्भार्यांजयकुमा-
(५) रानंददादिनी रेषश्री तत्पुत्राभ्यां श्री शत्रुंजय समेतगिरि संघ महन्महन्निर्वा-
(६) ह प्राप्तमहत्कीर्त्तिभ्यां श्री कुंरपाल सोनपाल संघाधिपाभ्यां ॥ सुत सं० संघराज
रूपचंद चतु

(७) सं० नूधरदास सूरदासे सिवदास पद्मश्री। प्रपौत्र साधारणादि परिवारयु-
(८) ताभ्यां श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री ५ धर्म्ममूर्त्ति सूरि पट्टांभोजभास्कराणां पूज्य श्री ५
(९) श्री कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन श्री संभवनाथ बिंबं प्रतिष्ठापितं भव्यैः
पूज्यमानं चिरं नंद्यादिति श्रेयस्तुः ॥
(मस्तक पर) पातिसाह श्री ५ श्री जहांगीर विजयराज्ये

[1581]

(१) ॥ स्वस्ति श्रीमन्नृप विक्रमादित्य समयात् संवत् १६७१ वर्षे शा-
(२) के १५३६ प्रवर्त्तमाने श्री आगरादुर्ग वास्तव्य उपकेश ज्ञा-
(३) तीय लोढा गोत्रे ... सा० राजपाल तद्भार्या श्रा० राजश्री त-
(४) त्पुत्र संघपतिपदोपार्ज्जनक्षम सं० ऋषभदास तद्भा-
(५) र्या श्रा० रेषश्री तत्पुत्राभ्यां श्री कुंरपाल सोनपाल संघाधिपाभ्यां श्री अंचल-
(६) गच्छे पूज्य श्री ५ धर्म्ममूर्त्ति सूरि पट्टे श्री ५ कल्याणसागर सूरीणामुपदे-
(७) शेन श्री अभिनंदन स्वामि बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ पूज्यमानं चिरं नंद्यात्
(मस्तकपर) पातिसाह अकबर जलालुदीन सुरत्राणात्मज पातिसाह श्री जहांगीर
विजयराज्ये

[1582]

(१) ॥ संवत् १६७१ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ उसवाल ज्ञा-
(२) तीय लोढा गोत्रे आंगाणी वंशे सं० ऋषभदास त-
(३) द्भार्या श्रा० रेषश्री तत्पुत्राभ्यां सं० श्री कुंरपाल सं० सोन-
(४) पाल संघाधिपैः तत्पुत्र सं० संघराज सं० रूपचंद चतुर्भुज
(५) धनपालादिसहितैः श्रीमदंचलगच्छे पूज्य श्री ५ धर्म्ममूर्त्ति सूरि तत्प-
(६) ट्टे श्री कल्याणसागर सूरिरुपदेशेन विद्यमान श्री ऋषभानन जिन
(७) बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ श्रीरस्तु ॥
(मस्तकपर) पातिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये

[1593]

(१) ॥ संवत् १६७२ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ रोहिणी नक्षत्रे श्री आ-
(२) गरा वास्तव्योपकेश ज्ञातीय लोढा गोत्रे नागवंशे सं० ऋषभदास
(३) भार्या रेखश्री तत्पुत्र संघाधिप सं० श्री कुंरपाल सं० श्री सोनपा-
(४) ल तत्सुत सं० संघराज सं० रूपचंद चतुर्भुज धनपालादियुतैः
(५) श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री ५ श्री धर्ममूर्ति सूरि पट्टे पूज्य
(६) श्री ५ कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन विद्यमान श्री ईश्वर
(७) जिन बिंबं प्रतिष्ठापितं सं० श्रीकान्ह ... ।
(मसलकपर) पातिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये

[1594]

(१) ॥ श्रीमत्संवत् १६७२ वैशाख सुदि ३ शनौ रोहिणी नक्षत्रे आगरा वा-
(२) स्तव्योसवाल ज्ञाती लोढा गोत्रे नागवंशे सा० राजपाल भार्या राजश्री
(३) तत्पुत्र सं० ऋषभदास भा० रेखश्री तत्सुत संघाधिप सं० कुंरपाल सं०
(४) श्री सोनपाल तत्सुत सं० संघराज सं० रूपचंद सं० चतुर्भुज सं० धन-
(५) पाल पौत्र सुखदास युतैः श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री
(६) ५ श्रीधर्म्म सूरि पट्टालंकार श्री कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन
(७) श्री पद्मानन जिन बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ श्री ॥
(मसलकपर) पातिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये

[1595]

(१) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति श्री संवत् १६७७ वर्षे ॥ ज्येष्ठ सुदि १५ तिथौ गुरुवासरे
(२) अनुराधा नक्षत्रे ओसवाल ज्ञातीय आयरुकठोरी गोत्रे सा० कुना
(३) ॥ संताने सा० कान्हड़ । सा० थानजी ... पुत्र सा० पृथ्वीराज ...
(४) सा० इंद्राणी । सा० गोमी पुत्र सा० निहालचंद । तेन श्री चंद्रानन शास्व-
(५) त बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री खरतरगच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरि संताने

(२) श्री जिनसिंह सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥ श्री [illegible] नगरे ॥ शुभं भवतु ॥

[1333]

सं० १६७७ मा० सु० ५ श्री वर्द्धमान जिन बिंबं कारितं ओसवंशे चोरड़िया गोत्रे हरी-सिंह [illegible] तथा [illegible] श्री जिनराज सूरि पट्टालंकार स्वपितृ-सत श्री जिनचंद्र सूरिभिः कारितं पूजकयोः श्रेयोर्थं । जयनगर नगरे ।

पंचतीर्थियों पर

[1334]

सं० १५२५ वर्षे माघ व० ६ बुधे श्री ऊकेश वंशे सा० किसनदास भा० कूंअरी पु० सा० [illegible] भा० पाल्हणदे पु० सा० काल्हा भा० हरषादे पुत्र सा० कम्मा सुश्रावकेण भार्या पुत्र नरपाल निहुचंद सा० पूंजा सा० सारंग सा० नासण प्रमुख समस्तकुटुंबसहितेन श्री आंचल गच्छ गुरु श्री जयकेसरी सूरीणां उपदेशेन मातुः श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं [illegible] संघेन ॥

[1335]

सं० १५२७ व० माघ सुदि ६ ओसवाल [illegible] गोत्रे सा० ईसर भा० [illegible] पु० [illegible] भा० [illegible] पु० [illegible] निज [illegible] श्रेयसे श्री नेमिनाथ बिं० का० प्र० [illegible] श्री [illegible] सूरि पट्टे [illegible] सूरिभिः ॥ शुभं ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

वीरू सुत अर्जुन सहिदे वरदे पुत्री आजु नाम्न्या स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्रतिष्ठितो वृद्ध तपापक्षे जट्टा० श्री ज्ञानसागर सूरिभिः ॥

[1591]

। संवत् १५५२ वर्षे फाल्गुन शुदि तृतीया ३ तिथौ बुधे ॥ श्री पटोलिया गोत्रे। सा० पोल। तत्पुत्र षेता। तत्पुत्र रूवा। तत्पुत्र गईपाल। तत्पुत्र मोहण। तत्पुत्र एडा पुत्रौ द्वौ। चांपा पाहा। चांपा स्वनिजपुण्यार्थं। स्वयशसे च। श्री चतुर्विंशति पट्टं कारितवान् प्रतिष्ठितः श्री राजगच्छीय श्री पुण्यवर्द्धन सूरिभिः ॥ श्रेयसे ॥

श्री संजवनाथजी का मंदिर — फूलवाली गली।

श्याम पाषाण के मूर्तियों पर।

[1592]

सं० १८८८ माघ सुदि ५ सोमे श्री गौड़ी पार्श्वनाथ बिंबं का०। उस वंशे सखलेचा गोत्रे महताव ....।

[1593]

सं० १८८८ माघ सुदि ५ सोमे श्री चंद्रानन शास्वतजिन बिंबं कारितं उस वंशे कुचेरा गोत्रे वसंतलालस्य जार्या ....।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1594]

श्री मूलसंघे वघेरवालान्वये वांका मेला प्रणमति।

[1595]

सं १८७७ माघ सु० १३ बु। उ। वंशे डागा गोत्रे सेढमल्ल तद्भार्या गिलहरी ताभ्यां श्री पार्श्वनाथ जिन बिंबं का०। वृ० ज। खर। ग। श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

[1596]

सं० १९२१ शाके १७७६। मा। शु। पक्षे ६। बुधे श्री महावीरजी जिन बिं० प्र० श्री शांतिसागर सूरिभिः का० सुचिंती गोत्रे रुपचंद तत्पुत्र धर्म्मचंद्र श्रेयोर्थं।

[1597]

सं० १९२१ शाके १७७६। मा। शु० ६ बुधे श्री महावीर जिन बिंब प्र० श्री शांति-सागर सूरिभिः का० सुचिंती गोत्रे बाबू रूपचंद तद्भार्या मनि बिबि श्रेयोर्थं।

[1598]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री अजित जिन बिंबं ओस वंशे सुचिंती गोत्रे लाला रूपचंद पुत्र धर्मचंद तद्भार्या गुलाबो बिबि श्रेयोर्थं प्र० श्रीशांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं॥

[1599]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री महावीर जिन बिंबं ओस वंशे सुगणा गोत्रे लाला खैरातीमल पुत्र रूपचंद तद्भार्या छोटो बिबि का० प्र० श्रीशांतिसागर सूरिभिः विजयगच्छे।

[1600]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ जिन बिंबं ओस वंशे चोरडिया गोत्रे ला। रज्जूमल तत्पुत्र इंद्रचंद्रेण का० प्र० श्री शांतिसागर सूरिभिः विजय गच्छे।

[illegible]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ जिन बिंबं ओस वंशे सुचिंती गोत्रे लाला रूपचंद पुत्र धर्मचंद्रेण का० प्र० श्री शांतिसागर सूरिभिः विजय गच्छे।

पंचतीर्थियों पर।

[illegible]

[illegible]

श्रेयोर्थं सुत सांगणेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं ।

[1603]

॥ संवत् १५४४ वर्षे आषाढ़ वदि ८ गुरौ उपकेश ज्ञातौ डुंडोयूरा गोत्रे सं० गांगा पु० पदमसी पु० पाल्हा भा० मोहणदेव्या पु० पाल्हा श्रीवंतसहितया स्वपुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० उपकेश गच्छे श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1604]

संवत् १५५२ वर्षे ज्येष्ठ शु० १३ दिने ऊ० ज्ञा० वलदउठ ग्रामवासि व्य० वेला भा० सारू पु० व्य० येसाकेन भा० कील्हु सहितेन स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री हेमविमल सूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ।

[1605]

संवत् १५५८ वर्षे कार्तिक वदि ५ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० मोकल भा० वारु पु० पांचा भा० जासू पु० वछासहितेन स्वपूर्वजश्रेयोर्थं शीतलनाथ बिंबं का० नागेंद्र गच्छे भ० श्री कमलचंद्र सूरि पट्टे श्री हेमरत्न सूरि प्रतिष्ठितः ॥

[1606]

... श्री नागपुरीय गच्छे श्री हेमसमुद्र सूरि पट्टावतंसैः श्री हेमरत्न सूरिभिः ॥ शुभं॥

लाला माणिकचंदजी और राय साहब का देरासर ।

मूर्त्तियों पर ।

[1607]

सं० १९२८ मि० फा० कृष्ण २ बुध सा। प्र। भा० महताब कुंवर श्री अधिष्टायक जिन बिंबं का० श्री अमृतचंद्र सूरिभिः।

[1608]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री कृषभदेव जिन बिंबं कारितं ओस वंशे चोरडि

गोत्र लाला प्रतापचंद्र तत्पुत्र शिखरचंद्रेण । प्रतिष्ठितं । भ० श्री शांतिसागर सूरिभिः ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1609]

सं० १५१३ आषाढ़ सुदि १० बुधे श्री वीर वंशे ॥ सं० पोपा भा० करणु पुत्र सं० नरसिंघ सुश्रावकेण भा० लषू भ्रातृ जयसिंघ राजा पुत्र सं० वरदे कान्हा पौत्र सं० पदमसी सहितेन निज श्रेयोर्थं श्री अंचलगच्छेश श्री जयकेशर सूरीणां उपदेशेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्र० संघेन पत्तन नगरे ।

[1610]

॥ संवत् १५६३ वर्षे आषाढ़ सुदि ७ गुरौ पत्तन वास्तव्य । मोढ ज्ञातीय श्रे० जीवा भा० हीरू पुत्र श्रे० अमराकेन भा० पुहुति सुत हांसादिकुटुंबयुतेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं । प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छनायक । श्री निगमाविर्भावका । परमगुरु । श्री श्री श्री इंद्रनंदि सूरिभिः ॥

लाला खेमचंदजी का देरासर ।

[1611]

सं० १९०४ माघ शुक्ल ९ बुधे श्री । वज्रजातीय गोत्रे ला० रोशनलाल तत्पुत्र सोनामलचंद्रेण भा० नति विवि तया श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं पांचाल देशे कंपिलपुर प्र० भ० श्रीमद् भट्टारक ... सूरिभिः ।

लाला हीरालालजी चुन्नीलालजी का देरासर ।

मूलनायकजी पर ।

[1612]

संवत् १३२५ वर्षे चैत्र वदि १ गुरु [illegible] श्री [illegible] ... ।

मूर्त्ति और पंचतीर्थियों पर।

[1613]

सं० १९०५ व० वै० व० २ उवकेश ज्ञा० सा० कान्हजी सुत वीरचंद नाम्ना श्री विमलनाथ कारि० प्रति० तप० श्री विजयदेव सूरिभिः। जय।

[1614]

सं० १९१० व० जे० सु० ६ मि० प्राग्वाट लघुशाखायां श्री ०य० सं० मनजीकेन सुपार्श्व बिंबं कारितं। प्रतिष्ठितं तपा विजयराज सूरिभिः।

[1615]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री सुविधिनाथ जिन बिंबं श्रीमाल जांडिया कन्हैयालाल तद्भार्या कनु श्रेयोर्थं भ० श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रति० विजय गछे।

[1616]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री अनंतनाथ जिन बिंबं श्रीमाल टांक गोत्रे हुकमचंदजी तत्पुत्र हजारीमलेन कारितं प्र० श्री विजय गछे भ० श्री शांतिसागर सूरिभिः

[1617]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री आदिनाथ बिंबं .... निहालचंदेण कारितं प्रतिष्ठितं विजय गछे श्री शांतिसागर सूरिभिः श्रेयोर्थं।

[1618]

सं० १९२४ माघ सुदि १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ बिंबं श्रीमाल पारख गोत्रे पदमचंद [?] तत्पुत्र श्री कपुरचंदेण कारितं। प्र० भ० श्री पूज्य शांतिसागर सूरिभिः। विजय गछे।

[1619]

सं० १९३० चैत्र व० १० गुरौ श्री ओसवंस व० मिनटीआ सो० जावड़ न० नरतां

...। भ० श्री हीरविजय सूरि पट्टालंकार श्री अकबरछत्रते (?) परिषतप्रासवाद० श्री विजयसेन सूरिभिः ॥

श्री ऋषभदेवजी का मंदिर – सहादतगंज ।

मूर्त्तियों पर ।

[1629]

१८७७ मा । सु । ५ । श्री आदि जिन बिंबं कारितं ठंस वंशे पहलावत गो । पुत्र गुलाबराय भार्या जून्नाख्या का० प्र । बृ । भ । खरतर । ग । श्री जिनाक्षय [illegible] पंङ्कजभृंगैः श्री जिनचंद्र सूरिभिः ।

[1630]

... ० १८१७ फागुण शीन २ बुधे श्री श्री आदि जिन परिकरं कारितं पांचालदेशे कांपि- [illegible]तिष्टितं । श्रीमद्भट्टारक बृहत् खरतर गछाधिराज श्री जिनअक्षय सूरि पट्टस्थित [illegible]नचंद्र सूरि पदकजअयलीन विनय श्री जिननंदिवर्द्धन सूरिभिः ठंस वंशे पहलावत लालाजी श्री सहानंदजी तत्पुत्र लाला श्री सदानंदजी तत्पुत्र लाला गुलाबरायजी [illegible] जून्नु विवि तेन कारितं महता प्रमोदेन ।

पंचतीर्थी पर ।

[1631]

सं० १५१८ वर्षे माघ वदि २ बुधे उपकेश ज्ञा० मा० कमलसी भा० तेजू सुत मा० [illegible]केन भा० वीरणिश्रेयोर्थ पुत्र गोविंदादियुतेन श्री संभवनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं संडेर गछे श्री शांति सूरिभिः ॥

श्री शांतिनाथजी का मंदिर – सहादतगंज ।

चौकी पर ।

[1632]

॥ संवत् १९०३ का मिति जेठ सुदि १० [illegible]

महिराज ···· भ्रातृ नागानिमित्तं श्री शांतिनाथ विंबं का० प्र० श्री विद्याधर गछे भ० श्री हेमप्रभ सूरिभिः ॥ मांडलि वास्तव्यः ॥ १ ॥

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर — सहादतगंज।

पंचतीर्थी पर।

[1625]

सं० १५७६ वर्षे वैशा० सुदि ६ सोमे डूगड़ गोत्रे सा० वील्हा भा० पूना पु० ४ सा० मेहा भा० रेडाही सा० कामी भा० डूला सा० पूला भा० मूलाही सा० उदा० भा० वीमाही सा० सधारण श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं रद्रुल गछे श्री सूरि प्रतिष्ठितं ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर — सहादतगंज।

मूलनायकजी पर।

[1626]

॥ संवत् १७७७······························।

पंचतीर्थियों पर।

[1627]

संवत् १५६७ वर्षे वैशाष सुदि ३ दिने श्री श्रीमालज्ञातीय श्रेष्टि राउल भार्या लाछी सुत जोगा भार्या रूपी जसमादे सुत करमण कान्हा करमण भार्या रत्नादेसहितेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं श्री ···· गछे शांति सूरि पट्टेश सर्वदेव सूरिभिः। कंथरावी वास्तव्यः ॥

[1628]

संवत् १६७० वर्षे वैशाष शित पंचम्यां तिथौ सोमे मेड़तानगर वास्तव्य समदड़ीया गोत्रीय। उकेश ज्ञातीय वृद्धशापीय सा० माना भा० मनरमदे सुत रामसिंह नाम्ना भ्रातृ रामसिंह प्रमुखकुटुंबयुतेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा गछे श्री अकबर सुरत्राण

दत्तबहुमान भ० श्री हीरविजय सूरि पट्टालंकार श्री अकबरछत्रते (?) परिषतप्राप्तवाद-जयकार भ० श्री विजयसेन सूरिभिः ॥

श्री ऋषभदेवजी का मंदिर – सहादतगंज।

मूर्त्तियों पर।

[1629]

सं० १८७७ मा। सु। ५। श्री आदि जिन बिंबं कारितं ओस वंशे पहलावत गो। सदानंद पुत्र गुलाबराय भार्या फूलाख्या का० प्र। बृ। भ। खरतर। ग। श्री जिनाक्षय सूरि तत् पंङ्कजभृंगैः श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

[1630]

सं० १८१७ फागुण शीत २ बुधे श्री श्री आदि जिन परिकरं कारितं पांचालदेशे कांपिलपुर प्रतिष्ठितं। श्रीमद्भट्टारक बृहत् खरतर गच्छाधिराज श्री जिनअक्षय सूरि पट्टस्थित श्री जिनचंद्र सूरि पदकजद्वयलीन विनेय श्री जिननंदिवर्द्धन सूरिभिः ओस वंशे पहलावत गोत्रे लालाजी श्री सहानंदजी तत्पुत्र लाला श्री सदानंदजी तत्पुत्र लाला गुलाबरायजी तद्भार्या फून्नु बिबि तेन कारितं महता प्रमोदेन।

पंचतीर्थी पर।

[1631]

सं० १५१७ वर्षे माघ वदि २ बुधे भदेउरा ज्ञा० सा० कमलसी भा० तेजू सुत सा० खेताकेन भा० वीरणिश्रेयोर्थ पुत्र गोविंदादियुतेन श्री संभवनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः ॥

श्री शांतिनाथजी का मंदिर – सहादतगंज।

चौकी पर।

[1632]

॥ संवत् १९०३ का मिति जेष्ट सुदि १० भ्यां श्रीमाल वंशे [illegible]

लाला विसनचंद जी तत्पुत्र काशीनाथजी तत्पुत्र देवीप्रसाद नद् भ्रातृपचुः ननकू। श्रेयोर्थं ॥ १ ॥

पंचतीर्थियों पर

[1633]

संवत् १५२३ वर्षे माह सुदि ६ नासणुली वासि मं० जलाकेन जार्या जावलदे सुत मांडण जा० जेअरि प्रमुखकुटुंबयुतेन भ्रातृ बलराज श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छेश श्री श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ श्रीः ॥

[1634]

सं० १५५७ वर्षे वैशाष सुदि ११ गुरौ श्री उंसवाल ज्ञातौ कठतिया गोत्रे। सं० पदमसी जा० पदमलदे पु० पासा जा० मोहणदे। पु० पाल्हा श्रीवंत तत्र सा० पाल्हाकेन स्वजार्या इंद्रादेपुण्यार्थ श्री श्रेयांस विंबं कारितं। प्रतिष्टितं। ककुदाचार्य संताने उपकेश गच्छे जट्टारक श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[1635]

सं० १६७२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ए गुरौ श्री अहमदावाद वास्तव्य उंसवाल ज्ञातीय वृद्ध शाषायां श्री शांतिदास जा० वाई रूपाई सुत सा० पनजी कारितं श्री शांतिनाथ विंबं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छे ज० श्री विजयदेव सूरि वरैकि (?) महोपाध्याय श्री श्री श्री मुनिसागर गणिजिः श्रेयोस्तु ॥

चौवीसी पर।

[1636]

सं० १६१ए वर्षे वैशाष वदि ५ शु० श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे वलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये ज० श्री सकलकीर्त्ति देवास्त० ज० श्री जुवनकीर्त्ति देवास्त० ज० श्री ज्ञानजूषण देवास्त० ज० श्री विजयकीर्त्ति देवास्त० ज० श्री शुजचंद्र देवास्तत्पट्टे

भट्टारक श्री सुमतिकीर्त्ति गुरूपदेशात् हुंबड़ ज्ञातीय वजीयाणा गोत्रे सा० धारा भा० राणी सु० हादा भा० हरखमदे सुत० सा० जगा भा० जगमादे भ्रा० जयवंत भा० जीवादे भ्रा० जेता भा० काऊआ सुत बचूआ युतैः श्री मुनिसुव्रत तीर्थंकरदेव नित्यं प्रणमंति ॥

श्री दादाजी का मंदिर — जौहरीबाग।

श्वेत पाषाण के चरणों पर।

[1637]

संवत् १९१३ शालिवाहन शाके १७७८ प्रवर्त्तमाने तिथौ माघ शुक्ल पंचम्यां ॥ ५ ॥ शुक्रवासरे जं। यु। प्र। भट्टारक श्री जिनकुशल सूरि पादुकां लक्ष्मणपुर वास्तव्य श्रीसंघेन कारितं बृहत् भट्टारक खरतर गच्छीय श्री जिननंदिवर्द्धन सूरि पट्टालंकृत श्री जिनजय- शेखर सूरिभिः॥ श्रेयोस्तु ॥ श्री ॥



अयोध्या।

यह बहुत प्राचीन नगरी है। प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेवजी का च्यवन, जन्म, और दीक्षा ये तीन कल्याणक यहां हुए। दूसरे तीर्थंकर श्री अजितनाथजी का च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक और चतुर्थ तीर्थंकर श्री अभिनन्दनजी का च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक और पांचवें तीर्थंकर श्री सुमतिनाथजी का च्यवन जन्म दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक तथा चौदहवें तीर्थंकर श्री अनन्तनाथजी का च्यवन जन्म दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक यहीं हुए थे। प्र. श्री महावीर स्वामी के नवमें गणधर [illegible] का जन्म यहीं [illegible] रघुकुलतिलक श्री रामचन्द्रजी [illegible]

लाला चिमनचंद जी तत्पुत्र काशीनाथजी तत्पुत्र देवीप्रसाद तत् भ्रातृव्यः नन्दू श्रेयार्थं ॥ १ ॥

पंचतीर्थियों पर

[1633]

संवत् १५२३ वर्षे माह सुदि ६ नासणुली वासि सं० जलाकेन भार्या भावलदे सुत मांडण भा० जेअरि प्रमुखकुटुंबयुतेन भ्रातृ वलराज श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागछेश श्री श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[1634]

सं० १५५८ वर्षे वैशाष सुदि ११ गुरौ श्री उसवाल ज्ञातौ कठउतिया गोत्रे । सं० पदमसी भा० पदमलदे पु० पासा भा० मोहणदे । पु० पाल्हा श्रीवंत तत्र सा० पाल्हाकेन स्वभार्या इंद्रादेपुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिंबं कारितं । प्रतिष्ठितं । ककुदाचार्य संताने उपकेश गछे भट्टारक श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1635]

सं० १६७२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ गुरौ श्री अहमदाबाद वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय वृद्ध शाषायां श्री शांतिदास भा० बाई रूपाई सुत सा० पनजी कारितं श्री शांतिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री तपा गछे भ० श्री विजयदेव सूरि वारैकि (?) महोपाध्याय श्री श्री श्री मुनिसागर गणिभिः श्रेयोस्तु ॥

चौवीसी पर ।

[1636]

सं० १६१९ वर्षे वैशाष वदि ५ शु० श्री मूलसंघे सरस्वती गछे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्त्ति देवास्त० भ० श्री भुवनकीर्त्ति देवास्त० भ० श्री ज्ञानभूषण देवास्त० भ० श्री विजयकीर्त्ति देवास्त० भ० श्री शुभचंद्र देवास्तत्पट्टे

[1643]

सं० १५७५ वर्षे फा० व० ४ दिने प्रा० सा० आल्हा जार्या आल्हणदे पुत्र सा० विंसाकेन जा० विल्हणदे पुत्रीपुत्र जयवंतप्रमुखयुतेन श्री संजवनाथ विंबं का० प्र० तपा गच्छे श्री जयकल्याण सूरिन्निः ।

धातु की मूर्ति पर ।

[1644]

सं० १८०६ फा० व० ५ श्री पार्श्वनाथ विंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनमहेंद्र सूरिणा । फो० गो० सेवाराम ।

धातु के यंत्र पर ।

[1645]

श्री । संवत् १९०९ आ० सु० ३ श्री सिद्धचक्र यंत्रं का० गांधी गुलाबचंदस्य जार्या फली नाम्ना प्र० श्री जिनमहेंद्र सूरिणा श्री वृहत् खरतर गच्छे ।

[1646]

सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल द्वितीया तिथौ श्री सिद्धचक्र यंत्रं प्र० ज० श्री महेंद्र सूरिन्निः का० गो० नाहटा डेनवास लछमणदास नट् जार्या मुन्नि विवि तत्पुत्र हजारीमल श्रेयोर्थमानंदपुरे ।

पाषाण के चरण पर ।

[1647]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां पाठक हीरधर्मोपदेशेन जयपुर वास्तव्य ओसवाल गोत्र कुशलचंदजेन उदयचंदेन अयोध्यायां श्री मरुदेव १ विजया २ सिद्धार्था ४ सुमंगला ५ सुयशा १४ गर्भरत्नानां परमेष्ठिनां चरणन्यासाः कारिताः प्र० श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

समवसरणजी के चरणों पर ।

[1648]

॥ सं १८७७ रा धराकायां वृहत् खरतर भट्टारक गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन जय नगर वासिना ओसवाल ज्ञातौ सेठ गोत्रीय हुकुमचंदजेन । उदयचंदेन अयोध्यायां श्री अजित सर्वज्ञस्य पादन्यासः कारितः । प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा ॥

[1649]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां श्री जिनलाभ सूरि शिष्योपाध्याय श्री हीरधर्मोपदेशेन अयोध्यायां श्री वृषभनाथानां पादन्यासः कारितः ओसवाल । मिरगा जाति सामंतसिंहेन पटेर गोत्रीयेन बीकानेरस्थ पदार्थमल्लेन । प्रतिष्ठितः श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

[1650]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन ओसवाल ज्ञातौ सेठ गोत्रीय हुकुमचंदजेन । उदयचंदेन जयनगरस्थेन । अवधौ सर्वज्ञाभिनंदन पादाः कारिताः । प्र । जिनहर्ष सूरिणा ।

[1651]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन जयनगर वासि ओसवाल ज्ञातौ सेठ गोत्रीय हुकुमचंदजेन । उदयचंदेन । अयोध्यायां श्री सुमति ग[illegible] पादाः कारिताः प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

[1652]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां श्री वृहत् खरतर गणीय श्री जिनलाभ सूरि शिष्योपाध्याय [illegible] सर्वज्ञानंत पादन्यासः कारितः सेठ उदयचंद प्र । श्री जि[illegible] [illegible]

[1653]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन अयोध्यायां श्री अजिताभिनंदन सुमत्यनंतनाम्नानां चरणन्यासः कारितः जयनगर वासिना। ओसवाल सेठ गोत्रीय हुकुमचंद सुतेन। उदयचंदेन प्रतिष्ठितः खरतर भट्टारक गणेश श्री जिनहर्ष सूरिणा।

[1654]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां खरतरगणेश श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन। अयोध्यायां श्री नाभि १ जितशत्रु २ संवर ४ मेघ ५ सिंहसेन १४ जानामार्हतां क्रमन्यासः कारितः जयनगरस्थेन ओसवाल सेठ हुकुमचंद सुतेन। उदयचंदेन प्रतिष्ठितः श्री जिनहर्ष सूरिणा।

[1655]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां श्री जिनलाभ सूरि शिष्योपाध्याय हीरधर्मोपदेशेन जयनगरस्थेन ओसवाल सेठ हुकुमचंद सुतेन। उदयचंदेन। अयोध्यायां २। ४। ५। १४। जिनाद्यो गणधराणां श्री सिंहसेन। वज्रनाभ। चमरगणि। यशसां पादाः कारिताः। प्रतिष्ठितः श्री जिनहर्ष सूरिणा।

दादाजी के चरण पर।

[1656]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां पितामहानां श्री जिनकुशल सूरीणामयोध्यायां चरणन्यासः प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा खरतर भट्टारक श्री जिनलाभ सूरि शिष्योपाध्याय श्री हीरधर्मोपदेशेन कारिताः। जयनगर वासिना अधुना मिरजापुरस्थेन सेठ हुकुमचंदेन। उदयचंदेन श्रेयोर्थं।

यक्ष और देवियों के पाषाण की मूर्तियों पर।

[1657]

॥ श्री गोमुख यक्ष मूर्तिः ॥ १ ॥ ॥ सं० [illegible] फाल्गुन कृष्ण ७ गुरौ प्रतिष्ठितं।

जं । यु । प्र । बृहत्खरतर भट्टारकेंद्र श्री जिनमुक्ति सूरि जिनामाई ग़ारमंडलाचार्य श्री विवेककीर्त्ति गणिना कारितं । श्री संघस्य श्रेयोर्थंनगोऽगायाम् ॥ शुभम् ॥ १ ॥

नोट— ऐसेही लेख और (१)॥ श्री महायक्षमूर्त्तिः ॥ २ ॥ (२) ॥ श्री यक्षनायक मूर्त्तिः ॥ ४ ॥ (३) ॥ श्री तुंबुरुयक्षमूर्त्तिः ॥ ५ ॥ (४) ॥ श्री पातालयक्षमूर्त्तिः ॥ १४ ॥ (५) ॥ श्री अजितवला देवी ॥ २ ॥ (६) ॥ श्री कालिदेवीमूर्त्तिः ॥ ४ ॥ (७) ॥ श्री अंकुशदेवी मूर्त्तिः ॥ १४ ये सात मूर्त्तियों पर हैं ।



नवराई ।

नवराई फैजाबाद से १० मैल और सोहावल स्टेशन से अंदाज २ मैल पर एक छोटा गांव है । यही प्राचीन तीर्थ 'रत्नपुरी' है । यहां १५ वें तीर्थंकर श्री धर्मनाथस्वामी का च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक हुवे हैं ।

पंचतीर्थियों पर

[1658]

संवत् १५१२ वर्षे माह शुदि ५ सोमे वाडिज वास्तव्य भावसार जयसिंह भा० फाली पु० पोचा भा० जासी पु० लीचा सरवण लाहू उमालु पोचाकेन । श्री सुविधिनाथ बिंबं कारापितं श्री चित्रंदणीक गच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिभिः ।

[1659]

सं० १५६७ वर्षे वैशाष सु० १० बु० श्री उपकेश ज्ञातौ सं० साहिल सु० सं० हासा भा० गाजी नाम्न्या स्वपुण्यार्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य सं० भ० श्री सिद्ध सूरिभिः

[1660]

संवत् १६१३ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ५ सोमे श्री पत्तने ऊसवाल ज्ञातीय सा० अमरसी सुत आणंद। सा० वीरु सुत काहाना सारंगधर बिंबं श्री पद्मप्रभनाथ । प्रतिष्ठितं। तपा गच्छे श्री विजयदान सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1661]

॥ संवत् १६४४ वर्षे फागुण शुदि २ दिने ऊसवाल ज्ञातीय वंभ गोत्रीय साह कटारू भार्या टुलादे सुत सा० तारू भार्या जीवादे सुत सा० टटन। प्री (?) संघनाम चिंतामणि श्री श्रेयांसनाथ बिंबं तपागच्छाधिराज श्री हीरविजय सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

पाषाण के चरणों पर।

[1662]

संवत् १७७७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्मनाथानां पादाः कारिताः वरडीया बूलचंदज वेणीप्रसाद प्र। बृहत् खरतरगणेश श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीर-धर्मोपदेशेन। ओसवालेन। काशीस्थेन प्रतिष्ठिताः श्री जिनहर्ष सूरिणा।

[1663]

संवत १७७७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्मार्हत्पादाः कारिताः बृहत् खरतरगणेश श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन वरडीया बूलचंदज वेणीप्रसादेन। श्री जिनहर्ष सूरिणा बृहत् खरतरगणेशेन।

[1664]

सं। १७७७ रा धराकायां बृहत् खरतर गणेश श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीर-धर्मोपदेशेन काशीस्थ वरडीया बूलचंदज । वेणीप्रसादेन श्री धर्मजिनेश्वरानां पादाः कारिताः श्री रत्नपुरे प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा खरतर गणेश।

[1665]

सं। १८०७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्म [illegible] पादाः कारिताः ओसवं[illegible]

वरड़ीया बूलचंदज वेणीप्रसादेन श्री काशीस्थेन बृहत् खरतर गणनाथ श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा खरतर गणेश।

[1666]*

सं० १७७७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्मनाथाय: गणधर श्रीमद् अरिष्टास्यानां पादा: कारिता: ओसवाल वंशे वरड़ीया बूलचंदज वेणीप्रसादेन बृहत् खरतर गणेश श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन। प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा। बृहत खरतर गणेशेन।

[1667]

सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ। श्री गौतम स्वामी जी पादन्यासौ। प्र। भ। श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः। का। गा० श्री अगरमल्ल पुत्र बोटण लालेन आणंदपुरे॥ श्री॥

[1668]

सं० १९१० वर्षे शाके १७१५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे श्री जिनकुशल सूरीणां पादन्यासौ प्रतिष्ठित: भ। श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः का। गां। श्री वेणीप्रसादांगज बोटणलालेण आणन्दपुरे।

पाषाण की मूर्त्तियों पर।

[1669]

सं। १६६७ का .... अभिनंदन ....। जं। यु। प्र। भट्टारक श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

[1670]

सं। १६७५ वैशाष सुदि १३ शुक्रे श्री बृहत् खरतर संघेन कारितं श्री अजितनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिभिः युगप्रधान श्री जिनसिंह सूरि शिष्यैः।

---

* किन्नर यक्ष और कंदर्पा देवी मूर्त्तियो पर भी ऐसे ही लेख हैं।

[1671]

॥ सं। १७७३ शाके १७५७ प्र। माघ सुदि १० बुध वासरे श्री पादलिप्त नयरे श्री अभिनंदन विंबं कारितं श्री वृहत् खरतर गछे भ। जं। यु। श्रीमहेंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1672]

सं। १७७३ माघ सुदि १० बुध वासरे श्री सुमतिनाथ विंबं कारितं वृहत्खरतर गछे प्रतिष्ठितं जं० यु० प्र० भ० श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः।

[1673]

॥ सं० १७१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ श्री पार्श्वनाथ विंबं प्रतिष्ठितं भ० श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः कारितं बसा (?) गोत्रीय श्री हुकुमचंद तत्पुत्र अगरमल्ल तद्भार्या बुध तया श्रेयोर्थमाणंदपुरे।

धातु की मूर्त्ति पर।

[1674]

सं० १७७० मि० फा० कृष्ण २ बुधे डूगड़ प्रतापसिंह भार्या महताब कुंवर का० विहरमान अजित जिन २० विंबं श्री अमृतचंद्र सूरि राज्ये वा० ज्ञानचंद्र गणिना।



फैजाबाद।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर। महल्ला - पाकजीखाना।

पंचतीर्थियों पर।

[1675]

ॐ सं० १४३१ वर्षे जेठ सुदि १० शुक्रे प्रा० श्रेष्ठि ... ना० देवड़ पु० ... भ्रातृव्य पीचनाम्न्यां स्वश्रेयसे श्री पद्मप्रभ विंबं का० प्रति० पिप्पल गच्छे श्री वीरप्रभ सूरिभिः ॥

[1676]

सं० १४९९ वर्षे फागुण वदि २ गुरौ श्रीमाल ज्ञातीय श्री एलहर गोत्रे शा० दया संताने सा० पूनात्मज म० मिचाकेन भ्रातृ डोडाप्रभृतिपरिवारयुतेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं श्री बृहद् गच्छे श्री मुनीश्वर सूरि पट्टे प्र० रत्नप्रभ सूरिभिः।

धातु की मूर्त्ति पर।

[1677]

सं० १६६४ वर्षे राय पालक० मु० पा० प्र० तप ....।

पट्ट पर।

[1678]

सं १६७२ भाद्र सुदि ११ श्री चंद्रप्रभ जिन बिंबं॥ वीरदास प्रणमति। ठः ठः॥

पाषाण के चरणों पर।

[1679]

सं० १८७९ फाल्गुण शुदि ४ वार शनि अयोध्या नगरे बंगलावसति बास्तव्य ओस वंशे नखत गोत्रीय जोरामल तत्पुत्र बषतावरसिंघ तत्पुत्र कनईयालालादिसहितेन श्री जिन-कुशल सूरि पादुका कारितं। प्रतिष्ठितं बृहत् भट्टारक खरतर गच्छीय श्री जिनचंद्र सूरिभिः कारक पूजकानां भूयसि वृद्धितरां भूयात्॥

[1680]

सं० १८७९ मि। फा। सु० ४ श्री जिनकुशल पादौ। प्र। श्री जिनचंद्र सूरिभिः।



चंद्रावती ।

यह तीर्थ बनारस से ७ कोस पर गंगा के किनारे अवस्थित है । आठवें तीर्थंकर चंद्रप्रभस्वामी का इसी चंद्रावती नगरी में च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक हुए हैं ।

पाषाण के चरण पर ।

[1691]

श्री वाराणसी नगरीस्थित समस्त श्री संघेन श्री चंद्रावत्यां नगर्यां श्री चंद्रप्रभु सुनाम ८ म जगनाथानां चरण न्यासः समस्त सर्व सूरिभिः प्रतिष्ठितं । संवत् १८७८ मिति आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे ११ वार शुक्रवार शुभं ।

पाषाण की यक्ष मूर्ति पर ।

[1692] •

संवत् १९१३ फाल्गुण शुक्ल सप्तम्यां विजय यक्ष मूर्ति प्रतिष्ठितं । भट्टारक । युगप्रधान श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः कारिता च काशीस्थ श्री श्वेताम्बर श्री संघेन ।

[1693]

सं० । १८७७ माघ सुदि ५ सोमे श्री जिनकुशल सूरि चरण कमलं कारितं श्री [illegible] फोफलिया गोत्रीय [illegible] पुत्र [illegible] प्र । [illegible] । भट्टारक ग । श्री जिन चंद्र सूरिभिः श्री जि[illegible] सूरि पट्टस्थैः ।

शिलालेख ।

[1694]

श्री दादाजी महाराज के मंदिरजी का शिलालेख । [illegible]

[illegible]

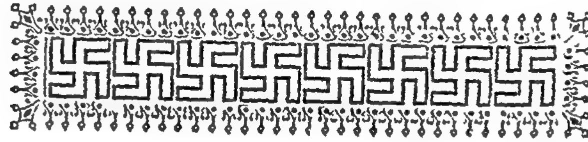
• [illegible]

[1685]

श्री संवत १८९१ शाके १७५७ माघ शुक्ल १५ सोमवार पुष्यनक्षत्रे आयुष्यमाण श्री चोरडिया गोत्रोत्पन्न लाला मन्नुलालजी बुधसिंहेन निर्मिता विश्रामस्थान।

[1686]

॥ सं। १८९४ वर्षे शा १७५९ माघ शुक्ला ४ चतुर्थ्यां चंद्रवासरे श्रीमालान्वये फोफलिया गोत्रे सा। श्री सुखवषतरायजी तत्सुतौ दिलसुखराय ···· चान्निधानौ श्री चंद्रप्रभ कल्याणकभूम्यां चंद्रावती पूर्यां धर्मशाला कारापिता संघार्थं।



श्री सम्मेदशिखर तीर्थ।

मधुवन – जैन श्वेताम्बर मन्दिर।

पंचतीर्थियों पर।

[1687]

सं० १२१० आषाढ़ सुदि ९ सोमे श्री षंडेरक गच्छे ···· प्रतिमा कारिता वसु ····।

[1688]

संवत् १२३५ वैशाख सुदि २ बुधे तंगकीय सोहि सुत पोन श्रावकेण स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता। ···· श्री पूर्णचन्द्र सूरिणा।

[1689]

संवत् १२४२ वैशाख सुदि ४ श्री वायटीय गच्छे श्री जीवदेव सूरि पितृश्रेयोर्थं मातृ श्रेयोर्थं श्री० टाणाकेन कारितं।

[1691]

संवत् १४९६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० कर्मसी भार्या मटकू सुत गुणीआकेन स्वकुलश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं। श्री बृहत्तपापक्षे श्री ज्ञानकलश सूरि पट्टे श्री विजय तिलक सूरिभिः।

[1692]

सं० १५५३ वर्षे वैशाष वदि ११ शुक्रे ऊकेश वंशे सा० पनरवद भार्या मानू पुत्र साइ वदा सुश्रावकेण भार्या धनाई पुत्र कुंरपाल सोनपाल प्रमुखसहितेन श्री वासुपूज्य बिंबं स्वश्रेयोर्थं कारितं। प्रतिष्ठितं श्री बृहत् खरतर गच्छनायक श्री जिनसमुद्र सूरिभिः।

[1693]

संवत् १५३० वर्षे माह वदि १३ बुध दिने सुराणा गोत्रे। सं० केसव पुत्र सं० समरथ भार्या सं० सोमलदे पु० सं० पृथीमल्ल महाराज कर्म्मसी धर्मसी युतेन श्री अजितनाथ बिंबं कारितं मातृपितृपुण्यार्थं आत्मश्रेयसे प्रतिष्ठितम्। श्री धर्मघोष गच्छे भट्टारक श्री श्री नंदिवर्द्धन सूरिभिः॥

चौवीसी पर।

[1694]

सं० १२९७ वैशाख शु० ३ गुरौ नंदाणि ग्रामेन्या श्राविकया आत्मीय पुत्र लूणदे श्रेयोर्थं चतुर्विंशति पट्टः कारिताः। श्री मोढ गच्छे वप्पभट्टि संताने जिनभद्राचार्यैः प्रतिष्ठितः।

[1695]

सं० १५०७ प्रा० सा० पाल्हणसी भा० भोटू सुत सा० राजाकेन भा० मंदोअरि सुत सीहा कडुआदिकुटुम्बयुतेन श्री कुन्थुनाथ सपरिकर चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिभिः॥ ठ॥ श्री ॥

जलमंदिर ।

पंचतीर्थि पर ।

[1696]

सं० १५११ पोष वदि ६ गु० मंत्रीअर गोत्रे श्री हुंवड़ ज्ञाति गारुडिया ज्ञा० पूजू सु० समेत ज्ञा० सहनल दे सु० समधर सोमा श्रेयोर्थं ज्ञा० पाल्हण नाल्हा एतैः श्री आदिनाथ बिंबं कारितं वृद्धतपा ज्ञ० श्री रत्नसिंह सूरिभिः प्रति० ॥



श्री पावापुरी तीर्थ ।

मंदिर प्रशस्ति ।

शिलालेख ।

[1697]

(१) ॥ ऐं ॥ स्वस्ति श्री संवति १६९८ वैशाख सुदि ५ सोमवासरे। पातिसाह श्री साहिजांह सकलनूर

(२) मंडलाधीश्वर विजयिराज्ये ॥ श्री चतुर्विंशतितमजिनाधिराज श्री वीरवर्द्धमान स्वामी

(३) निर्वाण कल्याणिक पवित्रित पावापुरी परिसरे श्री वीरजिनचैत्यनिवेशः। श्री

(४) ऋषभ जिनराज प्रथम पुत्र चक्रवर्ती श्री भरत महाराज सकलमंत्रिमंडलअंत मंत्रि श्रीदलसन्तानीय म-

(५) इतिश्राण ज्ञातिशृङ्गार चोपड़ा गोत्रीय संघनायक संघवी तुलसीदास भार्या निहा-
लो पुत्र सं० संग्राम ।

(६) लघुभ्रातृ गोवर्द्धन तेजपाल भोजराज । रोहदीय गोत्रीय सं० परमाणंद सपरिवार
महधा गोत्रीय विशेष धर्म्म ।

(७) कर्म्मोद्यम विधायक ठ० डुलीचंद काङड़ा गोत्रीय मं० मदनस्वामीदास मनोहर
कुशला सुंदरदास रोहदिया ।

(८) मथुरादास नारायणदासः गिरिधर सन्तादास प्रसादी । वार्त्तिदिया गो० गूजरमल्ल
बूदड़मल्ल मोहनदास ।

(९) माणिकचन्द बूदमल्ल जेठमल्ल ठ० जगन नूरीचन्द । नान्हरा गो० ठ० कल्याणमल्ल
मलूकचन्द सुजा-

(१०) चन्द । संघेला गोत्रीय ठ० सिंघू कीर्त्तिपाल वाबूराय केसवराय सूरतिसिंघ ।
काङड़ा गो० दयाल-

(११) दास गोवालदास कृपालदास मीर मुरारीदास किलू । काणा गोत्रीय ठ० राजपाल
रामचन्द ॥

(१२) महधा गो० कीर्त्तिसिंघ रो० ठवोचन्द । जाजीयाण गो० मं० नयमल्ल नंदलाल
नान्हड़ा गोत्रीय ।

(१३) ठ० सुन्दरदास नागरमल्ल कमलदास ॥ गो० सुन्दर मूरति मूरति सयम कुती प्रताप
पाहड़िया ।

(१४) गो० हेमराज भूपति । काणा गो० मोहन सुखमल्ल ठ० गढ़मल्ल जा० हरदास पुरु-
सोत्तम । मीणवा-

(१५) ण गो० गिरधारीदास विंझु । महु० मेदनी भगवान गरीबदास माहरेणपुरीय जीवण
वजागरा गो० ।

(१६) मलूकचन्द सूर गो० मवड़ बन्दी मंत्री । चो० गो० नरसिंघ रीग धरमू उत्तम
वर्द्धमान प्रमुख श्री ।

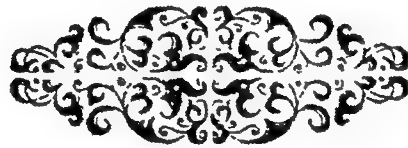
(१७) विहार वास्तव्य महतीयाण श्री संघेन कारितः तत् प्रतिष्ठा च श्री बृहत् खरतर गच्छाधीश्वर युगप्रधान श्री।

(१८) जिनसिंह सूरि पट्टप्रभाकर युगप्रधान श्री जिनराज सूरि विजयमान गुरुराजानामा देशेन कृत।

(१९) पूर्वदेश विहारे युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरि शिष्य श्री समयराजोपाध्याय शिष्य वा० अजयसुन्दर ग-

(२०) णि विनेय श्री कमललाभोपाध्यायैः शिष्य पं० लब्धकीर्त्ति गणि पं० राजहंस गणि देवविजय ग-

(२१) णि थिरकुमार चरणकुमार मेघकुमार जीवराज सांकर जसवन्त महाजलादि शिष्य सन्ततिः सपरिवार्यौ। श्रीः।



क्षत्रियकुण्ड। *

पंचतीर्थी पर।

[1698]

संवत् १५५३ वर्षे माह सुदि ५ दिने। बारडेचा गोत्रे सा० कोहा भा० सोनी पु० सा० सीहा सहजा सीहा भा० हीरूश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री कोरंट गच्छे श्री नन्न सूरिभिः॥



* 'लछवाड़' ग्रामसे १ कोस दक्षिण में छोटे पहाड़ पर यह स्थान है। श्वेताम्बर सम्प्रदाय वाले २४ वें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के च्यवन, जन्म और दीक्षा ये ३ कल्याणक इसी स्थान में मानते हैं। वहां के लोग इसको 'जलम थान' कहकर पुकारते हैं। पहाड़ के तलहटी में २ छोटे मन्दिर हैं। उन में श्री वीर प्रभु की श्याम वर्ण के पाषाण की मूर्त्तियां हैं। पहाड़ पर मन्दिर में भी श्याम पाषाण की मूर्त्ति है और मन्दिर के पास ही एक प्राचीन कुण्ड का चिह्न वर्तमान है।

लछवाड़।

धातु की मूर्ति पर।

[1699]

॥ सं० १९२० मि० फाल्गुन कृ० २ बुधे मारू गो० केसरीचंद भार्या किसन विवि वीर जिन बिंब का। भं। यु। भ। श्री जिनहंस सूरि राज्ये उ। सं। ग। च। प्रति०।

पंचतीर्थियों पर।

[1700]

सं० १५१३। वै० सुदि ५ गुरौ श्री हुंबड़ ज्ञातीय फडो शिवराज सुत महीया श्रेयसे भ्रातृ हीयकेन भ्रातृज कुरूया युतेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रति० बृहत्तपा पक्षे श्री श्री रत्नसिंह सूरिभिः॥

[1701]

सं० १९२० फा० कृ० २ बुधे प्रतापसिंह डूगड़ गोत्रे भार्या महताब कुंवर श्री सुमति जिन पंचतीर्थी का० भ०। सदालाभ गणिना श्री जिनहंस सूरि राज्ये।

यंत्र पर।

[1702]

सं० १९३२ ज्येष्ट शुक्ल १२ शनिवासरे श्री नवपद यंत्र कारितं ओस वंशे डूगड गोत्रे श्री प्रतापसिंह तत्पुत्र रायबहादुर धनपत्सिंहेन कारितं प्रतिष्ठितं विजयगच्छे भ० श्री शांतिसागर सूरिभिः।

[1703]

सं० १९३२ का ज्येष्ठ शुक्ल १२ द्वादश्यां शनिवासरे नवपद यंत्र........का० मकसूदाबाद वास्तव्य ओस वंशे डूगड गोत्रे बाबू प्रताप सिंह तत्पुत्र राय बहादुर लछमीपतसिंह रायबहादुर धनपतसिंह ने कारितं विजय गच्छे श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

चन्दनचौक ।

मन्दिर का शिला लेख ।

[1704]

१ । ॐ ॥ संवत् १३४४ वर्षे आ-
२ । षाढ़ सुदि पूर्णिमायां देव श्री ने-
३ । मिनाथ चैत्ये श्री कल्याण ....
४ । यस्य पूजार्थं श्रे० तिरधर । त-
५ । त्पुत्र श्रे० गांगदेवेन वीस....
६ । ला प्रीग ड्रमाणां ए२० श्री नेमि
७ । नाथ देवस्य भांडागारे निक्षि-
८ । सं वृन्द्र फल भोगेन सम्प्रति ड्र-
९ । ....३३ प्रदत्तं पूजार्थं आचंद्र-
१० । कार्क यावत् शुभं भवतु श्री ॥

मूर्त्ति के चरण चौकी पर ।

[1705]

१ । गुणदेव भार्या-जइतसिरि साल्हू-
२ । पुत्र दशरा पूना लूणावो ... कम-
३ । रेवता हरपति कर्मद राणा क-
४ । र्मट पुत्र खीमसीह तथा धीर-
५ । देव सुत अरसीह तत्पुत्र वस्तु-
६ । पाल तेजःपाल प्रभृति सकल-
७ । कुटुंब सामस्त्येन श्रे० गांग-
८ । देवेन कारितानि ।

卐

रत्नपुर - मारवाड़ ।

जैन मंदिर ।

शिला लेख ।

[1706]

१ । सं० १३४३ वर्षे माह सुदि १० शनौ रत्नपु-
२ । रे श्री पार्श्वनाथ चैत्ये श्री ऊसिवाल ज्ञातीय व्यवसीं-
३ । ह गज सुतयासी पुत्राद्ि सरोराज इसिकया व्यव महि-
४ । लण जार्यया महणदेव्या स्वात्म श्रेयसे कारितं श्री आ-
५ । दिनाथ विंबस्य नेचक निमित्तं श्री पार्श्वनाथ देव जांडा-
६ । गारे क्षिप्त वीसल प्रिय ड्रम्म २० तथा सं० १३४६ माह सुदि
७ । १५ पूर्णिमायां कल्याणिक पंचकनिमित्तं क्षिप्तं ड्र १० उ
८ । नयं ड्र ३० अमीषां ड्रम्माणां व्याजे शतं मासं प्रति ड्र २०
९ । विंशति ड्रम्मा पूम्वाणां व्याजेन नचकं करणीयं दश ड्रम्मा-
१० । णां व्याजेन कल्याणिकानि करणीयानि शुभं नवतु ।

मूर्तियों पर ।

[1707]

१ देव श्री शान्तिनाथ
२ । दीसावाल न्यानी सुरमा·
३ । णपुर वास्त (व्य) साधु रतन
४ । सुन सा० हापु जागे

[1708]

१ । ॐ ॥ सं० ॥ १३३० फागुण सुदि १० गुरौ । अद्येह रत्नपुर श्री पंडेर गच्छे श्री
२ । ....नरं मदन पुत्रमहं डूंगरसीहेन
३ । ....श्रे

४। योऽर्थं श्री जिनेन्द्रस्य बिंबं—कारितं ॥ ऋ०

५। श्री यशोभद्र सूरि संतान श्री सुमति सूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥



गांधाणी (मारवाड़)।

प्राचीन जैन मंदिर।

धातु की मूर्त्ति पर

[1700]*

(१) ॐ ॥ नवसु शतेष्वद्धानां । सप्तत्रं (त्रिं) शदधिकेष्वतीतेषु । श्रीवच्छलांगश्रीभ्यां ज्येष्ठार्याभ्यां

(२) परमभक्त्या ॥ नाभेय जिनस्यैषा ॥ प्रतिमा ऽषाढ़ार्द्धमास निष्पन्ना श्रीम-

(३) त्तोरण कलिता । मोक्षार्थं कारिता ताभ्यां ॥ ज्येष्ठार्यपदं प्राप्तौ । द्वावपि

(४) जिनधर्मवच्छलौ ख्यातौ । उद्योतन सूरेस्तौ । शिष्यौ श्रीवच्छवलदेवौ ॥

(५) सं० ९३७ अषाढ़ार्द्धे ॥



* गांव 'गांधाणी' जोधपुर से उत्तर दिशा में ६ कोस पर है। वहां तालाव पर एक प्राचीन जैन मन्दिर में यह सर्वधातु की आदिनाथजी की मूर्ति है और उसके पृष्ठ पर यह लेख खुदा हुआ है। जोधपुर निवासी पण्डित रामकर्णजी की कृपा से मुझे यह का छाप और अक्षरान्तर प्राप्त हुआ है। उन्होंने इस लेख पर निम्न लिखित नोटस् लिखे हैं।

पंक्ति— १। "ज्येष्ठार्य" यह पदवी वाचक शब्द ज्ञात होता है, जो पंक्ति ३ में के "ज्येष्ठार्य पदं प्राप्तौ" इस वाक्य से स्पष्ट है।

— २। "आषाढ़ार्द्ध" पद से आषाढ़ सुदि १ और वदि १५ का भी ज्ञान हो सकता है; परन्तु यहां प्रतिपदा का [illegible] अधिक है, क्योंकि शुभ कार्य में अमावस्या वर्जित है।

— ४। "उद्योतन सूरेः" —पट्टावली में इनके स्वर्गवास का संवत् ९९४ मिलता है परन्तु उन के पट्टाधिकारी होनेका [illegible] देखने में नहीं आया। लेख से जाना जाता है कि उद्योतन सूरि संवत् ९३७ में आचार्य पद पा चुके थे। [illegible] पर्यंत गच्छ भेद नहीं था इसी लिये लेखमें गच्छ का उल्लेख नहीं है। ऐतिहासिक दृष्टिसे यह लेख बड़े महत्व का [illegible]

सूरपुरा – नागौर ।

माताजी के मंदिर के स्तम्भ पर ।

शिला लेख ।

[1710]

(१) संवत् १२१५ पोस व-
(२) दि १ श्री नेमिनाथचैत्ये
(३) ···· पुत्र्या धाहरु ना-
(४) म्या देवधरमात्रा सू
(५) हवाभिधानया आत्म श्रे-
(६) योर्थं स्तंभद्वयं दत्तं ॥

[1711]

(१) संवत् १२३७ पोस व-
(२) दि १ श्री नेमिनाथचैत्ये
(३) ······ पुत्र्या धाहरु ना-
(४) म्या देवधरमात्रा सू-
(५) हडाभिधानया आत्म श्रे-
(६) योर्थं स्तंभद्वयं दत्तं ॥
(७) मूल्ये द्र १० ॥ सर्वं शु-
(८) भं ॥



उस्तरां – नागौर ।

शिला लेख ।

[1712]

(१) संवत् १६४४ वर्षे फागुण वदि १५ ऊकेश ज्ञातीय [illegible] गोत्रे
(२) ······
(३) संतानवान ··· तपागच्छ श्री श्री हीरविजय सूरि ।

नगर - मारवाड ।

मूर्त्तियों के चरणचौकी पर ।

दाहिने तर्फ ।

[1713]*

१। ॥ ॐ ॥ संवत् १२९२ वर्षे आषाढ़ सुदि ७ रवौ श्री नारदमुनि विनिवेशीते श्री नगरवरमहास्थाने सं० ९०

२। ७२ वर्षे अतिवर्षाकालवशादतिपुराणतया च आकस्मिक श्री जयादित्य देवीय महाप्रसाद विनष्टायां।

३। श्रीराजुलदेवी मूर्त्ते पश्चात् श्रीमत् पत्तन वास्तव्य प्राग्वाट ठ० चंडपात्मज ठ० श्रीचंडप्रसादांगज ठ० श्री सो- ।

४। मतनुज ठ० श्री आसाराजनन्दनेन ठ० श्री कुमारदेवीकुक्षिसंभूतेन महामात्य श्री वस्तुपालेन स्वभार्या म-

५। हं श्री स ····· पुण्यार्थमिहैव श्री जयादित्य देवपत्न्या श्री राजलदेव्या मूर्त्तिरियं कारिता ॥ शुभमस्तु ॥

बायें तर्फ ।

[1714]

१। ॥ ॐ ॥ संवत् १२९२ वर्षे आषाढ़ सुदि ७ रवौ श्री नारद मुनि विनिवेशीते श्री नगर वर महास्थाने सं० ९०७२ वर्षे अ-

२। तिवर्षाकालवशादतिपुराणं तया च आकस्मिक श्री जयादित्य देवीय महाप्रसाद पतन विनष्टायां श्री रत्नादेवी मूर्त्तौ

३। पश्चात् श्री मत् पत्तन वास्तव्य प्राग्वाट ठ० श्री चण्डपात्मज ठ० श्री चण्डप्रसादात्मज ठ० श्री सोमतनुज ठ० श्री आसाराजनन्द-

---

* श्री [illegible] महादेव के मंदिर में सूर्य के मूर्ति के दोनों तर्फ स्त्री मूर्त्तियों के चरणचौकी पर यह लेख है।

४। नेन ठ० श्री कुमारदेवीकुक्षिसम्भूतेन महामात्य श्री वस्तुपालेन स्वभार्या मध्याः ठ० कन्हड पुत्र्याः ठ० संपू कुक्षिभवा

५। याः महं श्री ललिता देव्या पुण्यार्थमिहैव श्री जयादित्य देवपत्न्या श्री रत्ना देवी मूर्त्तिरियं कारिता ॥ शुभमस्तु ॥ छ ॥

नगर - खेडगढ़।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर। *

[1715]

१। ॐ सं० १६६६ वर्षे। भाद्रपदे शुक्लपक्षे। श्री द्वितीया दिने। शुक्रवारे। वीरमपुर वरे। श्री शान्तिनाथ प्रासाद

२। भूमि गृह। श्री खरतर गच्छे। युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरि विजयराज्ये। आचार्य श्री जिनसिंह सूरि यौवराज्ये। श्री

३। राउल श्री तेजसिजी विजयिराज्ये। कारितं श्री संघेन॥ लिखितं वा० श्री गुणरत्न गणिना विनेयेन रत्नविशालगणिना

४। सूत्रधार। चांपा पुत्र। रत्ना। पुत्र। जोधा दामा। पुत्र मन्ना। धन्ना। वर योगेन कृतं। भार्या सोमा किस पाणा। वल्ली। मेघ। श्री रस्तु।

घाणेराव मारवाड़।

महावीर स्वामीका मन्दिर। †

[1716]

सं० १२१३ भाद्रपद सुदि ४ मङ्गल दिने श्री दण्डनायक वैजल्ल देव गज्ये श्रीवंश

---

* यह लेख मन्दिर के भूमिगृह का है।

† यह मन्दिर "घाणेराव" से ... पहाड़ पर है।

ज्ञातीय रावत महणसिंह जक्तिवसंइज वाटमध्यात् । श्री महावीर देव विंबं प्रति ग्राम पालसुणे दत्ताः यस्य भूमि तदा फलं ॥ से० रायपाल सुत रावजिकु महाजन कुराग विना लिय सारिवहिं ॥



अझार ।

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर ।

प्रशस्ति ।

[1717]

१ । ॐ नमः श्री पार्श्वनाथाय । ५ श्री ह .... पें गणेशाय ....
२ । श्री मद्गुरु मुनीन्द्र गुरुभ्यो नमः ॥ स्वस्ति श्री पार्श्वनाथांघ्रि तुष्टि
३ । हेतु स्मृतौ सतां । यौ विश्वत्रय विख्यातौ तावभीष्टप्रदौ मम ॥ १ ॥
४ । श्री मद्विक्रमतः संवत् । मुनिवाजीरसेन्दुके । १६७७ । वर्षे वैशाष मा
५ । सेकृष्णपक्षेऽर्कसूदिने ॥ २ ॥ अक्षयायां तृतीयायां रोहिणीस्थे .... वां
६ । सवे एवं सर्व गुणैरमले । जीर्णः प्रसाद उद्धृतः ॥ ३ ॥ श्री मत्पार्श्वजिनेन्द्रस्य कल्या
७ । ण कन्दहेतवे । श्रीमत्पाटमल पुर्यां च धुर्यायां तीर्थ संसदि ॥ ४ ॥ श्री श्री-
८ । मालीकृतांभोधि । चान्द्रेण सितकीर्त्तिना । दोसी श्री श्री जीवराज ह सुते-
९ । न गुणशालिना ॥ ५ ॥ सद्धर्मचारिणा हर्षाद्भुन्नतपुरवासिना । श्रीम-
१० । त्कुंअरजी नाम्ना सदुद्यमस्य व्ययेन च ॥ ६ ॥ साहाय्यतो वसंतस्य
११ । गुरुदेव प्रसादतः । जाता कार्यस्य संसिद्धिः । पुण्यैः किं किं न सि-
१२ । द्धिति ॥ ७ ॥ श्रीमत्तपागच्छेश श्री हीरविजय प्रभोः । पट्टे श्री विजय
१३ । सेन [illegible] सूरि [illegible] ॥ ८ ॥ तत्पट्टे [illegible] । सुगुरो श्री
१४ । [illegible] विजयदेव सूरीन्द्र । निदेशोयं पुन [illegible] । प्रासादश्चिरं जीयात् ॥ ९ ॥ तस्य दे

१५। ल्लिग दिग्भागे। सद्रंगरचनान्विते। स्तूपे श्री ऋषभस्वामी पादुकेऽत्र महाप्र-
१६। ते ॥१०॥ पूजनीयाः शुभाः श्लाघ्याः। गुरूणां तत्र पादुकाः कारिता मदनाख्येन। दो-
१७। सीना स्वालयान्विता ॥११॥ धर्म्मशाला विशाला च शालाकारेन निर्म्मिता। साहाय्या-
१८। द्रसंघस्य दोसीसंज्ञस्य तुष्टये॥ १२ ॥ पण्डितगणमौलीमणेः। तार्क्किकसिद्धान्त-
१९। शब्दशास्त्रार्थः। श्रीमत्कल्याणकुशलं। सुगुरोश्चरणप्रसादेन ॥ १३ ॥ तच्छिष्यस्य सुबु-
२०। द्धेर्विबुधः सुयतेर्दयाकुशलनाम्नः। महतोद्यमेन कृत्यं। सिद्धं श्री भगवतः कृ-
२१। पया ॥ १४ ॥ रम्यो जीर्णोद्धारो। श्रीपार्श्वनाथान्वितोऽर्थ्यमानश्च। आचंद्रार्कं राजत् जी-
२२। याज्जनसुखकरो नित्यं ॥ १५ ॥ संवत् १६७७ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ श्री आगरपु-
२३। रे महातीर्थे जीर्णोद्धारो जातः श्रीमत्तपागच्छेश भट्टारक प्रभु भ० श्री ५
२४। श्री विजयदेव सूरि विजयराज्ये। पं० श्री मेहमुनीन्द्र गणि शिष्य पं० श्री
२५। कल्याणकुशल गणि पं०। श्री दयाकुशल गणि शिष्येन। प्र-
२६। शस्तिरियं लिखिता गणि भक्तिकुशलेन ॥ श्री रस्तु ॥ श्रीः ॥

पाषाण की मूर्त्तियों पर।*

[1718]

१। सं० १३४३ वर्षे माघ वदि २ शनौ श्रीमालीय हरिपालेन
२। .... सूरिभिः।

[1719]

१। सं० १३४६ वर्षे चै० सुदि ९ बुधे ढीशावाल ज्ञातीय मह० आपण सुत धी-
२। रसन सुत। वासल श्रेयोर्थं श्री पार्श्वन थ कारितं प्रतिष्ठितं श्री महेन्द्र सूरिभिः।

पंचतीर्थियों पर।

[1720]

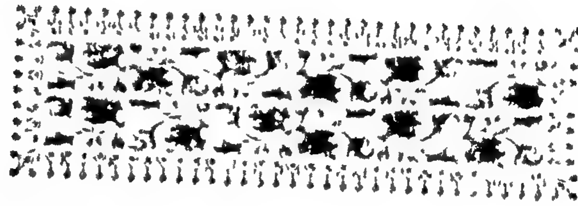
सं० १५०० वर्षे वैशाष सुदि १५ शनौ श्री .... पदेशेन हुंबड़ ज्ञातीय म० अर्जुन

* ये मूर्तियां खण्डित हैं लेख पादपीठ पर हैं।

मारुतयो सुत भीमा जुड़ा सुत नेमिनाथ प्रणमति ।

[1721]

सं० १५१९ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय सं० गाङा भार्या गांगती.... आत्मश्रेयसे श्री पद्मप्रभ स्वामिनादि पंचतीर्थी श्री आगम गच्छे श्री हेमरत्न सूरीणामुपदेशेन कारिता प्रतिष्ठिता च विधिना ।



पिंडवाड़ा-सीरोही ।

श्री महावीरजीका मन्दिर ।

शिला लेख

[1722]

(१) नीरागगन्धादिभावेन सर्वज्ञानविनायकं। ज्ञात्वा भगवतां जापं जिनानमिव पावनं ॥

(२) डोएयेयक यशोदेव देव ....। .... रिदं जैनं कारितं युग्ममुत्तमं ॥

(३) भयशतपरम्पराजित गुरुकर्म्मराजो .... कारापितां परदर्शनाय शुरूं सज्ज्ञानचरण लाभाय ॥

संवत् ८(७?)४४ ।

ॐ साक्षात्पिता महन व विश्वरूपविनायिना । शिल्पिना गोपगार्गेन कृतमेतज्जिन रूयम् ॥



खीमत-पालणपुर ।

जैन मंदिर ।

मूर्त्तिकी चरणचोकी पर ।

[1723]

१ । ॐ० ॥ सं० १२१५ वैशाष वदि ४ शुक्रे खीमंत स्थाने प्राग्वाट वं·
२ । शीय श्रे० आसदेव नार्यया दमति श्राविकया स्वपुत्र जसचन्द्र देवय
३ । तत्‌ पुत्र पूना अजयडषड् प्रति समस्तमानुषसमेतया आ·
४ । त्मश्रेयसे श्री महावीर जिनयुगलं कारितं सूरिजिः प्रति(ष्ठितं) ।



श्री तारंगा तीर्थ ।

श्रीअजितनाथ स्वामीजी का मंदिर ।

सहस्त्रकूट के चरण पर ।

[1724]

श्री शाश्वता परमेस्वर ४ श्री चौवीस तीर्थंकर २४ श्री वीस विहरमाण २० श्री गणधरना १४५२ सर्वमलिने संख्या पनरसो जोड़ावि ठई सहि । सं० १७७३ वर्षे माघ सुदि ७ शुक्रे श्री तारंगाजी दुर्गे । श्री श्री विजयजिनेन्द्र सूरि प्रतिष्ठितं तपा गच्छे । सा० करमचन्द मोतीचन्द सुत पनाचन्द करापितं । वीसनगर वास्तव्य ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1725]

सं० १५०९ वर्षे माघ सुदि १० शनौ उकेस वंशे साहु गोत्रे सा० तुंगा ना० नूपादे

पु० सा० सातलकेन भा० संसारदे पुत्र सा० देगादियुतेन श्री कुंथु बिंबं का० प्र० खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरिभिः।

[1726]

सं० १५१८ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ६ बुधे श्री कोरंट गच्छे। उपकेश सड़ाहड गो० सा० श्रवण भा० राजू पु० साल्हा भा० सांपू पु० काजण सहितेन स्वमातृपितृश्रेयोर्थं श्री चंद्रप्रभ बिंबं कारितं। प्रति० श्री सांवदेव सूरिभिः

[1727]

सं० १५३४ वर्षे वै०। सु० ३ विषयापुर वासि श्री श्रीमालि ज्ञा० मं० लषमीधर भा० जासू पु० मं० जूठाकेन भा० डीरू द्वि० जसमादे प्रमु० पुत्रादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं। श्री चित्रंदनीय गच्छे श्री कक्क सूरिभिः।

[1728]

सं० १५३२ वर्षे मार्गशिर सुदि ५ दिने श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० अर्जुन भा० हवकू पु० सहिजाकेन भा० मांनू सु० जूठा जावा स्वस्वपुर्वनिमित्तं कुटुंब० श्री सुमति नाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमापक्षे भट्टा० श्री गुणतिलक सूरि प्रतिष्ठितं॥ श्री॥

[1729]

॥ सं० १५७० वर्षे माघ वदि १ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० चुंडा भा० चांपलदे सुत वीसा धरणा वीसा भा० माणिकदे पितृमातृश्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं पिप्पल गच्छे भ० श्री गुणप्रभ सूरि पं० श्री तिलकप्रभ सूरि प्रतिष्ठितं॥ साचुरा॥ छ॥

[1730]

सं० १५८० वर्षे वैशाष सुदि १२ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय महं धना सुत महं जीवा भार्या जसमादे सुत गोगा भार्या रूपाई श्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री तपा गच्छे हेमविमल सूरिभिः पेथापुर।

चौविशी पर ।

[1731]

सं० १४७९ वर्षे आषा० शुक्ल ५ दिने प्राग्वाट ज्ञातीय मंत्रि बाहड़ सुत सिंघा भा० पूजल सुत ठकुआकेन भा० कपूरीयुतेन निजश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ मूलनायक चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री तपागच्छाधिप श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ।

[1732]

॥ सं० १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि राणा संताने श्रे० रत्ना भा० धरणू सुत पूर्णसिंहेन भार्या देमाई सहितेन तथा भ्रातृ हरिदास स्वपुत्र पासवीर युतेन श्री अजितनाथ बिंबं चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्र० श्री साधुपूर्णिमापक्षे भ० श्री रामचन्द्र सूरि पट्टे शिष्य पूज्य श्री श्री पूर्णचन्द्र सूरीणामुपदेशेन विधिना नारु श्रावकैः ॥

[1733]

सं० १५०८ वर्षे वैशाष वदि ११ दिने उपकेश ज्ञा० डागलिक गोत्रे । सा० धिना भा० वाल्ह पुत्र संघवी पासवीरेण भा० संपूरदे सहितेन स्वश्रेयसे श्री संभवादि तीर्थंकृच्चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री कोरंटगच्छे श्रीनन्नाचार्यसंताने श्री कक्कसूरि पट्टे श्री सावदेव सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

नन्दीश्वरद्वीप की देहरी पर ।

[1734]

सं० १८८८ महा सुदि ५ शुक्रे श्री विजयजिनेन्द्र सूरिभिः नन्दीश्वरद्वीप बिंबप्रवेश प्रतिष्ठित श्रीतपगच्छे श्री गाम वड़नगर वो० पानचन्द जयचन्द स्थापित ।



सिहोर-काठियावाड़।

श्री सुपार्श्वनाथजी का मंदिर।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1735]

सं० १४८० वर्षे वैशाष सुदि १२ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञा० सं० रत्ना भा० रजाई पु० सं० सहस्सकिरण भार्या धरणू सुत लजदे कुटुंबयुतेन श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री हेमविमल सूरिभिः। बलासर वास्तव्य ॥

[1736]

सं० १५१६ वर्षे चैत्र वदि १ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय व० तयरा भा० वादू सुत नाणा वडीय गोवल भा० हांसू सु० वीरा भा० वांकलदे सुत लाखु काएहु वानर एतै जिनपितृमातृ श्रेयोर्थ श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मधुकर गच्छे भ० ····।

[1737]

सं० १५३६ वर्षे पोष वदि ···· गुरू श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० टोइया भा० लखा सुत पर्वत भ्रातृ कमि श्रेयोर्थं जीवितस्वामी श्री नमिनाथ बिंबं कारितं श्री आगमगच्छे श्री श्री सिंघदत्त सूरिभिः प्रतिष्ठितं विधिना कारितानि।

पालिताना।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर—माधोलालजी की धर्म्मशाला।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1738]

संवत् १५९५ वर्षे माह सुदि १२ शुक्रे आणंदविमल सूरि या० चन्दा भा० माइयजी श्रीदजदेव (?) ···· ॥

[1739]

संवत् १६०० [पो]स वदि ५ सोम० श्रीमालज्ञातीय सा० हेमा श्रेयसे शा० नाथुजी-केन धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

[1740]

संवत् १६२६ वर्षे फाल्गुण सुदि ७ सोम ठस० ज्ञा० व्य० ···· श्री सुमतिनाथ बिंबं ···· हीरविजय सूरिः ···· ।

[1741]

संवत् १६३० वर्षे माघ सुदि ९ दिने न। इन्द्राणीता (?) श्री श्री आदि बिंबं का० प्र० तपागछे श्री विजयसेन सूरिभिः ॥

[1742]

संवत् १६७७ वै० शु० ५ शु० त ···· ।

[1743]

संवत् १७०२ वर्षे मार्गशिर सुदि ६ शुक्रे श्री अंचलगछाधिराज पूज्य भट्टारक श्री कल्याणसागर सूरीश्वराणामुपदेशेन श्री दीव बंदिर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय नाग गोत्रे संघि विमल सन्ताने सं० कमलसी पुत्र सं० जीवा पुत्र सं० प्रेमजी सं० प्रागजी सं० आणंदजी पुत्र केशवजी प्रमुखपरिवारयुतेन स्वपितृ सं० जीवा श्रेयोऽर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं चतुर्विध श्रीसंघेन।

[1744]

संवत् १७१२ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने शा० मनजी भार्या बाई मनरंगदेकेन मुनि-सुव्रत बिंबं का० प्र० श्री विजयसेन सूरि।

[1745]

सं० १६५७ वर्षे वै० शु० १ सो[म] शा० विमलदे भार्या विम· श्री अनन्त बिंबं प्र० त० श्री विजयसेन सूरि।

सिहोर-काठियावाड़ ।

श्री सुपार्श्वनाथजी का मंदिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1735]

सं० १४७० वर्षे वैशाष सुदि १२ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञा० मं० रत्ना भा० रजाई पु० तं सहस्रकिरण भार्या धरणू सुत तजदे कुटुंबयुतेन श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री हेमविमल सूरिभिः । घलासर वास्तव्य ॥

[1736]

सं० १५१६ वर्षे चैत्र वदि १ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय व० तयरा भा० बादू सुत नाणा वडीय गोवल भा० हांसू सु० वीरा भा० वांफलदे सुत लालु काएहु वानर एवं जिनपितृमातृ श्रेयोर्थं श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मधुकर गछे भ० .... ।

[1737]

सं० १५३६ वर्षे पोष वदि .... गुरू श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० टोइया भा० लखा सुत पर्वत भ्रातृ कमि श्रेयोर्थं जीवितस्वामी श्री नमिनाथ बिंबं कारितं श्री आगमगछे श्री श्री सिंघदत्त सूरिभिः प्रतिष्ठितं विधिना कारितानि ।

पालिताना ।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर—माधोलालजी की धर्म्मशाला ।

धातु की मूर्त्तियों पर ।

[1738]

संवत् १५९५ वर्षे माह शुदि १२ शुक्रे आणंदविमल सूरि या० चन्दा भा० माहवजी श्रीवजदेव (?) .... ॥

[1739]

संवत् १६०० [पो]स वदि ५ सोम० श्रीमालज्ञातीय सा० हेमा श्रेयसे शा० नाथुजी-केन धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

[1740]

संवत् १६२६ वर्षे फाल्गुण सुदि ८ सोम ऊस० ज्ञा० व्य०····श्री सुमतिनाथ बिंबं····हीरविजय सूरिः····।

[1741]

संवत् १६७० वर्षे माघ सुदि २ दिने ब। इन्द्राणीसा (?) श्री श्री आदि बिंबं का० प्र० तपागछे श्री विजयसेन सूरिभिः ॥

[1742]

संवत् १६७७ वै० शु० ५ शु० स····।

[1743]

संवत् १७०२ वर्षे मार्गशिर सुदि ६ शुक्रे श्री अंचलगछाधिराज पूज्य भट्टारक श्री कल्याणसागर सूरीश्वराणामुपदेशेन श्री दीव बंदिर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय नाग गोत्रे मंत्रि विमल सन्ताने सं० कमलसी पुत्र सं० जीवा पुत्र सं० प्रेमजी सं० प्रागजी सं० आणंदजी पुत्र केशवजी प्रमुखपरिवारयुतेन स्वपितृ सं० जीवा श्रेयोऽर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं चतुर्विध श्रीसंघेन।

[1744]

संवत् १७१२ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने शा० मनजी भार्या बाई मनरंगदेकेन मुनि-सुव्रत बिंबं का० प्र० श्री विजयसेन सूरि।

[1745]

सं० १७५७ वर्षे वै० शु० १ सो[म] शा० खिमचंद भार्या विमु श्री अनन्त बिंबं प्र० त० श्री विजयऋद्धि सूरि।

सिहोर-काठियावाड़ ।

श्री सुपार्श्वनाथजी का मंदिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1735]

सं० १४७० वर्षे वैशाष सुदि १२ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञा० सं० रत्ना भा० रजाई पु० तं सहस्रकिरण भार्या धरणू सुत तजदे कुटुंबयुतेन श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठि श्री हेमविमल सूरिभिः । बलासर वास्तव्य ॥

[1736]

सं० १५१६ वर्षे चैत्र वदि १ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय व० तयरा भा० वादू सुत नाणा वडीय गोवल भा० हांसू सु० वीरा भा० वांभलदे सुत लालु काएहु वानर एतै जिनपितृमातृ श्रेयोर्थं श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मधुकर गछे भ० ···· ।

[1737]

सं० १५३६ वर्षे पोष वदि ···· गुरू श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० टोइया भा० लला सुत पर्वत भ्रातृ कमि श्रेयोर्थं जीवितस्वामी श्री नमिनाथ बिंबं कारितं श्री आगमगछे श्री श्री सिंघदत्त सूरिभिः प्रतिष्ठितं विधिना कारितानि ।

पालिताना ।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर—माधोलालजी की धर्म्मशाला ।

धातु की मूर्त्तियों पर ।

[1738]

संवत् १५९५ वर्षे माह शुदि १२ शुक्रे आणंदविमल सूरि या० चन्दा भा० माहवजी श्रीवजदेव (?) ···· ॥

[1739]

संवत् १६०० [पो]स वदि ५ सोम० श्रीमालज्ञातीय सा० हेमा श्रेयसे शा० लालुजी-केन धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

[1740]

संवत् १६२६ वर्षे फाल्गुण सुदि ७ सोम ऊस० ज्ञा० व्य० ····श्री सुमतिनाथ बिंबं ····हीरविजय सूरिः ····।

[1741]

संवत् १६७० वर्षे माघ सुदि २ दिने व। इन्द्राणीसा (?) श्री श्री आदि बिंबं का० प्र० तपागच्छे श्री विजयसेन सूरिभिः ॥

[1742]

संवत् १६७७ वै० शु० ५ शु० स ····।

[1743]

संवत् १७०२ वर्षे मार्गशिर सुदि ६ शुक्रे श्री अंचलगच्छाधिराज पूज्य भट्टारक श्री कल्याणसागर सूरीश्वराणामुपदेशेन श्री दीव बंदिर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय नाग गोत्रे संघि विमल सन्ताने सं० कमलसी पुत्र सं० जीवा पुत्र सं० प्रेमजी सं० प्रागजी सं० आणंदजी पुत्र केशवजी प्रमुखपरिवारयुतेन स्वपितृ सं० जीवा श्रेयोऽर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं चतुर्विध श्रीसंघेन।

[1744]

संवत् १७१२ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने शा० मनजी भार्या बाई मनरंगदेकेन मुनि-सुव्रत बिंबं का० प्र० श्री विजयसेन सूरि।

[1745]

सं० १७७७ वर्षे वै० शु० १ सो[म] शा० खिमचंद भार्या बिम्ब श्री अनन्त बिंबं प्र० भ० श्री विजयऋद्धि सूरि।

[1746]

संवत् १८४ ··· ॥ फाल्गुण सुदि २ ··· वासरे ठदिने श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्र० बाई बी जरावती ॥

[1747]

दो० बाघा श्री जीराउलाउ श्री पार्श्वनाथ ।

[1748]

षा० हीराई श्री शान्तिनाथ ·· श्री हीरविजयसूरि प्र० ॥

[1749]

संवत् १९०३ वर्षे माघ विदि ५ शुक्रे श्री चन्द्रप्रभ विंबं करापितं श्रीमालि वंशे शा० अनोपचन्द तस्य भार्या बाई नाथो अंचल गछे ॥

श्री सिद्धचक्र यन्त्र पर।

[1750]

संवत् १९५४ ना वर्षे माघ विदि ५ चन्द्रे श्री तपागछे बाई डूली तस्या पुत्री बाई जबल श्री सिद्धचक्र करापितं पं० पद्मविजैः (?) प्रतिष्ठितं श्री राजनगर मध्ये।

चौवीसी पर।

[1751]

संवत् १५२३ वर्षे वैशाख विदि ७ रवौ श्री सीरूंज वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० वाघा भा० मानूं सुत श्रेष्ठि समधरेण भा० जासी भा० धर्म्मादे सुता लाली प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री तपागछे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे गछनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1752]

सं० १४३९ (?) ··· प्राग्वाट ज्ञातीय शा० हाला भार्या दानू सुत शा० गिरिराज

श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री देवचन्द्र सूरिभिः ।

[1753]

सं० १५०३ वर्षे आषाढ़ सुदि १० शुक्रे श्री प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० पींचा भार्या लाखणदे तयोः पुत्रैः श्रे० वीरम धीटा चीगाख्यैः मातृपितृश्रेयोऽर्थ श्री मुनिसुव्रतस्वामी बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे वृद्धशाखायां श्री जिनरत्नसूरिभिः । श्री सहूआला वास्तव्य ।

[1754]

सं० १५१२ वर्षे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० आसपाल भा० पचू पुत्र धना भा० चमकू पुत्र माधवेन भा० वाल्ही भ्रातृ देवराज भा० रामकी देपालादियुतेन श्री सुमति बिंबं कारितं प्र० तपागच्छेश श्री सोमसुंदर सूरि श्री मुनिसुंदर सूरि श्री जयचन्द्र सूरिशिष्य श्री श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1755]

सं० १५१७ वर्षे आषाढ़ सुदि १० बुधे ऊकेश वंशे कुंकड गोत्रे शा० गुजर पु० शा० देव-राज पु० आसा पु० शा० समधरेण स्वमातृ चांई पुण्यार्थं श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री खरतरगच्छे श्री विवेकरत्न सूरिभिः ।

[1756]

सं० १५१८ वर्षे वैशाख सुदि १३ सवारि वानि प्रा० ना० जावड़ भा० चान्द सुत हर-दासेन भा० गोमती भ्रातृ देवा भा० धर्मिणियुतेन श्रेयोऽर्थं श्री सुमति बिंबं का० प्र० तपा श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ।

[1757]

सं० १५१९ वर्षे माघ सुदि १५ गुरु श्री श्रीमाल ज्ञातीय ठक्कु० नाना भार्या पाल्ही आत्मश्रेयोऽर्थं जीवितस्वामी श्री अजितनाथ मुख्य पंचतीर्थी बिंबं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे श्री मुनितिलक सूरि पट्टे श्री राजतिलक सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं । नाडू वास्तव्य ।

[1758]

सं० १५२१ वर्षे वैशाख सुदि ६ बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय दो० गोपाल भा० लली सु० पोमाकेन भा० रूमकू श्रेयोऽर्थं श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारितं श्री पूर्णिमापक्षे भ० श्री सागर तिलक सूरि पट्टे भ० श्री गुणतिलक सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ।

[1759]

सं० १५३१ वर्षे माघ वदि ७ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय शा० राजा भा० गजलदे सु० स० शाह गिरूया भार्या राजाई तया सु० पासा जीवायुतया स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं श्री आगम गच्छे श्री जयानन्द सूरि पट्टे श्री देवरत्न सूरि गुरूपदेशेन कारितं प्रतिष्ठापितं च ॥ शुभं भवतु ॥ श्री स्तम्भतीर्थे ॥ १४ ॥

[1760]

सं० १५४७ वर्षे वैशाख सुदि ३ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय म० देवसी भा० देल्हणदे पुत्र सहिजाकेन भा० धनी पुत्र गंगदास सचू हांसा भ्रातृ कीपा प्रमुखकुटुम्बयुतेन पितृ निमित्तं स्वश्रेयसे च श्री कुन्थुनाथ बिंबं श्री पूर्णिमापक्षे श्री सौभाग्यरत्न सूरिणामुपदेशेन का० प्र० विधिना श्री लीवाली ग्रामे ॥

[1761]

सं० १५५२ वर्षे माघ वदि १२ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय प० सधा भा० अमकू सु० प० मूलाकेन भा० हांसी सु० हर्षा लषा सहितेन स्वश्रेयोऽर्थं श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री वृद्धतपापक्षे भ० श्री उदयसागर सूरिभिः ॥ श्री पत्तने ॥

[1762]

सं० १६३७ वर्षे माघ वदि ९ शनौ श्री दीव वास्तव्य श्री श्रीमाल ज्ञातीय लघुशाखा मण्डन श्रे० काबा भा० कामलदे सुत कक्की भार्या हर्षादे सुत सचवीर भार्या सहिजलदे सुत हीरजी भार्या हीरादे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं तपागच्छे श्री हीरविजयसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ ७ ॥

[1763]

सं० १६५१ वर्षे मार्गशीर्ष वदि ४ गुरौ दो० वेधराजकेन निजश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागच्छे श्री हीरविजयसूरिश्वरैः भार्या सोभादे सुत धनजी प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्री दीवबन्दिर वास्तव्येन ॥ श्री रस्तु ॥

[1764]

सं० १६५६ वर्षे फाल्गुण वदि २ गुरौ दीवबन्दिर वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय बाई मनाईकया निजश्रेयसे श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागच्छाधिराज परम-गुरु श्री ६ विजयसेन सूरिभिः परिकरसहितैः।

शत्रुंजय तीर्थ।

दिगम्बर मन्दिर।

श्री शान्तिनाथजी की मूर्ति पर।

सं० १६८६ वर्षे वैसाख सुदि ५ [illegible] श्री मूलसंघे [illegible] बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री [illegible] [illegible]

६। त० सोनी जयपाल भार्या मृगाई ॥ ततः ॥ सोनी सायर भार्या बाई बाकू सुत सोनी मना भार्या बाई

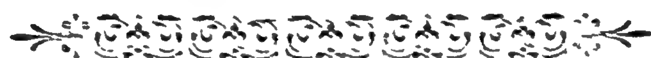
७। वरजू सुत सोनी श्रीवंत सोनी जयवंतौ। सपरिजनसहितेन ॥ सोनी समरसिंह भार्या बाई पाही-

८। सहितेन ॥ एनै श्री चारवाड पुरे वर (?) ॥ निजभुजोपार्जितधनकृतार्थहेतोः ॥ श्री चिंतामणि पार्श्वना-

९। थ चैत्यं कारापितं ॥ श्री वृद्धतपागछे भट्टारक श्री जयचन्द्र सूरि पट्टावतंस ॥ भट्टा० श्री जिन-

१०। सूरि शिष्य महोपाध्याय श्री जयसुन्दर गणि शिष्य महोपाध्याय श्री संवेगसुन्दर गुरूपदेशेन ॥ प्र-

११। तिष्ठितं चेति कल्याणमस्तु ॥ शुभं भवतु ॥



घोघा-काठियावाड़।

श्री सुविधिनाथजी का मन्दिर।

पंचतीर्थियों पर।

[1767]

॥ ॐ सं० ११६१ माघ ११ श्री नागेंद्रकुले श्री विजय तुंगसूरि....।

[1768]

सं० १५०३ धर्म्मप्रभ सूरि त० पट्टे श्री धर्म्मशेखर सूरिभिः शुभं भवतु आराधकस्य।

[1769]

सं० १५१३ वर्षे मद्दा सुदि ५ शुक्रे श्रेष्टि नराज भा० कउई तेषां सुता सामत देमा

पवित्रीकृतनिजांग सप्तक्षेत्रारोपितस्वकीयवित्त सं० लटकणा भा० सं० ललतादे सुत जिनकुलकमलविकाशनैकसूर्यावतारः दानगुणेन नृपतिश्रेयांससमः श्री जिन प्रतिष्टार्तीर्थयात्रादिधर्म्मैककर्म्मकरणोत्सुकचित्त संघपति श्री रत्नसी भा० सिं० द्वि० भा० सं० मोहणदे तृतीय भा० सं० नवरंगदे द्वितीय सुत संघवी श्री रामजी सं० केशरदे तयोः सुत संघवी डूंगरसी भा० सं० जाकसदे द्वितीय सुत संघवी गुणा भा० सं० मसतादे एतेषां महासिद्धक्षेत्र श्री सेत्रुंजय रत्नगिरौ श्री जिनप्रासाद शांतिनाथ बिंबं कारयित्वा नित्यं प्रणमति। शुभं भवतु।



चोरवाड़-जुनागढ़।

जैन मन्दिर।

शिला लेख।

[1766]

१। सुरमाण्डलविशाल नगर श्री चोरवाटके रुचिरचिंतामणि पार्श्वनाथ [illegible] रत्नाय तत् सुत व.

२। र्सी। सायर तनयौ। आंबाख्यस्तत्र चादिमो गुणवान्। द्वितीयो मनातिवानां [illegible] [illegible] रतः कृतावासः ॥ २ ॥ आं

३। [illegible] तनुजः सुविवेकः समरसिंह इत्याह्वः। देवगुरुभक्तिपरमः तत [illegible] [illegible] ॥ ३ ॥ श्री

४। सं० [illegible] वर्षे वैशाख सुदि तृतीया गुरौ। श्री मंगलपुर वास्तव्य। श्री [illegible] [illegible] सोनी माय-

[illegible] सुत सोनी आंबा भार्या बाई [illegible] सुत सोनी समरसी भार्या [illegible] [illegible]

६। त० सोनी जयपाल भार्या मृगाई ॥ ततः ॥ सोनी सायर भार्या बाई भाकू सुत सोनी मना भार्या बाई

७। बरजू सुत सोनी श्रीवंत सोनी जयवंतौ। सपरिजनसहितेन ॥ सोनी समरसिंह भार्या बाई पाही-

८। सहितेन ॥ एनै श्री चारवाड पुरे चर (?) ॥ निजभुजोपार्जितधनकृतार्थहेतोः ॥ श्री चिंतामणि पार्श्वना-

९। थ चैत्यं कारापितं ॥ श्री बृहत्तपागच्छे भट्टारक श्री जयचन्द्र सूरि पट्टावतंस ॥ भट्टा० श्री जिन-

१०। सूरि शिष्य महोपाध्याय श्री जयसुन्दर गणि शिष्य महोपाध्याय श्री संवेगसुन्दर गुरूपदेशेन ॥ प्र-

११। तिष्ठितं चेति कल्याणमस्तु ॥ शुभं भवतु ॥



घोघा-काठियावाड़।

श्री सुविधिनाथजी का मन्दिर।

पंचतीर्थियों पर।

[1767]

॥ ॐ सं० ११६१ माघ ११ श्री नागेन्द्रगच्छे श्री विजय तुंगसूरि....।

[1768]

सं० १५०३ धर्म्मप्रभ सूरि त० पट्टे श्री धर्म्मशेखर सूरिभिः शुभं भवतु भाग रम्य।

[1769]

सं० १५१३ वर्षे महा सुदि ५ शुके श्रेष्ठि नरपाल भा० रमाई देवी सुता मानक हेता

रोका षीमा स्वभार्या पितृमातृश्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्र० श्री आगम गच्छे आनन्दप्रभ सूरिभिः आबरणि वास्तव्य।

[1870]

सं० १५३६ वर्षे आषाढ़ सुदि ६ श्री ओसवाल ज्ञाती सा० पाला भार्या वनघू सु० गोविन्द भा० गंगादे नाम्ना आत्मश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० बृहत्तपा पक्षे भ० जिनरत्न सूरिभिः

[1771]

सं० १५५५ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ घनौघ वास्तव्य श्री ऊसवाल ज्ञा० सा० गांगन भा० गुरदे सुत हांसाकेन भा० कस्तुराई सहितेन स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं का० श्री बृहत्तपा गच्छे भ० श्री धर्म्मरत्न सूरिभिः।

[1772]

सं० १५५५ वर्षे वै० सु० ३ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञा० मनोरद भा० मांकी सु० वाहराज भा० जीविनी सु० देवदासेन भा० दगा सु० पासा करन धर्मदास सूरदास युतेन श्री विमलनाथ बिंबं कारितं श्री अंचलगच्छे श्री सिद्धांतसागर सूरि गुरूपदेशात्।

[1773]

सं० १५५७ वर्षे पोष वदि ६ रवौ घनौघ वासी श्री श्रीमाल ज्ञा० सा० माईया भा० जीवी सुत कानाकेन स्वश्रेयसे श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० श्री बृहत्तपा पक्षे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः। श्रेयो भवतु पूजकस्य।

[1774]

सं० १५५३ वर्षे वै० सु० ११ शुक्रे श्री श्रीवंशे मं० माईया सुत मं० मूला भा० रमसुश्राविकया सुत मं० धना मेघा रामा सहितया निजश्रेयार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० धर्मवल्लभ सूरिभिः श्री जांबू ग्रामे।

चौविशी पर।

[1775]

सं० १५१९ वर्षे फा० शु० शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय सं० कहा भार्या राजुल सुत सिंह-राज सं० विरुआकेन पितृमातृभ्रातृश्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ चतुर्विंशति जिनपट्टः का० श्री स० पुरसुंदर सूरिभिः।

[1776]

सं० १५६४ वर्षे आ० सुदि १० शुक्रे श्री श्रीवंशे मं० सांगन भा० सोहागदे पुत्र मं० हीरवच्छ भा० कुंअरि पु० खेतसी जन्मनाम्ना जूठाकेन सं० भार्या जयतलदे भ्रातृ काला वइधा भ्रा०पुत्र भोजा देवसी धीरा प्रमुखसमस्तकुटुम्बसहितेन तत्पितृश्रेयोर्थं श्री अंचल-गच्छेश्वर श्री जयकेसरी सूरीणामुपदेशेन श्री नमिनाथ चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री श्री-संघेन श्री विकुंडड़ा ग्रामे।



शीयालबेट-काठियावाड़।

जैन मंदिर।

पाषाण की मूर्त्तियों पर।

[1777]

१। ॥ संवत् १८८२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ रवौ श्रीचेद्र
२। हिंदानके निहरराज श्री रत्नसिंह प्रतिपन्नौ मानननंदन श्री महावीर-
३। र बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चन्द्रगच्छीय श्री [illegible] सूरि शिष्ये श्री [illegible] सूरिभिः॥

[1778]*

ए० ॥ सं० १३०० वर्षे वैशाष वदि ११ बुधे श्री सहजिगपुर वास्तव्य पल्ली० ज्ञाती ठ० देदा भार्या कडूदेवी कुक्षिसंभूत परी० महीराज महीचन्द्र तत् सुत रतनपाल नि० पालैर्निजपूर्वज ठ० शंकर भार्या लक्ष्मी कुक्षिसंभूतस्य संघपति सूधिगदेवस्य निजपरिवार सहितस्य योग्यं देवकुलिकासहितं श्री मल्लिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चन्द्रगच्छीय श्री हरिप्रभ सूरिशिष्यैः श्री यशोभद्र सूरिभिः ॥ छ ॥ मंगलमस्तु ॥ छ ॥

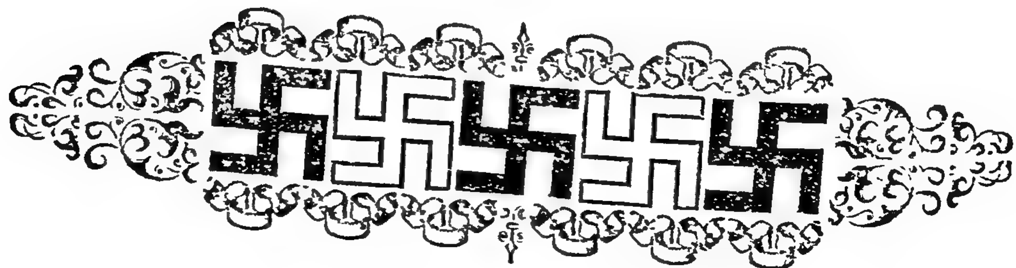
[1779]*

सं० १३१५ फाल्गुण वदि ७ शनौ अनुराधा नक्षत्रे अद्येह श्री मधुमत्यां श्री महावीर देवचैत्ये प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि आसदेव सुत श्री सपाल सुत गंधि चित्राकेन आत्मनः श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ देव बिंबं कारितं चन्द्रगच्छे श्री यशोभद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

[1780]*

सं० १३२० माघ सुदि .... गुरौ प्राग्वाट ज्ञात .... प्र ठ्य० वीरदत्त सुत ठ्य० जाला भार्या माठिकया स्वश्रेयोर्थं रांकागच्छीय श्री महीचन्द्र सूरिभिः महावीर चैत्ये श्री ऋषभदेव बिंबं कारितं।

* वहां के गोरखमण्डी में भोयरे के पास पड़े हुए मूर्तियों पर ये लेख हैं।



JAMNAGAR TEMPLE PRASHASTI - Dated, V. S. 1697 (A. D. 1640)

जामनगर-काठियावाड़।

श्री शांतिनाथजी का मन्दिर—वर्द्धमान सेठवाला।

शिला लेख

[1781]

(शिरोभाग) जाम श्री लक्षराजराज्ये ॥

१। ॥ ए६० ॥ श्री मत्पार्श्वजिनः प्रमोदकरणः कल्याणकंदांबुदो। त्रि-
२। लोक्याधिपतिः सुरासुरनरैः संस्तूयमानक्रमः ॥ सर्पांको जविनां म-
३। नोरथतरुव्यूहे वसंतोपमः। कारुण्यावसथः कलाधरमुखो नी-
४। लच्छविः पातु वः ॥ १ ॥ क्रीड़ां करोत्यविरतं। कमलाविलास। स्थानं
५। विचार्य कमनीयमनंतशोभं। श्री उज्जयंतनिकटे विकटाधिना-
६। थे। हालारदेश अवनि प्रमदाललामे ॥ २ ॥ उत्तुंगतोरणमनोहर-
७। वीतराग। प्रासादपंक्तिरचनारुचिरीकृतोर्वी। नव्यानवीनग-
८। री क्षितिसुन्दरीणां वक्ष(:)स्थले लसति लाडि ललामिकेव ॥ ३ ॥ तोराधुना-
९। यः प्रणतिं विधत्ते। कच्छाधिपो यस्य जयाह्वितेति। अर्धासनं यच्छति नाजवंशो
१०। जीयाद्यशोजितसरस्वतावतंसः ॥ ४ ॥ श्रीवीरपट्टकमलांगनोऽभूत् आर्यर-
११। क्षितः श्रीविजयेंदुसूरिः। श्रीसंघपैः श्रुतसाधुमार्गप्रबंधबंधुरोद्यतवरप्रसा-
१२। दः ॥ ५ ॥ सन्ददल्लभनाम्नो हि यशोधनाह्वो। ह्वीच्छतो यत् नपरिक्रतोऽपि।
१३। संस्थापित श्रीविधिपक्षगच्छः। तस्यैवसुर्यो परिसदयमानः ॥ ६ ॥ पट्टे मदीये ज-
१४। यसिंहसूरिः। श्री धर्म्मघोषोऽथ महेंद्रसिंहः। सिंहप्रभश्चाजितसिंहसूरि।
१५। देवेंद्रसिंहः कविचक्रवर्ती ॥ ७ ॥ धर्म्मप्रभः सिंहतिलकसाहः। श्री मा-

---

१ जामनगर का सेठ वर्धमान शाह का बनाया हुआ प्रसिद्ध मन्दिर का [illegible] शास्त्री ने अपने 'जैनधर्म नो प्राचीन इतिहास' नामक पुस्तक के [illegible] मु. आचार्य [illegible] मुनि जिनविजयजी ने अपने "प्राचीन जैन लेख संग्रह" के [illegible] प्रकाशित किया है, परन्तु इस शिलालेख की प्रतिलिपि [illegible]

१६ । न् महेंद्रप्रभसूरिरार्य्यः ॥ श्रीमेरुतुंगोऽमितशक्तिमांश्च । कीर्त्यद्भुतः श्री ज-
१७ । यकीर्त्ति सूरिः ॥ ८ ॥ वादिद्विपौघे जयकेसरीशः । सिद्धांतसिंधुर्भुवि भा-
१८ । वसिंधुः । सूरीश्वरश्रीगुणशेवधिश्च । श्री धर्म्ममूर्त्तिर्मधुदीपमूर्त्तिः ॥ ९ ॥
१९ । यस्यांघ्रिपंकजनिरंतरसुप्रसन्नात् । सम्यक्फलंतिसमनोरथवृक्षमालाः ॥ श्री-
२० । धर्म्ममूर्त्तिपदपद्ममनोज्ञहंसः । कल्याणसागरगुरुर्जयताद्धरित्र्यां ॥ १० ॥
२१ । पंचाणुव्रतपालकः स करुणः कल्पद्रुमाभः सतां । गंभीरादिगुणोज्वलः शु-
२२ । भवतां श्रीजैनधर्म्मे मतिः । दे काव्ये समतादरः क्षितितले श्री ओसवंशे विभुः
२३ । श्रीमल्लालणगोत्रजो वरतरोऽभूत् साहि सींहाभिधः ॥ ११ ॥ तदीय पुत्रो हरप ा-
२४ । मा देवाच्चनंदोऽथ स पर्वतोऽभूत् । बभुस्ततः श्रीअमरासु सिंहो । भाग्याधिकः कौ-
२५ । कलाप्रवीणः ॥ १२ ॥ श्रीमतोऽमरसिंहस्य । पुत्रामुक्ताफलोपमाः । वर्द्धमानचांपासिंह
२६ । पद्मसिंहा अमीत्रयः ॥ १३ ॥ साहि श्री वर्द्धमानस्य । नंदनाश्चंदनोपमाः । वीराह्वो
२७ । विजपालाख्यो भामो हि जगडूस्तथा ॥ १४ ॥ मंत्रीश पद्मसिंहस्य । पु ...पम
स्त्रयः ।
२८ । श्रीश्रीपालकुंरपाल । रणमल्ला वरा इमे ॥ १५ ॥ श्रीश्रीपालांगजो जीया । न्नारायणो
मनो-
२९ । हरः । तदंगजः कामरूमः कृष्णदासो महोदयः ॥ १६ ॥ साहि श्रीकुंरपालस्य । वर्त्ते
ऽन्व-
३० । यदीपकौ । सुशीलस्थावराख्यश्च । वाघजिद्भाग्यसुन्दरः ॥ १७ ॥ स्वपरिकरयुताभ्याम-
मात्य-
३१ । शिरोरत्नाभ्यां साहि श्रीवर्द्धमानपद्मसिंहाभ्यां हल्लारदेशे नव्यनगरे जाम श्रीशत्रु-
शल्यात्मज
३२ । श्री जसवन्तजी विजयिराज्ये श्री अंचलगच्छेश श्री कल्याणसागर सूरीश्वराणामुप-
देशेनात्र श्री शां-
३३ । तिनाथप्रासादादिपुण्यकृत्यं श्रीशांतिनाथप्रभृत्येकाधिकपंचशत्प्रतिमाप्रतिष्ठायुगं काम-

३४। पितं चाचा सं० १६७६ वैशाख शुक्ल ३ बुधवासरे द्वितीया सं० १६७० वैशाख शुक्ल ५ शुक्रवासरे

३५। सं० १६०७ मार्गशीर्ष शुक्ल ३ गुरुवासरे उपाध्याय श्रीविनयसागरगणेः शिष्य सौभाग्यसागरैः

(अधो भाग)

३६। एकेखीयं प्रशस्ति. ॥ मनमोहनसागरप्रासाद

(वाम भाग)

३७। मंत्रीश्वर श्रीवर्द्धमान पद्मसिंहाभ्यां ससलक्षरूप्यमुद्रिकाव्ययीकृतानवक्षेत्रेषु साहि श्रीचांपसिंहस्य पुत्रैः श्रीअमियाभिधः। तदंगजौ शुद्धमती। रामभीमावुभावपि १०॥

श्री आदीश्वरजी का मन्दिर।

[1782]

१। ॐ श्री गौतमस्वामीनि लब्धि ॥ भ-
२। ट्टारक चक्रवर्त्ति भट्टारक श्री
३। हीरविजय सूरीश्वर चरण पादु
४। काभ्यो नमः ॥ सं० १६३३ वर्षे परम
५। गुरु श्रीमत्तपागच्छाधिराज सकल-
६। भट्टारकपुरंदर भट्टारक श्री हीरवि-
७। जय सूरिराज्ये तथा जाम श्री शत्रशल्ल
८। राज्ये प।श्रीरविसागर गणि विशिष्यो
९। पदेशेन नवीननगर सकल संघ सु-
१०। खसंघेन स्वश्रेयसे नवीनशिख-
११। रं बध्वा प्रासादः कारितः ॥ ततो अक-
१२। बर सुरत्राण प्रेषित मुग्गलैरुप-
१३। द्रवकरणान्तरं भट्टारक श्री श्री
१४। हीरविजय सूरि पट्टोदयाद्रिदिन-
१५। कर भट्टारक श्री ५ श्री विजय से-
१६। न सूरिराज्ये ॥ सं० १६५१ वर्षे
१७। श्री श्रीमाली ज्ञातीय। भणसाली
१८। आणन्द भणसाली अबजीभ्यां
१९। भणसाली आणन्द सुत जीवरा-
२०। ज मेघराज प्रमुखसकलकुटुं-
२१। बयुताभ्यामेक त्रिंशत् सहस्र
२२। ३१००० रौप्य मुद्राव्ययेन पुनर-
२३। पि तथैव कारितं। सांप्रतं विज-
२४। यमान आचार्य श्री श्री श्री ३ श्री

२५। विजयदेव सूरीश्वर प्रसादात् ।   २६। चिरं तिष्टतु । शिवमस्तु ॥

२७। यस्य ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ आदिनाथ   २८। छावां कृतः । प्रासादनामेव

प्रासादः



तालाजा–काठियावाड़ ।

पाषाण के चरणचौकी पर ।

[1783]*

ॐ सं० १३०२ वैशाख सु० ३ धवलककका वास्तव्य ठ० पदमसीह सुत ठ० जा-मदन जयता तेन ॥ ठ० मदन भार्या ठ० लष्मा देवी श्रेयोर्थं सुत ठ० पाल्हणेन श्री वीर बिंबं पट्टकं च प्रतिष्ठितं आचार्य श्री माणिक्य सूरिभिः ।

[1784]

१। सं० १३१९ वर्षे दण्ड श्री धांध प्रभृति पञ्चकुलेन श्री मुनिसुव्रतस्वामी देवा

२। ···· णि ···· पा विशेषपूजाप्रत्ययमण्डपिकायां प्रतिवर्षा हो

३। ···· द्र (२) ४ चतुर्विंशतिद्रम्मा: । द्र० खवलादेश· । बहुभिर्वसु

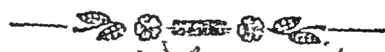
४। [धा भुक्ता] राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य

५। तदा फलं ॥ १ ॥ तथा समस्तप्रमदाकुलाय अ .... पूर्णिमादि

६। ····(रके) ४ चत्वारि द्रमाश्च ॥ पञ्चकुलसमक्षे देवद....

७। ···· द्र ४ पींजाम—द्र ३४ रक्तपटा

८। —मठाय



* यह लेख तलाजा से पूर्व में हजूरपीर की कबर से मिली हुई मूर्तिरहित पाषाण की चरण चौकी पर है और भाव-नगर बार्टन लाइब्रेरी के म्युजियम में सुरक्षित है।

माङ्गरोल-काठियावाड।

पाषाण की मूर्त्ति पर।

[1785] *

। ॐ ॥ सं० १२५३ वर्षे आषाढ़ सुदि ४ शनौ ठ० चाविगउ महं वन्नराजे(न आ)त्म-
श्रेयोर्थ श्री मुनिसुव्रतस्वामि प्रतिमा

। कारिता प्रतिष्ठिता च श्री देवचन्द्र सूरि शिष्यैः श्री जिनचन्द्र सूरिभिः॥



वेरावल-काठियावाड।

शिला लेख।

[1786] †

१। ········ द्विश्चिवन्नानि नित्यमद्यापि वारिधौ ॥ श्रे(?) प्रपा(सा) दत्तीष्ट संसिद्ध्यै
सुखं चन्द्रप्रभं ····

२। ······ व्व पाटकाख्यं पत्तनं तद्विराजते ॥ ३ ॥ मन्ये वेधा विधायैतद्विविधिरसुः
पुनरीह ···· दे

३। ········· रेन्द्रैश्चन्नयमंत्रैर्यत्रजदमीः स्थिरीकृता ॥ ५ ॥ तन्निःशेषमहीपालमौलीः
घृष्टांघ्रि

४। सौ नृपः। तेनोत्खातासुन्मूलो मूलराजः स उच्यते ॥ ७ ॥ एकैकाधिकैन्नृपाला
सम ····

५। ···· सत्रजखुराहृतं। अतुच्छलत्युयं पर्वत्रममजीजनत् ॥ ए ॥ पौरुषेण प्रज्ञापेन
पुत्वेन ···

---

* यह लेख बड़ली मसजीद के पास खुदाई में निकली हुई मूर्ति के चरणचौकी पर है।
† यह लेख वहां के फौजदारी उतारे में लगा हुआ है।

६। ······· र न्यूनविक्रमः। श्री जीमजूपतिस्तेषां राज्यं प्राज्यं करोत्ययं ॥ १
जावाङ्कराण्यनञ्जाणि यो वसङ्गम(वन्नजम)

७। ···· ऩ्नंदि संघे गणेश्वराः। वजूबुः कुंदकुंदाख्या साक्षात्कृतजगत्रयाः ॥ १३ ॥
माकाशगामित्वं स्य।

८। ······ शत(पं)चकमुज्वलं। रमयित्वाथ जन्मांतियेऽन्यन्नियमपुर्वकं ॥ १४ ॥ कांप
स्मिन् जारते क्षेत्रे जाता

९। ···· रीणा तत्व वर्त्मनि तेषां चारित्रिणो वंशे जूरयः सूरयोऽजवन् ॥ १७ ॥ सद्रूपा
पि निर्द्दोषाः सकलापंकः

१०। प्रजा यस्या रुरोह तत्। श्रीकीर्त्ति प्राप्य सत्कीर्त्ति सूरिं जूरिगुणं ततः ॥ १९ ॥ यदीयं
देशनावारिं सम्यग् वि(श्रो)

११। ········ कश्चित्रकूटाच्च चालसः श्रीमन्नेमिजिनाधिशः तीर्थयात्रानिमित्ततः ॥ २१ ॥
अणहिल्लपुरं रम्यमाजगा

१२। ···· नींड्राय ददौ नृपः। विरुदं मएफलाचार्यः सछत्रं समुखासनं ॥ २३ ॥ श्रीसुखवसंति
काख्यं जिनजवनं तत्र

१३। ···· संज्ञयैव यतीश्वरः। उच्यतेऽजितचन्द्रोयस्ततो जूत् स गणीश्वरः ॥ २४ ॥ चाह
कीर्त्तियशः कीर्त्तिश्च

१४। ········ र्युक्तो को रत्नत्रयवानपि। यश्चात्रद्धिदितात्मा सान्नूत् क्षेमकीर्त्तिस्ततो गणि
॥ २७ ॥ उदतिस्म लसद्ज्योति

१५। ····· र्लपित्रासिते हेमसूरिणा वस्तू प्रायरणं येन वशे ···· लेयिनं ॥ २९ ॥ ····
पू ····

१६। ············ कीर्त्तिर्यत्कीर्त्तिर्न्नर्त्तको व ····। त्रिजुवनरा ···· वासुकिं नूपुरशशितिलक
निपट्या ॥ ३१ ॥ ते

१७। ····ति ॥ ३२। समुद्धृतसमुद्धजश्रीर्णजीर्ण अयः। यः कृता रम्नर्निर्वाहेसमुत्साह
शिरोमणि

···· शयैरवगण्यते ॥ ३४ ॥ वादिनो यत्पद द्वन्द्वनखचन्द्रेषु बिंबिताः । कुर्वते विगत श्रीकाः कलंक

। ··· दं तीर्थभूतमनादिकं ॥ ३६ ॥ सीतायाः स्थापना यत्र सामेशः पक्षपातकृत् । प्रत्नो-त्रैलोक्य

। ····तद्भुक्तृतेन जातोद्धारमनेकशः ॥ ३७ ॥ चैत्यमिदं ध्वजमिषतो निजभुजमुद्धृत्य सक

। ···· षतो मंडलगणि ललितकीर्त्ति सुकीर्त्तिः । चतुरधिकविंशति जसध्वजपटपट्टहंसूक ॥

। ····· मेतदीय सज्जोछिकानामपि गह्वकानां ॥ ४१ ॥ यस्य स्तानपयोनुलिप्तमखिलं जुष्टं दवी

। ···· चन्द्रप्रभः स प्रभुस्तीरे पश्चिमसागरस्य जयताद्दिग्व्यसतां शासनं ॥ ४२ ॥ जिन पतिपट्ट

। ···· चाणवर्णिवर्यो व्रतविनयसमेतैः शिष्यवर्गैरुपेतैः ॥ ४३ ॥ श्रीमद्विक्रम नृपस्य वर्षाणां द्वादशे

। । ···· क कीर्त्ति लघुबंधुः । चक्रे प्रशस्तिः मनघो गणि ···· प्रवरकीर्त्तिरिमां ॥ ४५ ॥ सं० १२ ····

जैन मंदिर ।

शिला लेख ।

[1787]

१ । ॥ ऐं ए० ॥ संवत् १८७६ वर्षे शाके १७४१ प्रवर्त-
२ । माने माघ मासे शुक्लपक्षे अष्टमी तिथौ शनिवा-
३ । सरे श्री देवका पाटण नगरे श्री चन्द्रप्रभ जि-
४ । न जीर्णोद्धार समस्त संघेन कारापितं भट्टार-
५ । क श्री श्री विजयजिणेन्द्र सूरि उपदेशात् श्री
६ । मांगरोर वास्तव्य शा० नानजी जयकरण
७ । सुत मकनजी ॥ ० ॥ सुन्दरजीकेन जीर्णोद्धा-

८। र प्रतिष्ठा कारापितं भट्टारकं श्री श्री विजय-
९। जिणेन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री मत्तपागच्छे
१०। जब लग मेरु अडग है तब लग शशि अो-
११। र सूर। जिहां लग ए पट्टक सदा रहजो स्थि-
१२। र भरपूर १ लि। वजीर ज्योति लोकविजयेन।



गाणेसर-गुजरात।

जैन मन्दिर।

शिला लेख।

[1788]

१। ॥ ए० ॥ स्वस्ति सं० १२११ वर्षे वैशाख सुदि १४ गुरौ श्रीमदणहिलपुर वास्तव्य प्राग्वाट ठ० श्री चण्डपात्मज ठ० (चं)
२। डप्रसादांगज ठ० श्री सोमतनुज ठ० श्री आशाराज तनुजन्म ठ० श्री कुमारदेवी-कुक्षिसमुद्भूत ठ० लूणि(ग)
३। महं० श्रीमालदेवयोरनुजमह० श्री तेजःपालाग्रज महामात्य श्री वस्तुपालात्मज महं० श्री जयतसिंह (स्तम्भ)
४। तीर्थमुद्राव्यापारं सं ३९ वर्ष पूर्व व्यावृणवति महामात्य श्री वस्तुपाल महं० श्री तेजःपालाभ्यां समस्तमहातीर्थेषु
५। तथा अन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्मस्थानानि जीर्णोद्धारश्च कारिताः तथा सचिवेश्वर श्री वस्तु-
६। पालेन आत्मनः पुण्यार्थमिह गाणउलि ग्रामे प्रपा श्रीगाणेश्वरदेवमण्डपः पुरतस्तोरणं (अनन्तरतः प्रतोली)ढागाखं(क)

७। त प्राकारश्च कारितः ॥ ७ ॥ गांजीर्यें जलधिर्वृक्षिर्वितरणे पूषा प्रतापे स्मरः सौन्दर्यें पुरुषव्रने रघुपति र्वाचस्पतिर्वा ····

८। ये। लोकेऽस्मिन्नुपमानतामुपगताः सर्वे पुनः सम्प्रति प्राप्तास्तेऽप्युपमेयतां तदधिके श्री वस्तुपाले सति ॥ १ ॥ विद(धति)

९। विदग्धमतयस्तुल्यौ कौटिल्यवस्तुपालौ ये। ते कुर्वते न कस्मात्कूणाकूरारयोः समतां ॥ २ ॥ वदनं वस्तुपाल(स्य)

१०। कमलं को न मन्यते। यत् सूर्यालोकने स्मेरं जवति प्रतिवासरं ॥ ३ ॥ श्री वस्तुपाल सम्प्रति परं महति कर्म(कुर्व)

११। ता जवता। निर्वृतिरर्थिजने च प्रत्यर्थिजने च संघटिता ॥ ४ ॥ तस्मै स्वस्ति चिरं चुलुक्यतिलकामात्याय ····

१२। कान्तक्रतुकर्म्मनिर्म्मलमतिः सौवस्तिकः शंसति। राधे येन विना विना च शिविना ि···· य ना ि····

१३। त्वाश्रित सम्मटाः स्वसदनं गछंति सन्तः सदा ॥ ५ ॥ महामात्य श्री वस्तुपालस्य प्र(शस्तिरियं) ····



प्रभास पाटण - गुजरात।

बावनजिनालय मन्दिर।

मूर्त्तियों पर।

[1789]

१। ठ० हीरा देवि पितृ० वीरदेव मातृ सर्क्क संघ० पेथड संघ० कुमार संघ० पदमल महं० वि(कम)ती वयजलदेवि महं० आल्हणसीह महं० महणसीह व्यव० सापल सो० महिपाल मातृ तक

२। ठ० रत्न ठ० लूणी ॥ ठ० ॥ पीमसीह श्रे० ठाकुर ना० [illegible]सीह ठ० थांग
आसुल नागल श्रे० नागसूर राजञ सा० चन्दु [illegible] भां [illegible] ना० जगदेव ठ० ॥
३। फो० रिणसीह ठ० महणा नरहरा [illegible]सीह राजपाल श्रे० रतना ना० गयसीह
लक्ष्मी ककुकसी दे० लूणा ठ० पाता श्रीपाले[illegible] मूहुड़ ना० पनसीह ठ० सिरी
४। ठ० सीहा ॥ मातृ० वाल्हिणि ठ० नरसीह फो० [illegible] राजल ॥ वा
वा० तेजी ठ० तिहुणपाल ठ० लाखि फो० मूणा सुपञ प ठ० सोवल काम[illegible]
ठ० लषमीधर ।

चरणोंकी पर ।

[1790] *

१। ॥ ए० ॥ सं० १६एए वर्षे फाल्गुन सित द्वादशी सोमवासे श्री द्वीप बन्दिर
वृद्धशाखीय उकेश ज्ञातीय सा० सुदुणसी भार्या संपूराई सुत सा० सिवराज ना
श्री कुंकुमरोल पार्श्व बिंबं सपरिकरं कारितं प्रतिष्ठितं च स्वप्रतिष्ठायां। प्रति-
२। ष्ठितं च तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री १ए श्री हीरविजय सूरीश्वर पट्टालंकार
श्री १ए श्री विजयसेन सूरीश्वरपट्टप्रभाकर भट्टारक प्रभु श्री १ए श्री विजयदेव
सूरिभिः। स्वपट्टप्रतिष्ठिताचार्य श्री ५ श्री विजयसिंह सूरिभिः साथा(?)स्वशिष्योपा-
ध्याय श्री ५ श्री लावण्यगणिप्रमुखपरिकरितैः ॥ शुभं भवतु ॥ श्री ॥

[1791] †

१। सं० १३३० वैशाख सुदि(२) शनौ पल्लीवाल ज्ञातीय ठ० आसाढ़ ठ० आसापल्लभार्या
भो० जाल्ह श्रेयोर्थं
२। श्री मल्लिनाथ बिंबं ठ० आसपालेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री पूर्णचन्द्र सूरिभिः।

[1792] †

१। ॥ ॐ सं० १३४० ज्येष्ठ वदि १० शुक्रे पल्लीवाल··· भ्रा० वीरपाल भ्रा० पूर्णसिंह भ्रा० वय-

---

* यह लेख जमीन से निकली हुई मूर्ति के चरणचौकी पर है।
† मल्लिनाथ महादेव के मन्दिर के पास पड़ी हुई खण्डित मूर्तियों पर ये लेख हैं।

२। जलदेवि पु० कुमरसिंह केलिसिंह न्ना० ठ०····आत्मश्रेयोर्थं ॥ श्री पार्श्वनाथ बिंबं का-
३। रितं प्रतिष्ठितं श्री कोरंटकीय ····· सूरिभिः शुभं ॥



खंभात-गुजरात।

श्री आदीश्वर भगवान का मन्दिर।

शिला लेख

[1793]

१। ॥ ए० ॥ ॐ नमः श्री सर्वज्ञाय ॥ धीराः सत्वमुशंति यन्निभुवने (यन्नेति) नेति श्रुत साहित्योपनिषन्नि

२। षण्णमनसो यत् प्रतिज्ञं मन्वते सार्वज्ञं च यदा मनंति मुनयस्तत्किंचिदत्यद्भुतं ज्योतिर्द्योतितवि-

३। श्वपं वितनुतां भुक्तिं च मुक्तिं च वः ॥ १ ॥ श्री मद्गुर्जरचक्रवर्त्तिनगरप्राप्त प्रतिष्ठोऽजनि प्राग्वाटाह्वयर-

४। म्य वंशविलसन्मुक्तामणिश्चंडपः ॥ यः संप्राप्य समुद्भतां किल दधौ राजप्रसादोल्लसद्दिक्कूलंकष-

५। कीर्त्तिशुभ्रलहरीः श्रीसंतमंतर्जिनं ॥ २ ॥ अजनिरजनिजानिज्योतिरुद्योतकीर्त्तिस्त्रिजगति तनुज-

६। न्मातस्य चण्डप्रसादः ॥ नखमणिसख(शार्ङ)सुन्दरः पाणिपद्मः कमकृत न कृतार्थं यस्य कल्पद्रुकल्पः

७। ॥ ३ ॥ पत्नी तस्या जायतात्पायताक्षी मूर्त्तेन्द्र श्रीः पुण्यपात्रं जयश्रीः ॥ जज्ञेताभ्याम ग्रिमः सूरसंज्ञः पुत्रः श्री

ष । मान् सोमनामा द्वितीयः ॥ ४ ॥ निर्माप्यादि जिनेन्द्रबिंबमसमं शेषत्रयोविंशति जैनप्रतिमा विराजि-

ए । तमसावभ्यर्चितुं वेश्मनि ॥ पूज्यः श्री हरिभद्रसूरिसुगुरोः । पार्श्वात् प्रतिष्ठाप्य स्वस्यात्मीय कुलस्य चाक्र-

१० । यमयं श्रेयो निधानं व्यधात् ॥ ५ ॥ असावत् साचाशाराजं तनुजसमं सोमसचि प्रियायां सीतायां शुचि च

११ । रितनत्यामजनयत् ॥ यशोभिर्यस्यैभिर्जगतिविशदे क्षीरजलधौ निवासैकप्रीतिं मुदस ज्जादिं-

१२ । डुःडुःप्रतिपदं ॥ ६ ॥ श्री रैवते निर्म्मितसत्यपात्रः केनोपमानस्त्विह सोऽश्वराजः ॥ कलंकशंकामुपमान-

१३ । मेव पुष्णात्यहो यस्य यशः शशांके ॥ ७ ॥ अनुजोऽस्यापि सुमनुजस्त्रिभुवनपालस्तथा स्वसाकेली

१४ । आशा राजस्याजनि जाया च कुमारदेवीति ॥ ८ ॥ तस्याऽभूत्तनयो जयो प्रथमकः श्री मल्लदेवोऽपरश्चं

१५ । चच्चंद्रमरीचिमण्डलमहाः श्री वस्तुपालस्ततः । तेजःपालइति प्रसिद्धमहिमा विश्वेऽत्र तुर्यः स्फुरच्चा-

१६ । तुर्यः समजायतायतमतिः पुत्रोऽश्वराजादसौ ॥ ए ॥ श्री मल्लदेव पौत्रौ लील सुत पुण्यसिंह तनुज-

१७ । न्मा ॥ आल्हणदेव्या जातः पृथ्वीसिंहाख्ययाऽस्ति विख्यातः ॥ १० ॥ श्री वस्तुपाल सचिवस्य गेहिनी देहिनीव गृ-

१८ । हलक्ष्मीः ॥ विशदतरचित्तवृत्तिः श्री ललितादेवी संज्ञास्ति ॥ ११ ॥ शीतांशुप्रतिवीर पीवर यशा विश्वेऽत्र

१ए । पुत्रस्तयो र्विख्यातः प्रसरद्गुणो विजयते श्री जैत्रसिंहः कृती ॥ लक्ष्मीर्यत्करपंकज प्रणयिनी हीनाश्रयोत्थेन

२०। सा प्रायश्चित्तमिवाचरत्यहरहः स्नानेन दानंजसा ॥ १२ ॥ अनुपमदेव्यां पत्न्यां श्री तेजःपाल मचिवतिलकस्या।

२१। लावण्यसिंह नामा धाम्नांधामायमात्मजो जज्ञे ॥ १३ ॥ नाभूवन्कति नाम संति कतिनो नो वा भविष्यंति के किं·

२२। तु कापि न कापि संघपुरुषः श्री वस्तुपालोपमः ॥ पुण्येषु प्रहरन्नहर्निशामहो सर्वा· निसागच्छुरो येनायं वि·

२३। जितः कलिर्विदधता तीर्थेशयात्रोत्सवं ॥ १४ ॥ लक्ष्मीधर्माङ्गयागेन स्थेयसीतेन न· न्वना ॥ पौषधालयमालायं(लेग्यं)

२४। निर्म्ममेन विनिर्म्ममे ॥ १५ ॥ श्री नागेन्द्रमूनीन्द्रगच्छतरणिर्जज्ञे महेन्द्रप्रभोः पट्टे पूर्वनपूर्ववाङ्मयनि·

२५। धिः श्री शांति सूरिर्गुरुः ॥ आनन्दामरचन्दसूरियुगलं। तस्मादभूत्तत्पदे पूज्य श्री हरिभद्र सूरि गुर्वोऽभूवन् भु·

२६। वो भूषणं ॥ १६ ॥ तत्पदे विजयसेन सूरयस्ते जयंति भुवनैकभूषणं ये तपोज्वलन भूविभूतिभिस्तेजयंति

२७। निजकीर्त्तिदर्प्पणं ॥ १७ ॥ स्वकुलगुरुर्गणिरेपः पौदपशालामिमाममात्येन्द्रः ॥ पित्रोः पवित्रहृदयः पुण्यार्थं

२८। कल्पयामास ॥ १८ ॥ वाग्देवतावदनवारिज (मित्र) सामंतराज्यदानकलितोत्पयशः पताकां चक्रे गुरोर्विज·

२९। यसेन मुनीश्वरस्य शिष्यः प्रशस्तिमुदयप्रभ सूरिरेनां ॥ १९ ॥ सं० १२८१ वर्षे मह्रं श्री वस्तुपालेन कारित पौषध·

३०। शालाख्य धर्मस्थानेऽस्मिन् श्रेष्ठि० रावदेव सुत श्रे० मयधर । ना० गोनाञ ना० धारा। व्यव० वेसाठ विकल श्रे० पूना

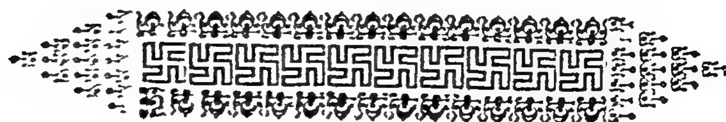
३१। सुत वीजादेवी उदयपाल । ठ आम्भपाल। ना० आस्हण ठ गुणपाल प्रेमगोष्ठिकत्त्यां· गीकृतं ॥ एनिर्गोष्ठिकैरस्य धर्मस्थानस्य

३१। ....स्तम्भतीर्थे – कायस्थवंशेनाङ्क .... भट्टंकितः .... लिपा .... लिख ....
ठ० सु० .... सूत्रधार कुमरसिंहेनोत्कीर्णा ॥

शिला लेख—भोंयरे के द्वार पर।

[1794]

१। ॥ ए० ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री विक्रम नृपात् संवत् १६६१ वर्षे वैशाख सुदि सोमे श्री
२। स्तंभतीर्थनगर वास्तव्य ॥ ऊकेश ज्ञातीय ॥ आबूहरा गोत्रविभूषण ॥ सौवर्णिक कलासु-
३। त ॥ सौवर्णिक ॥ वाघा भार्या रजाई ॥ पुत्र ॥ सौवर्णिक वछिआ ॥ भार्या सुहासि ॥ पुत्र । सौव-
४। र्णिक ॥ तेजपाल भार्या ॥ तेजलदे नाम्न्या ॥ निजपति सौवर्णिक तेजपाल प्रदत्ताज्ञ-
५। या ॥ प्रभूतद्रव्यव्ययेन सुभूमिगृहश्रीजिनप्रासादः कारितः ॥ कारितं च तत्र मूल-
६। नायकतया स्थापनकृते श्रीविजयचिंतामणि पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं च श्रीमत्त-
७। पागछाधिराज भट्टारक श्री आणंदविमल सूरि पट्टालंकार ॥ भट्टारक श्री विजयदा-
८। न सूरि तत्पट्टप्रभावक सुविहितसाधुजनध्येय सुगृहितनामधेय ॥ पात ॥
९। साह श्री अकब्बरप्रदत्तजगद्गुरूविरुदधारक भट्टारक श्री हीरविजय सूरि
१०। तत्पट्टोदयशैलसहस्रपाद ॥ पातसाह । श्री अकब्बरसभासमक्षविजितवा-
११। दिवृंदसमुद्भूतयशः कर्पूरपूरसुरभीकृतदिग्वधूवदनारविंद भट्टारक श्री विजय-
१२। सेन सूरिभिः ॥ क्रीडायातसुपर्वराशिरुचिरो यावत् सुवर्णाचलो ॥ मेदिन्यां ग्र-
१३। हमण्डलं च वियति भ्राजेंदुमुख्यंलशत् ॥ तावत्तत्रगताघ्रसेवितपद श्री पार्श्वना-
१४। थप्रभो ॥ मूर्त्ति श्री कलितोऽयमत्र जयतु श्रीमज्जिनेन्द्रालयः ॥ १ ॥ छः ॥ : ॥



पोसिना-भरुअछ ।

शिला लेख

[1795] *

१। प्राग्वाटवंशे श्रे० ब्रह्हड येन श्री जिन-

२। चन्द्र सूरि सदुपदेशेन पादपरा ग्रामे उं-

३। दिरवसहिका चैत्यं श्रीमहावीर प्रतिमा

४। युतं कारितं। तत्पुत्रौ ब्रह्मदेव शरणदे-

५। वौ। ब्रह्मदेवेन सं० १२७५ अत्रैव श्रीने-

६। मि मंदिर रंगमंडपे दाढ़ाधरः कारितः

७। श्रीरत्नप्रभसूरि सदुपदेशेन तदनुज श्रे०

८। शरणदेव भार्या सूहवदेवि तत्पुत्राः श्रे०

९। वीरचंद्र पासड। आंबड रावण। यैः श्री पर-

१०। मानन्द सूरीणामुपदेशेन सप्ततिशततीर्थं का-

११। रितं॥ सं० १३१० वर्षे। वीरचंद्र भार्या सुषमिणि

१२। पुत्र पूना भार्या सोहग पुत्र लूणा झांझण आं-

१३। बड़ पुत्र बीजा खेता। रावण भार्या हीरू पुत्र बो-

१४। डा भार्या कामल पुत्र कडुआ॥ द्वि० जयता भार्या मूं-

१५। वा पुत्र देवपाल। कुमरपाल। तृ० अरिसिंह भा०

१६। गउरदेवि प्रभृतिकुटुम्बसमन्वितैः श्री परमा-

१७। नन्द सूरिणामुपदेशेन सं० १३३८ श्री वासुपूज्य

१८। देवकुलिका। सं० १३४५ श्री संमेतशिखर-

१९। तीर्थ मुख्यप्रतिष्ठा महातीर्थयात्रां विधाप्या-

२०। त्मजन्म एवं पुण्यपरंपरया सफली कृतः

२१। तदद्यापि पोसिना ग्रामे श्री संघेन पूज्यमान-

२२। मस्ति॥ शुभमस्तु श्री श्रमणसंघप्रसादतः॥



* भरुअछ से [illegible] लेख है।

उना-काठियावाड़।

जैन मन्दिर-[illegible]।

शिलालेख।

[[illegible]] *

१। ॐ स्वस्ति श्री सं० १६५२ वर्षे कार्त्तिक वदि ९ बुधे
२। येषां जगद्गुरूणां संवेगवैराग्यसौभाग्यादिगुणगणा-
३। श्रवणात् चमत्कृतैर्महाराजाधिराज पातिसाहि श्री अकबराभि-
४। धानैः गूर्जरदेशात् दिल्लीमंडले सबहुमानमाकार्य धर्मोपदेशा-
५। कर्णनपूर्वकं पुस्तककोशसमर्पणं डाबराभिधानमहासरोमत्स्य-
६। वधनिवारणं प्रतिवर्षं षाण्मासिकामारिप्रवर्त्तनं सर्वदा श्री शत्रुंजयतीर्थे मुं-
७। डकाभिधानकरनिवर्त्तनं जीजियाभिधानकरकर्त्तनं निजसकलदेशे दा-
८। णमृतं स्वमोचनं सदैव बूंद(?)ग्रहणनिवारणं सत्यादिधर्मकृत्यानि सकल-
९। लोकप्रतीतानि कृतानि प्रवर्त्तं तेषां श्री शत्रुंजये सकलदेशसंघयुतकृत-
१०। यात्राणां भाद्रपदशुक्लैकादशीदिने जातनिर्वाणं शरीरसंस्कारस्थानासन्न-
११। कल्पितसहकाराणां श्री हीरविजय सूरीश्वराणां प्रतिदिनं दिव्यनादनाद-
१२। श्रवण दीपदर्शनादिकैर्जातमहत्त्वशालाः स्तूपसहिताः पादुकाः कारिताः पं०
१३। मेघेन भार्या लाडकी प्रमुखकुटुम्बयुतेन प्रतिष्ठिताश्च तपागच्छाधिराजैः भ-
१४। ट्टारक श्री विजयसेन सूरिभिः उ० श्री विमलहर्षगणि उ० श्री कल्याण-
१५। विजय गणि उ० श्री सोमविजय गणिभिः प्रणताभव्यजनैः पूज्यमानाश्चि-
१६। रं नंदंतु ॥ लिखिता प्रशस्तिः पद्मानन्दगणिना। श्री उन्नतनगरे शुभं भवतु ॥



* 'उना' का प्राचीन नाम 'उन्नत नगर' था। यह शिलालेख मन्दिर के ७ देहरी में पश्चिम तर्फ से पहली देहरी का है।

[1707]

(१) ॥ ऍं० ॥ स्वस्ति श्री प्रणयाश्रयः शिवमयः श्री वर्द्धमानाह्वयस्तीर्थेशश्चरमो वभूव भुव-

(२) न सौभाग्यभोग्यैकभूः । नंदीश प्रथमोपि पंचमगतिः ख्यातः सुधर्माग्रणी । जज्ञे पंचमपंचमः शमव-

(३) तां निग्रंथं १ गोत्रेग्रणी ॥ १ ॥ श्री कौटिक २ वनवासिक ३ चन्द्र ४ वृहद्गच्छ ५ सत्तपा ६ क्रमतः । तदा

(४) गच्छानां संज्ञाजातास्तपगच्छस्तथाऽभूत् ॥ २ ॥ प्राणभूक्षितिपालभाल विलसत्कोटीर-हीरस्फुरज्यो-

(५) तिर्जालजलाभिषेकविधिना (जा)तांबुपंकेरुहः ॥ चि(द्रु)पावलिहीरहीरविजयाह्वानः प्रधान प्र-

(६) भुः श्रामण्येकनिकेतनतनुभृताम् कल्याणकल्पद्रुमः ॥ ३ ॥ तदादेशवाक्यैः सुधा-सारसारै । मुदा

(७) कब्बरः पातिसाहिः प्रबुद्धः । स्वदेशेऽखिले जीवहिंसा न्यवारीदमुंचत्करंचापिशत्रुं-जयाद्रेः ॥ ४ ॥

(८) तच्छिष्योदपिशैलमौलिमहिमावर्पेलदृत्तत्विपि । जातः श्रीविजयादिसेनसुगुरुः प्रज्ञाज-वालारुणः ।

(९) येन श्रीमदकब्बरक्षितिपतिः पर्षद्यनेकद्विजान् ॥ निर्जित्येव जयश्रिया सह गहां-श्चक्रे विवाहो

(१०) भवः ॥ ५ ॥ (त)त्पट्टे (स्रा)रराजमूर्द्धनि देवराज (सू)र्यिभूव भगवान् वि(जया-दिदे)वः । य(स्या)त्रसत्यवचना-

(११) दनले तपोर्कः साक्षाद्दशौ कुमतकुस्तवसां वि(ना)शी ॥ ६ ॥ मन्मरा निगरा न यदीय यशःप्रशस्तिमा-

(१२) हवतद्गुणगणस्यदिहद्येव । सूरेर्भद्रानवहनिप्रघिनं विरदं श्रीतानिमाहिमकोम्व-म्लेभनाहि

(१३) ॥ ७ ॥ यस्याव्याप्युपदेशपेशलरसङ्गेणंजगत्सिंहजी: संवृष्ठः सरसोर्थिसारनि मारीन्यावारीत्ततः ॥

(१४) [सं]व्यूढां गुणरागरंगललितैः कीर्त्तिस्त्रिलोकोभ्रमश्रांतां स्थानविधानतां गुरं स्त्रिरपिंडिध्वलात् ॥

(१५) ॥ ७ ॥ श्री विद्यापुर पाति[साहि]सुचितैर्वाचाप्रपंचैर्यकः । स्वर्जोऽन्यप्रतिमः वे सूरत्नीरारंतते मोचयन्

(१६) तद्रूत श्रीमनुजादिमर्दनपतेः श्री पातिसाहेश्वरः । स्थानेऽस्थापयेदक्षिपातन धर्मं सपद्भंगतः ॥

(१७) ॥ ए ॥ एवं विहृव्यनगरानवनीतमस्मिन् राजन्य ···· । श्रीमज्जिन·

(१८) ···· र्कृता ···· चय मूर्त्तिति ···· मूर्त्तिः सकलरात्रौध्वजरूपमूचैः ॥ १० ॥ पूज · मालि कुलोपु-

(१९) रा जरण ···· यो ··· नामतिनामा । ··· र्म्मना: ॥ ११ ॥ तस्यांगजोगजइन्द्रो पवि·

(२०) ···· श्रीमालि विमलकुलांबुज ···· माली । विश्वातिशायियशसाजिनपूर्णचन्द्रः श्री राजवं-

(२१) ···तिस···रि · तु प्रतापं ॥ १२ ॥ अथ तेनमंशे किमहाय्र···पूर्वस्वद्रव्यस्यसफ लीकरणाय श्री विजया-

(२२) दि सूरीश्वराः श्री गूर्जरदेशात्सौराष्ट्रके पादानांसस्याः कारिताः श्री सिद्धाद्रिपस्या पिप्रज्जूणांमहामहसां

(२३) ···· कारिता ॥ ततश्च सं० १७१३ वर्षे आषाढ शुद्धैकादशी तिथौ । भट्टारक श्री विजयदेवसूरी-

(२४) श्वराणा स्व····मुपापाडुकास्तूपोयं········ श्रीवासणात्मजेन वाई पातली जन्मना श्रीरायचन्द

(२५) नाम्ना कारितः प्रतिष्ठापितश्च सं० १७१३ वर्षे माघमास सितपञ्चमी तिथौ महा महोत्सवेन ।

(२६) सूरेः श्री विजयादिदेवसुगुरोः पट्टाब्जसूर्याश्रयः सूरि श्री विजयप्रभाव्यदधत श्रेष्ठा प्रतिष्ठा·

(२७) मिमां श्रीमद्वाचकरान् विनीतविजयैः शांत्याह्वयैः पाठकैर्युक्ताश्चारुयशोभराः प्रतिम-

(२८) या वाचस्पतेः सन्निभाः ॥ १३ ॥ तथा साधु श्री नेमिदासेन तथा साधु वाघजीकेन त्रिनोप्रसेन का

(२९) रितः । कृतश्चायं हरजीनाम्ना शिल्पिना । मुहूर्त्तदानातु अत्र उन्नतपुरवास्तव्य भट्ट-सुलाई

(३०) पुत्र भट्ट रणछोड़ नाम्ना ॥ श्रीद्वीपबंदरवास्तव्यसंघजातिव्याजे जीयतां श्रीदेव-विहारभा

(३१) गः स्तूपरूपः ॥ श्रीमत् श्रीविजयादिदेवगणभृत्पट्टोदयोरुक्रतेः । सूरेः श्री विजय-प्रभस्य क-

(३२) रुणाहव्व्या प्रकृष्टोदयः ॥ विद्वद्भूपमणीकृपादिविजयां तेवासिमेणाह्वयो । लेस्यदेव-विहार ····

(३३) विदिने स्तूपप्रशस्ति श्रिये ॥ १४ ॥ इति प्रशस्ति संपूर्ण ॥ श्रीरस्तु ॥ छः ॥ छः ॥



बम्बई ।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर—वालकेश्वर ।

पञ्चतीर्थी पर ।

[1798]

सं० १४७७ वर्षे श्री श्रीमाल ज्ञा० पं० राणा भा० रूपादे सुत आसाकेन स्वमातृश्रेयसे आगमगछे श्री जयानन्दसूरीनामुपदेशेन श्री पार्श्वनाथ पञ्चतीर्थी कारितं श्री सूरिभिः । शुभं भवतु ॥

(१३) ॥ ७ ॥ यस्याव्याप्युपदेशपेशलरसङोणंजगास्तिंहजी: संबुद्धः सरसोऽधिसारी मारीन्यावारीत्ततः ॥

(१४) [सं]व्यूढां गुणरागरंगललितैः कीर्त्तिस्त्रिलोकोभ्रमश्रांतां स्थानविध तांत्रु र्भिर्मिरपिंडिध्वलात् ॥

(१५) ॥ ७ ॥ श्री विद्यापुर पाति[साहि]मुचितैर्वाचाप्रपंचैर्यकः । स्वर्जोज्यप्रतिमः प्र- सूरजीरारंजते मोचयन्

(१६) तद्धत श्रीमनुजादिमर्दनपतेः श्री पातिसाहेश्वरः । स्थानेऽस्थापयेदपि धर्मं सपद्वंगतः ॥

(१७) ॥ ए ॥ एवं विहव्यनगरानवनीतमस्मिन् राजन्य ···· । श्रीमज्जिन-

(१८) ···· र्द्धता ···· चय सूरिति ···· मूर्त्तिः सकलराज्ञौध्वजरूपमूच्चैः ॥ १० ॥ पूज मालि कुलोपु-

(१९) रा जरण ···· यो ··· नामतिनामा । ··· म्र्मना: ॥ ११ ॥ तस्यांगजोगजइन्द्रो पर्

(२०) ···· श्रीमालि विमलकुलांबुज ···· माली । विश्वातिशायियशसाजिनपूर्णचन्द्रः राजवं-

(२१) ··· तिस ··· रि · त प्रतापं ॥ १२ ॥ अथ तेनमंशे किमहाग्र ··· पूर्वंखड्व्यस्यसफ लीकरणाय श्री विजया-

(२२) दि सूरीश्वराः श्री गूर्जरदेशात्सौराष्ट्रके पादानांसस्याः कारिताः श्री सिद्धाद्रिपस्या पिप्रत्नूणांमहामहसां

(२३) ···· कारिता ॥ ततश्च सं० १७१३ वर्षे आषाढ़ शुक्लैकादशी तिथौ । भट्टारक श्री विजयदेवसूरी-

(२४) श्वराणा स्व ···· मुषापादुकास्तूपोयं ······· श्रीवासणात्मजेन वाई पातली जनमता श्रीरायचन्द्

(२५) नाम्ना कारितः प्रतिष्ठापितश्च सं० १७१२ वर्षे माघमास सितपञ्चमी तिथौ महा महोत्सवेन ।

(२६) सूरेः श्री विजयादिदेवसुगुरोः पट्टाब्जसूर्योश्रयः सूरि श्री विजयप्रभाव्ह्यदधत श्रेष्ठा प्रतिष्ठा·

(२७) मिमां श्रीमद्वाचकरान् विनीतविजयैः शान्त्याह्वयैः पाठकैर्युक्ताश्चारुयशोभराः प्रतिम-

(२८) या वाचस्पतेः सन्निभाः ॥ १३ ॥ तथा साधु श्री नेमिदासेन तथा साधु वाघजीकेन विनोप्रसेन का

(२९) रितः । कृतश्चायं हरजीनाम्ना शिल्पिना । मुहूर्त्तदानातु अत्र उन्नतपुरवास्तव्य भट्ट-गुसांई

(३०) पुत्र भट्ट रणछोड़ नामा ॥ श्रीद्वीपबंदरवास्तव्यसंघजातिव्याजे जीयतां श्रीदेव-विहारभा

(३१) गः स्तूपरूपः ॥ श्रीमत् श्रीविजयादिदेवगणभृत्पट्टोदयोद्यत्कृतेः । सूरेः श्री विजय-प्रभस्य क-

(३२) रुणादृष्ट्या प्रकृष्टोदयः ॥ विद्वद्भूपमणीकृपादिविजयां तेवासिमेणाह्वयो । ह्येस्यदेव-विहार ····

(३३) विदिने स्तूपप्रशस्ति श्रिये ॥ १४ ॥ इति प्रशस्ति संपूर्ण ॥ श्रीरस्तु ॥ छ ॥ छ ॥

बम्बई ।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर—बालकेश्वर ।

पञ्चतीर्थी पर ।

[1768]

सं० १८७८ वर्षे श्री श्रीमाल ज्ञा० पं० नाणा भा० रूपादे पुत्र आणंदजी स्वमातृश्रेयसे आगमगच्छे श्री जयानन्दसूरीणामुपदेशेन श्री पार्श्वनाथ पञ्चतीर्थी कारितं श्री सूरिभिः । शुभं भवतु ॥

[1808]

(१) संवत् १९४२ का मि। पोष शुक्क त्रयोदश्यां वर सोमवारे श्री चतुर्विंशति जिन संख्या पादुकाः श्री पार्श्व जिन गणधर पादुका

(२) खरतर गच्छे महो श्री दानसागरजी गणिः तत् शिष्य पं। हित वल्लभ मु प्रतिष्ठितं गुज्जर देशान्तरगत मांडल वास्तव्य........

(३) वीर सोभाग्यवर लक्ष्मीचंदेन श्री समेत शिखरि प

(४) रि स्थापितं ॥

१। श्री ऋषभ १०००० साधुसुं अष्टापद ऊपर २। श्री अजित १००० साधु ३। श्री संभव १००० साधुसुं ४। श्री अभिनंदन १००० साधुसुं ५। सुमति १००० साधुसुं ६। श्री पद्मप्रभ ३०८ साधुसुं ७। श्री सुपार्श्वनाथ ५ साधुसुं ८। श्री चंद्रप्रभ १००० साधुसुं ९। श्री सुविधि १००० साधुसुं १० श्री शीतल १००० साधुसुं ११। श्री श्रेयांस १००० साधुसुं १२। वासुपूज्य ६०० साधु चंपापुर १३। श्री विमल ६००० साधुसुं १४। श्री अनंत ७००० साधु १५। श्री धर्म्म १०८ साधुसुं १६। श्री शांति ९०० साधुसुं १७। श्री कुंथु १००० साधुसुं १८। श्री अरि १००० साधुसुं १९। श्री मल्लि ५०० साधुसुं २०। श्री मुनिसुव्रत १००० साधु २१। श्री नमि १००० साधुसुं २२। श्री नेमि ५३६ साधुसुं गिरनार २३। श्री पार्श्व ३३ साधुसुं २४। श्री महावीर एकाकी पावापुरी ॥

[1809]

॥ सं। १९४९ माघ शुक्रवारे श्री समेत शैलस्य पर्वतोपरि भव्य जीवस्य दर्शनार्थ श्रीमत् आदिनाथस्य चरण पादुका स्थापिता राय धनपतिसिंह बाहादूरेण का० प्र० श्री विजयराज सूरि तपागच्छे ॥

[1810]

(१) सं। १९२५ फा० कृष्ण ५ बुधवासरे श्री चंपापुरे तीर्थे श्री वासपूज्य जी

[1808]

(१) संवत् १८४२ का मि। पोष शुक्ल त्रयोदश्यां वर सोमवारे श्री चतुर्विंशति जिन संख्या पादुकाः श्री पार्श्व जिन गणधर पादुका

(२) खरतर गच्छे महो श्री दानसागरजी गणिः तत् शिष्य पं। हित वल्लभ मु। प्रतिष्ठितं गुज्जर देशान्तरगत मांडल वास्तव्य........

(३) वीर सोभाग्यचर लक्ष्मीचंदेन श्री समेत शिखरि प

(४) रि स्थापितं ॥

१। श्री ऋषभ १०००० साधुसुं अष्टापद उपर २। श्री अजित १००० साधु ३। श्री संभव १००० साधुसुं ४। श्री अभिनंदन १००० साधुसुं ५। श्री सुमति १००० साधुसुं ६। श्री पद्मप्रभ ३०८ साधुसुं ७। श्री सुपार्श्वनाथ ५०० साधुसुं ८। श्री चंद्रप्रभ १००० साधुसुं ९। श्री सुविधि १००० साधुसुं १० श्री शीतल १००० साधुसुं ११। श्री श्रेयांस १००० साधुसुं १२। वासुपूज्य ६०० साधु चंपापुर १३। श्री विमल ६००० साधुसुं १४। श्री अनंत ७००० साधु १५। श्री धर्म्म १०८ साधुसुं १६। श्री शांति ९०० साधुसुं १७। श्री कुंथु १००० साधुसुं १८। श्री अरि १००० साधुसुं १९। श्री मल्लि ५०० साधुसुं २०। श्री मुनिसुव्रत १००० साधु २१। श्री नमि १००० साधुसुं २२। श्री नेमि ५३६ साधुसुं गिरनार २३। श्री पार्श्व ३३ साधुसुं २४। श्री महावीर एकाकी पावापुरी ॥

[1809]

॥ सं। १८४९ माघ शुक्रवारे श्री समेत शैलस्य पर्वतोपरि भव्य जीवस्य दर्शनार्थं श्रीमत् आदिनाथस्य चरण पादुका स्थापिता राय धनपतिसिंह बाहादूरेण का० प्र० श्री विजयराज सूरि तपागच्छे ॥

[1810]

(१) सं। १८२५ फा० कृष्ण ५ बुधवासरे श्री चंपापुरे तीर्थे श्री वासपूज्य जी

[1808]

(१) संवत् १९४१ का मि। पोष शुक्क त्रयोदश्यां वर सोमवारे श्री चतुर्विंशति जिन संख्या पादुकाः श्री पार्श्व जिन गणधर पादुका

(२) खरतर गच्छे महो श्री दानसागरजी गणिः तत् शिष्य पं। हित वल्लभ मु। प्रतिष्ठितं गुज्जर देशान्तरगत मांडल वास्तव्य········

(३) वीर सोभाग्यचंद लक्ष्मीचंदेन श्री समेत शिखरि प

(४) रि स्थापितं ॥

१। श्री ऋषभ १०००० साधुसुं अष्टापद ऊपर २। श्री अजित १००० साधु ३। श्री संभव १००० साधुसुं ४। श्री अभिनंदन १००० साधुसुं ५। सुमति १००० साधुसुं ६। श्री पद्मप्रभ ३०८ साधुसुं ७। श्री सुपार्श्वनाथ ५० साधुसुं ८। श्री चंद्रप्रभ १००० साधुसुं ९। श्री सुविधि १००० साधुसुं १० श्री शीतल १००० साधुसुं ११। श्री श्रेयांस १००० साधुसुं १२। वासुपूज्य ६०० साधु चंपापुर १३। श्री विमल ६००० साधुसुं १४। श्री अनंत ७००० साधु १५। श्री धर्म्म १०८ साधुसुं १६। श्री शांति ९०० साधुसुं १७। श्री कुंथु १००० साधुसुं १८। श्री अरि १००० साधुसुं १९। श्री मल्लि ५०० साधुसुं २०। श्री मुनिसुव्रत १००० साधु २१। श्री नमि १००० साधुसुं २२। श्री नेमि ५३६ साधुसुं गिरनार २३। श्री पार्श्व ३३ साधुसुं २४। श्री महावीर एकाकी पावापुरी ॥

[1809]

॥ सं। १९४९ माघ शुक्रवारे श्री समेत शैलस्य पर्वतोपरि भव्य जीवस्य दर्शनार्थं श्रीमत् आदिनाथस्य चरण पादुका स्थापिता राय धनपतिसिंह बाहादूरेण का० प्र० श्री विजयराज सूरि तपागच्छे ॥

[1810]

(१) सं। १९२५ फा० कृष्ण ५ बुधवासरे श्री चंपापुरे तीर्थे श्री वासपूज्य जी

[1808]

(१) संवत् १९४२ का मि। पोष शुक्ल त्रयोदश्यां वर सोमवारे श्री चतुर्विंशति जि
संख्या पादुकाः श्री पार्श्व जिन गणधर पादुका

(२) खरतर गच्छे महो श्री दानसागरजी गणिः तत् शिष्य पं। हित वल्लभ
प्रतिष्ठितं गुज्जर देशान्तर्गत मांडल वास्तव्य·······

(३) वीर सोभाग्यवर लक्ष्मीचंदेन श्री समेत शिखरि प

(४) रि स्थापितं ॥

१। श्री ऋषभ १०००० साधुसुं अष्टापद उपर २। श्री अजित १००० सा
३। श्री संभव १००० साधुसुं ४। श्री अभिनंदन १००० साधुसुं ५।
सुमति १००० साधुसुं ६। श्री पद्मप्रभ ३०८ साधुसुं ७। श्री सुपार्श्वनाथ
साधुसुं ८। श्री चंद्रप्रभ १००० साधुसुं ९। श्री सुविधि १००० साधुसुं
श्री शीतल १००० साधुसुं ११। श्री श्रेयांस १००० साधुसुं १२। वासुपू
६०० साधु चंपापुर १३। श्री विमल ६००० साधुसुं १४। श्री अनंत ७००० साधु
१५। श्री धर्म्म १०८ साधुसुं १६। श्री शांति ९०० साधुसुं १७। श्री कुंथु १००
साधुसुं १८। श्री अरि १००० साधुसुं १९। श्री मल्लि ५०० साधुसुं २०। मु
मुनिसुव्रत १००० साधु २१। श्री नमि १००० साधुसुं २२। श्री नेमि ५३
साधुसुं गिरनार २३। श्री पार्श्व ३३ साधुसुं २४। श्री महावीर एकाकी
पावापुरी ॥

[1809]

। सं। १९४९ माघ शुक्रवारे श्री समेत शैलस्य पर्वतोपरि भव्य जीवस्य दर्शनार्थं
आदिनाथस्य चरण पादुका स्थापिता राय धनपतिसिंह बाहादुरेण का० प्र
विजयराज सूरि तपागच्छे ॥

[1810]

सं। १९७५ फा० कृष्ण ५ बुधवासरे श्री चंपापुरे तीर्थे श्री वासपूज्य जी

(२) पंच कल्याणक चरण न्यास मकसुदावाद वास्तव्य डुगरु साः प्रतापसिंह
(३) भार्जा महताब कुमर ज्येष्ठ सुत लक्ष्मीपतस्य कनिष्ठ भ्रात धनपत सिंह
(४) कारापितं प्रतिष्ठितं च: श्री जिनहंस सूरिभि: वृहत्खरतरगछे ॥

[ ]

(१) ॥ संवत् १९३४ माघ वदि ५ बुधवार श्री नमनाथ जिन तीन कल्यानक रेवत ..
(२) चवतो तस्य चरण न्यासः ममत शिखरे स्थापिता मकसूदाबाद अजीमगंज
(३) वास्तव्य डुगड प्रतापसिंह भाजी महताब कुमर सुत लक्ष्मीपत कनिष्ट भ्राता
(४) धनपत सिंह कारापितं प्रतिष्ठितं श्री पूज्यजी भ. श्री जिनहंस सूरीतः खरतर गछे
(५) वृहत् खरतर गछ ॥

[1812]

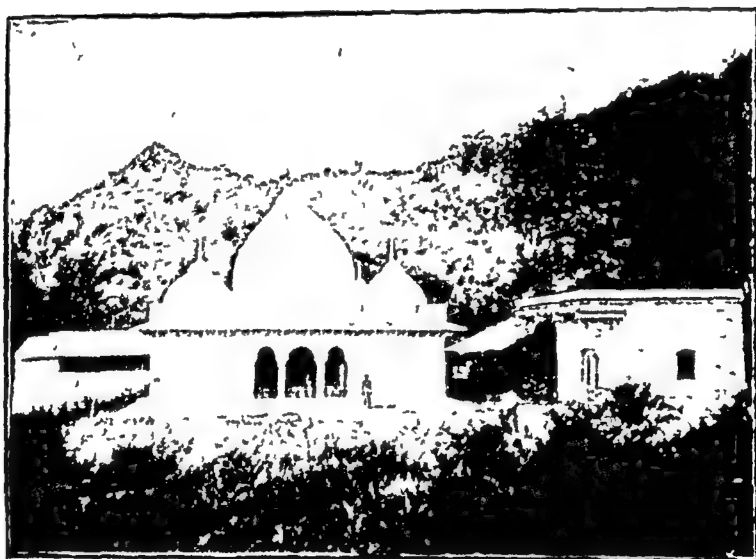
(१) ॥ सं १९३४ श्री फाल्गुण वदि ५ श्री वीर वर्धमानजी का चरण पादुका मकसुदा
(२) वाद वासी राय धनपति सिंह डुगडने स्थापित किया था सो उसको उत्री बिजली
(३) उपद्रव सु गिरगइ उसपर सं १९६५ के फाल्गुण सुदी ६ को कछ मांडवी वासी
(४) साः जगजीवन वालजी ने जीरण उधार कराइ।

जल मंदिर।

पाषाण की मूर्तियोंपर।

[1813]

(१) ॥ संवत् १८२२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ श्री मगसुदावाद वास्तव्य लागगुवा गोत्रीय ओसवंस ज्ञाती
(४) य वृद्धशाखायाम् ॥ खासचंद सुत सुगालचंदेन श्री मद्गुरुणा उपदेशात आत्म श्रेयार्थं च श्री समेत शैल
(३) श्री जैन विहारे श्री सहस्र फणा पार्श्व जिन विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं च सुविहिताग्रणीभिः सकल सूरिवरैः ॥ मंगलं ॥



TIRTHA SAMMET SIKHAR—Jalmandira

(२) पंच कल्याणक चरण न्यास मकसुदाबाद वास्तव्य डुगड़ सा: प्रतापसिंह
(३) भार्या महतावकुमर ज्येष्ठ सुत लक्ष्मीपतस्य कनिष्ठ भ्रात धनपत सिंह
(४) कारापितं प्रतिष्ठितं च: श्री जिनहंस सूरिभि: बृहत्खरतरगच्छे॥

[ ]

(१) ॥ संवत् १९३४ माघ वदि ५ बुधवार श्री नेमनाथ जिन तीन कल्याणक रैवत ··
(२) भवना तस्य चरण न्यास: ममन शिखरे स्थ पिता मकसूदाबाद अजीमगंज
(३) वास्तव्य डुगड प्रतापसिंह भार्या महतावकुमर सुत लक्ष्मीपत कनिष्ठ भ्राता
(४) धनपत सिंह कारापितं प्रतिष्ठितं श्री पूज्यजी भ. श्री जिनहंस सूरीतः खरतर गच्छे
(५) बृहत् खरतर गच्छ॥

[1812]

(१) ॥ स १९३४ श्री फाल्गुण वदि ५ श्री वीर वर्धमानजी का चरण पादुका मकसुदा
(२) बाद वाली राय धनपत सिंह डुगड़ने स्थापित किया था सो उसको बिजली गिरती।
(३) उपद्रव सु निरगइ उसपर सं १९६५ र: फाल्गुन सुदी ६ को फेर मांडगी भारी
(४) सा: जगजीवन वाखजी ने जीरण उध्धार कराइ।

जल मंदिर।

पाषाण की मूर्त्तियोंपर।

[1813]

(१) ॥ संवत् १८८२ वर्षे वैशाख सुदि १३ दुने श्री मकसुदाबाद वास्तव्य गान्धी[illegible]
गोत्रीय ओसवंस ज्ञाती
(२) य वृद्धसाखायाम्॥ [illegible] सुत [illegible] श्री [illegible]
श्रेयार्थं च श्री [illegible]
(३) श्री जैन [illegible] श्री [illegible] [illegible]
[illegible] सूरिभि: [illegible]

[1814]

(१) ॥ सं १८२२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ श्री मगसुदाबाद वास्तव्य साउंसुखा । ओसवंस ज्ञातीय

(२) वृद्धशाखायां सा सुगालचंद भार्यया केसरकया आत्म संश्रेयार्थ श्री समेत श्री जैन विहार श्री सं-

(३) भवनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं च सुविहिताग्रणीभिः । सकल सूरिभिः ॥ मंगलं ॥



मधुवन ।

जगतसेठजी का मंदिर ।

मूर्तियों पर ।

[1815]

॥ सं १८२२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ सा सुगालचंदेन श्रीपार्श्व बिंबं कारापितं । सकल सूरिभिः ।

[1816]

(१) संवत् १८२२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ मग ······ ज्ञातीय वृद्ध शाखायां ···

रूपचंदजी सुत हरखचंदजी

(२) सुत लालचंदजी मातः सद कपूरचंदजी ······ जैन सश्रेयोर्थं श्री समेत श्रीजैन वि

(३) हार श्री पार्श्व जिन बिंबं कारापितं ······

[1817]

॥ संवत् १८२२ वैशाख सुदि १३ गुरौ श्री खरतर गच्छ आचार्यीय सा नीमजी सु

सा निहालचंदेन पं ··· कारापितं ॥

[1818]

॥ सं० १८२७ शाके १६९३ । प्रवर्त्तमाने वैसाख सुदि द्वादशी तिथौ । भृगुवारे ओसवाल ज्ञाती वृद्धशाखायां ॥ आदि गोत्रे । सा० रूपचन्दास तद्भार्या गुलाबकुअर सहितेन श्रेयोर्थं । कायोत्सर्ग मुद्रास्थित सहस्रफणालंकृत श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं ॥

[1819]

॥ सं० १८२२ [?] वैशाख सु० १३ गुरौ श्री गहिलडा गोत्रीय साह कस्तुरचंद ॥

धरणेन्द्र पद्मावती की मूर्ति पर ।

[1820]

॥ संवत् १८२५ माहा सुदि ३ सा । सुगालचंदेन श्री धरणेन्द्र पद्मावत्या कारापिता प्र० तपागच्छे ॥

प्रतापसिंहजी का मंदिर ।

शिलालेख ।

[1821]

(१) ॥ संवत् १८८७ मिति माघ शुक्ल १० दशम्यां तिथौ श्री गौ-
(२) डी पार्श्वनाथस्य द्विभूमि युक्त चैत्यं । श्री बालूचर वास्त-
(३) व्य दुगड़ गोत्रीय । श्री प्रतापसिंघेन कारित । प्रतिष्ठि-
(४) तं च श्री खरतर गच्छेशाः जं । यु । प्र । श्री जिन हर्ष सूरी-
(५) णामुपदेशात् । उ । श्री क्षमाकल्याण गणीनां शिष्येणेनि

पाषाण की मूर्तियोंपर ।

[1822]

(१) ॥ सं० १८८८ माघ सुदि ५ सोमे श्री गवडी पार्श्वनाथ जिन बिं-

(२) वं कारितं ओसवंशे डुगड गो। प्रतापसिंहेन । प्र । यु । भ । खरतर ग·

(३) छाधिराज श्री जिनचंद्र सूरि ··। ······ हितैः ।

[1823]

॥ श्री गोडी पार्श्व जिन बिंबं ॥ (ॐ) ॥ संवत् १९३२ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ११। जीर्णोद्धाररूपा। विजय गच्छे। भट्टारक श्री पूज्य श्री जिन शांतिसागर सू· प्रतिष्ठितं स्थापितं च ॥

पाषाण के चरणों पर।

[1824]

(१) संवत् १८८९ मिति माघ शुक्ल १० दशम्यां तिथौ श्री गोडी पार्श्वनाथ चैत्ये ·· जिनेश्वराणां चरण न्यासाः श्री वालूचर नगर वास्त

(२) व्य डुगड गौत्रीय साह श्री प्रताप सिंघेन कारिताः प्रतिष्ठिताश्च। श्री म·· गच्छेशाः जंग-

(३) म युग प्रधान भट्टारकाः श्री जिन हर्ष सूरीश्वराणामुपदेशात् उपाध्याय पद · भिता। श्री क्षमाकल्याण गणीनां शि-

(४) ष्य प्राज्ञ ज्ञानानंदेन पं। आनंदविमल पं। सुमति शेखर सहितेनेति। श्रेयोर्थं सम्यक्त वृद्ध्यर्थं च ॥

॥ श्री अजितनाथजी २ ॥ श्री संभवनाथजी ३ ॥ श्री अभिनंदन नाथ जी ४ श्री सुमति नाथ जी ५ ॥ श्री पद्मप्रभ जी ६ ॥ श्री सुपार्श्वनाथ जी ७ ॥ श्री चंद्रप्रभजी ८ ॥ श्री सुविधिनाथ जी ९ ॥ श्री शीतल नाथ जी १० ॥ श्री श्रेयां· नाथ जी ११ ॥ श्री विमल नाथ जी १३ ॥ श्री अनंत नाथ जी १४ ॥ श्री धर्म नाथ जी १५ ॥ श्री शांति नाथ जी १६ ॥ श्री कुंथुनाथ जी १७ ॥ श्री अरनाथ जी १८ ॥ श्री मल्लिनाथ जी १९ ॥ श्री मुनिसुव्रत नाथ जी २० ॥ श्री नमिनाथ जी २१ ॥ श्री पार्श्वनाथ जी २३ ॥

पाषाण के चरणों पर।

[1825]

(१) ॥ संवत् १९३१ ॥ माघे ॥ शुक्ला ९। चंद्रे। गौतम स्वामी ॥

(२) चरण पादुका कारापिता ॥

(३) मुनि गोकल चंद्रेण

(४) भट्टारक श्री जिन शांति सागर सूरिभिः। प्रतिष्ठितं ॥ श्री विजय गच्छे ॥

[1826]

(१) ॥ संवत् १९३३ मिति माघ शुक्ल ११ अभिनंदन जिन पादुकामिदं मक्

(२) सूदावाद वास्तव्य ओशवंशीय लुंकड़ गणोपानाक् दुगड गोत्रीय बाबु

(३) प्रतापसिंहस्य भार्या महताब कुमारिकस्य वृद्ध पुत्र राय बहादुर

(४) लछमीपत सिंहस्य लघु भ्रातृ रा। धनपत सिंघेन कारापितं प्रतिष्ठितं सर्व सूरिणा ॥

कानपुरवालों का मंदिर।

शिलालेख।

[1827]

॥ सं १९४२ का वर्षे शाके १८०७ प्रवर्तमाने माघ मासे कृष्ण पक्षे एकादश्यां बुधे श्रेष्ठी श्री सिखरूप मल तादात्मज भंडारी श्री रघुनाथ प्रसाद तद्भार्या श्री चदामो बीबी तया कारितं श्री पार्श्वजिन मंदिरं महोत्सवेन स्थापना कारापिता श्री शिखर गिरि मधु- वने वृहद्विजयगच्छे सार्वभौम भट्टारक श्री जं. यु. प्र. श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रेयसे। (इसके बाई ओर एक पंक्ति में) श्री मत्तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री १०८ श्री विजयराज सूरि राज्ये शुभं भवतु।

मूर्तियों पर।

[1828]

॥ सं० १८२४ वर्षे माघ वदि ५ चंद्रे श्री [illegible] गच्छे श्री जिनचंद्र

सूरीश्वर राज्ये ओसवंस वृद्ध शाखायां सा पानाचंद श्री पार्श्वजिन विंवं ······· प्रति ····

[1829]

॥ सं. १९०५ शाके १७६० वदि ५ भृगौ सीपोर वास्तव्य सा. र (त) न चंद ... जीजा बाइ तत्पुत्री बेन नवल स्वश्रेयोर्थं श्री चंद्रप्रभ विंवं ॥ कारापितं तपागच्छे · · श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

लाला कालीकादासजी का मंदिर।

मूर्तियों पर।

[1830]

॥ १९१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्र २ तिथौ श्री सुपार्श्वनाथ जिन विंवं प्रतिष्ठि खरतर गच्छे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्ट प्रभावक ·······

[1831]

॥ सं. १९१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्र द्वितीयायां श्री वासुपूज्य जि विंवं प्रतिष्ठितं च। श्री जिन महेन्द्र सूरिभिः कारितं च श्री ········

[1832]

॥ सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्र २ तिथौ श्री धर्मनाथ विंवं प्रतिष्ठितं खरतर गच्छे श्री जिन हर्ष सूरीणां पट्ट प्रभावक ·········

पाषाण की पंचतीर्थी पर।

[1833]

॥ सं० १९३१ वर्षे माघ मासे शुक्र पक्षे १२ बुधे श्री पंचतीर्थीय जिन विंवं वेलुगुनो गोत्रे लाला कालीकादास तद्भार्या चत्री वीत्रो तया कारितं मलधार पूर्णिमा श्री मद्विजय गच्छे च। श्री पूज्य श्री शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

चंद्रप्रभुजी का मंदिर

मूर्त्तियों पर।

[1834]

॥ सं १८०८ माघ सुदि ५ सोमे श्री चंद्रप्रभ जिन बिंबं कारितं ओसवंसे नवलखा गोत्रे मोटामल पुत्र यश रूपेन प्र। बृहत् खरतर ग। श्री जिनाक्के सूरि चरणकज चंचरीक श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

पार्श्वनाथ जी का मंदिर।

मूर्त्तियों पर।

[1835]

॥ सं. १६७६ मिति फालगुण शुक्ल १३ ....

[1836]

॥ सं. १८७७ वै। शु। १५ श्री पार्श्व बिंबं प्र। श्री जिनहर्ष सूरीणा गोलवछा महता षोजानी मूलचंदेन धर्मचंदेन कारितं कास्यां बृहत् खरतर गणे

[1837]

॥ सं. १८७७ वै। शु। १५ श्री चंद्रप्रभ बिंबं प्र। श्री जिन हर्ष सूरीणा कारितं ...

[1838]

॥ सं. १८७७। वै। शु। १५ श्री चंद्रप्रभ बिंबं प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा कारितं गाल- षस चेन सुखज कुंदन लालेन श्री ......

पट्ट पर।

[1839]

॥ सं. १८८५ मि। फालगुण सुदि १३ रवौ शिखर गिरौ श्री सिद्धचक्रमिदं प्रतिष्ठित

ज । श्री जिनहर्ष सूरिभिः श्री बृहत् खरतर गच्छे कारितं डु० पुरणचंदेन सगा॰ पुत्रेण श्रेयोर्थं ।

[1840]

॥ संवत् १९५४ वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्थी चंद्रवासरे अमृत सिद्धि योगे ग निवासि वायचाणा शा ··· जेचंदेन श्री तपागछ सूरीश्वर विजयसिंह सूरीणा ···

सुग्न स्वामीजी का मंदिर।

चरणों पर।

[1841]

(१) सं॰ १८७५ मि । मार्गशीर्ष ए तिथौ रविवासरे
(२) श्रीमच्छ्री जिनदत्त सूरीणां चरणपंकजानि
(३) बृ । ख । जं । यु । प्र । ज । जिनहर्ष । सू । प्रतिष्ठितानि ॥

[1842]

(१) ॥ सं॰ १८७५ । मिति मार्गशीर्ष शुक्ल ए तिथौ रविवासरे
(२) श्री सद्गुरुणां पादो बृहत् खरतर ग
(३) छे । जं । यु । प्र । ज । श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥
(४) ॥ दादाजी श्री जिनकुशल सूरिः





METAL IMAGE OF SHRI SUMATINATH.
Jain Swetambara Temple—Tirtha Rajgriha
Dated V. S. 1512 (A D. 1455)

श्री राजगृह ।

गांव मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[1843]

संवत् १५१२ वर्षे वैशाष सुदि १३ ऊकेश सा० जादा जार्या जरमादे पुत्र सा० नायक ार्या नायक दे फदेकू पुत्र सा० अदाकेन जा० सोनाई जातृ सा० जोगादि कुटुंबयुतेन श्री ुमति नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥ वडली वास्तव्यः ॥ श्री ॥

धातु की मूर्ति पर ।

[1844]

सं० १९२० । म । का । कृष्ण २ बुधे डुगड प्रतापसिंह जार्या महताब कंवर श्री संती ाथ जिन बिंबं का० ॥

सफण मूर्ति पर ।

[1845]

संवत् १६२० आषाड वदि २ । मित्रवाल वंशी पी (बी) सेरवार गोत्रीय सं० गनपति ु० स० तारात पुत्र हेमराज पार्श्वनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं खरतर गच्छे जिनचंद ूरिजिः ॥ शुजमस्तु ॥

श्याम पाषाण की मूर्ति पर ।

[1846]

(१) ॥ संवत् १५०४ वर्षे फागण सुदि ए महतीयाण वंशे ठ० देवसी पुत्र सं० तेजू बहनी जल्हाई जार्या वेपी । श्री शांति



METAL IMAGE OF SHRI SUMATINATH.
Jain Swetambara Temple—Tirtha Rajgriha
Dated V. S 1512 (A D. 1455)

[1849]

(१) संवत् १९३८ वर्षे शाके १८०३ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे
(२) शुभे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां तिथौ गुरूवासरे व्य-
(३) वहार गिरिशिखरे श्री आद देव चरण न्या-
(४) सः प्रतिष्ठितं वृद्धविज [य] गणी राय लछमिपत
(५) सिंह धनपतसिंह जीरणोद्धा-
(६) र करापितं श्रीरस्तु

[1850]

(१) संवत् १९३८ वर्षे शाके १८०३ प्रवर्त्तमाने
(२) मासोत्तममासे ज्येष्टमासे शुक्लपक्षे
(३) द्वादशम्यां गुरुवासरे श्रीव्यवहारगिरि शिखरे
(४) श्री शांतिजिन चरणप्रतिष्टा। प्रथम
(५) श्री जिनहर्ष सूरिभिः वृद्ध विजय प्रतिष्टा
(६) राय लछमिपत धनपत बा-
(७) हादर जिरणोद्धार करापितं श्री
(८) रस्तु

[1851]

(१) संवत् १९३८ वर्षे शाके १८०३ प्रवर्त्तमाने
(२) मासोत्तममासे ज्येष्टमासे
(३) शुक्लपक्षे द्वादशम्यां गुरुवासरे
(४) श्री व्यवहार गिरिशिखरे श्री नेमिजिन
(५) चरणन्यास प्रतिष्ट (।) वृद्ध विजयगणि राय लछमिपत
(६) धनपत संग जिरणोद्धार करापितं श्रीरस्तु।

(२) नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वा० शु गणिभिः

चरण पर ।

[1847]

॥ ॐ नमः ॥ संवत् १८१९ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे ६ तिथौ श्री चंद्रप्रभ जि चरणकमले शुभे स्थापिते ॥ हुगली वास्तव्य ओसवंशे गांधी गोत्रे बुलाकिदास साह माणिक चंदेन पत्रीकुंडे कुंडघाटे जीर्णोद्धार करापितं ॥ १ ॥

वैभार गिरि ।

चौथे मंदिर में ।

चरणों पर ।

[1848]

(१) संवत् १९३० वर्षे शाके १८०२ प्रवर्तमाने मासोत्तममासे
(२) शुभे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वादशी गुरूवासरे . . . श्री व्यवहार
(३) गिरि शिखरे श्री जिनचैत्यालये मूलनायक श्री
(४) महावीर जिन चरणन्यासः प्रतिष्ठितं श्री तपागछे बृद्धवि
(५) जय थापीतं (दू) साह बाहादरसंह प्रताप-
(६) सिंह तत् पुत्र राय लछमीपत धनपतसिंग
(७) बाहाद (र) जिरणोद्धार करापितं श्री रस्तु
(८) ॥ प्रथम प्रतिष्ठा संवत १८७४ शा० १७३९ मासो
(९) त्तमासे शुभे ज्येष्टमासे कृष्णपक्षे पं-
(१०) चम्यां तिथौ सोमवासरे श्री जिनचन्द्र
(११) सूरिजी महाराज का० श्री ।

खंडहर ।

पाषाण की मूर्तियों पर

[1855]

॥ ॐ संवत् १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने महतीयाण वंशे जाटड गोत्रे सं० देवराज पुत्र सं० पीमराज पुत्र सं० जिणदासेन श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्रीजिनचंद्रसूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वाचनाचार्य शुभशील गणिभिः॥

[1856]

(१) संवत् १५०४ फागुण सुदि ९ दिने महतीयाण वंशे वात्तिदिया (?) गोत्रे सं० हरिपा
(२) लेन भार्या लाडो पु० सं० हरिसि। श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं। श्री
(३) खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वाच
(४) नाचार्य शुभशील गणिभिः॥

सोन भंडार ।

[1857]*

निर्वाणलाभाय तपस्वियोग्ये. शुभे गुहेऽर्हत् प्रतिमा प्रतिष्ठे।
आचार्यरत्नं मुनि वैरदेवः. विमुक्तये ऽकारयदीर्घतेजः॥

मणियार मठ ।

चरण पर

[1858]^

सं. १८३९ वर्षे माते माह सुदी ५ तदिने श्रीओसवाल वंशे दिगारी गोत्रे केशोदास तस्य मोतुशाहकस्य भार्या बीबी सनाचो गभद्दे नागस्य माणिकचंदजीकस्य चरण स्थापित.।

---

* देखो—आर्किओलोजिकल सर्वे रिपोर्ट—१९०५-०६ पृः ९८
^ „ — „ — „ — „ — पृः १०३

[1852]

(१) संवत् १९३८ वर्षे शाके १८०३ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे
(२) ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वादशम्यां तिथौ गुरूवासरे
(३) श्री व्यवहार गिरिशिखरे
(४) श्री पार्श्वनाथ चरणयनासः प्रतिष्ठितं वृद्धविज-
(५) य गणि राय लछमिपत सिंह धन-
(६) पत संग जिरणोद्धार करापीतं

छठे मंदिर में।

चरण पर

[1853]

(१) संवत् १९३८ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे
(२) द्वादशम्यां तिथि गुरूवासरे आदिनाथ जिन चरण-
(३) न्यास प्रतिष्ठितं वृद्धविजय गणि प्रथ-
(४) म जीरणोद्धार बूलाकिचंद तत् पुत्र माणिक
(५) चंद जिरणोद्धार करापीतं द्वुति-
(६) य जिरणोद्धार राय लछमिपति सं-
(७) घ धनपतसंघ करापितं। श्रीरस्तु   ८। व्यवहारगिरी

बड़ी मूर्त्ति पर

[1854]

॥ संवत् १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने महतियाण...........श्री पार्श्वनाथ बिंबं श्री खरतर गच्छे...............श्री जिनसागरसूरीणां निदेशेन श्री शुभशील गुणिभिः॥

खंडहर।

पाषाण की मूर्तियों पर

[1855]

॥ ओँ संवत् १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने महतीयाण वंशे जाटड गोत्रे सं० देवराज पुत्र सं० षीमराज पुत्र सं० जिणदासेन श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्रीजिनचंद्रसूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वाचनाचार्य शुभशील गणिभिः॥

[1856]

(१) संवत् १५०४ फागुण सुदि ९ दिने महतीयाण वंशे वात्तिदिया (?) गोत्रे ठ० हरिपा

(२) लेन भार्या लाडो पु० ठ० हरिसि। श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं। श्री

(३) खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वाच

(४) नाचार्य शुभशील गणिभिः॥

सोन भंडार।

[1857]*

निर्वाणलाभाय तपस्वियोग्ये. शुभे गुहेऽर्हत् प्रतिमा प्रतिष्ठे।
आचार्यरत्नं मुनि वैरदेवः. विमुक्तये ऽकारयदीर्घतेजः॥

मणियार मठ।

चरण पर

[1858]^

सं. १८३९ वर्षे मासे माह सुदी ५ तद्दिने श्री ओसवाल वंशे बिगाणी गोत्रे केशोदास तस्य नेतुसाककस्य भार्या बीबी सताबो राजद्दे नागस्य आदिजिनजीवस्य चरण स्थापित.।

---

* देखो—आर्किओलोजिकल सर्वे रिपोर्ट्स—१८८०–८१ पृ० ८८

^ ,, — ,, — ,, — ,, — पृ० ९२

[242]

'खुस्यालचंदस्य पत्नी' के स्थान में 'खुस्यालचंदस्य पीपाड़ा गोत्रस्य पत्नी' चाहिये। यह लेख विपुल गिरि के मंदिर में है।

[244]

'सा श्री हकु—' के स्थान में 'सा। श्री हकुमतराय —' होना चाहिये।

[256]

'देवराज सं० षीमराज' के स्थान में 'देवराज पुत्र सं० षीमराज' होना चाहि

संशोधित पाठ।

[257]

॥ ऑ सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ खरतर गणेश श्री जिनचंद्रसूरि विजय तदादेशे .... श्री कमलसंयमोपाध्यायैः स्वगुरु श्री जिनचंद्र सूरि पादुके प्र० का० श्री वं० जीषू पुत्र ठ० ठीतमल श्रावकेण श्री वैभार गिरौ मुनि मेरुणा लि० ॥

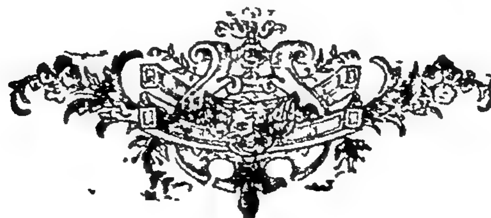
यह चरण गांव के मंदिरमें है।

[258]

॥ सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ श्री जिनचंद्र सूरीणामादेशेन श्री कमलसंय... धनाशालिचंद्रमूर्त्ति ॥ प्र० का० ठ० ठीतमल श्रावकेण।

[268]

"पत्नी महाकुमा–तस्या" के स्थान में "पत्नी महाकुमार्या तस्या" होना चाहिये।



पटना।

शहर मंदिर।

संशोधित पाठ।

[323]

॥ संवत १५४७ वर्षे वेसाष शुदि ३ मुलसंघे भट्टारक जी श्री जिनचन्द्र देवा साह जीव राज पापडिवाल नित्य प्रणमति सर संमासा श्री राजा सिवसिंघ जी रावल....।

[324]

संवत १५४७ वर्षे वैसाष सुदि ३ मुलसंघे भट्टारक श्री जिनचंद्र देवा सा० जिवराज पापडिवाल सहर संमासा श्री राजा सिवसघंजी रावल....।

दिगंबरी मंदिर—घीया तमोली गली, सिटी।

श्वेत पाषाण की मूर्त्ति पर।

[1859]

॥ सं० १४९९ वर्षे फाल्गुण वदि २ श्री संडेर गच्छे उ० साह केल्हा भार्या कस्तुरी पुत्र श्री देपाल भा० देवल दे पुत्र मोकल सहितेन श्री शीतल बिंबं का० प्र० श्री शांति सूरिभिः॥

पटना—म्युजियम।

संशोधित पाठ।

[335]

सम्वत्। १७९४। वर्षे शाके १६५९। प्रवर्त्तमाने। शुभ ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे पंचम्यां तिथौ। सोमदिने श्री व्यवहार गिरि शिखरे श्री॥ शांति जिन चरणान्यस्थापितं च। श्री जिनहर्ष सूरिभिः

[242]

'खुस्यालचंदस्य पत्नी' के स्थान में 'खुस्यालचंदस्य पीपाडा गोत्रस्य पत्नं चाहिये। यह लेख विपुल गिरि के मंदिर में है।

[244]

'सा श्री हकु—' के स्थान में 'सा। श्री हकुमतराय —' होना चाहिये।

[256]

'देवराज सं० षीमराज' के स्थान में 'देवराज पुत्र सं० षीमराज' होना चाहि

संशोधित पाठ।

[257]

॥ ओँ सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ खरतर गणेश श्री जिनचंद्रसूरि विजया तदादेशे .... श्री कमलसंयमोपाध्यायैः स्वगुरु श्री जिनचन्द्र सूरि पादुके प्र० का० श्री वं० जीषू पुत्र ठ० ढीतमल श्रावकेण श्री वैभार गिरौ मुनि मेरुणा लि० ॥

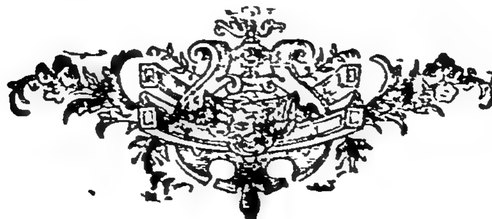
यह चरण गांव के मंदिरमें है।

[258]

॥ सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ श्री जिनचंद्र सूरीणामादेशेन श्री कमलसंयमोपाध्या धनाशालिभद्रमूर्त्ति ॥ प्र० का० ठ० ढीतमल श्रावकेण।

[268]

"पत्नी महाकुमा–तस्या" के स्थान में "पत्नी महाकुमार्या तस्या" होना चाहिये।



पटना।

शहर मंदिर।

संशोधित पाठ।

[323]

॥ संवत १५४७ वर्षे वैसाष सुदि ३ मुलसंघे भट्टारक जी श्री जिनचन्द्र देवा साह जीव राज पापडिवाल नित्य प्रणमति सर संभासा श्री राजा सिवसिंघ जी रावल....।

[324]

संवत १५४७ वर्षे वैसाष सुदि ३ मुलसंघे भट्टारक श्री जिनचंद्र देवा सा० जिवराज पापडिवाल सहर मंभासा श्री राजा सिवसंघजी रावल....।

दिगंबरी मंदिर—घीया तमोली गली, सिटी।

श्वेत पाषाण की मूर्त्ति पर।

[1359]

॥ सं० १४९९ वर्षे फाल्गुण वदि २ श्री संडेर गच्छे उ० साह केल्हा भार्या कस्तूरी पुत्र श्री देपाल भा० देवल दे पुत्र मोकल सहितेन श्री शीतल बिंबं का० प्र० श्री शांति सूरिभिः॥

पटना—म्युजियम।

संशोधित पाठ।

[333]

सम्वत्। १७७४। वर्षे शाके १६३९। प्रवर्त्तमाने। शुक्ल पक्षे [illegible] कृष्णपक्षे पञ्चम्यां तिथौ। सोमदिने श्री व्यवहार गिरि शिखरे श्री [illegible] जिन [illegible]। श्री जिनचन्द्र सूरिभिः

*६

[242]

'खुस्यालचंदस्य पत्नी' के स्थान में 'खुस्यालचंदस्य पीपाड़ा गोत्रस्य पत्नं चाहिये। यह लेख विपुल गिरि के मंदिर में है।

[244]

'सा श्री हकु—' के स्थान में 'सा। श्री हकुमतराय —' होना चाहिये।

[256]

'देवराज सं० षीमराज' के स्थान में 'देवराज पुत्र सं० षीमराज' होना चाहि

संशोधित पाठ।

[257]

॥ औँ सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ खरतर गणेश श्री जिनचंद्रसूरि विजय तदादेशे .... श्री कमलसंयमोपाध्यायैः स्वगुरु श्री जिनचन्द्र सूरि पादुके प्र० का० श्री वं० चीषू पुत्र ठ० डीतमल श्रावकेण श्री वैभार गिरो मुनि मेरुणा लि० ॥

यह चरण गांव के मंदिरमें है।

[258]

॥ सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ श्री जिनचंद्र सूरीणामादेशेन श्री कमलसंयमोपाध्या धनाशालिचन्द्रमूर्त्ति ॥ प्र० का० ठ० डीतमल श्रावकेण।

[268]

"पत्नी महाकुमा—तस्या" के स्थान में "पत्नी महाकुमार्या तस्या" होना चाहिये।



पटना।

शहर मंदिर।

संशोधित पाठ।

[323]

॥ संवत १५४७ वर्षे वैसाष शुदि ३ मुलसंघे भट्टारक जी श्री जिनचन्द्र देवा साह जीव राज पापडिवाल नित्य प्रणमति सर मंडासा श्री राजा सिवसिंघ जी रावल....।

[324]

संवत १५४७ वर्षे वैसाष सुदि ३ मुलसंघे भट्टारक श्री जिनचंद्र देवा सा० जिवराज पापडिवाल सहर मंडासा श्री राजा सिवसंघजी रावल....।

दिगंबरी मंदिर—घीया तमोली गली, सिटी।

श्वेत पाषाण की मूर्त्ति पर।

[1859]

॥ सं० १४९९ वर्षे फाल्गुण वदि २ श्री संडेर गच्छे उ० साह केल्हा भार्या कस्तुरी पुत्र श्री देपाल भा० देवल दे पुत्र मोकल सहितेन श्री शीतल बिंबं का० प्र० श्री शांति सूरिभिः॥

पटना—म्युजियम।

संशोधित पाठ।

[333]

सम्वत्। १७९४। वर्षे शाके १६५९। प्रवर्त्तमाने। शुभ ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे पंचम्यां तिथौ। सोमदिने श्री व्यवहार निधि जितो श्री [illegible] शांति जिन [illegible] प्रतिष्ठितं च। श्री जिनहर्ष सूरिभिः

[734]

॥ सं। १९११ व। सा। १७७५....शुचिः। शु। १० ति। श्री शांति जिन पादन्यासो खरतर गछ भट्टारक श्री महेन्द्र सूरिभिः का। से। श्री उदेचंद भार्या माहा कुमार्य्य



बनारस।

पाषाण की मूर्त्तियों पर।

[1860] *

(१) ॐ संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३ गुरौ (२) श्रीमाल वंशे [ढोर] गोत्रे व०
(३) सं० उढरव अजीतमल्ल भार्याया (४) पुत्र.........
(५) श्री सुमति नाथ बिंबं का० (६) प्रति० श्री जिनचंद्र सूरि...
(७) श्री जिनतिलक सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1861] *

(१) ॐ स्वस्ति संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ पुष्यनक्षत्रे गुरौ श्रीमालवंशे ढोर गोत्रे सोवनपाल भार्या......
(२) ....आदिनाथ.................
(३) खरतर ग० श्री जिनहर्षसूरि संताने श्री जिनतिलक सूरि प्रतिष्ठितं

[1862] *

(१) [नर] पाल भार्या। महुरी पुत्र ठ० भरतपाल....
(२) सं० उडरव अजितमल्ल....

श्याम पाषाण की छोटी मूर्त्ति पर।

[1863] *

सं० १३७२ वैशाख वदि......

काले पाषाण की टूटी परकर के बांये तर्फ

[1864] *

(१) .... ज्येष्ठ सुदि १३ शुक्र वासरे । ब० हे० ....

(२) .... । बिंबं कारितं ।

[1865] *

(१) ॥ ओँ ॥ सं० १५०३ वर्षे माघ वदि ६ दिने श्रीमाल वंशे नांदी गोत्रे सं० नरपाल भार्या महु-

(२) री कारितं श्रीमहावीर बिंबं । श्री खरतर गच्छे प्रतिष्ठितं श्री जिनसागर सूरिभिः ॥

मूलनायकजी पर ।

[1866]

सं० १९१० शाके १७७२ मिती आषाढ कृष्ण २ श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जिन बिंबं प्रतिष्ठिता कृता वृहत् खरतर भट्टारक गणेश जङ्गम यु० प्रधान भट्टारक श्री जिनमुक्ति सूरिभिः कारिता च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज दीपचन्द्रेन स्वश्रेयोर्थं सोम वासरे ॥

पाषाण की मूर्त्तियों पर ।

[1867]

सं० १९१० शाके १७७२ मिती आषाढ कृष्ण २ सोमे श्रीवर्धमान जिन बिंबं प्रतिष्ठा कृता वृहत् खरतर भट्टारक गणेश जं० यु० प्रधान श्री जिनमुक्ति सूरिभिः कारित च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्र पौत्र मनोरथचन्द्र श्रेयोर्थमिति ।

[1868]

सं० १९१० शाके १७७२ मिती आषाढ कृष्ण २ सोमे श्री ऋषभ देव जिन बिंबं प्रतिष्ठा

* ये मूर्त्तियां हाल में जौनपुर से डेढ कोस पर गोमती के किनारे खेत में मिली हैं। बाबू [illegible] ने लाकर बनारस के मंदिर में रखी हैं।

[734]

॥ सं। १९११ व। सा। १७७५....शुचिः। शु। १० ति। श्री शांति जिन पादन्यासो खरतर गछ भट्टारक श्री महेन्द्र सूरिभिः का। से। श्री उदेचंद भार्या माहा कुमार्य्य श्रे



बनारस।

पाषाण की मूर्त्तियों पर।

[1860] *

(१) ॐ संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३ गुरौ (२) श्रीमाल वंशे [ढोर] गोत्रे व
(३) सं० उधरव अजीतमल्ल भार्याया (४) पुत्र.........
(५) श्री सुमति नाथ बिंबं का० (६) प्रति० श्री जिनचंद्र सूरि...
(७) श्री जिनतिलक सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1861] *

(१) ॐ स्वस्ति संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ पुष्यनक्षत्रे गुरौ श्रीमालवंशे ढोर गोत्रे सोवनपाल भार्या......
(२) ....आदिनाथ.................
(३) खरतर ग० श्री जिनहर्षसूरि संताने श्री जिनतिलक सूरि प्रतिष्ठितं

[1862] *

(१) [नर] पाल भार्या। मल्हुरी पुत्र ठ० भरतपाल....
(२) सं० उडरव अजितमल्ल....

श्याम पाषाण की छोटी मूर्त्ति पर।

[1863] *

सं० १३७२ वैसाख वदि......

देहली।

लाला हजारीमलजी का घरदेरासर।

देवी की मूर्त्ति पर।

[1873] *

(१) संवत् ११२५ श्री
(२) पचासरीय (!) गच्छे
(३) श्रीमल्लवादि संताने
(४) वेल्लकेन विशेष्टा कारिता ॥

चीरखाने का मंदिर।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1874]

सं० ११७७ ......।

[1875]

सं० १३३४ आषाढ़ वदि ३ सनौ [illegible] प्रतिष्ठिता मल्लवादि श्री पूर्णचंद्र सूरिभिः।

[illegible]

सं० १४२१ वर्षे माघ सुदि १० नाहर वंशे [illegible] धर्मसिंहयों पितृव्य श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं [illegible] चंद्र सूरिभिः॥ निर...न।

[illegible]

संवत् १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ [illegible]

[illegible]

सं० १५२१ [illegible] वदि [illegible]

* [illegible]

कृता बृहत् खरतर भट्टारक गणेश जं० यु० प्रधान श्री जिनमुक्ति सूरिभिः कारिता च गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज फूलचन्द्र श्रेयोर्थमिति ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[1869]

सं० १८९७ फा० सु० ५ श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्र० श्री जिनमहेन्द्रसूरिणा कारिता ना लक्ष्मीचन्द्र तत् भार्या लक्ष्मी बीबी विधत्ते ।

[1870]

सं० १८९७ फा० सु० ५ श्री सुपार्श्व बिंबं प्र० श्री जिनमहेन्द्र सूरिना का० बा० ल चन्द्र पुत्री नानको नाम्ना बुद्धोत्तम श्री कुशलचन्द्र गण्युपदेशतो बृहत् खरतर गच्छे ।

[1871]

सं० १८२० फा० सु० २ बुधे प्रतापसिंहजी भार्या महताब कुंवर कारितं श्री चन्द्र श्री सागरचन्द्र गणि प्रतिष्ठितं ।

सिद्धचक्र पर ।

[1872]

सं० १९१८ आषाढ कृष्ण २ सोमे श्री सिद्धचक्र प्रतिष्ठितं ज० यु० प्र० भ० श्री जि मुक्ति सूरिभिः कारितं च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज दीपचन्देन स्वहितार्थं ।



देहली।

लाला हजारीमलजी का घरदेरासर।

देवी की मूर्त्ति पर।

[1873] *

(१) संवत् ११२५ श्री
(२) पचासरीय (!) गछे
(३) श्रीमल्लवादि संताने
(४) वेल्लकेन विरोव्या कारिता ॥

चीरेखाने का मंदिर।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1874]

सं० ११९९........।

[1875]

सं० १२३४ आषाढ़ वदि २ सनौ जातृ लीवूंदेव श्रेयोर्थं नागदेवेन प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता मल्लवादि श्री पूर्णचंद्र सूरिभिः।

[1876]

सं० १४३१ वर्षे माघ सुदि १० नाहर वंशे सा० पेना पु० सा० नोला भार्या नितुणश्री पु० हेमा धर्म्मभार्यां पितृव्य श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंबं कारितं प्रति० श्री धर्म्मघोष गच्छे श्री मलयचंद्र सूरिभिः ॥ गिर....ग।

[1877]

संवत् १७०२ वर्षे ज्येष्ठ सु० २........।

[1878]

सं० १७७५.... वदि ७ श्री रूपचंद........।

* यह लेख १२ वीं शताब्दी की धातु की मूर्ति के पृष्ठ पर खुदा हुआ है [illegible]
[illegible] हाथवाली मूर्त्ति है।

चौवीशी पर।

[1879]

संवत् १५५३ वर्षे वैशाष सु० ३ बुधे श्री हुंबड ज्ञातीय सा० देवा भा० रामति सु० आकेन भा० माणिकदे सु० डाहीयानाथ पु० स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं प्र० श्री बृहत्तपा पक्षे भ० श्री उदयसागर सूरिभिः॥ गिर...ग।



जोधपुर

राजवैद्य भ० श्री उदयचंद्रजी का देरासर।

पंचतीर्थी पर।

[1880]

संवत् १५१६ वै० सु० ५ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० सोषसी टमकू पु० जाणा हरखु पु० उं रणसा० पाहु प० जिनदत्त युतेन श्री संभव बिं० कारितं प्र० श्री तपा रत्नशेखर सूरिभिः



जसोल (मारवाड़)।

पीले पाषाण की मूर्त्ति पर।

[1881]

॥ सं० १५३३ वर्षे ज्येष्ठ सु० १०.....श्री महावीर बिंबं.....खरतर श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

पंचतीर्थियों पर।

[1882]

संवत् १४३६ वैशाष वदि ४ श्री ऊकेशवंशे छाजहड़ गोत्रे सा० पेता पु० आसधर पु० करमा भा० कूरमादे पु० नारमलेन भा० नरमादे पु० सहणा सादा यु० श्री आदिनाथ बिंबं कारितं आत्मश्रेयसे प्रति० श्री पल्लीवाल गच्छे श्री यशोदेव सूरि (भिः)।

[1883]

॥ संवत् १५१७ वर्षे माघ वदि ५ दिने श्री ऊकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य संताने श्री उप-केश ज्ञातौ बिंबट गोत्रे सं० दादू पु० सं० श्रीवत्स पु० सुलक्षित भा० ललतादे पु० सादूण-केन भा० संसार दे युतेन पितरो श्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1884]

सं० १५१९ माघ सु० शुक्रे प्रा० व्य० मीचत भा० नासल दे पुत्र सूजाकेन भा० मांगू माल्ही पु० मेरा तोलादि युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ॥

नाकोड़ा।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर।

पीले पाषाण के चरण पर।

[1885]

संवत् १६८५ वर्षे वैशाख वदि ५ दिने श्री वीरमपुरे श्री [illegible] [illegible] ॥ महाराउले संखवालेचा गोत्रे सा। [illegible] [illegible] [illegible] कारितं। सं० १६[illegible] [illegible] [illegible]

चौवीशी पर।

[1879]

संवत् १५५३ वर्षे वैशाप सु० ३ बुधे श्री हुंबड ज्ञातीय सा० देवा भा० रामति सु० आकेन भा० माणिकदे सु० डाहीयानाथ पु० स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं . प्र० श्री बृहत्तपा पक्षे भ० श्री उदयसागर सूरिभिः ॥ गिर...ग।



जोधपुर

राजवैद्य भ० श्री उदयचंद्रजी का देरासर।

पंचतीर्थी पर।

[1880]

संवत् १५१६ वै० सु० ५ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० मोपसी टमकू पु० जाणा हरखु पु० रणसा० पाहु प० जिनदत्त युतेन श्री संभव बिं० कारितं प्र० श्री तपा रत्नशेखर सूरिभिः



जसोल (मारवाड़)।

पीले पाषाण की मूर्ति पर।

[1881]

॥ सं० १५३३ वर्षे ज्येष्ठ सु० १०.....श्री महावीर बिंबं.....खरतर श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

[1891]

॥ संवत् १६२७ वर्षे वैशाष सुदि ११ बुधे नारदपुरी वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय सा० टीला सुत सा० चूनाख्येन भार्या बाई पातु सुत लाधा हीरा प्रभृति कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री हीरविजय सूरिभिश्चिरं नन्दतात् ॥

श्री ऋषभदेवजी का मंदिर—हाथीपोल ।

पंचतीर्थी पर ।

[1892]

॥ सं० १३४२ ज्येष्ठ शु० ९ गुरौ गेपुत्रौवाल(?) ज्ञातीय व्यव० पुनाकेन भार्या ..श्रेयसे श्री पद्मप्रभ बिंबं का० प्र० श्री सुमति सूरिभिः ॥

श्री ऋषभदेवजी का मंदिर—कसेरी गली ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1893]

॥ सं० १५०१ वर्षे आषाढ सुदि ५ उपकेश ज्ञातीय....श्री आदिनाथ बिंबं का०....

[1894]

॥ सं० १५३३ वर्षे वैशाष सु० ५ शुक्रे श्रीमाल ज्ञा० व्य० मेला भा० रूपकू सुत सुगा- केन पितृमातृभ्रातृ श्रेयोर्थं आत्मश्रेयसे श्री सुमति नाथ बिंबं का० प्र० श्री नागेंद्र गच्छे श्री [illegible]देव सूरिभिः ॥ वडेचा सपवाराही ग्रामे वास्तव्य ॥

[1895]

॥ संवत् १५५९ वर्षे आषाढ सुदि ८ दिने हूंगड़ गोत्रे भार्या [illegible] पुत्र [illegible] भार्या पुहुला धरनाई पुत्र पीमपाल नरपाल नरपति मातृ श्रेयसे श्री [illegible]नाथ बिंबं का० [illegible] प्र० श्री बृहद्गच्छे भ० श्री श्री वज्र सूरिभिः ॥

पंचतीर्थियों पर ।

[1886]

सं० १४०५ वैशाष सुदि ३ ऊएस ज्ञातीय गाजहड़ गोत्रे सा० गणधर भार्या वल मोहण जयताकेन पित्रो श्रेयसे श्री आदिनाथः कारितं प्रति० श्री अभयदेव सूरिभिः

[1887]

सं० १५१३ वर्षे माघ मासे ऊकेश वंशे सा० वल्हा भा० सूल्ही पुत्र सा० वाहड़ भा० सुत डूंगर रणधीर सुरजनैः रणधीर श्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री य सूरिभिः ॥ गाजहड़ गोत्रे ॥

[1888]

ॐ संवत् १५३६ वर्षे श्री कीर्तिरत्न सूरि गुरुभ्यो नमः सा० जेठा पुत्र रोहिनी प्रणमं



बाड़मेर–मारवाड ।

पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

[1889]

सं० १६६५ वर्षे उकेश वंशे सा० ठाकुरसी कु० प्र० क . . . . . प्रमुख श्री संघेन उ० विद्यासागर गणि शिष्येण श्री विद्याशील गणि शिष्य वा० श्री विवेकमेरु गणि शिष्य श्री मुनिशील गणि नित्यं प्रणमति । श्री अंचल गछे ।



उदयपुर ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर–सेठों की वाड़ी में ।

पचतीर्थियों पर ।

[1890]

॥ सं० १५०६ वर्षे मा० वदि ५ दिने श्री संडर गछे उप० ज्ञा० सा० आसा पु० सा भा० पेठी पु० षितमा भा० धारू पु० भाषर भा० लाडी पु० पामा स्वश्रेयसे श्री सुविधिना बिंबं का० प्र० श्री यशोभद्र सूरि संताने गछेशैः श्री शांति सूरिभिः ॥

(३) यां घांघ गोत्रे साह श्री माल्हण तत्भार्या सरूप दे तत्पुत्र संघवि श्री कान्हजि तस्य वृद्धि भार्या दीपां लघु भार्या सूषम दे पुत्र चिरंजिवी पुन्यपाल सहितेन श्री प्रासाद बिं

(४) वं ॥ श्री ऋषभदेव बिंबं स्थापितं प्रतिष्ठितं मलधार गछे भट्टारिक श्री महिमा सागर सूरी तत्पट्टे श्री कल्याणसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं धर्माचार्य विजामति श्री उदय सागर सूरिः। शुभं।

पंचतीर्थियों पर।

[1900]

॥ ऑ ॥ सं० १४एए वर्षे फा० सुदि २ दिने ओसवाल ज्ञातीय सा० काजण पु० सा० सुदा सुश्रावक भार्या रतनु तत्सुतेन सा० सोमाकेन पुत्र देवदत्त जगमालादि सहितेन श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं खरतर गछे श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1901]

॥ सं० १४एए माह सुदि ६ सोमे उ० ज्ञा० गूंदोचा गोत्रे सा० लापा भा० लापण दे पु० मेहाकेन भा० मयणल दे पु० चित्रपाल रणपालादि सह भाई पेता भा० पेतल दे निमित्तं सुमतिनाथ का० प्र० चैत्र गछे श्री मुनितिलक सूरि गुणाकर सूरिभिः ॥

[1902]

॥ संवत् १५२ए बर्षे वै० व० ४ शुक्रे प्रा० ज्ञातीय प० चांपसी भा० पोमादे सु० सांगाकेन भा० दई सुत करण भ्रा० सहसादि कुटुंबयुतेन स्वमातृपितृश्रेयसे कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः। काड़उलि ग्राम वास्तव्यः ॥

चौवीशी पर।

[1903]

॥ सं० १५११ व० आषा० व० ८ श० उपकेश ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे भा० भा० भा०

[1896]

॥ सं० १५७२ वर्षे चैत्र वदि ३ बुधे ऊकेशे वंशे वईताला गोत्रे सा० तोला भा० डी सा० आसाकेन भा० राना दे पु० जीवा द्वितीय भा० अचला दे पुत्र गोव्हा पदमा वार युतेन स्वपुण्यार्थं श्री धर्म्मनाथ विंबं का० प्र० श्री खरतर गछे श्री जिनहर्ष श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥ पं० कुशल....सुप....।

श्री गौतमस्वामी की धातु की मूर्त्ति पर।

[1897]

॥ सं० १६२९ व० का० सु० ३ गुरुवारे...सरताण...श्री गौतमस्वामि विंबं का

धातु के यंत्र पर।

[1898]

॥ सं० १९१२ वर्षे मिती आसोज सुदि १५ शुक्रे मेदपाट देशे उदयपुर ओशवंशे शाखायां गोत्र बोल्यां साहाजी श्री एकलिंग दासजी तत्पुत्र साहाजी श्री भगवान दा तत्पुत्र कुंवरजी श्री......श्री सिद्धचक्र यंत्र करापितं भट्टारक श्री आनन्द सागर करापितं बृहत्तपा गछे।

श्री ऋषभदेवजी का मंदिर—सेठों की हवेली के पास।

मूलनायकजी पर।

[1899]

(१) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति श्री ऋद्धिवृद्धि जयो। मंगलाभ्युदय श्री ॥ अथ संवछरे श्री मन्नृपति विक्रमार्क्क समयातित संवत् १६९९ वर्षे श्री शालिवाहन शाके १५६४

(२) ॥ प्रवर्त्तमाने उत्तरगोले माघ मासे शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ गुरुवासरे श्री रा दूर्गे महाराजाधिराज महाराव श्री हरीसिंघ जी विजयराज्ये ऊपकेश वंशे ब शाखा

(३) यां घांघ गोत्रे साह श्री माल्हण तत्भार्या सरूप दे तत्पुत्र संघवि श्री कान्हजि तस्य वृद्धि भार्या दीपां लघु भार्या सूषम दे पुत्र चिरंजिवी पुन्यपाल सहितेन श्री प्रासाद विं

(४) वं ॥ श्री ऋषभदेव बिंबं स्थापितं प्रतिष्ठितं मलधार गछे भट्टारिक श्री महिमा सागर सूरी तत्पट्टे श्री कल्याणसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं धर्माचार्य विजामति श्री उदय सागर सूरिः। शुभं।

पंचतीर्थियों पर।

[1900]

॥ ॐ ॥ सं० १४९९ वर्षे फा० सुदि २ दिने ओसवाल ज्ञातीय सा० भाजण पु० सा० मुदा सुश्रावक भार्या रतनु तत्सुतेन सा० सोमाकेन पुत्र देवदत्त जगमालादि सहितेन श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं खरतर गछे श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1901]

॥ सं० १४९९ माह सुदि ६ सोमे उ० ज्ञा० गूंदोचा गोत्रे सा० लापा भा० लापण दे पु० मेहाकेन भा० मयणल दे पु० पित्रपाल रणपालादि सह भाई पेता भा० पेतल दे निमित्तं सुमतिनाथ का० प्र० चैत्र गछे श्री मुनितिलक सूरि गुणाकर सूरिभिः ॥

[1902]

॥ संवत् १५२९ वर्षे वै० व० ४ शुक्रे प्रा० ज्ञातीय प० चांपसी भा० पोमादे सु० सांगाकेन भा० दई सुत करण भ्रा० सहसादि कुटुंबयुतेन स्वमातृपितृश्रेयसे कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः। भाडउलि ग्राम वास्तव्यः ॥

चौवीशी पर।

[1903]

॥ सं० १५११ व० आषा० व० ७ श० उपकेश ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे भा० सा० सा०

ऊषा भा० ऊांब श्री पु० सुवर्णपाल भार्या सोमश्री पुत्र सा० लापा केन भा० अथ सदरथ सूरचंद्र हरिचंद्र युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं उपकेश ग० कुक० संताने प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभि ॥ श्रीः ॥

प्रतिमा पर ।

[1904]

॥ सं० १९१९ रा मिगसर सु० १० उसवाल फागा गोत्रे सा० लिषमीदास जी भ अनरुप दे पुत्र नाथजी अनरुप दे जी पंच पर....प्रतिष्टितं ।



करेडा-मेवाड ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[1905] *

(१) ऊँ देव धर्म्मीयं सुमति गुरोः मध्यम शाखस्य

(२) वसति का० देवसूरि संवतु........

(३) भिः

[1906]

सं० १६०४ व० ज्येष्ठ व०...वा कहानी (?) श्री कुंथुनाथ बं जि...दान...संरपत्र ग्वत सोनी सींदकरण

[1907]

॥ संवत् १६१९ वैशाख सुदि ६ श्री आदिनाथ......श्री विजयदान सूरि प्र० बा० ...पु० ना० सुंदर......।

* संवत् के अंकों का स्थान टूट गया है, परन्तु लेख के अन्य अक्षरों से स्पष्ट है कि प्रतिमा बहुत प्राचीन है ।

[1908]

॥ सं० १६९१ व० वैशाख सुदि १२ वो श्री शीतलनाथ बिंबं गुरू श्री विजय सूरिभिः ॥

[1909]

॥ सं० १६४६ असा० सुदि ६ वाजसा श्री धर्म......

[1910]

॥ संवत् १७१० वर्षे ज्येष्ठ सित ६ गुरौ श्री सुविधि बिंबं श्रेयोर्थं का० प्र० भ० श्री विजयराज सूरिभिः श्रा० कनका भ० श्री विजय सेन सूरिभिः ॥

पंचतीर्थी पर।

[1911]

॥ सं० १५०९ वर्षे माघ सुदि ५ शुक्रे प्राग्वाट वंशे सं० कर्मट भा० माजू पु० उधरणेन भार्या सोहिणि पुत्र आल्हा वोसा नीसा सहितेन श्री अंचल गच्छेश श्री जयकेसरि सूरि उपदेशेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य स्वामी बिंबं कारितं प्र० श्रीसंघेन ॥

[1912]

॥ सं० १५१६ वीरम ग्रामे श्रे० वीठा सोनल पुत्र श्रे० गुडसिकेन भा० संपूटी पुत्र धन्ना वाघा भार्या झांझ प्रमुख कुटुंबयुतेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छ नायक श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥

[1913]

॥ संवत् १५२९ वर्षे फागुण सुदि २ शुक्रे श्री श्री (?) वंशे रमोड़या गोत्रे श्रे० हुडा भार्या रंगाई पुत्र श्रे० देधर सुश्रावकेण भा० कुंवरि भ्रातृ सीधा युतेन श्री अंचलगच्छेश्वर श्री जयकेसरि सूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयोर्थं श्री शांति नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥ श्री पत्तन नगरे ॥

[1914]

॥ संवत् १५४१ वर्षे वैशाख मासे नागर ज्ञाती श्रे० केल्हा भा० मानूं सुत माइयाकेन सुत हरखा चांगा वाला सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री संभवनाथ बिंब का० बृद्ध तपापक्षे भ० श्री जिनरत्न सूरिभिः ॥

[1915]

॥ संवत् १५०७ वर्षे माघ सुदि ७ गुरौ उपकेश ज्ञा० सा० हापा पु० विजा भा० जल्ह दे पु० ठाकुर रीडा ठाकुर भा० अठवा दे पुत्र कुंरपाल युतेन आत्मश्रे० पित्रोः पु० शीतलनाथ बिंबं का० प्र० श्री० बृ० वो० श्री मलयहंस सूरिभिः ॥ कईतलि वास्तव्य ॥

रंगमंडप के बांये तर्फ आले के नीचे का शिलालेख।

[1916]

(१) ॥ ओं ॥ संवत् १३३४ वर्षे वैशाख सुदि ११ शुक्रे श्री आंचल गछे। प्राग्वाट ज्ञाती महं साजण महं तेजा .... सा कांकणेन निज मातृ

(२) ...... कपूर देवी श्रेयोर्थं खनक (?) श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं ॥ संताने मंडलिक महं माला महं देवसीह महं प्रमत्तसीह .....

सभामंडप में दरवाजे के दाहिने स्तंभ पर।

[1917]

॥ ओं ॥ संवत् १४६६ वर्षे चैत्र सुदि १३ सुविहित शिरोरत्न शेखर श्री रत्नशेखर सूरि पट्टांबुधि पूर्णचंद्र श्री पूर्णचंद्रसूरि गुरुक्रम कमलहंसाः श्री हेम हंससूरयः सपरिकरा करः...

सभामंडप के २ मजले के स्तंभ पर।

[1918]

श्री जिनसागर सूरि उदयशील गणि आज्ञासागर गणि क्षेमसुंदर गणि मेरुप्रभ मुनि श्री ......

बावन जिनालयमें पंचतीर्थीयों पर ।

[1919]

॥ सं० १२४९......लषमिणी श्रेयोर्थं पुत्र उधरणेन भ्रातृ आसधर श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं ॥

[1920]

ॐ संवत् १२६२ ज्येष्ठ सुदि १० शनौ बायट ज्ञातीय स्वसुर नायक आसल श्रेयोर्थं ......श्री श्रेयांस बिंबं कारितं । श्री नागेन्द्र गच्छे श्री वर्द्धमान सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

[1921]

संवत् १३२१ वर्षे फागुण सु०.... भ्रा० घाटी पु० ऊदा भ्रा० रुपिणि सुत आसपालेण माता पिता पूर्वज श्रेयोर्थं चतुर्विंशति पट्टः कारितः श्री चैत्रगच्छीय श्री आमदेव सूरिभिः श्री शांतिनाथ......।

[1922]

सं० १३५५ श्री ब्रह्माण गच्छे श्रीमाल ज्ञातीय रिज पूर्वज श्रेयसे सुत मालाकेन श्री आदिनाथ बिंबं प्र० श्री विमल सूरिभिः ।

[1923]

सं० १३५६ श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं श्री कक्क सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

[1924]

सं० १३७१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ प्राग्वाट ज्ञातीय सा० धीना भार्या देवश्रं पुत्र चमूना केन मातृ पितृ श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं श्री पूर्णिमा गच्छे श्री सोमतिलक सूरि उपदेशेन बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

[1925]

सं० १३७३ वैशाख वदि ११ श्रे० सिरकुंथार भ्रा० सींगार देव्या प्र० सा न्ह......

श्री महावीर कारितं ।

[1926]

संवत् १३९१ मा० सु० १५ खरतर गच्छीय श्री जिन कुशल सूरि शिष्यैः श्री [
सूरिभिः श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा प्रतिष्ठिता कारिता च मत्र० बाहि सुतेन रह्म...२
आल्हादि परिवृतेन स्वपितृ सर्व पितृव्य पुन्यार्थं ।

[1927]

सं० १४०७ व० सु० ५ प्रा० रोस्तरा पदम । साहरू साकल श्रे० देवसीहेन का०
सिद्धान्तिक श्री माणचन्द्र सूरि ।

[1928]

सं० १४२२ व० ज्येठ सु० ११ बुधे......मंडलिक भा० काल्हण दे सुत
व्य० षानाकेन श्री संभवनाथ बिंबं का०...तपा गच्छे श्री रत्नशेखर सूरीणामुपदेशेन ।

[1929]

सं० १४३९ माह वदि ७ श्रीमाल ज्ञा० व्यव० राणासीह भा० संसती पुत्र वयरा
श्री सुमतिनाथ बिंबं का० श्री विजयसेन सूरि पट्टे....

[1930]

सं० १४७१ वर्षे माघ सुदि ......श्री मुनिसुव्रत बिंबं का० प्र० कछोलीवाल
श्री संघतिलक सूरि....

[1931]

सं० १४०२ वर्षे....साहलेचा गोत्रे सा हांपा....भा० गयणल दे पुत्र सा० सं
भा० वीरणी पुत्र षरहयेन पितृ मातृ श्रेयसे श्री श्रेयांस बिंबं का० प्र० श्री पल्लीकीय
श्री यशोदेव सूरिभिः ।

[1932]

ॐ सं० १४९१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे श्रीमाल वंशे वहगटा गोत्रे सा० ऊदा पुत्र
जगकेन आसा जूसा सहसादि पुत्रयुतेन पुन्यार्थं श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं
खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरिभिः ।

[1933]

सं० १४९३ व० वै० सु० ५ श्री संडेर गच्छे पीपलतडेचा गोत्रे श्रे० ज्ञा० सा० कान्हा भा० सोमणि पु० रतनाकेन पित्रो निमित्तं श्री शांतिनाथ बिंबं का० श्री जशोभद्र सूरि संताने श्री शालि......।

[1934]

सं० १५०३ व० ज्ये० सु० ११ शु० श्री उप० ग० ककुदाचार्य सं० त्रिपड गो० सा० जीऊव पु० रामा भा० जीवदही पु० जिलाकेन पत्नीपुत्रस्वश्रे० श्री श्रेयांस बिं० का०......।

[1935]

सं० १५०८ मा० व० १३ उकेश सं० सारंग सुत संभा भा० हेमा दाणा डुंगर नापा सं० गत्रा भा० पोबू सुत साहस जइआए भा० लक्ष्म्या श्री संजव बिंबं का० प्र० श्री उदयनंदि सूरिभिः।

[1936]

संवत् १५१३ वर्षे वैशाख सुदि २ सोमे उएकेश ज्ञा० कस्याट गोत्रे। सा० धाना भा० ससमादे पुत्र सा चडसीडाकेन पितर वालु निमित्तं श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० उएकेश० कुल श्रावक......।

[1937]

सं० १५१७ वर्षे चैत्र वदि १ शुक्रे श्रीश्रीमाल ज्ञा०......सु० वछ्यास पुत्र पौत्र सहितेन श्री अजितनाथ सु० जिवितस्वामि प्र० श्री पूर्णिमा पक्षे श्री राजतिलक सूरिणा-मुपदेशेन।

[1938]

सं० १५२५ वर्षे मार्ग० सु० ९ धागर वासि प्राग्वाट सा० वाघा भा० गाजू पुत्र सा० मासाकेन भा० आल्हू पुत्र पर्वत सा० नाई प्रमुख कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री सोमसुंदर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

[1939]

सं० १५३....। व० वैशाख सुदि ३ शनौ श्री संडेर गच्छे उ० टप गोत्रे २ १ दल्हण दे गोरा जा० मल्हा दे पु० आल्हा जा० करआ जा० आनूण दे पु० तोला श्रे० पुन्यार्थं वासुपूज्य बिंबं का०...।

[1940]

॥ संवत् १५३१ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमे ऊकेश वंशे जाजा गोत्रे सा० धर्मा जा० दे पुत्र सा० काजा सुश्रावकेण जा० जोजा प्रमुख परिवार सहितेन श्री श्रेयांस बिंबं प्र० खरतर गच्छे श्री जिनजद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥

[1941]

संवत् १५३८ वर्षे ज्येष्ठ सु......माला जा० माला दे सुत केल्हा जा० सिवा पोचकेन स्वश्रेयसे श्री पद्मप्रज बिंबं कारितं प्र० तपा श्री सोमसुंदर शिष्य श्री सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥ श्री ॥

[1942]

संवत् १६३३ वर्षे वैशाख सुदि १३ रवौ श्री स्तम्जतीर्थ वास्तव्य श्री नागर ज्ञाती सा० पना जार्या कीबादे सुत सा० होसा जार्या वा। हांसलदे नाम्ना श्री आदिनाथ तीर्थी करापितं। श्रीमत्तपा गच्छे जट्टारक प्रजु श्री हीर विजय सूरिजिः प्रतिष्ठितं। जवतु ॥

[1943]

॥ संवत १६७५ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरुवासरे......वास्तव्य उकेश ज्ञातीय व० साह यांहसा जा० प्रजा सुता जोआ......सुत हेमा कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री मुनि.... तपा गच्छे ज० श्री हीरविजय सूरि ज० श्री विजयदेव सूरिश्वर.......।

[1944]

संवत् १७७३ माघ सु० ५ गुरुदिने आचार्य श्री क्षेमकीर्तौः तत्पट्टे श्री हेमकीर्ति देवाः

श्रग्रोतकान्वये साधु माना जा० फीनाही तयोः पुत्राः साधु कौला चुला कौला जार्या सुनुना तयो पुत्र कीम्हा जार्या वंदो पुत्र दासू वस्तुपाल नित्यं प्रणमति ॥

चौवीशी पर।

[1945]

(१) ॐ संवत् ११४२ मार्ग सु० ७ सोमे श्री सांवदेवा धंमके (?) . . . जासल श्रावक पुत्रि

(२) कया श्रीमत्थासिंकया श्रेयोर्थं चतुर्विंशति पट्टकः कारितः ॥

(३) (विंवं) शं० वि० . . . . चालू । का० प्र० तपा गछे ॥

चौवीसी पर।

[1946]

॥ सं० १५६५ वै० शु० ७ शनौ श्री नटीपद्र वास्तव्य श्रीश्रीमाल ज्ञातीय सा० कान्हा जार्या फुतिंगदे सुता सा० मेघा जा० वारधाई सुत रूपा षीमादि सकुटुंब युतया सा० राजा जार्या वीमाई सुता राकू नाम्न्या श्री अनंतनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गछे श्री सोम सुंदरसूरि संताने श्री हेमविमल सूरिजिः ॥

ह्रींकार यंत्र पर।

[1947]

॥ संवत् १६७७ वर्षे पोस मासे १० दिने श्री बृहत् खरतर गछे श्री जिनराज सूरि विजय राज्ये चंदा पुर्य्यां ओसवाल ज्ञातीय नाहटा गोत्रे सा० सहसराज पुत्र सा० सिंघराज तत्पुत्राः सा० श्री चंद संवतु १ सा० सधारण सा० श्री हंस सा० करसण हासा सधारण जार्या सहयदे सुत तत्पुत्रा सहसकरण सुमति सहोदर शुजकर प्रतिष्टितं श्रीमत् श्री परानयन सुहगुरुणा ॥ हितं कारापितं ॥

बावन जिनालय की देहरियों के पाट पर।

[1048]

(१) संवत् १०३९ (व) र्षे श्री संडेरक गछे श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री श्यामा चार्या......

(२) ....प्र० च० श्री यशोभद्र सूरिभिः श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं ॥ न ॥ चंद्रेण कारितं ....

[1049]

(१) ॐ संवत् १३०३ वर्षे चैत्र वदि ४ सोमदिने श्री चित्र गछे श्री भद्रेश्वर राटउरीय वंशे

(२) श्रे० भीम अर्जुन कमवट श्रे० बूमा पुत्र श्रे० घयजा धांधल पासड़ ऊदादि कुटुंब समेतैः....

(३) थ प्रतिमा कारिता । प्रति० श्री जिनेश्वर सूरि शिष्यैः श्री जिनदेव सूरिभिः

[1950]

(१) ॐ संवत् १३१७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ बुधे श्री कोरंटक गछे श्री नन्नाचार्य संताने.

(२) सा० भीमा पुत्र जिसदेव रतन अरयमदन कुंता महणराव मातृ लाछी बिंबं (कारि)

(३) (ता) । प्रतिष्ठितं । श्री सर्वदेव सूरिभिः ॥

[1951]

(१) ॥ (संवत् १३१७) ज्येष्ठ वदि ११ बुधे श्री षंडेरक गछे प्रतिबद्ध चैत्यालये श्री यशोभद्र सूरि संताने श्रे० साढ देव पुत्र मह सामंत मह आसपालेन पु० धांधल सा०..

(२) ....(श्रे) योर्थं श्री संभवनाथ बिंबं देवकुलिका सहितं कारितं प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरि शिष्यैः ईश्वर सूरिभिः ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

[1952]

(१) ॥ ॐ ॥ संवत् १३३९ वर्षे फागुण सुदि ७ शनौ नां देवान्वये साधु षडमदेव सुत संघपति साधु श्री पासदेव भार्या षेढी पुत्राश्चत्वारः सा० देहड सा० काजल रउ
(२) ठाहड पौत्र जिणदेव दिवधर प्रभृतिभिः देवकुलिका सहितं श्री सुमति नाथ बिंबं का० प्र० वादींद्र श्री धर्म्मघोष सूरि गछे श्री मुनिचंद्र सूरि शिष्यैः श्री गुणचंद्र सूरिभिः ॥ छ ॥

[1953]

(१) ॥ ॐ नमः ॥ संवत् १३३९ फागुण सुदि ७ शनौ श्री राज गछे साधु नेमा सुत धार सत तनुज साधु नाहड तत्पुत्रास्त्रयो यथा सा० काकढ भार्या नान्ही पुत्र पाल्हा ॥
(२) सा० धर्मसिरि देपाल भार्या देवश्री तथा सा० नरपति पत्नी लक्ष्मतू द्वि० पत्नी नायक देवी पुत्राः सा० सहदेव सा० हरिपाल भार्या हीरा देवी द्वि० हरिसिरि पुत्र महीपाल ॥
(३) देव तु० हिमश्री सा० कुमरसिंह तथा सा० तेजा भार्या सील्हू पुत्र धरणिग पून सीह एतस्मिन्ननुक्रमे पितृ सा० नरपति श्रेयसे सा० हरिपालेन श्री पंके ॥
(४) र गछे प्रतिबद्ध श्री पार्श्वनाथ चैत्य देवकुलिका सहितं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० वादींद्र श्री धर्मघोष सूरि पट्टक्रमे श्री आनंद सूरि शिष्यैः श्री अमरप्रभ सूरिभिः ॥

[1954]

(१) ॥ ॐ ॥ सं० १३३९ वर्षे फा० सुदि ७ शनौ श्री राज गछे सा० नेमा सुत सा० धार सत सुत सा० ठाहड़ तत्पुत्रास्त्रयो यथा सा० काकड भार्या नान्ही पुत्र पाल्हा सा० ॥
(२) धर्मसिरि देपाल भार्या देवश्री पुत्र तथा सा० नरपति भार्या लक्ष्मतू द्वि० नायक देवी पुत्राः सा० सहदेव सा० हरिपाल पत्नी हीरादेवी द्वि० हरिसिरि पुत्र महीपाल
(३) ह देव तु० हेमश्री कुमारसीह तथा सा० तेजा भार्या सील्हू पुत्र धरणिग पूनसीह

बावन जिनालय की देहरियों के पाट पर।

[1948]

(१) संवत् १०३९ (व) र्षे श्री संडेरक गच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री स्यामा (?) चार्या......

(२) ....प्र० भ० श्री यशोभद्र सूरिभिः श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं ॥ न ॥ पूर्ण चंद्रेण कारितं ....

[1949]

(१) ॐ संवत् १३०३ वर्षे चैत्र वदि ४ सोमदिने श्री चित्र गच्छे श्री भद्रेश्वर संताने राटउरीय वंशे

(२) श्रे० भीम अर्जुन कमवट श्रे० बूना पुत्र श्रे० धयजा धांधल पासन जयतादिभिः कुटुंब समेतैः....

(३) थ प्रतिमा कारिता। प्रति० श्री जिनेश्वर सूरि शिष्यैः श्री जिनदेव सूरिभिः॥

[1950]

(१) ॐ संवत् १३१७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ बुधे श्री कोरंटक गच्छे श्री नन्नाचार्य संताने...

(२) सा० भीमा पुत्र जिसदेव रतन अरयमदन कुंता महणराव मातृ लाछी श्रेयोर्थं विंबं (कारि)

(३) (ता)। प्रतिष्ठितं। श्री सर्वदेव सूरिभिः॥

[1951]

(१) ॥ (संवत् १३१७) ज्येष्ठ वदि ११ बुधे श्री षंडेरक गच्छे प्रतिबद्ध चैत्यालये श्री यशोभद्र सूरि संताने श्रे० साढ देव पुत्र मह सामंत मह आसपालेन पु० धांधल सा०..

(२) ....(श्रे) योर्थं श्री संभवनाथ बिंबं देवकुलिका सहितं कारितं प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरि शिष्यैः ईश्वर सूरिभिः ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

[1952]

(१) ॥ ॐ ॥ संवत् १३३९ वर्षे फागुण सुदि ८ शनौ नां देवान्वये साधु षतमदेव सुत संघपति साधु श्री पासदेव जार्या पेढी पुत्राश्चत्वारः सा० देहड सा० काजल रत्न

(२) गाहड पौत्र जिणदेव दिवधर प्रभृतिजिः देवकुलिका सहितं श्री सुमति नाथ बिंबं का० प्र० वादींद्र श्री धर्म्मघोष सूरि गछे श्री मुनिचंद्र सूरि शिष्यैः श्री गुणचंद्र सूरिजिः ॥ ठ ॥

[1953]

(१) ॥ ॐ नमः ॥ संवत् १३३९ फागुण सुदि ८ शनौ श्री राज गछे साधु नेमा सुत थार सत तनुज साधु नाहड तत्पुत्रास्त्रयो यथा सा० काकढ जार्या नान्ही पुत्र पाल्हा ॥

(२) सा० धर्मसिरि देपाल जार्या देवश्री तथा सा० नरपति पत्नी लखतू द्वि० पत्नी नायक देवी पुत्राः सा० सहदेव सा० हरिपाल जार्या हीरा देवी द्वि० हरिसिरि पुत्र महीपाल ॥

(३) देव तु० हिमश्री सा० कुमरसिंह तथा सा० तेजा जार्या लीलू पुत्र धरणिग पून सीह एतस्मिन्ननुक्रमे पितृ सा० नरपति श्रेयसे सा० हरिपालेन श्री पंमे ॥

(४) र गछे प्रतिबद्ध श्री पार्श्वनाथ चैत्य देवकुलिका सहितं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० वादींद्र श्री धर्मघोष सूरि पट्टक्रमे श्री आनंद सूरि शिष्यैः श्री अमरप्रभ सूरिजिः ॥

[1954]

(१) ॥ ॐ ॥ सं० १३३९ वर्षे फा० सुदि ८ शनौ श्री राज गछे सा० नेमा सुत सा० थार सन सुत सा० गाहड तत्पुत्रास्त्रयो यथा सा० काकड जार्या नान्ही पुत्र पाल्हा सा० ॥

(२) धर्मसिरि देपाल जार्या देवश्री पुत्र तथा सा० नरपति जार्या लखतू द्वि० नायक देवी पुत्राः सा० सहदेव सा० हरिपाल पत्नी हीरादेवी द्वि० हरिसिरि पुत्र महीपा-

(३) ल देव तु० हेमश्री कुमारसीह तथा सा० तेजा जार्या लीलू पुत्र धरणिग पूनसीह

पुत्रादि धर्म्म कुटुंब समुदये पितृ सा० काकढ श्रेयसे सा० पाल्हाकेन श्री

(४) षंडेर गच्छे श्री पार्श्वनाथ चैत्ये देवकुलिका श्री आदिनाथस्य कारितं प्र० वादींद्र श्री धर्म्मघोष सूरि पट्टक्रमे श्री आनंद सूरि शिष्य अमलप्रभ सूरिभिः ॥

[1955]

(१) ॥ संवत् १३०२ वर्षे पौष सुदि ७ रवौ श्री चित्रकूट स्थाने महाराजाधिराज पृथ्वी- चंद्र......

(२) श्री मालदेव पुत्र श्री वणवीर सरकं सिलहदार महम्मद देव सुहड सीह चउंडरा सरकं पुत्र......

(३) दिवं गतं तस्य सरकं गोमट्ठ कारापितं : ॥

[1956]

(१) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति ॥ संवत् १४०१ वर्षे ॥ माघ मासे शुक्ल पक्षे पंचम्यां तिथौ बुध- वारे श्रीमाल ज्ञातीय मठठिया गोत्रे सा० राहरू सा० धाना सा० इल्हा पुत्र सं० हेमराज सं० थिरराज सं० लोलू सं० राइपाल कु......

(२) ...दे पुत्र सा० हेमराज पुत्र समुद्रपाल भार्या.... श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनप्रभ सूरि अन्वये । श्री जिनसर्व सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[1957]

(१) ॥ ॐ ॥ सं० १४०६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ बुधवारे श्री ऊकेश वंशे नाहट शाखायां । सा० माजण पुत्र सा० व

(२) णवीर पुत्र सा० जोमा । वीसल रणपाल प्रमुख पौत्रादि परिवार सहितेन श्री करहेटक स्थाने श्री पार्श्व

(३) नाथ भुवने श्री विमलनाथ देवस्य देवकुलिका कारापिता ॥ प्रतिष्ठिता श्री खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सू-

(४) रीणामनुक्रमे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टकमलमार्तंडमंडलिः श्री मज्ञानसागर सूरिभिः ॥ शिवमस्तु ॥

(५) वरसंग देवराज पुन्यार्थः ॥



नागदा — मेवाड़ ।

श्री शांतिनाथ जी का मंदिर।

मूलनायक की श्वेत पषाण की विशाल मूर्ति की चरण चौकी पर ।

[1958] *

(१) संवत् १४९४ वर्षे माघ सुदि ११ गुरुवारे श्री

(२) मेदपाट देशे श्री देवकुल पाटक पुरवरे नरेश्वर श्री मोकल पुत्र

(३) श्री कुंभकर्ण नृपति विजयराज्ये श्री उंसवंसे श्री नवलक्ष शाष मंडन सा० लक्ष्मी

(४) धर सुत सा० लाधू तत्पुत्र साधु श्री रामदेव तद्भार्या प्रथमा मेला दे द्वितीया माल्हण दे । मेला दे कुक्षि संभूत

(५) सा० श्री सहणपाल । माल्हण दे कुक्षिसरोजहंसोपम श्री जिनधर्मकर्पूरवासित धीनुक सा० सारंग तदंगना हीमा दे लखमा दे

(६) प्रमुख परिवार सहितेन सा० सारंगेन निजभुजापार्जित लक्ष्मी सफली करणार्थं निरुपममद्भुतं श्रीमहत् श्री शांति जिनवर विंबं सपरिकरं कारितं

(७) प्रतिष्ठितं श्री वर्द्धमानस्वाम्यन्वये श्री खरतरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनवर्द्धन सूरि त (स्त) त्पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि न (स्त) त्पट्टपूर्वाचलचूलिका म.

---

* यह लेख "भावनगर इन्सक्रिपशन" पृ० ११२-११३ में और "देवकुलपाटक" पृ० १६ नं० १८ में प्रकाशित हुआ है।

हस्तकरावतारैः श्री मज्जिनसागर सूरिभिः ॥

(७) सदा वन्दंते श्रीमद् धर्ममूर्ति उपाध्यायाः घटितं सूत्रधार मदन पुत्र धरणा सोम-
पुराध सूत्रधारः रोमी जुंरो रुयोवीकाव्यां ॥ आचंद्रार्क्कं नंद्यात् ॥ श्रीः ॥ छ ॥

सभामंडप के बायें तर्फ स्तम्भ पर।

[1959]

(१) संवत् १८७९ वर्षे वैशाष सुदि ११ सोमे साहजी श्री जेठमल जी ताराचंद जी
कोठारी जात श्री .... साहजी श्री उदेचंदजी ....

पाषाण की टूटी चौवीसी पर।

[1960]

(१) ॐ सं० १४९५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ बुधवारे ऊकेश वंशे नवलक्षा गोत्रे साधु श्री
रामदेव पुत्रेण माल्हण देवि पुत्र ......

(२) कारकेण निज भार्या। जिनशासन प्रभाविकाया हेमा दे श्राविकाया पुण्यार्थं श्री
सप्ततिशतं जिनानां कारितं ......

(३) तत्पट्टे श्री जिनसागर सूरिभिः।



देलवाड़ा-मेवाड़। *

श्री पार्श्वनाथजी का बड़ा मंदिर।

मूलनायकजी पर।

[1961]

सं० १४७८ श्री पार्श्वनाथ बिंबं सा० सहणा ......

---

* यह स्थान प्राचीन है। "देव कुलपाटक" नामकी पुस्तक में लेखों के साथ यहां का वर्णन है।

पुंडरिकजी के मूर्ति पर।

[1962]

संवत् १६०७ वर्षे आषाढ वहुल ४ शनौ देलवाड़ा वास्तव्य शावर गोत्रे ऊकेश ज्ञातीय वृद्धशाखीय सा० मानाकेन भा० हीरा रामा पुत्र लाया रांगा फया युतेन स्वश्रेयसे श्री पुंडरीक मूर्तिः कारापितं प्रतिष्ठितं संडेर गच्छे भ० श्री मानाजी केसजी प्र० ॥

आचार्यों के मूर्ति पर।

[1963]

. . . .

. . . जिनरतन सूरिगुरु मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता . . .

. . . .

[1964]

संवत् १४०६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ दिने नवलखा शाखीय सा० रामदेव भार्यया श्री मेला देव्या श्री जिनवर्द्धन सूरि मूर्तिः कारिता प्र० श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

[1965]

संवत् १४०६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ सा० रामदेव भार्या मेला देव्या श्री [illegible] मूर्तिः कारिता प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

श्वेत पाषाण की कायोत्सर्ग मूर्तियों पर।

[[illegible]] *

(१) ॥ ६० ॥ संवत् १४६३ वर्षे वैशाख वदि ५ . . . . . [illegible]
ज्ञातीय [illegible]

* [illegible]

(२) लाछि पुत्र दपा भार्या देवल दे पुत्र ३ व्यव ...... कुंरपाल सिरिपति नर दे
धीणा पंडित लषमसी आ-

(३) त्मश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ जिनयुगल कारापितः प्रतिष्ठितः कछोलीवाल गछे पूर्णिमा
पक्षे द्वितीय शाखा-

(४) यां भट्टारक श्री भडेश्वर सूरि संताने तस्यान्वये भ० श्री रत्नप्रभ सूरि तत्पट्टे
भट्टारक श्री सवाण-

(५) द सूरीणा शिष्य लषमसीहेन आत्मश्रेयोर्थं कारापितः प्रतिष्ठितः भ० श्री सर्वा-
णद सूरी-

(६) णामुपदेशेन ॥ मंगलाभ्युदयं ॥

[1967]

(१) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रमादित्य संवत् १५०० वर्षे वैशाष शुदि ३ श्रीमाल-
ज्ञातौ मांथलपुरा गोत्रे सा०

(२) देल्हड़ संताने सा० काला तत्पुत्र सा० मेला केला मेला पुत्र सा० सोमा स० सा-
यरकेन पुत्र हुंफण पुत्र

(३) तोला सोमा पुत्र महिपति डुंगर भाषर सायर पुत्र बाछा पासा हुंफण पुत्र वस्त-
पाल त......

(४) ल रत्नपाल कुमरपाल तोला पुत्र नरपाल नरपति प्रभृति पुत्र पौत्रादि सहितेण

पट्टों पर ।

[1968]

सं० १४९४ वर्षे फाल्गुन वदि ५ प्राग्वाट सा० देपाल पुत्र सा० सुहडसी भार्या सुहडा दे
पुत्र पीठलिआ सा० करणा भार्या चनू पुत्र सा० धांधा हेमा धर्मा कर्मा हीरा काला
भ्रात् सा० हीसाकेन भार्या लाखू पुत्र आमदत्तादि कुटुंबयुतेन श्री द्वासप्तति जिनपट्टिका
कारिता प्रतिष्ठिता श्री तपागछनायक श्री सोमसुंदर सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[1969]

सं० १५०३ वर्षे आषा० शु० ७ प्राग्वाट सा० देपाल पु० सा० सुहडसी भा० सुहडा दे सुत पीबजलिआ सा० करणा भार्या वनू पुत्र सा० धांधा हेमा धर्मा कर्मा ही रा होसा काला सा० धर्माकेन भा० धर्माणि सुत महसा साङ्गिन सहजा सोना साजणादि कुटुंबयुतेन एवं जिनपट्टिका कारिता ॥ प्रतिष्ठिता श्री तपागच्छाधिराज श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री जय चंद्र सूरिभिः ॥

[1970]

सं० १५०६ फा० शुदि ए श० सा० सोमा भा० रूडी सुत सा० समधरेण भ्रातृ फाफा जोधा तिहुणा गोविंदादि कुटुंबयुतेन तीर्थ श्री शत्रुंजयगिरिनारावतार पट्टिका का० प्र० श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥

भोंयरे में।

मूलनायकजी पर।

[1971]

१४९४ ऊकेश सा० वाछा राणी पुत्र वीसल खीमाई पुत्र धीरा पत्नी सा० राजा रत्ना दे पुत्री माल्हण देव का० आदि बिंबं प्र० तपा श्री सोमसुंदर सूरिभिः ॥

पट्ट पर।

[1972]

सं० १४७५ वै० शु० ३ ऊकेश वंश सा० [illegible]
सा० रामदेव भार्या मेला दे पुत्र सं० [illegible]
सुतया श्री नन्दीश्वर पट्टः कारितः प्रतिष्ठि[illegible]
सुंदर सूरिभिः स्थापितः तपा श्री [illegible]

[1973]

सं० १५०३ वर्षे आषा० शु० ७ प्राग्वाट सा० आका ना० जसल दे चांपू पुत्र सा० देल्हा जूठा सोना षीमाद्यैः चतुर्विंशति जिन बिंबं पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सोमसुंदर सूरि शिष्यैः श्री जयचंद्र सूरिभिः ॥

देहरी में।

मूलनायकजी पर।

[1974]

सं० १४९५ ज्येष्ठ सुदि १४ बुधे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं ज्ञानसिरि श्राविकया। प्र। श्री जिनसागर सूरिभिः। श्रीमाल ज्ञातीय नांभिया गोत्रे।

पट्टों पर।

[1975]

सं० १४९५ वर्षे ज्येष्ठ सु० १४ बुधे श्री ऊकेश वंशे नवलक्षा शाषायां सा० राम भार्या नारिंग दे पुण्यार्थं श्री श्री सिद्धिशिलाकायां श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरिभिः।

[1976]

(१) ॥ संवत् १४६९ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ ॥ ऊकेशवंशशृंगारो भुवन पाल इत्यभूत्। भुवनं पालयत् यः स्वुंनामनिन्ये (?) यथार्थतः ॥ १ ॥ तदन्वये ततो जात ··· तक ······

(२) त्यः पृथु प्रतापी ननु गोप तापी। जिनांघ्रिरक्तो गुरुपादलक्तो। गुणानुरागी हृदय विरागी ॥ ४ ॥ युगलकं ॥ तस्यांगना ··· ग कुरंगनेत्रा सीतेव ······

(३) धार महितेन सा० सहणा सुश्रावकेण जिनमातृ पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य बिंबं चतुर्विंशति पट्टक विंशति विहरमानादि ······

[1977]

(१) संवत् १४९१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे नवलक्ष गोत्रे सा० रामदेव भार्या मेला
(२) दे पुत्र सहणपाल भार्या नारिंग देव्या श्री . . . . जिन मूर्ति बिंबानि प्र-
(३) तिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरिभिः ॥

दरवाजों पर।

[1978]

(१) संवत् १४७७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ गुरुवासरे . . . . . .
(२) . . . .

[1979]

(१) श्री ॥ सं० १४७३ नागपुरे ऊकेश वंशे सा० हीरा भा० धर्मिणि पुत्र्या सरस्वती
पत्तनवासि सा० हीरा सुत सा० संग्राम सिंह भार्यया सम्यक्त्वदेशविरत्यादि गुण
(२) युक्तया श्रा० देऊ नाम्न्या न्यायोपा(र्जि)तं निजवित्त व्ययेन तपापक्षे श्रीआदिदे-
वप्रासादे श्रीपार्श्वनाथ देवकुलिका कारिता प्र० गच्छनायक श्रीसोमसुंदर सूरिभिः।

[1980]

(१) सं० १४७४ वर्षे श्री अणहिल्लपुरवासि श्री श्रीमालज्ञाति सा० समरसी पुत्रेण सा०
सोमाकेन संप्रति अहमदावादपुरवासी तद्भार्या . . . . . .
(२) सुत सो० दाधादि कुटुंबयुतेन श्री तपापक्ष श्री आदिनाथ प्रासादे श्री अजित
देवकुलिका कारिता प्रतिष्ठिता श्री तपापक्षे श्री सोमसुंदर सूरिभिः।

[1981]

(१) ॥ ॐ ॥ संवत १४७६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ बुधे [illegible]
(२) सा० रामदेव [illegible]
(३) . . . . . . श्री आदिनाथ [illegible]

(४) श्री खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[1982]

(१) ॥ संवत् १४७६ वर्षे कार्तिक सुदि ११ सोमे ॥ ऊकेश ज्ञातीय सा० वाहड़ भार्या सुघुव दे पु० राना साना सलषाके(न) निज मातृपितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ प्रासादे श्री सुमतिनाथ देव प्रतिमा

(२) कारिता ॥ ऊकेश गच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने प्रतिष्ठितं । श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥ व ॥ श्री ॥ मल्लधारीयकैः ॥

[1983]

(१) सं० १४७७ फा० सु० ७ श्रीमाल ज्ञा० सा० . . . . . .

(२) देवकुलिका कारिता प्रतिष्ठिता तपागच्छनायक श्री सोमसुंदर सूरि श्री मुनि सूरिभिः ॥ श्री अणहिलपुरपत्तन वास्तव्य

[1984]

(१) ॥ ॐ ॥ संवत् १४९२ वर्षे माघ सुदि ५ बुधवारे ऊकेश वंशे श्री नवलखा गोत्रे श्री रामदेव भार्या श्राविका मेला दे पुत्र साधु श्री सहणपाल भार्यया नारिंग दे श्राविकया पुत्र सा० रणमल्ल सा० रणधीर रणभ्रम सा० कर्मसी पौत्रादि सहितया निज पुण्यार्थं जिनानां

(२) . . . .
श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनवर्द्धन सूरि तत्पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि तत्पट्टपूर्वाचल श्रीयुत श्री जिनसागर सूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥ व ॥ व ॥ व ॥ व ॥ व ॥

नये मंदिर में ।

मूलनायकजी पर ।

[1985]

॥ सं० १४९२ वर्षे वैशाख सुदि २ श्री पार्श्वनाथ बिंबं ॥ सा० समुदय वच्छस्य ॥

कायोत्सर्ग मूर्तियों पर

[1986]

(१) ॥ ॐ ॥ सं० १४६४ वर्षे आषा० शु० १३ दिने गूर्जर ज्ञातीय म-
(२) एसालो सावण सुत मं० जयतल सुत मं० सादा भार्या सूमल
(३) दे सुत मं० वरसिंह भ्रातृ मं० जेसाकेन भार्या श्रृंगार दे पुत्र
(४) हरिचंद्र प्रमुख सकल कुटुंबसहितेन स्वश्रेयसे प्रभु
(५) श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्री सूरिभिः ॥

[1987]

॥ ॐ ॥ संवत् १४७५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ गुरुवारे श्रीमाल ज्ञातीय मंत्रि . . . . एं प्रा सुत नंदिगेल । सुत पुत्र सा० आसा सुश्रावकेण श्री पार्श्वनाथ बिंब स्वपुण्यार्थे कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

आचार्यों के मूर्तियों पर ।

[1988]

॥ ॐ ॥ सं० १३७१ वैशाष वदि ५ श्रीपत्तने श्री शांतिनाथ विधि चैत्ये श्री जिनचंद्र सूरि शिष्यैः श्री जिनकुशल सूरिभिः श्री जिनप्रबोध सूरि मूर्तिः प्रतिष्ठिता ॥ कारिता च सा० कुंमरपाल रत्नैः सा० महणसिंह सा० देपाल सा० जगसिंह सा० मेहा सुश्रावकैः सपरिवारैः स्वश्रेयोर्थं ॥ छ ॥

[1989]

संवत् १४९१ वर्षे माह सुदि ५ बुधे नवलक्ष गोत्रे सा० महूणपालेन स्वपुण्यार्थं श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरीणां मूर्त्ति प्र० श्री जिनसागर सूरिभिः ॥

ऋषभदेवजी का मंदिर।

पंचतीर्थियों पर।

[1990]

सं० १५१० पौष वदि १० घांघ गोत्रे सा० सारंग जा० सुहासिणि सु० सा० कालू सा० चाहड़ नामाभ्यां पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री मलधारि गछे श्री विद्यासागर सूरि पट्टे श्री गुणसुंदर सूरिभिः ॥

[1991]

॥ संवत् १५१५ वर्षे माह वदि ए शुक्रे श्री संडेर गछे ऊ० काश्यप गोत्रे सा० षेता पु० षीमा जा० षीमसिरि पु० चुडा जा० जरमी पु० पूजा नयमा वीढा रंगा सहितेन श्री नेमिनाथ बिं० कारितं प्रति० श्री ईश्वर सूरिभिः ॥

[1992]

॥ सं० १५७२ वर्षे वैशाष सुदि पंचमी सोमे। ऊ० ज्ञा० काठड़ गोत्रे। दो० ऊदा जार्या ऊमा दे पु० दो० रूपा दो० देपा अमर नाथा। रंगा देवा जार्या दाडिम दे पु। पहिराज साल्हा रायमल्ल युतेन सुपुण्यार्थं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं श्री संडेर गछे श्री शांति सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

मूलनायकजी पर।

[1993]

ॐ॥ स्वस्ति सं० १४६ए वर्षे माघ . . . . ६ रवौ श्रीमाल वंशे नावर गोत्रे ठ० ऊहड़ संताने श्री पुत्र मंत्रि करम . . . . श्रेयोर्थं लघु भ्रातृ ठ० देपालेन भ्रातृव्य ठ० जोजराज ठ० नयणसिंह जार्या माल्ह दे सहितेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गछे श्री जिनचंद्र सूरिभिः देवकुलपाटके।

श्याम पाषाण की पादुका पर।

[1994]

संवत् १४९१ वर्षे माघ वदि ५ दिने बुधे ऊकेश वंशे नवलखा गोत्रे साधु श्री रामदेव भार्या मेला दे तत्पुत्र साधु श्री सहणपालेन भार्या नारिंग दे पुत्र रणमल्लादि सहितेन देवकुलपाटके पूर्वाचलगिरा श्री शत्रुञ्जयावतार मोरनाग कुटिका सहिता प्रति० श्री खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि तत्पट्टे श्री जिनसागर सूरिभिः।

पट्ट पर।

[1995]

॥ ॐ ॥ संवत् १४७२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ गुरुवारे सा० आंबा पुत्र सा० वीराकेन स्वमातृ आंबा श्राविका स्वपुण्यार्थं ॥ श्री चतुर्विंशति जिन पट्टकः कारितः श्री खरतर गच्छे प्रतिष्ठितं श्री जिनवर्द्धन सूरिभिः॥

आचार्यों के मूर्तियों पर।

[1996]

संवत् १४६९ वर्षे माघ शुदि ६ दिने ऊकेश वंशे सा० सोपा संताने सा० सुहटा पुत्रेण सा० नान्हाकेन पुत्र वीरमादि परिवारयुतेन श्री जिनराज सूरि मूर्त्तिः कारिता प्रतिष्ठिता श्री खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरिभिः।

[1997]

सं० १४६९ वर्षे सा० रामदेव भार्यया मेला दे श्राविकया स्वभ्रातृस्नेहवशया श्री जिनदेव सूरि शिष्याणां श्री मेरुनंदनोपाध्यायानां मूर्त्तिः कारिता प्रतिष्ठिता श्री जिनवर्द्धन सूरिभिः॥

श्री पार्श्वनाथजी की बसी।

पंचतीर्थी पर।

[1998]

॥ सं० १२०१ वर्षे आषाढ सुदि १० रवौ श्री देवाभिदित गच्छे श्री शील सूरि संताने आमण पुत्रेण कनुदेवेन भ्रातृ सुंभदेव श्रेयोर्थं आत्मश्रेयोर्थं च प्रतिमा कारिता।

तपागच्छ का उपासरा।

पंचतीर्थियों पर।

[1999]

सं० १२७२। गोसा भ्रातृ जेजा भार्या हेमा .... श्रेयोर्थं प्रतिमा कारिता॥

[2000]

सं० १४७४ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ उपकेश वंशे नोसतिकि (?) शाखायां लाहू वाल भा० माल्हण दे लापाकेन भ्रातृ पुंजा भा० मेला दे .... पितृ श्रे० शांतिनाथ बिंब कारितं प्र० श्री जयप्रभ सूरिभिः।

[2001]

ॐ सं० १४७४ वैशाप वदि ७ बुधे ...... बिंबं कारितं श्री ......।

[2002]

॥ ॐ सं० १५२० वर्षे ज्येष्ट सु० ५ शुक्रे ऊ० भूगलिया गोत्रे सा० सूरा भा० सुहमा दे पु० धणपाल भा० लाखल दे ...... द्दा निमित्तं श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संडेर गच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने प्रतिष्ठितं श्री शालिभद्र सूरिभिः॥

धातु की मूर्ति पर।

[2003]

सं० १७०२ आषाढ़ सुदि १० श्री ऋषभनाथ बिंबं का० हरषा लोत ......।

DEVALVARHA (MEWAR) INSCRIPTION
Dated, V. S. 1491 (A D. 1434)

पाषाण की मूर्तियों पर।

[2004]

सं० १४ए१ वर्षे माह सुदि ५ बुधे खरतर गच्छे नाग.... मुनिचंद्र शिष्य ज०यराज गणि पार्श्वनाथ विंवं......।

[2005]

सं० १३एए वर्षे माह सु० १३ श्री प्र... लू ज्ञा०... कुंथुनाथ.......।

शिलालेख

[2006]

(१) ॥ ॥ श्रेयः श्रेणिविशुद्धसिद्धलहरीविस्तारहर्षप्रदः श्री मत्साधुमरालकेलिरणिभिः

(२) प्रस्तूयमानक्रमः। पुण्यागण्यवरेण्यकीर्तिकमलव्यालोललीलाधरः सोयं मानससत्सरो

(३) वरसमः पार्श्वप्रभुः पातु वः ॥ १ ॥ गंभीरध्वनिसुंदरः क्षितिधरश्रेणिभिरासेवितः सारस्तोत्रप-

(४) वित्रनिर्जरसरिद्वृद्धिष्णुसज्जीवनः। चंचज्ज्ञानवितानभासुरमणिप्रस्तारमुक्तालयः सोयं

(५) नीरधिव... भाति नियतं श्री धर्मचिंतामणिः ॥ २ ॥ रंगद्गांगतरंगनिर्मलयशः कर्पूर पूरोद्धुरा-

(६) मोदक्षोदसुवासितत्रिभुवनः क्षुत्तप्रमादोदयः। भास्वन्मेचककज्जलद्युतिभरः शेषाहि-

(७) राजांकितः श्री वामेयजिनेश्वरो विजयते श्री धर्मचिंतामणिः ॥ ३ ॥ उग्रार्थसंपादन-कल्पवृक्षः

(८) प्रत्यूहपांशुप्रशमे पयोदः। श्री धर्मचिंतामणिपार्श्वनाथः समग्रसंघस्य ददातु भद्रं ॥ ४ ॥ संवत्

(९) १४९१ वर्षे कार्तिक सुदि २ सोमे राणा श्री कुंभकर्णविजयराज्ये उपकेश ज्ञातीय साह सह·

(१०) णा साह सारंगेन मांडवी उपरे लागू कीधु। सेलहथि साजणि कीधु अंके टंका चऊद १४ जुको

(११) मांडवी लेस्यइ सु देस्यई। चिहु जणे बइसी ए रीति कीधी। श्री धर्मचिंतामणि पूजानिमित्ति। सा०

(१२) रणमल महं डूंगर से० हाला साह साडा साह चांप बइसी विहु रीति कीधी एह बोल

(१३) लोपवा को न लहइं। टंका ५ देउलवाडानी मांडवी ऊपरि टंका ४ देउलवाडाना मापा उप

(१४) रि। टंका २ देउलवाडाना मण हंड वटा ऊपरि। टंका २ देउलवाडाना पारी वटां ऊपरी।

(१५) टंकाउ १ देउलवाडाना पटसूत्रीय ऊपरी॥ एवं कारई टंका १४ श्री धर्मचिंतामणि पूजा

(१६) निमित्ति सा० सारंगि समस्त संघि लागु कीधउ॥ शुभं भवतु॥ मंगलाभ्युदयं॥ श्रीः॥

(१७) ए आसु जिको लोपइ तहेरगहिं राणा श्री हमीर राणा श्री षेता राणा श्री लाषा रा० मोकल

(१८) राणा श्रीकुंभकर्णनी आणठइ। श्रीसंघनी आण। श्रीजीराउला श्रीशत्रुंजयतणा सम॥

देवी मूर्ति पर।

[2007] *

॥ सं० १४९८ वर्षे मार्ग शु० १० दिने मोढ ज्ञातीय सा० वउहत्थ भार्या साजणि सुत सं० मानाकेन अंबिका मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता श्री . . . . . . रिभिः॥

* महात्मा श्रीलालजी माणावाल के यहां मूर्ति है।

खंडहर उपासरा।

शिलालेख

[2008]

सूर्य 

चंद्र 

(१) परमात्मने नमः

(२) ॥ ॐ ॥ प्रणम्य श्री सूर्यदेवाय सर्व्वसुखंकर प्रभो। सर्वलब्धिनिधानस्य तं

(३) सत्यं प्रणमाम्यहं ॥ १ ॥ मेदपाटे गिरो देसे गिरजागिरस्थानयो तां नगरो उ-

(४) त्तमा झेया देवको प्रमपट्टणो २ तत्र राज्ञा श्रेयो झेयाः राघवो राज्य मा-

(५) नयोः षट्दर्शनसदामान्यः श्वेतांवरा अन्निश्रियो ३ श्रीमदंचल ग-

(६) छेस्या श्री उदयसागर सूरिणा। तस्य आज्ञा कारेण चारित्र रत्न-

(७) गुर प्रभौ ४ शिष्य लक्ष्मीरत्नस्य साधुमुद्रा सदा सुखी। राजधर्म स्न-

(८) नेहादि जिनमंदिर करापितं ५ कोटिवर्षचिरंजीवो बहुपुत्र-

(९) गजवाजिना अचलं मेरुकर्णोयं राज्यं पालति राघवः ६ जे

(१०) अन्य राजा स्वईवः लोपतो परदत्तयो नरकं ते नरा जाति ज-

(११) स्य धर्मस्य अवृथा ७ सं० १७७७ वर्षे माघ सुदि ५ तिथौ गुरु-

(१२) श्री चतुराजी शिष्य कुशलरतन लक्ष्मीरतन उपासरो करा

(१३) यौ श्री पुण्यार्थे। श्री राज श्री राघव देवजी वारके देववाडा

(१४) नगरे श्रीसंघ समस्तां साध अर्थे पं लिखमीरतन चेला हेमरा-

(१५) ज उपासरो करायो वीजो को रहे जणीहे गाय

(१६) मान्यारो पाप है जनी आंचल्या टाल रहेवा पावे नहीं

दरवाजे की छतरी पर का लेख।

[2009]

श्री गणेश ... रतन चेला हेम ... कारापितं ॥ साह अपा साह नाराण साह ठाकुरसी साह हेमा साह हमीर साह छुना साह सिवा साह हर ... साह फतेल साह मेघा साह जोपा साह विरधा कटाऱ्या चतुरा कीथा सगता ... समसथ श्रावका ... लपाणा श्री राघवदेवजी बारको मंदिर कारा ... लक्ष्मीरतन सं० १८०५ माघ सुदि १३ शुक्रे प्रतिष्ठा करावो ... लक्ष्मीरतन ...... ॥



कलकत्ता।

श्री आदिनाथजी का देरासर – कुमारसिंह हाल।

पंचतीर्थियों पर।

[2010]

सं० १४६८ वर्षे मागसिर वदि ११ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय संघ गोवल भार्या माल्हण दे तयोः सुतः महमाझ्याकेन श्री सुमतिनाथ स्वामी बिंबं कारापितं श्री जिनहंस गणि श्रेयोर्थं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ऊमईज वास्तव्यः।

[2011]

संवत् १५२३ वर्षे आषाढ सुदि १० बुधे श्री श्री (माल) वंशे ॥ सं० कर्मा भार्या जासू पुत्र सं० पीमा भार्या चमकू श्राविकया पुत्री कर्माई पुण्यार्थं श्री अंचल गच्छे श्री जयकेसरि सूरिणामुपदेशेन चंद्रप्रभ स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥ श्री पत्तन नगरे ॥



दरवाजे की छतरी पर का लेख।

[2009]

श्री गणेश ... रतन चेला हेम ... करापितं ॥ साह अषा साह नाराण साह ठाकुरसी साह हेमा साह हमीर साह लुना साह सिवा साह हर ... साह फतेल साह मेघा साह जोपा साह बिरधा कटाव्या चतुरा ऊीथा सगता ... समसथ श्रावका ... लपाणा श्री राघवदेवजी वारको मंदिर कारा ... लक्ष्मीरतन सं० १७०५ माघ सुदि १३ शुक्रे प्रतिष्ठा करावो ... लक्ष्मीरतन ...... ॥



कलकत्ता।

श्री आदिनाथजी का देरासर – कुमारसिंह हाल।

पंचतीर्थियों पर।

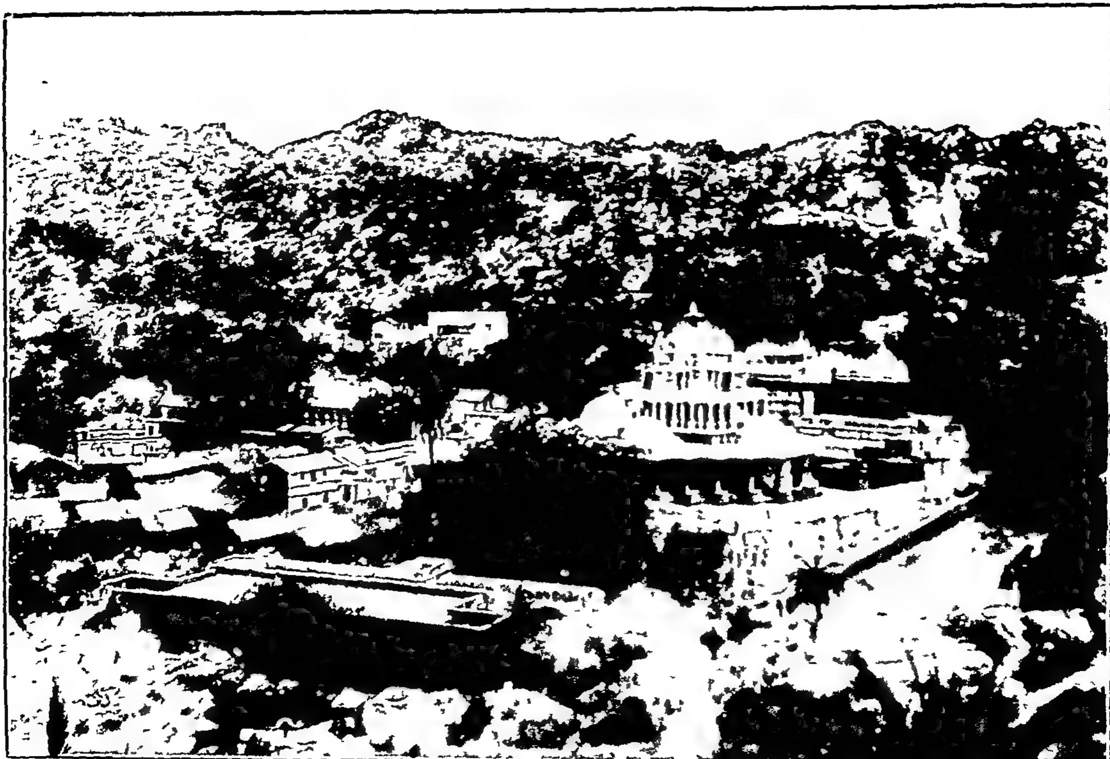
[2010]

सं० १४६८ वर्षे मागसिर वदि ११ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय संघ गोवल भार्या माल्हण दे तयोः सुतः महमाइयाकेन श्री सुमतिनाथ स्वामी बिंबं कारापितं श्री जिनहंस गणि श्रेयोर्थं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः उग्रईज वास्तव्यः।

[2011]

संवत् १५२३ वर्षे आषाढ सुदि १० बुधे श्री श्री (माल) वंशे ॥ सं० कर्मा भार्या जामू पुत्र सं० पीमा भार्या चमकू श्राविकया पुत्री कर्माई पुण्यार्थं श्री अंचल गच्छे श्री जयकेसरि सूरिउपदेशेन चंद्रप्रभ स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥ श्री पत्तन नगरे ॥





TIRTHA ABU — Dilwara Temples

आबू-रोड।

श्री आदिनाथ जी का मंदिर–धर्मशाला।

पंचतीर्थी पर।

[2012]

सं० १५०९ वै० व० ११ शुक्रे श्री कोरंट गच्छे श्री नन्नाचार्य संताने। उवएस वंशे। शंखवालेचा गोत्रे श्रे० लषमसी भा० सांसल दे पु० रामा भा० राम दे पु० तेजा नाम्ना स्वमातापित्रोः श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिं० का० प्र० श्री सांवदेव सूरिभिः।

चौवीशी पर।

[2013]

॥ सं० १५३७ वर्षे माघ सुदि १३ गुरौ श्री उदयसागरगुरूपदेशेन श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० मेघा भा० माणिकदे सुत श्रे० नाईयाकेन भा० षाल्हा सु० गहिगा राघव ठाईया तथा द्वि० भा० नामल दे प्रमुख कुंटुंवयुतेन श्री संभवनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारिताः प्र० श्री वृहत्तपा गच्छे ज्ञानसागर सूरिभिः।



आबू-तीर्थ।

श्री आदिनाथजी का मंदिर–देलवाड़ा।

पाषाणकी कायोत्सर्ग मूर्ति पर।

[2014]

(१) संवत् १४०९ वर्षे वैशाष मासे शुक्ल पक्षे ५ पंचम्यां तिथौ गु-

(२) रुदिने श्री कोरंट गच्छे श्री नन्नाचार्य संताने महं कउंरा
(३) जार्या महं कुंरदे पुत्र महं मदन नर पूर्णसिंह जा० पूर्णसि-
(४) रि सुत महं डुड्डा मं० धांधल मूल मं० जसपाल गेदा रुद्रा प्रभृति स-
(५) मस्त कुंटुबं श्रेयसे श्री युगादि देव प्रसादे महं धांधुकेन श्री जिन-
(६) युगलद्वयं कारितं प्रतिष्ठितं श्री नन्न सूरि पट्टे श्री कक्क सूरिजिः ।

धातु की मूर्ति पर ।

[2015]

सं० १५२१ वर्षे वैशाष सुदि १० रवौ सं० रत्ना सं० पन्नाज्यां श्रीशातिनाथ विंबं का० ।

पंचतीर्थी पर ।

[2016]

सं० १४७१ वर्षे माघ सुदि १३ बुधे प्रा० व्य० लषमण जा० रूडी पु० जीवाकेन पित्रो आत्मश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रति० ब्रह्माणीय गछे ज० श्री उदयाणंद सूरिजिः ।

चौवीशी पर ।

[2017]

सं० १४७५ प्राग्वाट व्य० डूंगर जार्या जम दे पुत्र व्य० माल्हाकेन जा० माल्हण दे पुत्र कीजा जीनादि युतेन श्री सुपार्श्व चतुर्विंशतिका पट्टः कारितः प्रतिष्ठितस्तपा गछे श्री सोमसुंदर सूरिजिः ।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर—अचलगढ़ ।

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[2018]

ॐ सं० १३०२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ए शुक्रे . . . . ।



[2019]

सा० धन्ना श्रावकेण श्री आदिनाथ बिंबं कारितं।

[2020]

पं० मांजू श्राविकया श्री सुमतिनाथ कारितं . . . . .।

[2021]

श्री खरतर गच्छे श्री पार्श्वदेवद्वितीयभूमौ पार्श्वनाथ सा० माखा भा० मांजू श्राविका कारितः।

देवी की मूर्ति पर।

[2022]

सं० १५१५ वर्षे आषाढ वदि १ शुक्रे श्री ऊकेश वंशे दरडा गोत्रे सा० आसा भा० सोखु पुत्रेण सं० मंडलिकेन भा० हीराई सु० साजण द्वि० भा० रोहिणि प्र० भ्रा० सा० पाल्हादि परिवार संयुतेन श्री चतुर्मुख प्रासादे श्री अंबिका मूर्ति का० श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

श्री ऋषभदेव जी का मंदिर—अचलगढ़।

पाषाण की कायोत्सर्ग मूर्ति पर।

[2023]

सं० १३०२ वर्षे . . . . अमरचंद्र सूरि जयदेव सूरिभिः।

पंचतीर्थी पर।

[2024]

सं० १५२० वर्षे आ० सु० ९ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० सा . . . . . . भा० रूपिणि सुत सोमा दे भा० वीकमादि कुटुंबयुतेन श्री मुनिसुव्रतनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री तपागच्छनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

धातु की मूर्तियों पर ।

[2025]

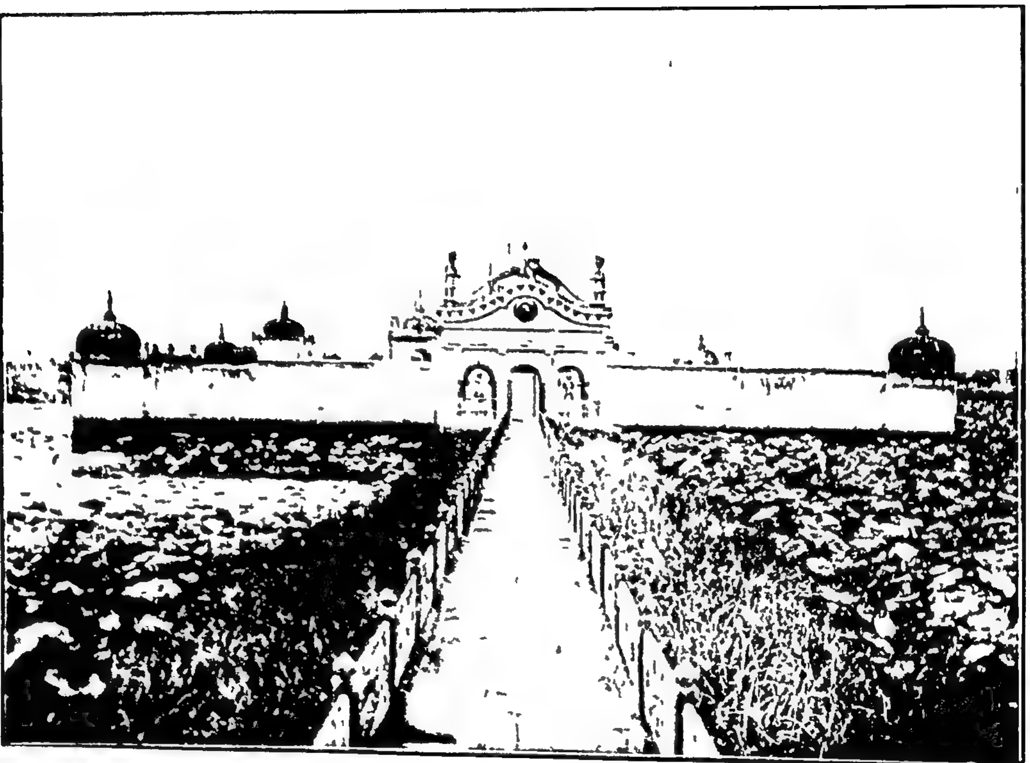
सं० १५२५ फा० सु० ७ शनि रोहिण्यां श्री अर्बुदगिरौ देवड़ा श्री राजधर सायर डूंगर-सिंह विजय राज्ये सा० ता भीमचैत्ये गूर्जर श्रीमाल राजमान्य मं० मंडन भार्या मोली पुत्र मं० शूद्र पु० मं० गदाभ्यां भार्या हासी पद्माई मं० गदा भा० आसू पुत्र श्रीरंग वाघादि कुटुंबयुताभ्यां १०८ मन प्रमाण सपरिकर प्रथमजिन बिंबं कारितं तपागच्छनायक श्री सोम-सुंदर सूरि पट्टे श्री मुनिसुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरि पट्ट प्रभाकर श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री सुधानंदन सूरि श्री सोमजय सूरि महोपाध्याय श्री जिनसोमगणि प्रमुख । विज्ञानं सूत्रधार देवाकस्य श्री रस्तु । कृतं मेवाड़ ज्ञातीय सूत्र-धार मिहीपा भा० नागल सुन सूत्रधार देवा भार्या करमी सुत सू० हला गदा हांपा नाला हाना कलाः सहित व्यापायताः ।

[2026]

संवत् १५२९ वर्षे वैशाख वदि ४ शुक्रे डूंगरपुर नगरे राउल श्री सोमदास वि० रा० तत्प्रधान प्रभावक पुरंदर सा० साजा प्रमुख श्री संघोपक्रमेन . . . . श्री आदिनाथ बिंबं प्र० तपागच्छनायक श्री सोमसुंदर सूरि पट्टे मुनिसुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरि तत्पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरि श्री सोमजय सूरि महोपाध्याय जिनहंसगणि प्रमुख सुदरादि शिष्यै परिवार परिवृतः

[2027]

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुन सुदि १० सोमे श्री अचलगढ़ महादूर्गे महाराजाधिराज श्री जगमालविजयराज्ये सं० सालिग सुत सं० सहसा कारित श्री चतुर्मुखविहारे भद्र-प्रासादे श्री सुपार्श्व बिंबं श्री संघेन कारित प्र० तपागच्छ श्री सोमसुंदर सूरि संताने श्री कमलकलस सूरि शिष्य श्री जयकल्याण सूरिभिः भ० श्री चरणसुंदर सूरि प्रमुख परि-वार परिवृतैः श्रीरस्तु श्री संघस्य सूत्रधार हरदास ॥



TIRTHA PAWAPURI—JALAMANDIR
(Front View)

[2028]

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुन सुदि १० सोमे श्री अचलगढ़ महादूर्गे महाराजाधिराज श्री जगमालविजयराज्ये सं० सालिग सुत सं० सहसा कारित श्री चतुर्मुखविहारे मद्र-प्रासादे श्री आदिनाथ बिंबं श्री संघेन कारित प्र० तपागछ श्री सोमसुंदर सूरि संताने श्री कमलकलस सूरि शिष्य श्री जयकल्याण सूरिभिः भ० श्री चरणसुंदर सूरि प्रमुख परिवार परिवृतैः श्री रस्तु श्री संघस्य । सूत्रधार हरदास ॥



श्री पावापुरी तीर्थ ।

जल मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2029]

सं(व)त् १२६० ज्येष्ठ सुदि २ रेनुमा(?) पु० चोराकेनात्मश्रेयोर्थं श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री अभयदेव सूरिभिः

मूलवेदी के दाहिने तर्फ का लेख ।

[2030]

(१) सं० १६२९ मि: आसिन सुदि ६
(२) श्री मंदिरजी के वीच के फेरी में व: नी
(३) चे के फेरी में पत्थर वैठाया नानकचं-
(४) द जीवनदास जैन श्वेताम्बरी के तर
(५) फ से सा: कलकत्ता गुर्ज

सोने के चरण पर।

[2031]

सं० १९२३ डूगड़ धनपतसिंह कारापितं सर्व सूरि प्रतिष्ठित (श्री)संघस्य श्रेयसे जवतु।

दादाजी के चरण पर।

[2032]

१९५८ साल मिति अघन वदि १२ सोमवार निहालचंद इंद्रचंद डुगड़ तस्य परिवार प्रतिष्ठा कारापितं मुर्शिदावाद ॥ श्री जिन कु(श)ल सुरि महाराज का चरन ॥ शुजं जवतु ॥

समोसरन।

मंदिर का शिलालेख।

[2033]

(१) श्री शुज संवत् १९५३ मिती कातिक वदी
(२) त्रयोदशी मंगलवार श्री महावीर स्वामी जी के समोस
(३) रनजी में मंदिर कराया श्री संघ ने श्वेताम्बरी आमनाये
(४) वः मनिजर गोविन्द चंद सचेती विहारवाले के
(५) हस्ते वना। इदं प्रतिष्ठितं गंगारीखी जति

महताव बिबि का मंदिर।

शिलालेख।

[2034]

(१) संवत् १९३२ का मिति माघ शुक्ल १० तिथौ
(२) चंद्रवारे श्री मन्महावीर स्वामी मंदिर श्री वंगदे-

(३) शे । मकसुदाबादाजीमगंज वासिनी डुधेड़िया
(४) गोत्रे श्री नेमिचंद्र तस्य भार्या महताब कुमारि-
(५) णा कारापितं च श्री हर्षचंदजी तत् पुत्र बुधसीह
(६) बिसनचंद्रेण प्रतिष्ठा कारापिता । श्री बृहल्लोंपक
(७) गौर्ज्जराधिपति श्री अखयराज सूरि तत्पट्टाखंक्
(८) त श्री अजयराज सूरिणा प्रतिष्ठितं श्री शुभं भूयात् ।
(९) ॥ श्लोकः ॥ भवारण्यगोपालकं त्रैशलेयं । भवांबोधि-
(१०) संस्तारणे यानतुल्यं ॥ मुक्तिस्त्रिनाथं मयायं जिनेंद्रं
(११) प्रसंस्तौमि श्री वर्धमानं विभुं च ॥ १ ॥

गांव मंदिर ।

दक्षिण तर्फ के दिवार पर का लेख ।

[2035]

(१) श्री गांव मंदिर जि मे दक्ष
(२) ण पश्चिम उत्तर दालान
(३) तथा चारो कोठे मे पत्थल
(४) जैन श्वेताम्बर भंडार के तर
(५) फ से मैनेजर गोविंदचंद सुचं
(६) ति विहारवाले ने बैठाया शुभ
(७) सं० १९६४ आसिन वदि ५

सभा मंडप के दाहिने तर्फ के थाम्भे का लेख ।

[2036]

(१) श्रीमद्विर जीनेंद्र प्रणम्य श्री पावापुरी नगरी मधे आ श्री जिन
(२) बींव स्थानापन क्रोती स्वेतांबर आमनाय धारक शा० रूपचंद

(३) रंगीलदास देवचंद सा पाटन वाला हाल मुकाम येवला तथा मुंबई

(४) वालाये आगो खजार तथा सभा मंडपमां जमती सहीत आरस कराव्यो

(५) संवत् १९६० लं० सेवक उत्तमचंद वालचंद मंत्री नगरवाला।

सभा मंडप के बांये तर्फ के आले का लेख।

[2037]

(१) श्रीमद विर जिनेंद्र प्रणम्य श्री पावापुरी नगरी मधे आ श्री जि

(२) न बींब स्थापन्नं शा० रूपचंद रंगीलदास सा पाटन वा

(३) ला हाल मुकाम येवला तथा मुंबई स्वेतांवर आमना धारक वा

(४) ला ओ कराव्या छे संवत् १९६०

(५) मीस्त्री भाईचंद जगजीवन सलाट पालीताणा वाला।



हैदराबाद-दक्षिण। *

श्री पार्श्वनाथ जी का मंदिर-वेगम वजार।

मूलनायक जी पर।

[2038]

सं० १५५७ वर्षे ॥ महा सुदि ५ सोमे श्री पार्श्वजिन बिंबं कारितं . . . . . ।

पाषाण की मूर्ति पर।

[2039]

संवत् १५४७ वैशाख सुदि ३ श्री संघे भट्टारक जी श्री जिन तपापति वाक जी प्रति०

* यहां के लेख स्वर्गीय पं० बालचंद्रजी यति से प्राप्त हुवे थे।

श्री राजा जशसिंघ राज्ये . . . . . . ।

[2040]

संवत् १५४० वर्षे वैशाख सुदि १ श्री चंद्रप्रभु बिंबं कारापितं ।

धातु की प्रतिमाओं पर ।

[2041]

संवत् १६६० फागुण सुदि १२ साह मनोरथ सदापगामे प्र० . . . . . . ।

[2042]

संवत् १७०० वर्षे मार्ग० सुदि ९ शुक्रे राजनगर वास्तव्य ओसवंस ज्ञा० सा० वर्द्धमान तत्पुत्र सा० रायसिंघ केन स्वश्रेयोर्थं श्री पद्मावती बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा पं० श्री कीर्त्ति-रत्नगणिभिः ॥

[2043]

सं० १७०७ व० फा० सु० ८ सोमे श्रीमाली ज्ञा० सा० कुंवरजा भा० रतनबाई नाम्न्या उ० श्री विवेकहर्षजी श्री शांतिनाथ बिं० का० प्र० श्री तपा० भ० श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

पंचतीर्थियों पर ।

[2044]

सं० १५१२ माघ वदि . . . सोमे नागर ज्ञातीय श्रे० कर्मसी भा० फदू सुत जोगा नाम्ना भा० नटि सुत धनजयादि कुटुंबयुतेन श्री धर्मनाथ बिंबं का० प्र० वृद्धतपा श्री रत्न-सिंह सूरिभि ॥

[2045]

सं० १५३० वर्षे वैशाख वदि १२ बुधे वडाडवा गोत्रे ओस वंशे स० देवा भा० माल्ही सुत सा० धर्म्मा भा० मदू पुत्र नाथा धाना हीरादि कुटुंबयुतेन आत्म श्रे० श्री शीतलनाथ बिंबं का० प्र० श्री संडेर गछे श्री यशचंद्र सूरिभिः ॥ श्री ।

[2046]

संवत् १५६२ वर्षे माघ सुदि १५ दिने ऊकेश वंशे घोरवाड गोत्रे सा० वाचा भा० वाहिणि दे पुत्र सा० रंगाकेन भा० रत्ना दे पुत्र सा० माहा षेता वेता प्रमुख परिवारयुतेन श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनहंस सूरिभिः ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर—कारवान साहुकारी।

धातु की प्रतिमाओं पर।

[2047]

संवत् १३२२ वर्षे वैशाख सुदि ११ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय भा० जयतेन निजमातामह ठ० सोढ भा० ठ० प्रियादेवी श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री पृथ्वीचंद्र सूरि शिष्यैः श्री जयचंद्र सूरिभिः ॥

[2048]

संवत् १४५८ वर्षे फा० सुदि १ भौमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० धरणि सुत सिंघा श्रेयोर्थं तद् भ्रातृ श्रे० कान्हदेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छीय भट्टारक श्री देवसुंदर सूरिभिः ॥

[2049]

संवत् १४८१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० सामत भा० सामल दे सु० धर्माकेन भ्रातृ हीरा सिवा सहदे सहितेन पितृ मातृ श्रेयसे श्री अभिनंदन बिंबं का० प्र० मडाहड गच्छे श्री उदयप्रभ सूरिभिः ॥

[2050]

सं० १६३३ व० फा० सु० ८ सोमे श्रो० ज्ञा० सा० शिव सा० भा० सुजारादि पुत्र सा० रत्नाकेन भा० रतनबाई प्रमुख कुटुंबयुतेन श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा गच्छे विवेकहर्षगणिभिः ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर—रेसीडेन्सी वजार।

पंचतीर्थियों पर।

[2051]

संवत् १४९४ मा० सु० ११ ओस वंशे काल्हणसीह लाइणि सुत कोवापाकेन श्री अंचलगच्छ श्री जयकीर्ति सूरिणामु० श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः॥ श्रीः॥

[2052]

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ उकेश ज्ञातौ श्रेष्ठी गोत्रे म० कमला म० सिंगा भा० लखमा दे पु० साजण युतेन स्वश्रेयसे श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं श्री ककदाचार्य संताने प्रतिष्ठितं श्री देवगुप्त सूरिभिः॥

[2053]

संवत् १५३७ वर्षे महावदि १३ शुक्रवारे नूगाला गोत्रे सा० नाथू पुत्र सिंगा भार्या सुहडादे पुत्र सा० धेना भार्या हिमा दे पुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं श्री धर्मघोष गच्छे प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री मानदेव सूरिभिः॥

[illegible]

सं० १५४१ माघ सुदि १२ प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० [illegible] भा० [illegible] सुत [illegible] भा० लखी सुत हरदास सूरदासादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री [illegible] बिंबं कारितं प्रति ष्ठितं तपा गच्छे श्री [illegible] सागर सूरिभिः॥ [illegible]

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर—[illegible]

पंचतीर्थियों पर

[illegible]

[illegible]

[2056]

सं० १४०१ व० मार्ग० सु० ५ बा० चतुर नाम्ना श्री संखेश्वरपार्श्व बिंबं का० प्र० तपा श्री विजयहर्ष सूरिभिः ॥

[2057]

सं० १६६७ वर्षे फागुण सुदि ८ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय सा० सूरज कुटुंवयुतेन श्री शांति० बिं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गछे भट्टारक श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

[2058]

सं० १६७० व० फा० सु० ५ गुरौ दौलत्तीबाद उ० ज्ञा० सा० श्रीमंत भा० षमांबाई नाम श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० तपा गछे . . . . . . ।

[2059]

सं० १६७७ फा० सु० ५ बृ० ऊकेश वा० धीरा नाम्नी श्री शांति बिं० का० प्र० श्री तपा गछे विजयदेव सूरिभिः ॥

[2060]

सं० १७०१ (?) व० मा० र्ग० सु० द० ५ वा० वृ० प्रा० वा० कान्हू नाम्ना श्री पार्श्व-नाथ बिं० का० प्र० तपा श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

दादाजी के चरणों पर ।

[2061]

॥ संवत् १९६१ का वर्षे मिति माघ सुदि ५ गुरूवासरे श्री जं० युग प्रधान जगद् चूडामणि दादा साहिब १००८ श्री जिनदत्त सूरि गुरूराज चरणपाडुका श्री चारकवांण का श्रीसंघेन कारापितं । पं० चारित्रसुखेन प्रतिष्ठापितम् श्रीसंघस्य कल्याण खेम कुशलम् समुपस्थिता ॥ हैदराबाद ॥

[2062]

॥ सं० १९६१ वर्षे मि । माघ सु । ५ दिने । जं । युग प्र० १००८ दादा साहेब श्री जिन-कुशल सूरि पादुका । च्यारकवांण ।

[2063]

श्री जिनकुशल सूरि चरणकमल पादुकेभ्यो नमः ॥ शुभ संवत् १९६४ वैशाख धवल १० गुरुवासरे प्रतिष्ठितम् ॥



मद्रास । *

चंद्रप्रभस्वामी का मंदिर - शूला बजार ।

मूल मंदिर का लेख ।

[2064]

(१) ॥ संवत् १९५२ रा शाके १८१७ मासोत्तममासे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे तिथि दशम्यां रविवारे शूलाग्रामस्थः मालू गोत्रे सा० । कालू-

(२) राम रतनचंद खरतरगणोपासकेन कारापित जिनभवनं चंद्रप्रभु बिंबं स्थापितं खर-तर गच्छे क्षेमकीर्ति शाखायां विद्धामचंद्रगणि

(३) तच्छिष्य पं प्र । उदयचंद्रगणिः तच्चरणांतेवासी उपाध्याय नेमिचंद्रगण प्रतिष्ठितं जिनभवनं स्थापितं बिंबं च पं० । श्यामलाल साकम्

मूलनायक जी पर ।

[2065]

॥ संवत् १९६० वैशाख सुदि ६ . . . शान्तिं श्री मंदेन . . . . . . ।

---

* यहां के लेख स्वर्गीय पं० [illegible] से मिले हैं

मूर्तियों पर ।

[2066]

॥ सं० । १७२१ माह सुदि ७ गुरु । श्री चंद्रजिन बिंबं कारितं । श्री बृहत्खरतरगच्छीय भ० श्री जिनहंस सूरिभिः प्रति . . . . . . ।

[2067]

॥ सं० १७२१ माह ॥ सु० । ७ । गु । श्री सुमतिजिन बिंबं कारितं । श्री बृहत्खरतरगच्छीय भ० श्री जिनहंस सूरिभिः प्रति . . . . . . ।

धातु की पंचतीर्थी पर ।

[2068]

॥ सं० १५०५ वर्षे पोस सुदि १५ श्रा० विणवट गोत्र पा० स्तदा भा० मूदल दे पु । सहसा भा० सुहड़ दे पितृमातृ पु० श्री चंद्रप्रभो बिंबं कारितं प्र० श्री धर्मघोष गच्छे पूर्णचंद्र सूरि पट्टे श्री महेंद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

ताम्रपट्ट पर ।

[2069]

॥ संवत् १९७० रा शाके १८३५ रा ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ त्रयोदश्यायां चंद्र वासरे ॥ भट्टारक श्री जिनफत्तेंद्र सूरि प्रतिष्ठितं श्री मद्रास शूलामध्ये ॥

चंद्रप्रभस्वामी का मंदिर—साहूकार पेठ ।

शिलालेख ।

[2070]

(१) ॐ (२) ॥ नमः श्री वीतरागाय ॥

(३) ॥ श्लोकः ॥ आसीत्सूरिपदप्रतिष्ठितरणेः श्री हेमसूरिप्रभुस्तत्तरीठे प्रतिवादिवृन्द-

(४) भयदो विद्याकलानां निधिः ॥ श्री सूरीश्वरमूर्द्धवन्दितपदः श्री सिद्धसूरिर्गुरुर्ध-
(५) र्मोजोदयत्तारकस्येतिनिपुणो वर्वार्त्ति सर्वोपरि ॥ १ ॥ प्रासादस्य कृतास्य तेन
(६) विदुषा माघस्य शुक्ले बुधौ त्र्योदश्यां श्रुतिसप्तनन्दकुमिते श्री विक्रमाब्देऽधुना ।
(७) सौजन्यात्मृतसागरेण जगतां धर्म्मोपकाराय वै श्रीमज्जैनधुरंधरेण कृतिना नूतं
(८) प्रतिष्ठानघाः ॥ २ ॥ श्री विक्रम संवत् १९७२ माघ शुक्ल १३ बुधवारके दि-
(९) न श्री मदरास पत्तन शाहूकार पेठमें श्री चन्द्रप्रभस्वामी बिम्ब प्रतिष्ठा श्री-
(१०) मज्जैनाचार्य बृहत्खरतरगच्छीय जं । यु । भट्टार्क श्री जिनसिद्ध सूरिजी ।
(११) महाराज के करकमलों से समस्त संघ सहित भैरुंवकसजी सुखलालजी ।
(१२) समदड़िया ने बड़े महोत्सव से कराई । हरषचंद रूपचंदजी ने बिम्ब स्थाप-
(१३) न किया बादरमलजी ने कलश चढ़ाया और हंसराजजी सागरमलजी
(१४) ने ध्वजा आरोपण करी यह मंगल कार्य श्री संघको सर्वदा श्रेयकारी हो ॥
(१५) ॥ हस्ताक्षराणि यति किशोरचन्द्रजी तच्छिष्य मनसाचन्द्रस्य ॥

श्री दादाजी के बंगले में ।

[2071]

ॐ नमः दत्तसूरिजी ॐ नमः कुशलसूरिजी

मिति माह सुदि ५ संवत् १९३६ का ।

जैन मंदिर—साहुकार पेठ ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2072]

संवत् १४९९ वर्षे माघ सुदि ५ बुधौ श्रीमाल ज्ञातीय नान्दी गोत्रे सा० प्रह्ला पुत्र शा० प्रेताकेन पुत्र हरेराज सहित तत् पिता पुण्यार्थं श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरिभिः ॥

[2073]

संवत् १५१७ वर्षे पौष वदि ५ गुरू श्री श्रीमाल ज्ञातीय महं वित्रा ना० जासी सुत सोना ना० हीरू आत्मश्रेयोऽर्थं जीवितस्वामी श्री श्री श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पिप्पल गच्छे त्रितविया श्री धर्म्मसागर सूरिभिः। नीलुटग्रामे।

[2074]

संवत् १५१९ वर्षे माघ शुक्ल १३ पालण पुर ऊकेश ज्ञातीय सा० पर्वत ना० जीविणी पुत्र शा० गेहाकेन ना० वारू पुत्र वस्ता जावड प्रमुख कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे पार्श्वबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः॥

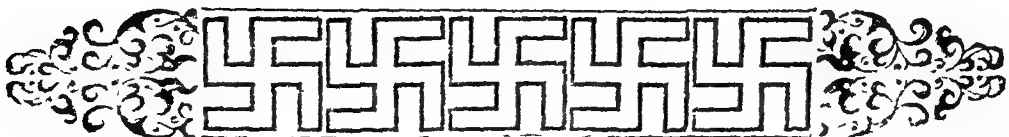
चौवीसी पर।

[2075]

संवत् १४८७ वर्षे माघ . . . दि . . . वाइमा ज्ञातीय श्रे० खीमा ना० लहिकू सुत आया ना० हीसु पुत्र हापा गोपा जीरादि कुटुंबयुतेन श्रेयोर्थं श्री श्रेयांसनाथ चतुर्विंशति पट्टकारितः प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिराज न० श्री सोमसुंदर सूरिभिः॥ श्रीशुभं भवतु॥

[2076]

संवत् १५२१ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल प्राग्वाट ज्ञातीय सं अर्जुन ना० टबकु सुत सं० वस्ता ना० रामी सुत सं० चान्दा ना० जीविणि सुत लींबा आका प्रमुख कुटुंबयुतेन ७२ चतुर्विंशतिपट्टान् कारयितश्च श्रेयसे श्री पद्मप्रभः चतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्रतिष्ठितः। श्री तपा पट्टे श्री सोमसुंदर सूरि संताने श्री रत्नशेखर सूरि तत् पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः॥



रायपुर–सी० पी० । *

जैन मंदिर–सदर बजार ।

शिलालेख ।

[2077]

(१) ॥ श्री मदिष्टदेवेभ्यो नमः ॥ श्रीमच्छ्रीवीरविक्रमादित्य राज्यात् नभवर्ण-
(२) निधिइन्दुब्द (१९५०) शाके इंद्रियचंद्रसिद्धि नक्षत्रेश प्रमिते मासोत्तममासे द्वि-
(३) तीय आसाढ मासे शुक्लपक्षे अष्टम्यां तिथौ भार्गववासरे स्वाति नक्ष-
(४) त्रे साध्ययोगे बुधमार्गे एवं पंचांग शुद्धावत्र समये कर्कार्क गते रवौ शेषे-
(५) षु पूजनिरिक्षित वेलायां श्री मद्राजपुरवरे माडु गोत्रे साह तनसुखदा
(६) स(दास) तत्पुत्र साह आसकरणेनासौ श्री मच्चंद्रप्रभ जिनप्रभो प्रासा
(७) द कारितं स्वश्रेयोर्थं श्री बृहत्खरतर भट्टारक गछाधिपै भट्टारक श्री
(८) जिनचंद सूरीश्वर प्रतिष्ठितश्चेति पं० सिवलाल मुनिरुपदेशात् ।

ताम्रपत्र पर ।

[2078]

(१) श्री जिनायनमः ॥ श्रीमन् वीर सं० २४२१ विक्र-
(२) म सं० । १९५२ शाके १८१६ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मा-
(३) से आषाढ शुक्लपक्षे तृतिया तिथौ गुरुवारे पु-
(४) ष्यनक्षत्रे मिथुनार्कगते रवौ शेष शुभ निरिक्षि-
(५) त वेलायां श्री रवं(राज)वरे माडू गोत्रे साह धन-
(६) रूपजी तत्पुत्र साह कुवरचंदजी धन्या भार्या

---

* [illegible]

(७) हीरादेवी तया श्री अजिनंदनजिनप्रजो प्रासाद
(८) कारित स्वश्रेयं श्रीवृहत् खरतर गछे श्री जिनचंद सूरीश्वर
(ए) जी आदेशात् श्री शिवलाख मुनि प्रतिष्ठितम् ॥ श्री शुजम् ॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

उथमण-सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पञ्चासण के नीचे का लेख ।

[2079]

॥ सं० १२४३ वर्षे माहा सुदि १० बुधदिने नाणकीय गछे उथमण चैत्ये धणेसर जा० धारमती पु० देवधर जेसड आव्हा पाल्हादि कुटुंब संयुते मातृ निमित्तं जलवट्ट कारापितं ॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

रोहेड़ा-सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2080]

सं० १२ए३ वर्षे फागण सुदि ८ कोरंट गछे . . . जोखा . . . धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं कक्क सूरिजिः ॥

[2081]

सं० १३४१ वर्षे नाणकिय गछे . . . . . . चतुर्विंशतिपट्ट कारितं प्रतिष्ठितं जट्टारक महेन्द्र सूरिजिः ॥

[2082]

सं० १४९१ फागण सुदि १२ गुरौ कोरंटवाल गच्छे ऊपकेश ज्ञातीय संखवालेचा गोत्रे नपसी पु० जाणाकेन श्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं सांवदेव सूरिभिः ॥

[2083]

सं० १४९३ वर्षे माघ सुदि १३ ऊपकेश ज्ञातीय म० मांडण भा० सिरियांदे पु० काजाकेन भार्या भल्ली सहितेन आत्मश्रेयसे श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री धनप्रभ सूरिभिः ॥

[2084]

संवत् १५१३ वर्षे फागुण वदि ११ नागेंद्र गच्छे ऊपकेश ज्ञातीय कोठारी . . . भा० लक्ष्मी पु० मेघा भा० हीरु पु० नेरा डुंगर तोल्हा युतेन श्री आत्मपुण्यार्थे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं विनयप्रभ सूरिभिः ॥

[2085]

सं० १५१७ वर्षे वैशाष वदि ८ शुक्रे श्री श्रीमाल श्रेष्ठी भामा भा० साढी पु० गोल्हा भा० आसि पु० पहिराज कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं पूर्णिमापक्षे पुण्यरत्न सूरीणां प्रतिष्ठितं बाराही ग्रामे ॥

[2086]

सं० १५१८ वर्षे माघ वदि २ प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० कोहाकेन भार्या कामल दे पु० भाल्हा हीदा युतेन धर्मनाथ बिंबं कारितं कटोलीवाल गच्छे पूर्णिमापक्षे गुणसागर सूरिभिः ॥

[2087]

सं० १५७६ आसाढ सुदि ९ रवौ। ऊपकेशज्ञातीय नाग गोत्रे साह तोला भा० नामल दे पु० मांडण आल्हा जेसा सहितेन मांडण भा० माणक दे पु० रंगा युतेन आत्मपुण्यार्थे संभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं नाणावाल गच्छे भट्टारक श्री . . . . . ।

भारज-सिरोही।

जैन मंदिर।

पंचतीर्थी पर।

[2088]

सं० १५२४ वर्षे वैशाख सुदि २ शनौ श्रीमाल ज्ञातीय पितृ धरकण भा० धरणा सुत कालु भा० कुंथि करमी सुत सहिता युतेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं बृह्मणिया गच्छे प्रतिष्ठितं श्री विमल सूरिभिः वडपद्र वास्तव्य ॥

— ✠ —

गुडा-सिरोही।

जैन मंदिर।

पंचतीर्थी पर।

[2089]

सं० १५३४ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ ऊसवाल वृहद् सज्जने ठाकुर गोत्रे साह० पोमादे पु० जावड़ भावड़ गीदा सा० माणाकेन भा० माणिक दे पु० मेघराज हांसादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारापितं। नाणावाल गच्छे श्री धनेश्वर सूरिभिः प्रतिष्ठितं तपा श्री सोमसुंदर सूरिभिः सं . . . . . ॥



तिवरी-सिरोही।

जैन मंदिर।

काउसग्ग प्रतिमा पर।

[2090]

सं० १३३४ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरौ प्रा० ज्ञा० श्रे० ऊवा चांदा भा० रूपल दे पु० . . . श्री नयगल कारितं प्रतिष्ठितं चित्रगच्छीय श्री देवचन्द्र सूरि संतानीय रा० पं० सोमचंद्रेण ॥

पाडीव – सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2091]

सं० १५३६ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्रीमाली ज्ञातीय राउल भा० वाला पु० देवा भा० खलियता सुत तेजा श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं आगम गच्छे अमररत्न सूरि गुरू-पदेशेन करापितं प्र० विधिना पत्तन वास्तव्य ॥



मडिया – सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2092]

सं० १४७० वर्षे माघ सुदि २ गुरौ बाफणा गोत्रे साह लुंना सुत देपाल भा० मेला दे पु० जोगराज भा० जसमादे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं उपकेश गच्छे श्री ककुदाचार्याभिधान प्र० देवगुप्त सूरिभिः ॥



निंवज – सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2093]

सं० १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ६ गुरौ श्री भावडेहरा गच्छे श्री कालिकाचार्य संताने उप-केश ज्ञातीय खांटेड़ गोत्रे साह लाला भा० . . . पु० सामंत भा० [illegible] दे पु० [illegible]

भारज-सिरोही।

जैन मंदिर।

पंचतीर्थी पर।

[2088]

सं० १५२४ वर्षे वैशाख सुदि २ शनौ श्रीमाल ज्ञातीय पितृ धरकण भा० धरणा सुत कालु भा० कुंथि करमी सुत सहितया युतेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं बृह्मणिया गच्छे प्रतिष्ठितं श्री विमल सूरिभिः वदपद्र वास्तव्य ॥

गुडा-सिरोही।

जैन मंदिर।

पंचतीर्थी पर।

[2089]

सं० १५३४ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ उसवाल वृहद् सज्जने ठाकुर गोत्रे साह० पोमादे पु० जावड़ भावड़ गीदा सा० माणाकेन भा० माणिक दे पु० मेघराज हांसादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारापितं। नाणावाल गच्छे श्री धनेश्वर सूरिभिः प्रतिष्ठितं तपा श्री सोमसुंदर सूरिभिः सं . . . . . ॥



तिवरी-सिरोही।

जैन मंदिर।

काउसग्ग प्रतिमा पर।

[2090]

सं० १३३४ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरौ प्रा० ज्ञा० श्रे० ऊवा भोदा भा० रूपल दे पु० . . . श्री नयगल कारितं प्रतिष्ठितं चित्रगच्छीय श्री देवजद्र सूरि संतानीय रा० पं० सोमचंद्रेण ॥

पाडीव – सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2091]

सं० १५३६ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्रीमाली ज्ञातीय राउल भा० वाला पु० देवा भा० ललियतल सुत तेजा श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं आगम गच्छे अमररत्न सूरि गुरूपदेशेन करापितं प्र० विधिना पत्तन वास्तव्य ॥

मडिया – सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2092]

सं० १४९० वर्षे माघ सुदि ९ गुरौ बाफणा गोत्रे साह धुंना सुत देपाल भा० मेला दे पु० जोगराज भा० जसमादे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं उपकेश गच्छे श्री ककुदाचार्यात्तिधान प्र० देवगुप्त सूरिभि ॥

निंबज – सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2093]

सं० १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्री भावडेहरा गच्छे श्री कालिकाचार्य संताने उपकेश ज्ञातीय कांटेड़ गोत्रे साह [illegible] भा० . . . पु० [illegible] साह [illegible] पु० [illegible]

उदा गोपाल भा० नतु दे पु० नाल्हा सीवा उदा भा० जमा दे पु० रतना समरथ कुटुंवेन सह स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं श्री विजयसिंह सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं वीर सूरिभिः॥

छुड़वाल-सिरोही।

जैन मंदिर।

पाषाण की प्रतिमा पर।

[2094]

सं० १६४४ वर्षे फागण वदि १३ बुधे हालीवाड़ा वास्तव्य श्री संघेन कारित्तं श्री शांतिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिराज श्री हीरविजय सूरिभिः॥



डीसा।

श्री आदीश्वरजी का मंदिर।

पंचतीर्थियों पर।

[2095]

सं० १५२४ वर्षे का० व० २ शुक्रे श्री भावडार गच्छे श्रीमाल ज्ञातीय म० धिरणल भा० ब्रह्मादेवि पु० मना भा० माल्हण दे पु० सिंघा मेघा मेहा साणा जुठा सहितेन जीवितस्वामी श्री पद्मप्रभु प्रमुख चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० कालिकाचार्य संताने श्री भावदेव सूरिभिः श्री वनरिया ग्रामे॥

[2096]

सं० १५६३ वर्षे माघ सुदि १५ गुरौ उपकेश ज्ञातीय गा० कनुआ सो० करणा भा० रूपु पु० हिमाला पितृव्य नयणा निमित्त श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० निन्नमाल गच्छे श्री कर्मानिक सूरिभिः॥

[2097]

सं० १६६३ वर्षे वैशाख वदि ११ दिने श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्य० टाहापान भा० चीत्रु निमित्तं सुत लिंबा राणा जाजण सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं ब्रह्माण गच्छे भ० जाजीग सूरिभिः स्थिराद्र वास्तव्यः ॥

श्री महावीर स्वामी का मंदिर।

पंचतीर्थियों पर।

[2098]

सं० १२१० वर्षे फागण सुदि २ शुक्रे ब्रह्माण गच्छे श्री जजक सूरि गुणे श्रीमाल ज्ञातीय पिणनालक वास्तव्य आन्हा सुत देवधर श्रेयोर्थे आसधर सुत जाल्हणेन पितृव्य श्रेयोर्थे श्री महावीर बिंबं कारितं प्र० श्री वयरसेणोपाध्याय गणि ॥

[2099]

सं० १३४४ वर्षे जे० व० ४ शुक्रे ओसवाल ज्ञा० श्रे० [illegible] सुत [illegible] [illegible] बयज देवि श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्र० [illegible] श्री [illegible] [illegible] ॥

[2100]

सं० १४३६ वर्षे चैत्र वदि २ शनौ उपकेश ज्ञा० [illegible] [illegible] श्री सुत जीमा भा० सनपतश्चात्र श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं [illegible] श्री विद्यासागर सूरिभिः ॥

[illegible]

सं० १४०३ वर्षे ज्येष्ट सुदि ८ [illegible] सुत जयमदेन श्री [illegible]

[illegible]

[2102]

सं० १४७४ वर्षे वैशाख सुदि १० रवौ श्री कोरंटकीय गच्छे श्री नन्नाचार्य संताने उपकेश ज्ञातीय मं० मलयसिंह भा० मालण देवि स० मं० मदनेन पु० लुणा सहितेन भा० हेमा श्रेयोर्थं श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं कक्क सूरिभिः ॥

[2103]

सं० १५२० वर्षे वैशाष वदि ५ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय सदा भा० सहजू पु० धीरा केन भा० काली सहितेन पितृमातृ श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री नागेंद्र गच्छे श्री गुणसमुद्र सूरिभिः प्र० सर्व सूरिभिः ॥

[2104]

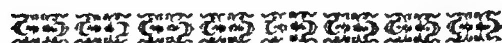
सं० १५३२ वर्षे कार्तिक वदि ५ गुरौ पाल्हाउत गोत्रे सा० शिवाराज भा० कर्मणि तत्पुत्र मेघा भार्या युतेन पु० सालिग मातृ श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मलधारि गच्छे श्री गुणसुंदर सूरिभिः ॥

[2105]

सं० १५३७ वर्षे वैशाख सुद ३ उपकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य संताने उपकेश ज्ञातीय बाफणा गोत्रे सा० . . . . वरू भा० जसमा दे पु० सोहडा दे पु० वस्ता आत्मश्रेयोर्थं श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[2106]

सं० १५४७ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरौ वायडा ज्ञातीय व० साह नारिंग सुत व० राजा केन भा० रई पु० रीड़ा मेघा रीड़ा भा० इंदु प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्यादि पंचतीर्थी आगम गच्छे श्री अमररत्न सूरिभिः गुरूपदेशेन कारितं प्र० विधिना पत्तन वास्तव्यः ॥



गुडली-मेवाड़ ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2107]

सं० १५४२ वर्षे वैशाख वदि ४ उपकेश ज्ञातीय सा० करमा भा० साहु पुत्र पीदा भा० हलमा दे पु० गोदा उजल भा० वडी पु० जेसा मेघा केमा हरमा सहितेन जिदरू निमित्तं श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं वृहद्गछे भट्टारक श्री धनप्रभ सूरिभिः ॥

[2108]

सं० १५५९ वर्षे वैशाख सुदि १५ शनौ उपकेश ज्ञातीय मानींग भा० नंदि पु० देपाकेन पितृपुतेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं ब्रह्माण गछे ठुमतिलक सूरि पट्टे श्री उदयाणंद सूरिभिः ॥



खारची-मारवाड़ ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2109]

सं० १५३७ वर्षे ज्येष्ट वदि ७ . . . . . . धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं चंद्र गछे श्री शांति सूरिभिः द्राविड ग्रामे ॥



खंडप - मारवाड ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[2110]

सं० १५२७ वर्षे वैशाखु सुदि ३ ओसवाल ज्ञातीय साह हंसा पु० उधरण देदा वेला भा० वाहनु मोदरेचा गोत्रे साह लाधु भा० नामल दे पुत्रिका नानुं आत्मपुण्यार्थे श्री चंद्र प्रभु बिंबं कारितं श्री नाणकीय गच्छे धनेश्वर सूरिभिः ॥

[2111]

सं० १५२८ वर्षे . . . उपकेश ज्ञातीय गजेड़ गोत्रे पना भा० सुहवि दे पु० नरसिंग त्रिभणा सहितेन श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पल्लीवाल गच्छे श्री यशोदेव सूरि पट्टे श्रीश्री नन्न सूरिभिः ॥



मांकलेश्वर - मारवाड ।

जैन मंदिर ।

धातु की प्रतिमा पर ॥

[1187]

सं० १५३० वर्षे फागुण सुदी १० श्री ज्ञानकीय गच्छे उ० उसभ गोत्रे सं० भांभा भा०

साहा पीथा स्या० प्रतिष्ठितं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० सिद्धसेन सूरि

सूरिभिः ॥



संवत्	नाम	लेखांक
१५४७	अमररत्न सूरि	२२०६
१५३६	सिंघदत्त सूरि	१७३७
१५६६	सोमरत्न सूरि	१२१६
१५७१	" "	१५७७

उपकेश गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३१२,५६	कक्क सूरि	१६२३
१३२५	" "	१०३८
१३८०	" "	१३५८
१३८५	" "	१०४३
१४५७	रामदेव सूरि	१४६०
१४६८	देवगुप्त सूरि	१०६२
१४७०	" "	२०६२
१४८४	" "	१०७२
१४८६	" " (मल्लधारीयक) ...	१६८२
१४८२	सिद्ध सूरि	१०७०
१४९१	" "	१५४६
१४९३	सिद्ध सूरि	११८२
१४९५	सर्व सूरि	१६४१
१५०२	ककुदाचार्य (कक्क सूरि) ...	१६३४
१५०५	कक्क सूरि	११४८, १४९६
१५०६	" "	११४६
१५०७	" "	१०८३, १२५०
१५०८	" "	१३३२
१५०९	" "	१२५६
१५१२	" "	११५३, १२६१, १२६३, १२७३, १५०४
१५१३	" "	१८८३
१५२०	" "	११२८ १२०१
१५२१	" "	१२८६
१५२४	" "	१२७४ १४४३
१५२८	देवगुप्त सूरि	१२९१
१५३४	" "	२०१२
१५३५	" "	१३६२
१५३७	" "	२१०५
१५४४	" "	१६०३
१५४६	" "	१२६३
१५५८	" "	१६३४
१५५९	" " ...	११०१, ११८६
१५६६	सिद्ध सूरि	१२००
१५६७	" "	१६५६
१५७१	" "	१५७४
१५७२	" "	१५७६
१५७४	" "	१४५०
१५८८	" "	१४६४
१५९२	" "	१३०५
१५९६	" "	१३४७
१५२७(?)	सिद्ध सूरि	१३२२
१७८१	कर्पूरप्रियगणि ...	१०२४
१६४०	सिद्धसूरि (कमलगच्छ) ...	१४७८

कठोलीवाल गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४७१	संघतिलक सूरि	१६३०
१४९३	सर्वाणंद सूरि (पूर्णिमापक्ष) ...	१६६६
१४९३	लखमसीह (" ") ...	१६६६

संवत्	नाम		लेखांक
१५१८	गुणसागर सूरि (पूर्णिमापक्ष)	..	२०८६
१५२०	विद्यासागर सूरि	...	१३६१
१५३४	विजयप्रभ सूरि	...	१३८२

कोरंट गच्छ ।

संवत्	नाम		लेखांक
१२६३	कक्क सूरि	..	२०८०
१३१७	सर्वदेव सूरि	...	१६५०
१३४०	... सूरि	...	१०६२
१४०६	कक्क सूरि	...	२०१४
१४२७	सांवदेव सूरि	..	१०५७
१४८४	कक्क सूरि	...	२१०२
१४९१	सांवदेव सूरि	..	२०८२
१४९६	" "	...	१३३०
१५०६	" "	...	११८३
१५०८	" "	...	१०३३
१५०९	" "	...	२०१२
१५१७	श्री पाद ..	...	१४०४
१५१८	सांवदेव सूरि	...	१०२६
१५२२	" "	.	१२८०
१५५२	नन्न सूरि	...	१६६८
१५६७	नन्न सूरि	.	१६४२

खरतर गच्छ ।

संवत्	नाम		लेखांक
....	वर्द्धमान सूरि	...	११९०
१३८१	जिन कुशल सूरि	...	१६८८
१३८३	" "	.	१२५०
१३९९	" "	...	१५४५

संवत्	नाम		लेखांक
१३९२	जिनपद्म सूरि	...	१९२६
१४८२	जिनभद्र सूरि	...	१५०३
१४८३	" "	...	१२४४
१४९९	" "	..	१६००
१५०३	" "	...	१३२५
१५०७	" "	...	११५१, १४००
१५०९	" "	..	१२५५, १३३३
१५११	" "	...	१५२०
१५१७	" "	...	१०१०
१४९१	भव्यराज गणि	...	२००४
१५०६	जिनतिलक सूरि	..	१२४७
१५११	" "	..	१८६०-६१
१५२८	" "	..	११५८
१५१५	जिनचंद्र सूरि	...	२०२२
१५१६	" "	...	१३३५
१५१९	" "	..	१२९०
१५२६	" "	...	१२९२
१५२९	" "	.	१०८५
१५३१	" "	..	१२०६
१५३२	" "	...	१३४०
१५३३	" "	..	१८८१
१५३४	" "	...	१२८७, १२८६, १३१७
१५३६	" "	...	१०५६, १३४१
१५१७	विवेकरत्न सूरि	...	१०००
१५२५	कीर्तिरत्न सूरि		१८८०
१५७८	जिनहंस सूरि	..	१३०८
१५०३	जिनसमुद्र सूरि	..	११३२

संवत्	नाम	लेखांक
१५५५	जिनसमुद्र सूरि	१२२४
१५५६	जिनहंस सूरि ...	१२९८, १४६३
१५६२	,, ,, ...	२०४६
१६०६	जिनमाणिक्य सूरि	१३५१
१६२८	जिनभद्र सूरि ..	१४४८, १८४५
१६५३	जिनचंद्र सूरि	११६६
१६२७(?)	जिनसिंह सूरि	१३८८
१६६६	,, ,, ...	१७१५
,,	गुणरत्न गणि	,,
,,	रत्नविशाल गणि	,,
१६६८	जिनचंद्र सूरि	१४५७
१६६८	,, ,, ...	१५८५
१६६८	लब्धिवर्द्धन	१४५१
१६७५	जिनराज सूरि	१६७०
१६८९	,, ,, ...	१९४७
१६९८	,, ,, ...	१६९७
१६८९	परानयन (?)	१९४७
१६९८	समयराज उपध्याय	१६९७
,,	अभयसुन्दर गणि (वाचनाचार्य) ...	,,
,,	कमललाभ उपाध्याय	,,
,,	लब्धकीर्त्ति गणि	,,
,,	पं० राजहंस गणि	,,
,,	पं० देवविजय गणि	,,
१६९०	जिनकीर्ति सूरि	११०७
,,	जिनसिंह सूरि	,,
८७	म० राम विनय गणि	१००६
८४९	जिनचंद्र सूरि	१८०७
१८५२	लालचंद्र गणि ...	१२०५, १२१९
१८५४	जिनदेव सूरि	१८२८
१८६३	जिनहर्ष सूरि	१५२५
१८६४	,, ,, ...	१५२६-२८
१८७१	,, ,, ...	१६३८
१८७३	,, ,, ...	१०१९
१८७५	,, ,, ...	१८३१ ४२
१८७७	,, ,,	१०२७, १६४७ ५६, १६६२,-६६, १८३६-३८
१८८५	,, ,, . ..	१८३९
१८८९	,, ,, ...	१८२१, १८२४
१९३८	,, ,, .. .	१८५०
१८७७	उ० रत्नसुन्दर गणि	१०२७
१८७७	हीरधर्म (पाठक)	१६४७-५६, १६६२- ६६
१८९३	जिन महेन्द्र सूरि ...	१६७१-७२
१८९६	,, ,, ...	१६४३
१८९७	,, ,, ...	१८७०
१९०९	,, ,, ...	१६४५
१९१०	,, ,,	१५२९--३२, १६४६, १६६७-६८, १६७३, १८३०-३२
१९१३	,, ,, ...	१६८२
१९१४	,, ,, ...	१६२२
१८९२	जिन सौभाग्य सूरि	१०१७, १०२०--२१
१९०५	,, ,, ...	१३५२
१८९३	आनन्द वल्लभ गणि	१०१७
१९३६	,, ,, ...	१०२०--२१
१८९७	कुशलचंद्र गणि	१८७०
१९१८	जिन मुक्ति सूरि ...	१८६६-६८, १८७२

संवत्	नाम	लेखांक
१६२०	जिनहंस सूरि	१६९९, १७०१
१६२१	,, ,,	२०६६-६७
१६२५	,, ,,	१८१०
१६३२	,, ,,	१०१८
१६३४	,,	१८११
१६२०	हर्षलाभ गणि	१७०१
१६३२	कनकनिधान मुनि	१०१८
१६३६	विवेककीर्ति गणि	१६५७
१६४२	हितवल्लभ मुनि	१८०८
१६५०	जिनचंद्र सूरि	२०७७
१६५१	,, ,,	२०७८
१६५६	,, ,,	१६३९-४०
१६५२	उ० नेमिचंद्र	२०६४
१६७०	जिन फत्तेन्द्र सूरि	२०६९
१६८२	जिन सिद्ध सूरि	२०८०
१६७६	हीराचंद यति	१००८

खरतर गच्छ।

जिनवर्द्धन सूरि शाखा।

संवत्	नाम	लेखांक
१४६१	जिनवर्द्धन सूरि	१९९६, १९९७
१४७३	,,	१२३८, १९९५
१४७५	,, ,,	१९८७
१४७६	जिनचंद्र सूरि	११३६, १९९२
१४८६	,, ,,	१२०६
१४८९	,, ,,	१९६४-६५, १९८१
१४९१	जिनसागर सूरि	१०७५, ११६६, ११९८, १९९२, १९९७, १९८४, १९९४
१४९४	,, ,,	१९५८
१४९५	,, ,,	१२४५, १६७३, १६७५
१४९६	,, ,,	१९५७
१४९७	,, ,,	२०७२
१५०१	,, ,,	१२४८
१५०३	,, ,,	१८६५
१५०७	,, ,,	११५१
१५०९	,, ,,	१३७२, १७२५
१५१०	,, ,,	१२३२
१५०४	शुभशील गणि	१८३६, १८५४-५६
१५२३	जिनहर्ष सूरि	११५७
१५२८	,, ,,	१४३८
१५६७	जिनचंद्र सूरि	१४१५
१५७२	,, ,,	१८९६
१६६८	लब्धिवर्द्धन	१४५१

रंगविजय शाखा।

संवत्	नाम	लेखांक
१६२२ (?)	जिनरंग सूरि	१००५
१८५६	जिनचंद्र सूरि	११०८, १२२७
१८७३	,, ,,	१०८८
१८७७	,, ,,	१००७, १२२६, १५१५
१८७९	,, ,,	११७२-८०
१८८८	,, ,,	१०८६, ११२८, ११८२, १८२२, १८३४
१९०२	जिन नंदिवर्द्धन सूरि	११२८
१९१७	,, ,,	११३०
१९३३	जिन [illegible] सूरि	११३३, ११३०
१९५२	जिन [illegible] सूरि	११२५

संवत्	नाम	लेखांक
	चंद्र गच्छ।	
१०७२	सोलगल सूरि	३८६
१२३५	पूर्णभद्र सूरि	१६८८
१२५८	देवभद्र सूरि	१०३४
१२७२	हरिप्रभ सूरि	१७७७
१३००	यशोभद्र सूरि	१६७८
१३१५	„ „	१७३६
	चाणांचाल गच्छ।	
१५२१	यशेश्वर सूरि	११५६
	चित्रवाल (चैत्र) गच्छ।	
१२६३	जिनदेव सूरि	१६४६
१२९१	[illegible] सूरि	१६२१
१३३४	पं० सोमचंद्र	२०६०
१३८८	[illegible] सूरि	११३४
१३९९	गुणचंद्र सूरि	१०४१
१४६६	[illegible] सूरि	१६०१
१४७१	„ „	११४५
१४६६	[illegible] सूरि	१६०१
१५०१	„ „	१२६४
१५०८	[illegible] सूरि	१०८०
१५२३	[illegible] सूरि	१२२४
१५३७	[illegible] सूरि	१०६६
१५३८	[illegible] सूरि	११६३
१५३८	„ „	१४१०

संवत्	नाम	लेखांक
	वहितरा गच्छ।	
१६१२	धर्ममूर्त्ति सूरि	
„	भावसागर सूरि	
	जापडाण गच्छ।	
१५३४	कमलचंद्र सूरि	
	जीरापल्लीय गच्छ।	
१४०६	रामचंद्र सूरि	
१५२७	उदयचंद्र सूरि	
	तप गच्छ।	
१४०१	विजयहर्ष सूरि	७
१४२२	रत्नशेखर सूरि	११
१४३४(?)	देवचंद्र सूरि	१०
१४५३	हेमहंस सूरि	१४
१४६६	„ „	१६२
१४७५	„ „	१३५
१४८०	„ „	१३२
१४८६	„ „	१४८
१४९८	„ „	११६८
१५०१	„ „	१४८८
१५०४	„ „	११५३
१५१०	„ „	११५२
१५११	„ „	११७७
१५१३	„ „	१०४२ ११६६ ११३४
१५१८	देवसुंदर सूरि	२३४८

संवत्	नाम	लेखांक
१४८२	सोमसुंदर सूरि	१४२१
१४८४	„ „	१९८०
१४८५	„ „ ...	१६७२, २०१७
१४८७	„ „	२०७५
१४८८	„ „	१९८३
[illegible]	„ „ ...	१०२६, १०६७, १७३१
१४९१	„ „ ...	१०७४, ११८१
[illegible]	„ „	१०७६
[illegible]	„ „ ...	१९६८, १९७१
[illegible]	मुनिसुंदर सूरि	१९८३
[illegible]	„ „	१४६१
[illegible]	„ „	११२६
[illegible]	रत्नसिंह सूरि	११४०
[illegible]	„	१०८६
[illegible]	„ „	१६६६
[illegible]	„ „	२०४४
[illegible]	विजयतिलक सूरि	१७००
[illegible]	रत्नशेखर सूरि . ..	१६६१
[illegible]	„ „ . ..	१९४६
[illegible]	„ „ ...	१२९६
[illegible]	„ „ ...	११९२, १६९०
[illegible]	„ „ . .	१६६५
[illegible]	„ „ . .	१०८४
[illegible]	„ „ . .	१०८५
[illegible]	„	१०२६ १०२८
[illegible]	„ „ ..	[illegible]
[illegible]	„ „ ..	[illegible]

संवत्	नाम	लेखांक
१५१३	„ „ ...	११८४, १४०३
१५१६	„ „ ...	१८८०, १९१२
१५१७	„ „ ...	१०३०, ११८५
१५३८	„ „	१९४१
१५०३	जिनरत्न सूरि	१७५३
१५३६	„ „	१७७०
१५४१	„ „	१११४
१५०३	जयचंद्र सूरि ...	१९६६, १९७३
१५०५	„ „	१३७०
१५०८	उदयनंदि सूरि	१९२५
१५१०	रत्नसागर सूरि	[illegible]
१५१७	कमलवज्र सूरि	[illegible]
„	लक्ष्मीसागर सूरि	१०६१
१५१८	„ „	[illegible]
१५१९	„ „ ..	[illegible]
१५२०	„ „ .. .	[illegible]
१५२१	„ „ ...	[illegible]
१५२२	„ „ ..	[illegible]
१५२३	„ „	[illegible]
१५२४	„	[illegible]
[illegible]	„ „	[illegible]
[illegible]	„ „	[illegible]
[illegible]	„ „	[illegible]
[illegible]	„ „	[illegible]
[illegible]	„ „	[illegible]
[illegible]	„ „	[illegible]
[illegible]	„	[illegible]
		[illegible]

संवत्	नाम	लेखांक
१६४१	हीरविजय सूरि	१४५६
१६४२	,,	१००२
१६४२	,, ,,	१६६१, १७१२, २०१४
१६५१	,, ,,	१७६३
१६५१	,, ,,	१६६३
	,, ,,	१७४८
	,, ,,	१५००
१६३३	रविसागर गणि	१७८२
,,	रावशल्ह	,,
,,	विजयसेन सूरि	,,
१६४३	,, ,,	१३०८
१६५२	,, ,,	१७६६
१६५६	,, ,,	१७६४
१६६१	,, ,,	१७६४
१६६७	,, ,,	११०५
१६७०	,, ,,	१६२८, १७४१
१६५१	विजयदेव सूरि	१७८२
१६६७	,, ,,	२०५७
१६७३	,, ,,	१४६०
१६७७	,, ,,	१९१७
१६८५	,, ,,	१३६१, १६४२
१६८६	,, ,,	११०६
१६८७	,, ,,	११९३
१६९४	,, ,,	११०८
१६९७	,, ,,	२०५६
१६९९	,, ,,	१९६०
१७०१	,, ,,	२०६०
१७०५	,, ,,	१६१३
१७०७	,, ,,	२०४३
१६५२	सोमविजय गणि	१७६६
१६६७	,, ,,	११०५
१६५२	विमलहर्ष गणि	१७६६
,,	कल्याणविजय गणि	,,
,,	पद्मानंद गणि	,,
१६७७	विवेक हर्ष गणि	२०५०
,,	कल्याण कुशल	१७१७
,,	दया कुशल	,,
,,	भक्ति कुशल	,,
१६८२	म० मुनि सागर गणि	१६३५
१६८६	विजय सिंह सूरि	११०६
१६९३	,, ,,	१०२८
१६९९	,, ,,	१२१०-११, १७६०
१७०१	,, ,,	१५५१
१७०२	,, ,,	११६७
१६९३	मनिचंद्र गणि	१०२८
१६९४	उ० लावण्यविजय गणि	११०८
१६९९	,, ,,	[illegible]
१७००	पं० [illegible] गणि	[illegible]
१७०६	[illegible] सूरि	[illegible]
,,	[illegible] सूरि	,,
[illegible]	,,	[illegible]
	[illegible] सूरि	[illegible]
[illegible]	,, ,,	[illegible]
[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]

संवत्	नाम			लेखांक
१७४४	विजयप्रभ सूरि	...	...	११७७
"	मुक्तिचंद्र गणि	...	...	"
१७६४	ज्ञानविमल सूरि	...	...	१०६६
१८०५	पं० कुशलविजय गणि		...	१४६७
१८०६	" " "	...	...	१४६८
१८१८	" " "	...	..	१४५५
१८०८	विजयधर्म सूरि	...	...	१११६
१८४८	विजयजिनेंद्र सूरि	...	...	१२०४
१८७३	" "	...	...	१०२४
१८७६	" "	...	...	१०८७
१८८०	" "	...	...	१०३४
१८४८	पं० पुण्यविजय गणि		...	१२०४
१६०५	शांतिसागर सूरि	...	...	१८२६
१६१२	आनन्दसागर सूरि	...	...	१८६८
१६३१	धरणेन्द्रविजय सूरि	...	...	१४६६
१६३८	वृद्धविजय गणि	...		१८४८-५३
१६४३	विजयराज सूरि	...	...	१८२७
१६४६	" "	...	...	१८०६
१६५४	पं० पवा विजै (?)	...	...	१८५०
"	विजयसिंह सूरि	...	...	१८४०
१६६४	उ० वीर विजय	...		१२६६, १५०१

कृष्णर्षि गच्छ—(तपगच्छ शाखा)।

संवत्	नाम			लेखांक
१५२५	कमलचंद्र सूरि	...	...	१२७५

देवानन्दित गच्छ।

संवत्	नाम			लेखांक
१२२१	कनुदेव	...	...	१६६८

धर्मघोष गच्छ।

संवत्	नाम			लेखांक
१२२६	गुण[illegible] सूरि	...	...	१६५२
१४३८	पद्मशेखर सूरि	...	...	१२[illegible]
१४७४	" "	...	..	१२[illegible]
१४८५	" "	.	...	१४[illegible]
१४५५	सर्वाणंद सूरि	...	...	१०[illegible]
१४६१	मलयचंद्र सूरि	...	...	१८[illegible]
१४६५	" "	..	...	१२२[illegible]
१४७३	पद्मसिंह सूरि	...	...	१०६[illegible]
१४८६	महीतिलक सूरि	...	..	११८[illegible]
१५०१	" "	..	..	११४[illegible]
१५०३	" "	...	...	१४६[illegible]
१५११	" "	...	..	१५३[illegible]
१४६५	विजयचंद्र सूरि	..		१०७७
१४६८	" "	...	.	१२४७
१५०१	" "	...	..	१०७६
१५०३	" "	...	...	१५४७
१५०४	" "	...	...	१३६६
१५०१	विजयप्रभ सूरि	...	..	११४३
१५०५	महेन्द्र सूरि	...	...	२०६८
१५०७	— —	...	...	१३६०
१५०७	पद्माणंद सूरि	...	...	१२५१
१५२६	" "	...	...	१३२६
१५३५	" "	...	...	१०६८
१५१२	साधुरत्न सूरि	...	...	१०८८
१५२०	" "	...	...	१२७७
१५१३	पद्माणक सूरि	...	...	१४७३
१५२२	साधु — —	...	...	१०१३
१५३४	लक्ष्मीसागर सूरि	...	...	१३१८
१५६३	" "	...	...	१२६६
१५२७	मानदेव सूरि	...	...	२०५३

संवत्	नाम			लेखांक
१४७६	यशोदेव सूरि	...	..	१८८२
१४८२	,, ,,	..	..	१६३१
१५१३	,, ,,	...	..	१८८७
१५२८	नन्न सूरि	..	..	२१११
१५३६	उद्योतन सूरि	...		१४६२ १५५५

पार्श्वचन्द्र गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१५७७	पार्श्वचन्द्र सूरि	..	..	१५६१

पिप्पल गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१४६१	वीरप्रभ सूरि	..	..	१६७५
१५१६	शालिभद्र सूरि	..		११५५
१५१७	धर्म्मसागर सूरि	.	..	२०७३
१५३०	चंद्रप्रभ सूरि	..	.	१२२२
१५७०	तिलकप्रभ सूरि	..	.	१७२६
,,	गुणप्रभ सूरि	..	.	,,

पूर्णिमा(पक्ष) गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१३८१	सोमतिलक सूरि	...	.	१६२४
,,	श्रीसूरि	..	.	,,
१४८५	सर्वानन्द सूरि		.	१२४१
१४८६	विद्याशेखर सूरि	...		१३६७
१५०१	गुणसमुद्र सूरि	..	..	१५६५
१५११	राजतिलक सूरि	...	.	१४८०
१५१७	,, ,,	...	..	१६३७
१५१६	,, ,,	.		१७५७
१५१७	पुण्यरत्न सूरि	..	..	२०८५
१५१६	,, ,,	..	...	१५६७
१५३२	,, ,,	..	..	११६८
१५२१	गुणतिलक सूरि	..	...	१७५८

संवत्	नाम			लेखांक
१५३२	,, ,,	..	...	१७२८
१५२३	साधुसुंदर सूरि	..	...	११५६
१५२६	,, ,,	.	...	१२८१
१५४७	जयरत्न सूरि	..	...	१११६
१५४८	सौभाग्यरत्न सूरि	.	..	१७६०
१५५६	मनसिंह सूरि	..	...	१२१२

पूर्णिमा गच्छ ।

भीमपल्लीय शाखा ।

संवत्	नाम			लेखांक
१४८२	जयचंद सूरि	...	...	१५६४
१५१५	,, ,,	.	...	१३७६
१५७६	मुनिचंद्र सूरि	...	...	१३०२

प्राया गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१३७४	शीलभद्र सूरि	...	...	१०४२

बापदीय गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१२४२	जीवदेव सूरि	...	...	१६८६

बोकड़िया गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१४५७	धर्म्मतिलक सूरि	...	...	१०६१
१४६६	,, ,,	...	...	१२४६
१५४६	मणिचंद्र सूरि	...	...	११६७
१५५६	,, ,,	...	...	१४१४
१५६२	,, ,,	...	...	११६६
१५८७	मलयहंस सूरि	...	...	११६५

ब्रह्माण गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१३२०	धयरसेण उपाध्याय	...	...	२०८६
,,	जम्कक सूरि	...	...	,,

संवत्	नाम	लेखांक
१३४५	विमल सूरि	१६२२
१३६१	विजयसेन सूरि	१४३४
१३७३	हेमतिलक सूरि	११२३
१४३१	बुद्धिसागर सूरि	११३७
१४६६	वीर सूरि	१३६४
१४८३	,, ,, ...	२१०१
१५१६	,, ,, ...	१५५१
१४७१	उदयाणंद सूरि	२०१६
१५००	विमल सूरि . .	१३६८
१५१८	,, ,, ...	१०११
१५१६	,, ,, .	१२६६
१५२४	,, ,, ...	२०८८
१५११	मुनिचंद्र सूरि	१२२१
१५१३	उदयप्रभ सूरि .	१०८६, १३७४
१५२४	,, ,, ...	१४६५
१५१३	हेमहंस सूरि	१३७४
१५५६	बुद्धिसागर सूरि	११८८
,,	उदयाणंद सूरि	२१०८
१६६३	जार्जीग सूरि . ..	२०६७

झावडार(झावड़,झावहेड़ा) गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५०६	वीर सूरि	२०६३
१५२४	भावदेव सूरि	२०६५
१५३३	,, ,, ...	११६५
१५२६	,, ,, ...	१३४२

भिन्नमाल गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५६२	कल्यांतिक सूरि	२०६६

मध्यम शाखा ।

संवत्	नाम	लेखांक
– –	देव सूरि	१६०५

मलाहृत(मड्डारुडिय,मड्डाहड़) गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३५१	सोमतिलक सूरि	१०४६
१४८०	धर्म्मचंद्र सूरि	१०६८
१४८१	उदयप्रभ सूरि ...	१०६६, २०४६
१५२७	नयचंद्र सूरि	१२७६
१५४१	कमलचंद्र सूरि	१३६०
१५४५	,, ,, ...	१३६२
१५५७	गुणचंद्र सूरि	११३०
,,	उ० आणंदनंद सूरि	,,

मधुकर गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५१६	— — —	१७२६

मलधारि(मलवादि) गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१२३४	पूर्णचंद्र सूरि	१८०५
१३४४	रत्नदेव सूरि	२०११
१४७६	विद्यासागर सूरि	२१००
१४९९	मुनिशेखर सूरि	[illegible]
१५१०	गुणसुंदर सूरि	[illegible]
१५१२	,, ,, ...	[illegible]
१५१५	,, ,, ...	[illegible]
१५२२	,, ,, ...	[illegible]
१५२५	,, ,, ...	[illegible]
१५२९	[illegible] सूरि	[illegible]
१५३२	[illegible] सूरि	[illegible]

संवत्	नाम	लेखांक
१५३४	गुणविमल सूरि	१३३८
१५५७	गुणवधान सूरि	११६८
१५६६	लक्ष्मीसागर सूरि	११३१
१५८१	" "	१४८४
१६६६	कल्याणसागर सूरि	१८६६
"	उदयसागर सूरि	"

मोढ गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१२२७	जिनभद्राचार्य	१६६४

रुद्रल गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५७६	श्रीसूरि	१६२५

रांका गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३२०	महीचंद्र सूरि	१७८०

राज गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३३६	अमरप्रभ सूरि ...	१६५३-५४
१५०६	पद्मानंद सूरि	११७४
१५५२	पुण्यवर्द्धन सूरि	१५६१

रामसेनीय गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४[illegible]	धर्मदेव सूरि	१२३६
	चं[illegible] सूरि	१०८०
	"	१०८७

रुद्रपल्लीय गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
	अमरदेव सूरि	२०२६
	जिनराज सूरि	१०५२
[illegible]१३	सोमसुंदर सूरि	१३१५
१५[illegible]	" "	१२६७

संवत्	नाम	लेखांक
१५३८	देवसुंदर सूरि	१६२१

लौंपक गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१६३२	अजयराज सूरि	२०३४
१६५३	गंगारिखी यति	२०३३

वड गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५७२	चंद्रप्रभ सूरि ...	१३८६

विजय गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१६२१	शांतिसागर सूरि	१५६६-६७
१६२४	" "	१५११-१८, १५३५, १५४२-४३, १५५६, १५६८, १६७०-७१, १६०८, १६१५, १६२३
१६३१	" " ...	१८०६, १८२५, १८२३
१६३२	" "	१८२३
१६३३	" " ...	१७०२-०३
१६४३	" " . ..	१८२७

विद्याधर गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४११	विजयप्रभ सूरि	१११८
१४१३	विनयप्रभ सूरि	२०८४
१५१८	हेमप्रभ सूरि	१६२४
१५२०	" "	१३१३

विवंदणीक गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५१२	सिद्ध सूरि	१६[illegible]
१५२४	कक्क सूरि	१०२९

वृहद्गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३१६	हीरभद्र सूरि	१३२[illegible]
१३३४	— — —	१८०१

संवत्	नाम	लेखांक
[illegible]	धर्मघोष सूरि	१२६३
[illegible]	रामदेव सूरि	१४३६
[illegible]	रत्नप्रभ सूरि	१२०७, १६७६
[illegible]	मलयचंद्र सूरि	१०८०
[illegible]	„ „	१०१२
[illegible]	सागर सूरि	११५०
[illegible]	महेन्द्र सूरि	१५३७
[illegible]	कमलप्रभ सूरि	१२६५
„	सागरचंद्र सूरि	[illegible]
१५१८	मेरुप्रभ सूरि	१४०६
१५२२	„ „	१२११
१५३१	श्री सूरि	१२२२
१५३२	धनप्रभ सूरि	२१०३
१५७१	मुनिदेव सूरि	१२६७
„	नन्दिचंद्र सूरि	१४१४
„	वर्द्धन सूरि	१८६५

व्यवतीह गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१२४२	— —	१३०६

पं(सं)डेर(क) गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
[illegible]	यशोभद्र सूरि	[illegible]
[illegible]	— —	[illegible]
[illegible]	ईश्वर सूरि	[illegible]
[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
[illegible]	सुमति सूरि	[illegible]
[illegible]	„ „	[illegible]
[illegible]	ईश्वर सूरि	[illegible]
[illegible]	सुमति सूरि	[illegible]

संवत्	नाम	लेखांक
१४६३	शालिभद्र सूरि	११२३
१५२०	„ „	२००२
१४२४	शांति सूरि	११४१
१४६६	„ „	१८५६
१५०१	„ „	११४२
१५०६	„ „	१८६०
१५०८	„ „	१५४८
१५१८	„ „	१६३१
१५२७	„ „	१५१४
१५३३	„ „	१४०८
१५३७	„ „	[illegible]
१५०५	— —	[illegible]
१५१२	ईश्वर सूरि	[illegible]
१५१५	„ „	[illegible]
१५३०	[illegible] सूरि	[illegible]
[illegible]	— —	[illegible]
१५३२	— —	[illegible]
[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
[illegible]	सुमति सूरि	[illegible]
[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
[illegible]	„	[illegible]
[illegible]	„	[illegible]
[illegible]	„	[illegible]
[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible] ।

संवत्	नाम	लेखांक
[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]
[illegible]	[illegible] सूरि	[illegible]

सिद्धान्तिक गछ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४०८	माणचंद्र सूरि	१४२७

हर्षपुरीय गछ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५५५	गुणसुंदर सूरि	१२६५

हुंबड़ गछ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४५३	सिंहदत्त सूरि	१०५६

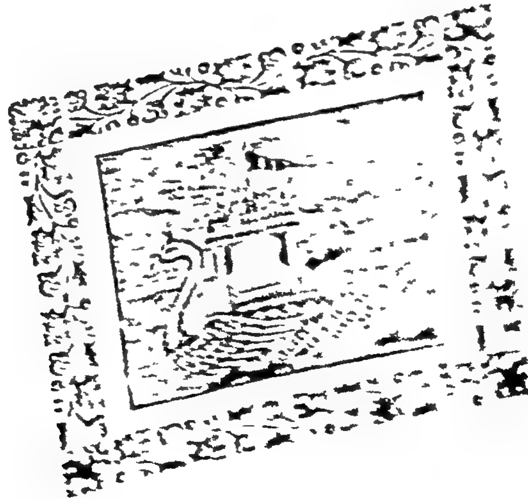
जिनमें गछों के नाम नहीं हैं।

संवत्	नाम	लेखांक
६३७	उद्योतन सूरि	१७०६
„	वच्छवल देव	„
११६६	श्रामदेव सूरि	१०३३
१२५३	जिनचंद्र सूरि	१७८५
१२६२	भावदेव सूरि	१०३५
१२--	सर्वगुप्त सूरि	१०३६
१३०२	माणिक्य सूरि	१७८३
„	जयदेव सूरि	२०२३
१३१०	परमानंद सूरि	१७६५
१३३८	„ „	„
२२	जयचंद्र सूरि	२०४७
?	उद्योतन सूरि	१०३७
२३८	श्री सूरि	११२१
„	पूर्णभद्र सूरि	१७६१
	प्रद्युम्न सूरि	१३६४
	विबुधप्रभ सूरि	११२२
	जिनभद्र सूरि	१७६५
	रत्नप्रभ सूरि	१७६५
	„ „	१०५३
१३८०	पद्मानंद सूरि	१४३५
„	जगतिलक सूरि	„
१३८६	धर्मप्रभ सूरि	१५०२
१३९९	भावदेव सूरि	१०४७
१४०५	अभयदेव सूरि	१८८६
१४०७	गुणप्रभ सूरि	१०५०
१४०९	सर्वानंद सूरि	१०५१
„	सर्वदेव सूरि	„
१४२३	शालिभद्र सूरि	१०५४
„	अभयचंद्र सूरि	१०५५
१४३९	— — —	१९२९
१४६८	श्री सूरि	२०१०
१४७८	„ „	१०६६
१४७०	देव सूरि	१३९६
१४८४	जयप्रभ सूरि	२०००
--	जिनरतन सूरि	१९६३
१४९३	अमरचन्द्र सूरि	१२४३
„	धनप्रभ सूरि	२०८३
१४९६	शीलरत्न सूरि	१४२२
१४९७	मुनिप्रभ सूरि	१३२१
१५०१	मंगलचंद्र सूरि	१३६९
१५०३	धर्मशेखर सूरि	१७६८
१५०६	सर्व सूरि	१०८२
१५०९	साधु सूरि	१२५४
१५१६	श्री सूरि	११२७
१५३३	„ „	१४७०
१५२१	सुविहित सूरि	११७५
१५२३	कनकरत्न सूरि	१५६८

संवत्	नाम	लेखांक
[illegible]	धर्मवल्लभ सूरि	१७७४
[illegible]	सर्वदेव सूरि	१६२७
[illegible]	देवरत्न सूरि	११७१
[illegible]	नंदिवर्द्धन सूरि	१३५६
[illegible]	श्री सूरि	११७२
[illegible]	जिनसाधु सूरि	११६३
[illegible]	हर्षरत्न सूरि	१४६६
[illegible]	विजय सूरि	११०८
[illegible]	रत्नविशाल गणि	१७१५
[illegible]	मतिचंद्र गणि	१०२८
१८२३	उ० क्षेमराम गणि	१५५७
१८२८	विजयऋद्धि सूरि	१७४५
[illegible]	विद्याविजय गणि	१२०१
”	ऋद्धिविजय गणि	”
१८५२	लालचंद गणि	११९८ १४४१
१८५५	लावण्यकमल गणि	१४१७
१८५६	हेमगणि	१३४६
१८२०	अमृतचंद्र सूरि	१६०७ १६७४
”	सागरचंद्र गणि	१८७१
१८३१	विजय सूरि	१४४६
१८४४	सं० रणधीरविजय	१४१८
१८६१	चारित्र सुख	२०६१

जिनमें सम्वत् नही है।

नाम	लेखांक
देव सूरि	[illegible]
महण्य गणि	[illegible]
जिनसागर सूरि	
उदयशील गणि	
ज्ञानसागर गणि	
क्षेमसुंदर गणि	
मेरुप्रभ मुनि	



दिगम्बर संघ।

काष्ठा संघ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३६०	तिहुण कीर्त्ति	११३५
,,	— —	१२२६
१४६७	जिनचंद्र	१४८३
१५०६	मलयकीर्त्ति	१२५२
१५२६	— —	१३४३

काञ्ची संघ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४६७	कीर्त्तिदेवा	१४२७
१५१०	विमलकीर्त्ति	१४२८

नंदि संघ।

संवत्	नाम	लेखांक
— —	क्षेमकीर्त्ति	१०८६

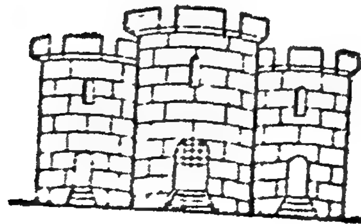
मूल संघ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४८२	— —	१४२०
१४१७	पद्मनंदि	१००१
१४७२	,,	१०६३
१५३४	भ० ज्ञानभूषण	११२०
,,	भ० भुवनकीर्त्ति	,,
,,	रत्नकीर्त्ति	१४५८
१५४६	जिनचंद्र	१०१५
१५६२	,, ,,	१४४७
१५५२	— —	१४२६
१६११	सुमतिकीर्त्ति	१६३६
१६५२	चंद्रकीर्त्ति	११३२
१६८६	पद्मनंदि	१०६५

जिनमें संघ के नाम नहीं हैं।

संवत्	नाम	लेखांक
१६०८	क्षेमकीर्त्ति	१४३०





ज्ञाति – गोत्र	लेखांक
गोत्र ।	१६८६
गेपुत्रौवाल ।	१८६२
जसवाल ।	१४४७
दीसावाल ।	१७०७ १७१६
नागर । ...	१३८७, १६१४ १६४२, २०४४
गोत्र ।	१३५६
पल्लीवाल ।	१७१८ १६६१–६२
पापड़ीवाल ।	१०१५
प्राग्वाट [पोरवाड़] ।	१०१४ १०२६ १०२८–३० १०३७ १०५२–५३, १०६६, १०६६–६७, १०६६, १०७१ १०७६, १०६१, १०६६–६७, १०८९ ११०८–०४ १०८४–८५, १०६१–६२ १०६७ ११४६ ११६० ११२५–२६ ११२०, ११२६, ११४६ ११८० ११६१ –६१, ११६७, ११७०, ११७२ ११८० ११६० ११६८ ११६८ १२११, १२५१ [illegible]
	१२०२–०३, १२०६, १२८३, १३०८, १३१४, १३१६, १३२२, १३२७, १३३१, १३५४, १३६१, १३७८ १३८१–८२, १३६१ १४०२–०३, १४११, १४३७, १४६५ १४७७, १४६६, १५५६ १५६१, १५६६–७०, १५७२, १६०२, १६४३, १६६५, १७१३–१४, १७२३, १७३०–३२, १७३५, १७५१ –५४, १७५६ १७६१, १७७६–८०, १७८८, १७६३, १७६५, १७६६, १८८०, १८८४, १८६१, १६०२, १६११, १६१६, १६२४, १६२७ १६३८ १६६६, १६६८–६६, १६७३, २०१६–१७ २०२४, २०४८ –४६, २०५१, २०५४, २०६०, २०७६ २०८६, २०६०
गोत्र ।	१०१५
संघाई	१०५०
कोठा० ...	१०४८
कोडूकी ...	१०१३
नाग ...	[illegible]
भंडारी	
प्राग्वाट [लघुशाखा] ।	[illegible]
बघेरवाल ।	[illegible]
वायड़ा [वायट] ।	[illegible]
नरेशुरा ।	[illegible]

ज्ञाति–गोत्र	लेखाक
गोत्र।	
संदिका	११६३
पल्हर	१६७६
खा(पां)रड	१५२३, १६१८
जुनीवाल	११५८
डुंगटिया	११६७
दाड़ो	१४३८
टांक	१६६६, १६२८
हडडा	१३०७
दोर	१२०६, १८९०–९१
घाघीया	१४१५
मावर	१११३
मांद्री	१८६५, २००२
पटणी	१२०४, १५६२
परवड़	१२६९, १४०६
फोफलिया	११७९, १२२८, १५६१, १६४४, १६८३, १६८६
भणशाली	१७८२
माडिया	१५२५, १६१५, १११९
मरठिया	११५९
मांघलपुरा	१४८९, १११३
मुरल	११८०
घरबटा (घगारटा) ...	१४५२, ११२१
धेषि	[illegible]
सोंघड ...	[illegible]

श्रीमाल [गूर्जर]।

गोत्र।

[illegible] ... ...

ज्ञाति–गोत्र	लेखांक
श्रीमाल [लघुशाखा]।	
... ...	११६६
गोत्र।	
फसलाणा	१५३१, १६२२
श्रीवंश।	
...	११२६, १३०१, १००३, [illegible]
गोत्र।	
राडा .	[illegible]
हूंबड़।	
	[illegible]
गोत्र।	
[illegible]	[illegible]

[illegible] – जिनमें ज्ञाति, [illegible] उल्लेख नहीं है।

शुद्धि पत्र ।

पृ०	ले०	अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	ले०	अशुद्ध	शुद्ध
१२	१०५६	१४३६	१५३६	१५१	१६६५	१६७७	१८७७
„	१०५७	कारंट	कोरंट	२१३	१८३४	१८०८	१८८८
२०	११०३	नंदकल्याण	जयकल्याण	२२४	१८७१	१०२०	१९२०
३०	११६२	जिनचंद्र	जिनभद्र	२३५	१९२३	१३५६	१३७६
„	„	जिनभद्र	जिनचंद्र	२४३	१९६०	१४२५	१४९५
३६	११९५	द्वाराविजय	हीरविजय	२६५	२०३६	पावापुणी	पावापुरी
५४	१२८७	जिनचंद्र (१)	जिनभद्र	प्रतिष्ठा स्थान (उथमण)		२०७०	२०७९
६०	१३१७	„	„	„	(चारकवांण)	२०५२	२०६१
८२	१४१५	जिनराज	जिनहर्ष	„	(च्यारकवांण)	२०५३	२०६२
११३	१५१२	१८२४	१९२४	„	(दौलत्तोवाद)	२०४८	२०५८